CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

२. पाराशरी धर्म

२२

पृ० ५६९

१

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible] यिवाला [illegible]

नेदंभि [illegible] नतो शृया [illegible] नं। नामिवे सह स्वाराफिका

यिकारेण [illegible] णाचविपा [illegible] स्मम श्च नेकस्यचित

नवा [illegible] तिपाषाचिपिनानरः।

तिष्ट [illegible] ल्वयमम नत्र। [illegible] ने। ननतोय

[illegible] नपलदेन

[illegible] नवकंक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

... मालवगा ...
... र्वदेवागमसगः ... सम्प ...
... नेतन ...
... प्रचवधानु ... नि ... न ...
... पाला ...
... र्ध्वन्तयानु ... नेवि ...
नेवरोभि ... नतो गुवा ... नामेत्रेसद स्वाराप्कम
पिकारेल ... बुधानुवरा ... ग्रम ... नेकसाचित
नवाक ... वि ...
तिष्ट ... न्नयानमन्नु ... स्पापि लानन्दः
... नो ननवाय
... पलहान
... वकाक
... नाम
... नमस ...
... लानिपर ...
... सप ...

3.S

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

6

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible] नेदंभि [illegible] ना [illegible] नाभिव्रमद [illegible] कार

यिकारे [illegible] विपा [illegible] स्मश्रुनेक [illegible] चित

नवा [illegible] तिप्राप्यिलानरः।

तिष्ठ [illegible] मननु [illegible] नननीय

[illegible] नपरः। [illegible] पलहोन

[illegible]

२

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible] नेवरं भि[illegible]नत्ता [illegible]या [illegible] ने [illegible]

यिकार[illegible] [illegible] नाभि [illegible] स्वा[illegible]

नवा[illegible] [illegible]बिपा [illegible] समस्य [illegible] नेकस्यचित

तिर्ह[illegible] [illegible]प्र[illegible]नतु [illegible] त्तिप्रा[illegible]यितानत[illegible]

[illegible]नेन[illegible] [illegible] ने [illegible] ननवाय

[illegible] पलहान

[illegible] वबकं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible] वदसंगमस्यक्ष: श्रीकृ [illegible]

[illegible] नम [illegible] पंतपान [illegible]

नेवदेभि [illegible] न [illegible] नामेत्रे मद [illegible]

यिकारेल [illegible] [illegible] णवबिधा [illegible] ममश्च नेकसविन

नवाद्र [illegible] [illegible] तिमानचिनानरः।

तिमद [illegible] न्यप्रमननु [illegible] ।ने। ननवीय

[illegible] नेनेप्र। पन्ने [illegible] नदपलन्येन

[illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]

... रयेतु ॥ ग्राम्यनः ...
... नि परि ... ॥ वनेषल्दुसवादि
... ने ॥ विवारसहमिवेण प्रीतिस्पृहः
... ॥ ... णापरेशनरस्पृ नीभगणेन
... लापवमीहति ॥ ३ ॥ कौ
लेनदिषु ... मित्रेषु ... ॥ कोलेकार
... कालानिपुनिवणि ... ॥ कालःपव
निपु ... मवानेप्रनः ॥ को ... वमेषुनाग
लिकालो ... निकु ... ॥ का ... प्रवनेनेवीसाक
लोनमेप्रवति ॥ कालोजन ... कालोपि
संहरे ॥ ४ ॥ कालः कालनिमित्राणि कोऽमे पा ...
वपारधो ॥ कोवानुकालमेपा कितिनिविनापुनर्
ऽरः ॥ ५ ॥ ... नेकालेणालामेपुनर्दोषपाव
या ॥ ६ ॥ प्रदानादृग्रहणलोगीपुरुषलयगाछोनि ...
नारकृपणेन ... ॥ ७ ॥ मूलमुचय
वलु ... वालिकेन नोहितेयत्र येनचितानमावेण
सवेतानीपुरुधने ॥ ८ ॥ ताना नोयमसृमिस ...
कोकनेकों ॥ प्रवपणमेवगतवो मदृशपानवा ... घाने
ऽनमेसहृसमसश्रूपालिने: प्रहसमकुपाः ॥ प्रल ...
सहरि ... ऽयोणानावसीहति ॥ ९ ॥ परवाटपर

13

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible] मन्य [illegible]
वतीविज्ञेन सत्वेनी [illegible] ॥ [illegible]
नशिलेन क्रतवेमेन [illegible]
नेलका शत्रु [illegible] सापं [illegible] ॥ [illegible]
शत्रुः पुत्रः शत्रु [illegible] ॥ २ ॥ सामा [illegible]
रुपुत्रो [illegible] नि [illegible] ॥ मभ्रमाप [illegible]
[illegible] ॥ ५ ॥ सामा वोपु [illegible]
[illegible] ॥ सा [illegible] कापर्त [illegible] कापुना
वनी ॥ ४ ॥ निन [illegible] पावे निम [illegible] वादि
नी ॥ स्वल्पा [illegible] भणाव [illegible] ॥ ४२
सनतेमनान्न [illegible] ननेव [illegible] सनतेपानिका
मावसनतेवृष्णभोननी ॥ ५ ॥ [illegible] सपमा
सत्रूपाव [illegible] लाननी ॥ र [illegible] भनाम [illegible]
[illegible] ॥ ६ ॥ मृपंभा [illegible] रसाभा [illegible] तम
[illegible] मूलविर्गसा भा [illegible] नन [illegible] ॥ मा
[illegible] निह [illegible] मलि [illegible] वा ॥ [illegible]
[illegible] तिमुना ॥ ३ ॥ मसा [illegible] लास
[illegible] व [illegible] मुलो ॥ यम [illegible] नाव [illegible] भापा
[illegible] नमानुव ॥ ७ ॥ [illegible] भनि [illegible]
[illegible] नृपे ॥ प्रुनानु [illegible] नसा [illegible] मसः
[illegible] ना ॥ ५ ॥ भापावनः [illegible] वनः सनननु [illegible] पनः

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible] वतीनो वधा पीनी स्वाना [illegible]
[illegible] वा वा [illegible] वसा र स्याधी तिषद्र [illegible]
[illegible] निनि यत्नि या सपरे स्व ॥ भदे ग्रीव
[illegible] ने तिसतापुपे ॥५३॥ सुमु [illegible]
[illegible] नापविनः प्रवाभनुमगु [illegible]
लिपु [illegible] न यालिपा ॥५४॥ [illegible] भावा गुविरता मि
[illegible] वाहिनी ॥ [illegible] मकासाधी ति
[illegible] ॥ [illegible] भा या [illegible] शूनया नर
[illegible] यकः [illegible] वासा [illegible] त्रिवन तमयाय: ॥५५॥
न [illegible] नेन [illegible] नेन न मवया ॥ न या वे न या
[illegible] या विसमाः त्रिय ॥५६॥ कार्य पुभि जी क [illegible]
[illegible] मानान मयायाति जी ॥५७॥ मम पत्नी
पायने [illegible] यया धर [illegible] मिः त्री कुलपु [illegible] ॥५८॥
[illegible] तेप्र [illegible] पा [illegible] किनी विवार यी ला स्वय
मेवन [illegible] ॥ [illegible] या पावीना [illegible] गा विनाः
नेव [illegible] पा [illegible] ॥ [illegible] वाली कए पर [illegible]
[illegible] विधा [illegible] लीपा दिती या [illegible] बी मि
[illegible] जीष ला क्या [illegible] न्या ॥ [illegible] ॥
[illegible] लोग वने [illegible] वमा [illegible]
लिगा [illegible] ॥ [illegible] कालो ॥ काक निन्द्राक [illegible]

... लनावे ॐ न ...
भमनते ॥ मासेवनेऊ ... न [illegible]
... तीर्तिविद्दिना सानस्या ... [illegible]
... वैष्मनिहप्रनप्रहरेके विकन्सा ... निद्दने ...
रो ॥ क्स्या म्रनेविद्दिविमनाग ये वेसा ... [illegible]
पि मूतिः का ॥ ... ॥ ना बो भानि ... [illegible]
केः सू ... नाग वे ॥ धा ... [illegible] ... म पु
तैः नयः ... ये ... ॥ बी ले न यं मा न वे ने ... का नि
स्मा ना व म हिने ... वे ला ऊ ल प ले व स्य ... लो
क त्र्य प प्रा ऊ न ... ॥ ... तिनलो ... [illegible]
ध्यायः ॥ ॥ ॥ ग्रापवे ... पने ... ने ... [illegible]
मास्नातस्वेनानदासारेराये प ... ॥ ॥ धापरपे
... नेस्वां ... मनः स्या कि मा प दः ॥ कला ... [illegible]
नालेक्मीः ... विनोधिविनस्याति ॥ २ ॥ सर्वमेववरः
तिस्व ... मेर मन्नुपालये ... ॥ पारीरस्यश्रणदूस
सर्वमेवर्षनयपाले ॥ ३ ॥ पुन ... ऊ नूदारः पुनः
... तः पुनः ... ॥ ... नः रस्यानिकावातिन ... [illegible]
पुनः पुनः ॥ ४ ॥ ... नेहेपा ऊलप्ययर्थग्रामस्या ... [illegible]
ले ... ने ॥ ग्रामूननवरू स्यार्थ स्यात्मा ... [illegible]
... ॥ ५ ॥ वारित्रनरकेवा ... नच ... [illegible]
न ॥ कान्तीयनेधाप ऊ रू ... यरिवये ... ॥ ६ ॥ वरव

[illegible]

[illegible] मनकालपरातुविनतेशान्म [illegible]

[illegible] ॥ ब्रह्मब्रह्मवांबक्र [illegible]

नः सर्वपद [illegible] भक्तोथिव्या ॥ अप्राहिदीनस्य [illegible]

सुगस्य ॥ [illegible] लेकालेसननोपिराज्ञः ॥ २ ॥ प्राप्ते

लिवे [illegible] भूरसः प्रवि ॥ आ [illegible] कोविविभक्तेनौः

ताजुभैलेववा [illegible] ॥ ४ ॥ सूर्यकेश्रीनफलम्नेति

विवक्षाः [illegible] मसमेवसा ॥ निद् [illegible] ववेतिलल

ना [illegible] क्षपमेवित्र ॥ पुण्यपत्र [illegible] वेनानिमपुष्पार

मंबनं [illegible] मर्वैः कार्यबप्राक्षेनोदिरमनेकः

के [illegible] कोवनलम ॥ ५ ॥ तत्रमपसूपानेनतत्रुमनालि

कमणि ॥ मूर्तिबळ [illegible] नुहृन्नावषणीकुर्वतिपांडितः ॥ ६

सर्ववैश्यहिंनवेत्तिरेवाः [illegible] रुषहिंनाः ॥ तनेनान

पानेनवाक्यदानेनपंडितः ॥ ७ ॥ ब्राह्मणपाणिपानेन

शूद्रोमेरेनयुज्यते ॥ वैश्यः स्वल्पप्रदानेन [illegible] तुल्य

पराक्रमः ॥ ८ ॥ यस्य [illegible] स्यहियोभावस्तस्यतस्यविन

पूजने ॥ अनुमवि [illegible] मपावीमनमात्मदेवदानवेन ॥

महालयमहृ [illegible] पावाकेसभावमहपोमनः ॥ ग्रान्तर्हि [illegible]

मनुजो [illegible] नानिसपिरितः ॥ ९ ॥ ननस्पाशयमाले

वैपाययथोपरिनिवसिति ॥ ननयेवानुवर्तनेनपवनपन

पाठितः ॥ १० ॥ नदीनानाविनाचैवशृंगीनांशस्त्रि

६०७

लनाथेषु [illegible]
[illegible] भजन्ते॥ मामेव ये [illegible]
[illegible] तिविहिना [illegible]
[illegible] वेषम्य निरहमाना न प्रीति न [illegible]
[illegible] त्कला [illegible] तनकर्म येन॥ [illegible]
[illegible] भूतिस्य शत्रुविषयेन॥ सा [illegible]
[illegible] पापवः॥ येन [illegible]
यद्करोति त॥ [illegible] न येन [illegible]
यव [illegible] मन्ते॥ यतू [illegible]
नन्तं विभन्ति [illegible] न॥ [illegible]
यात्तेवव [illegible]॥ सा विनेभ्रुन [illegible]
[illegible] तेन दीयते॥ [illegible]
नेचार पा [illegible] न्ते॥ [illegible]
सिद्धयेन वी तेयनापि [illegible]॥ [illegible]
प [illegible] या॥ ऊभा [illegible]॥ दी
नो विवमनो [illegible] कपालां [illegible]॥ [illegible]
[illegible] फल [illegible]॥ [illegible]
[illegible] निविन्नस॥ [illegible]
[illegible]॥ [illegible]
[illegible]॥ प्रव [illegible]
[illegible]॥ न [illegible]
[illegible]॥ [illegible]
[illegible]॥ [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]

[illegible] ॥ ब्रह्म वचनायनाद्वयोगः [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] द्वह्मसत्यमलवंभूतानां
[illegible] निरुक्तिनानाकः मन्ममना हिनारद॥ नवेदर
[illegible] भावः सतत्त्वभावेन बलायिकन[illegible]
न॥ नायस्य [illegible] स्व निपानयतिने[illegible] हिंकुलानि
उत्तानिन [illegible] ॥ न[illegible] पानयने[illegible] लेनारीयानय
नेकुल॥ [illegible] नाविर नारीता[illegible] ल लिंनमानिः
नाभिलक्ष्यनिका[illegible] नोमहोरघ॥ नान
कः [illegible] न[illegible] मलोक[illegible]ना॥ ननिलिर्लि
मिथानारच्छनाविधवाहिना॥ [illegible] नानावलवानार
वनोविनस्वयनगव॥ दिमनरानायनसवयनमस
गनेभूतिनलागमेन॥ नयदिनः [illegible] भाषितेन
नमेनवरः प्रियरूपनेन॥ [illegible] मनितेन
कायालेषवरार [illegible] रनाना॥ नि[illegible] मः
निविधविधा[illegible] मोदः पुरुषोमना॥ मनोउ
कृपमदारूपवनाः ललक्रूरः॥ घोरः पासादपुः
नभुवतिपुभकर्म[illegible]॥ निपानक्षिवमपुक्तः पुरः प
लोभेया[illegible]॥ पुभकर्मी[illegible] निसर[illegible] पुरुषप
नोनिव॥ पानेनर्प[illegible] नेपक्षोपानैः यवेन[illegible]
नैर्विप्रावधर्मोस्य सर्वमेवयानैः प्रानैः॥ पापवर्जनावि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]लनावे[illegible]
[illegible]भनते॥मातेववेदे[illegible]न[illegible]॥[illegible]
[illegible]नितविद्विना[illegible]कननाम[illegible]
[illegible]वेषमनिन[illegible]कोराभ्मानायनतलाग[illegible]
[illegible]॥कृनान[illegible]पिशुरनेरपाश्वनागा[illegible]
[illegible]पृकिनमपदूरुनिपाइनेजनःप्रःतितूर[illegible]
[illegible]ःगाहिश्रुउद्यः केविरूपनविभजनितिलिनीतभाः
वमनोजनानाविमपुलाभप्कनग्रपन्नुः॥[illegible]
भुननमेमहिकीलिलाभान्म[illegible]नमानिकोः
पिननाधुपुनि केविनत्वभावशुणिना[illegible]
पिषवानोकपाकन[illegible]हरपाभृविमतिनवा[illegible]
विषाणपूलन[illegible]नउालपानोल[illegible]भूव
नपिनयपिनूनाः॥[illegible]॥३नि[illegible]वानि[illegible]ानद्री
निषानहिलिनोपाप्पावपाः॥२॥[illegible]॥[illegible]
पप[illegible]नभुवाणिनिभीवने॥भृवातिन[illegible]नेपय
निहि[illegible]वेनुहवेनमः॥यागन्भदीनमनममाविया
यानथपांकोपुरुषमरूलेनमोधिमुनाश्पनेप
रेषामन्यमलाः॥र्वरपीनीयाः भोमाभोमनः
[illegible]नाल[illegible]नामः फल॥श्रायिमोवफला
वेदाला भस्नोफलश्रुन रमित्रुवफलाहा
तानेगाफलपन॥वरपनउलनामानोविदूँ
पुमहिंकनाका॥ह्रपाबहिरूपावविवाहेमहे
पीवःः॥पयोवमभावनपयोवमपउलन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]

...पीयेनेवनवेयवा॥ वानि [illegible] नवेद

...[illegible] वासमसा॥ नारीपुरुष [illegible]

...[illegible] ने॥ नमस्सवाः कपायेनेनसिहा [illegible]

...[illegible]॥ पुरेरमलेनिरेषां नमहेनेमनात्मिन

...[illegible] त्रयुक्त मयानामिवा नि॥ ममनु [illegible]

...[illegible] निरामे मेवान रायणो॥ नरहा [illegible] लनिया

...[illegible] नदीपने॥ यरा [illegible] रमावेलाकालिप

...[illegible]॥ यकारस्त्रीनेनं [illegible] लापत्तुग्रह

रेन॥ [illegible] ननकर [illegible] कुलकें॥ ग्र

नकालिपुरूपपायवेनपखमरामने॥ लपमवप

ला [illegible] तेउलमानाउवद्रमाः॥ प्रनये [illegible]

यपापीनयेरूपमाक॥ नयते विनाशाय ने [illegible]

युक्तेपरितन्न॥ कार्यमोलाविनापापं [illegible] कि वि

वविन॥ नवेवल [illegible] ममजोबिपमानपपामने॥ वि

विद्यालामनवालोयज्ञा [illegible] पोमना॥ कांपजो

त्रसिद्देवेनत्वां [illegible] वेहिपि:॥ धनधान्य [illegible]

शुनिमात्र [illegible] पुव॥ लोकपावामपलज [illegible] लि

लपमयालना॥ नस्त्रेपानवलसायत्रनालेनचं

नष्टदं॥ [illegible] प्रपानावैयषस्त्रोत्रियःसजलानंदी

21

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]

त्ति॥ न ल य स त्रे ख्या शु प का: क लु कु नै न यत्र

त्पियवदेपिवि स्वा सेन क मौ तु नै नु ज़ा विल॥ प

वे स्न न स नि हू यं ग्रे हू हि ह्ना ला ह ली वि घ॥ के न नं

स्य सु वि षी नि वा ल वि ह न षी ल ना॥ ह ल यं न स

र्व बु ब: ऊ लि षां पि क कें षा॥ अ र मि व ज क: ह

दा रु ण ना षि ति ह ला ह ल न न पू: स्व रू पा: न

उ स नि भ वा ह मा नि भू य भु व ने षि न्व च ला वि

र्वे न ना॥ प्र म ल्भा: पे र स्या से न न नी ना गो ह त

व:॥ स न्दे के व हू ला ला पु: के व पो वा ल का इ व

स्य ल स्र पि पर न व मा न व गु ता स मा नि॥ स्य यो न:

पृ वि ष न: वि ला ङ्गे नि श त इ व॥ र धो न्म ज वि न:

प्रो वा म र म ह व भा स न॥ बा न क ह न पा र स प्र

रु ने ष ल ह ला॥ आ तो न र मु लो या नि स ख ये हु व

र सा लि व॥ श्र ते वै रा य मा ना नि स ग मा नि वि लि न:

स ह॥ ल ज्वे ता न र गु रु डे हि फ नो हे हि च च रा लि न॥ व

त्रे मौ नो नि प्रिय ह्दो ष्टि क न का यो हि ज न न:॥ नि रा ना स

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]

लिखयत्नानेनो याति ति णं दां नि पुषे सनुषे [illegible]
नखुका लेन विं पुंक्त रा णि व ना मि प त्रा द पे दा के [illegible]
णा [illegible] व ला म यि स्वि ये न ह [illegible] न मा स्म नः
के ने वो नु वि धा ने न [illegible] मा ले प्र भ वि ल ल ना ॥ पु दे पु भ
ग य व प ले [illegible] नू मे [illegible] ता र व कि मि क्वा ति ज य व प रा
न यं व ॥ [illegible] वा द्रि म र णा ग न [illegible] प्र ति ता व य नि
य न ति [illegible] वा न व न ह या ना ॥ न स [illegible] स्थि ति ना
ति ला क [illegible] न मू लो पु वि का स्थि द ति ॥ ता ने न
चो न स स [illegible] मे न यो ये व जा ना ति स ने न वि दा न् । १
श्र ए व ये म ति: प्रा ण त्रा ण द मो वि ष भ दि ण णि
श्र य पि पु रु षा सि हो [illegible] स मा ह्र य ते ग ता न ॥ [illegible]
नु र पि त क [illegible] ये [illegible] नो र ह य न लो व ने [illegible] नि म रु
ना जा त्य ते जो न घृ नि म ष व ते ॥ सि ह: [illegible] पु र पि
ति य त नि म ट [illegible] लि न ग ए भि नि पु [illegible] ने ष ॥ प्र [illegible]
ति स्थि य स न्न व ता ना वि ल ल व य ल्ल नि म सा है व ॥ [illegible]
दे [illegible] त य य नि न मः स स म मि: प जा ना [illegible]
ने व षि वि र पि ना मं जा लि: के न व दे: ॥ प्र [illegible]
न ल ल व प्त व: के न व [illegible] हि है तो जा त्य वै ने प रा हि

23

802

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]

यनुभ्रमना ॥ [illegible]

मनोभ्रना. [illegible] ना ॥ [illegible]

वाप्यते । पवे [illegible] नाना पालव

लि ॥ नेस्मास्तेव पृपेते नमृतोना ना प्रपालय

न ॥ पालकस्य [illegible] लोके वलमाय [illegible] वयेने

लिगमजूनवमोन्मनागाप्रावण [illegible] नेवन ॥ प

नापालम [illegible] पानः सरा जाद्यानि ना [illegible] यः वा

नापमेण [illegible] वीन पनस्य वयम [illegible] नः । प्रनाल

लिंनमनननेवृपंयो [illegible] नमो [illegible] ना ॥ [illegible] कार पाहो

विपानात [illegible] ने ॥ मरानाहिमवेया

गोव्या [illegible] न पा [illegible] ने ॥ प्रम [illegible]

[illegible] च य ॥ कि नज वेलि भूपालाय

[illegible] प्रनाः ॥ [illegible] ला: कांक्षिल

[illegible] ने ॥ [illegible] वालाहन [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] नः ॥ प्रथनहिविती [illegible]

24

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]

[illegible] नरुवानिविपर [illegible] मानवः ॥ [illegible]

[illegible] स्यालं: ।बो नवाम्ब बो ॥ धीरः

[illegible] मानभवे तिविषा [illegible] प्रविस्य

वरेने [illegible] लिनोदेतिगुनः [illegible] ॥ लवधन

मातृ [illegible] नवो नरः । मनपूर्णतिगु

नः तिस्मरहलोके परत्रच ॥ गापयेत्सामेरश्रा

तिगुरर्धा [illegible] चिनयेत ॥ पृहेन् [illegible] वाणान

गुरुभावपरीक्ष्य यत ॥ प्रकारणेनभून मायः

कृप्यतेनर [illegible] पवः ॥ कृत्स्न [illegible] गृहीतानितिरसा

वेलन पैनः ॥ श्रवेस्तु गुणायाया वे [illegible] पानेहृय

लेने । नित्र याद्युनिव य वसकोन [illegible] निभूपिपः

एकेवद्ववि मर्दोहि हितोयस्तस्स [illegible] गः ना

तिवयसर्स [illegible] प्रमाहत्पूपेपूलेदवा ॥ व्याननेयो

तिवर गजाननगाम्रुवैवनेनः ॥ प्रयः पुरुष

निवारेणशास्त्रहीनेनयपपाति ॥ गापवेच्चु

वृपालवबाह्विवाणि नकला: ॥ प्रथपरहे

पुत्रवेदयंक्षा इतन्महोपतिः ॥ प्रजेयज्ञाम

धेवगुमानमरवन्सदा । केशुपश्चिवगृहीतःस

मन्त्रनायमेसमवेन । व्याघ्रोवतिस्युनिजराय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]

पादै नवनि श्रयसा ॥ भानोपैन म [illegible]
यौवनैरयिनामय ॥ नरयनामयः पाथ दि
फानान्ममयः उंविन ॥ विषयाःशुचायुमुग
वृमानुमामु उंविन ॥ इद पृणामनुमान
यस श्रीहूणनाहन ॥ यन्त्रोनिनाःमयपाथ
न्याःपुत्रामित्रादिकायवा ॥ नेनाभिनामम
नेयवनाधावेवर ॥ ३ श्योमसाहमयपे
वुडिपाञ्चिवाक्रमा ॥ इश्मदेःवाहुयापम्भ
देवमोपवाकन ॥ एक रन्यानवाकेन्यासिश्व
मुक्रापनुमान ॥ वुद्धिवुद्धिमनोत्तहाहत्या
माहूमानक ॥ कावाहिन्ने ऊ विन्दस्मिऊ विन्
शूणोऊविहेल ॥ रद्धानेमायुनेकायेनहानि
पारिकल्पायन ॥ लब्रकेनवनत्स्याहनस्या
चेसहेनाहन ॥ सर्वनाशेमवुवनेलपंवन
निःपाशिन ॥ सूनापानानाथायानिरगानेका
नेःऋमलिनाविनीनाभोनानामभववृ
नैनाभरवशाः स्वहृदंपृःस्वाकाँशारएदुप
कोरोपरतरुः ॥ विनानानाध्यानानगानिपुरु
बोधःमनुपाते ॥ तास्तियमैमिर्यमिद्याःपाय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]

...न ॥ ... प्रीतः सत्यवादी जितेन्द्रि
यः सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञो लिपितः साधुलेखकः
समानि सम शीर्षाणि ... लानि ... निच ॥ मा
त्रासु प्रतिबद्धानि यानि नानानि सलेखकः ॥ अगल
भो ... मानवेकाः ... लेखकः ॥ पौराणि
... यते ॥ प्रवीणः स्वामिन
...नः सन्न वा ... [illegible] ॥ शुद्धमः सर्वनेन्त्रि
...गना ... मिधीयते ॥ पित्रः पैतामहो हदः
...लोम ... [illegible] ॥ पौरव ... प्रभोधकः
रूपकारो ... मिधीयते ॥ प्राप्नुवंश ... भासः सर्वे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ मुखे निमानि नेका [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] शाषेना मा श्वनेक पन नन
[illegible] ॥ [illegible] चिन जके ने भूनः श्च भवाय स्त्रिवाश
मे ॥ [illegible] नेन धनिने नरा तोड श्रु नमेव पा ॥ श्रम
[illegible] का पा ता मेहिना रुपविकालि वेन १
नमा नमलकार्येषु सूहा पाश्च पाते गेलि ॥ गु
[illegible] नमपु मोन गुणानीन विवनेयन ॥ पाडेन
[illegible] त मे वेपु विरा घा श्च कवला ॥ [illegible]
मोन मननेमु द्विः ऋ बौन मनातै ॥ सा [illegible]
मे बोव नास [illegible] कि वला ववे ॥ पारिने श्रावनी
नेश्च धमे नेः मना घाते भि ॥ व धनेपिव मे सार्थ
नहानो वले मह ॥ का योधी मनतिया लि [illegible]
ना श्री ना लि स्त्र गानि ॥ नम्मः सं वी [illegible] का याए
मा वे श्री बा ला कर येन ॥ य पाकेमपानु [illegible]
पुष्या भा मपु षद्दूयर ॥ नथा विनपु पा सं वषा १
नाउं बौ न नव व य ॥ वन्वा हन न्हके नेषण [illegible] नि
भमयश्री प ग रा गा कुवेन ॥ नानाकार मा [illegible] मश्रा
मानि वि [illegible] गा क नमला ह पनः ॥ पके के [illegible] य ने
[illegible] मा नर्क मेनि रन्ने: मशा पु र न्ने मे १

…श्रमपहरे
…तोपिनेव
…मेनवर्मः
…मन्नायरखुयोस
…नालवखनाय्पनेवव
…खुलाकलाकविषोन
…लिमकमावसवप।।पूर्वप
…लनात्यानोपवनकवेषिः ३ पूर्वकाषेड
…भनते॥माघनेनमलेकुणः। पूर्वकालेषवः
…तिविनिनयसवदिकव्याने॥आपाविभागनजयो
…वेश्ममतिगमपानतः॥पनसेतिदोषिवपूर्न
…॥लेललकामपः। वनेपिरोहःपूमतिलतापा
गृहेषिपवेदिशपनिमकेत्तलिप॥श्रेजनतिवेला
मूललियः पूवनेनेलिहमवागममपूमेमपावेन
वेरविष्याहव्यावसनसानखधावसवरापवास
पाकीलेन्हणपिहिनकूपानेयननवरधेता
वनेराहननलमपधेनिपनने॥नपालाहिये
पोविपुलंकलनसश्रुनवनः॥३तेषाण
कालीलिसाहपवमाप्यावः॥॥रदधेलान्म
लिपामाभूनकूपनानननः॥भाम्पनपनदोपने
नापभोननसपरः॥कूपलेनसमासानानभू
नेनभविष्मति॥श्रूमपानेववविनानिकपरम्पः
पूपकाति॥वेलाविभूतिःदतनगयावनकू
तानसोनानरवेलिजोविने॥नयाप्पवनापर
लाकसापनेषहोनणाविमपकानिवेपि
ने॥रेहरदीप्तिरसलासेहिदेशीनियावनः।
पकमववलसाकियनोसारपल्यलानम
रामैःतपवातिननभोगेलवसपरः॥सर्वातिना
नामनत्रस्तकूलानापुरेदपान॥आमपवाने
वजायेनमाभूपेमावपरिलः॥मराश्रुकूलनवि

...ततकृप॥ [illegible] ल्यालयतो...
...[illegible] वद्वेवतागणारत्नाः क्रीडायोपि...
याचवनेष्ठतः स्मनः॥ [illegible] यर्थ [illegible] नीर
तिष्ठन्तिनव [illegible] ॥ [illegible]
लोहितनकरा [illegible] दान [illegible]
पाञ्चस्तानगगन [illegible] ॥ [illegible] पंतथान [illegible] नी
प्राकभालपद्ह विविक [illegible] नामेत्रे मदर्शात्तार्णकार
माधे॥ [illegible] पिकः कमक [illegible] यमश्रुतेकसाचित
माधुतकतोति॥ विकमेन [illegible] तिप्रार्थयितानन्दः
केतोतितिचक्षाभिमानः॥ येमनो [illegible] तो॥ ननतोय
मेषमा [illegible] तिननीरः कवेरपि॥ खमह [illegible] पलदोत
लेभाकेनगवविदयप्रातिननिहितः॥ श्रुतिन [illegible] वकेः
मेतृतेनपमनेतोद्भु [illegible] तमात्यानेरो॥ विलिस [illegible] ताम
[illegible] तमातनकने॥ लेमामप्रासकुटे॥ कृष्ण [illegible]
[illegible] लिप्तिनिर्यातोलाचस्वर्याथैलोनतः स्वयोधु
मातिवचबाननगानेनस्वनपः कमेण॥ हाना
वलयोवनकोपुनातिदोनमक्षीवानिमवसाम
य॥ श्रीनः फलवस्वनेवपामनमोत्स्तु देवाययय
देवो वै॥ मूलावर्षिभवेहलनोः पिनध्या विजनार्देनः
नृपमनमतिपतिपाहिनाप्राकृष्णकमेण॥ श्रा
मोमानालिवनेनखिहृदः मरुवपुभिः॥ विकनेद्वष्ट
नेवापिगवनमनुराक्षतिः॥ समहवेपिनयानोलिस
न्यथः प्राणवर्णकयाः॥ पुत्रमित्रकलत्रेण समय
नवपंचका॥ नोनत्रकश्चिदत्तयातिसहस्रवेपुः
नाथैः प्रयत्नेतिविनोनवभृत्यवर्गः॥ यामित
तोप्रियपानानां विवित्सनपत्रकप्राणाः स्वकर्मफल
पच्युपनाः प्रयाति॥ लक्ष्मीनन्मभूत्रिपालय
मपि त्रैलोक्यभूषाकरः॥ अपूर्वयोयातिकालेमधु
पुरनगलिनापिभूभावतः॥ दृष्टिषीतकः ज्ञेतापि
नगानतीतिः पुरञ्जन॥ प्रापणः प्राप्येनमेदकमेव
लवनकमो पूजाविनिकः॥ नगोत्रिकृवः परिक्षोम

31

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]

नालिननवत्रनवायमूलः [illegible] ना

नकोइः खभानना । नापुक [illegible] पुत्रानमिना

पुत्रक [illegible] । सुसूत्रेनवरपरेलिनेयपनिश्चायन

ने ॥ कमेनाः पभवस्येवयपाका लसुपरवाः पन

नकमुयनणाजः कतोहमिलिनमननेन ॥ सुनिक्षप्र

पिपिमेननविहरपाथ्याभिमानव ॥ लकमानालिवा

नेननायनेयचनत्रवेन ॥ पारवस्रमयस्रमननेम

तुथुललकारणाहेववविलस्वनीय ॥ नस्माहयो

वाभिनविस्पपामेवरस्मसेयनहिस्मरेषा ॥ व

नेनणमुनलभियमयेमहाणलेपधनमुलके

वा ॥ हमयपुर्वेलिलपुमेनेवारनुनेकमालिपुरा

कूनालि ॥ नेहवायपेमासायरलनिपकुपालवन

पनरालिविमिकालिनुत्रासवयायनिने ॥ पमिकेना

लपनेस्पनपमनधकारलानल ॥ हेनलियनेल

योधकेसुत्रापिनिहनि ॥ पकेः मुसमिनेःलयः मुवालि

नेस्मनावनरागानः सुक्षीमरफलानेनाः कयलिनो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible] ॥ [illegible] लवतीधि [illegible]
[illegible] व्दवस्तगकारणः कीडा [illegible]
[illegible] मनः॥ [illegible]
लोके षिमिन [illegible] ॥ [illegible]
नः शुद्धः पवते [illegible] निहृदं [illegible] नेनि [illegible]
शुद्धोपमानानताकीविधिपतेयान [illegible]
मस्क्रनेकपवथामनः॥ नेः [illegible] वतीव [illegible]
लोपाभाग्यमेवन॥ नवेवा [illegible] प्रमश्रुनेकसाचित
मस्क्रने॥ पापेश्रुविः सवश्रु [illegible] प्रापथिवितानन्दः।
वि॥ मनपावमनःपावे [illegible] नः नो॥ ननलाय
वैभूतस्नापापवनलपावत्नपवमे॥ चपलत्वात
[illegible] मपानेनव॥ पववावायः [illegible] वकः
[illegible] श्रुयाति॥ यपहलोपपावाद्भिमन [illegible]
[illegible] ते॥ नियातपश्च [illegible] तिश्चसनेपफल [illegible]
[illegible] पाति [illegible] निलावमाने प्रकृत्यानि गा [illegible]
[illegible] मः [illegible] सेयवने॥ कविकृमापाते
[illegible] विरपापर्वकथायन्नुविकाक्कराताकोकिहः।
[illegible] पालात्स्वनकवि॥ कविकपामालोकविद्य
[illegible] विरविविधवियमवरयोमनलोकायः आगता
पालिनशः लिनवसाते॥ रोहसामन्नुषस्थपात्स
कृतिरपोनः॥ हितमधुविनवाकामवलिमने।
शुद्धते॥ निहकेरतिलिः विहनमधुकिनशोषम
मधुरवहकमाणातालोकायमधुरप्रियः॥ किंकि
नोपस्कनैनेनकिनरनेमस्तात्मना॥ प्रियप्रमनव
श्रोनप्रपमपनभावितो॥ वालेनवस्थियः पानेःम।
पानःइनकथानो॥ पानवृद्धोपमानेषुपामःक।
सनमायते॥ यथाकाष्ठवकाष्ठवसमयानाम
हारयोसमेत्यवृक्षनौयानीलहनभूतसमाग
मः॥ कंवाउलेनविमलेनगुणेक्ष्यतले यो [illegible]
कंयामवता निलवश्रुनेन॥ कमोत्तापवविविह्नि
नाविफलनिकालेरेवेनयालिविनानिलला
लपदे॥ यथायेनसहस्त्रवस्मोविंदनिमानसम

33

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible] लिलः सर्वेष
[illegible] मेनो विल्वमा
[illegible] यो निराग
[illegible] वोध देलिवृ पघता मिपा
[illegible] य एलवोर्षा नानापा
[illegible] लि भने जेन तस्यकायमेरे
[illegible] भने स्यास्य वृत्ताभ स्यास्ये मवृ
[illegible] लना वा प्रस यो ना लिप्यानशाम्नेजनः
[illegible] भमनते॥ मालास्त्रियने त्रिजःशातयानेव॥ करमा
[illegible] तिवि [illegible] मेसृ द्यायामे कालेन नीवानि॥ [illegible]
[illegible] वंबस्य [illegible] लभने गनवानेव मे [illegible]॥ प्रामुवानेव
[illegible]॥ [illegible] तिद्रुः वोनिवृस्तुवानिये॥ पुप्रा [illegible] नानि [illegible]
वोनिय थवाया निरा [illegible]॥ स्ववोन्म [illegible] न्या
वृनदेवमज्ञानि रिवान॥ प्रवोधमानानि यप्रा
पुष्या [illegible] कुला निवे॥ स्व [illegible] न्वकालेप घपदेनव
लृ मो [illegible] रहिना॥ मवे यरवे [illegible] ङःल्व मवे मो [illegible]
वपास्व वि॥ यनना वि याम [illegible] मनलव [illegible] स्वावि [illegible]:
विधाः स्वावस्यानेन रङः वि ङः वि स्थाने नरस्वा
स्वविङः वि मतुष्या [illegible] न वष्णवना निवेने॥ [illegible]
निकिल कलकःकः [illegible] कः पघनाल गुणवति
नियनलवहनस्कसमपं॥ उलापिनलमपया लि
मिनेयनलाके भुवाने सवि लघुष्ठाने निविवेका
विपाना॥ इति श्री वाणिक्यनीति [illegible] स्वघ [illegible]
यः ६॥ नव [illegible] ल स्थाविलि य न [illegible] स्वविन
तिषुः॥ प्रव स्थानः प्रज्ञा यते मित्रानि ति पव स्तपा
पाकाह निश्चय त्रानि प्रीति निवि स्वभ भाजनु॥ वोन
रत्ना मिः स्व [illegible] वि त्रापि पत रस्वय॥ नमाना मित्रदा
रेषु न [illegible] र्थे पूर्व पुरु॥ विश स्म [illegible] नारत्नाः पुत्राका
हपी मि वे निरनवे॥ सहहनि निरंनरावि [illegible] गुणनि।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ततो ह्य [illegible] रख्यालयनो [illegible]
[illegible] वदवरोगणारयाः क्रीडा [illegible]
[illegible] मनः [illegible] पर्वं [illegible]
कल चेष्ट्रभो [illegible] निहा [illegible] क॥ [illegible]
वेश्मनिर्दे [illegible]
ष्टोबोधवित ने [illegible] धी पतयार [illegible]
द्दर्शनं॥ यानामग्नो कोपिलोमि त्रे मरहस्तारोपकार
र काल: यानसंहसा [illegible] धर्मश्रुतेकसाचित
र्द्धे नास्ति तत्तानास्ति नास्ति प्राणिपितानरः।
ललनादंरनारीणां मनोलब्धपनायते॥ ननलोय
नकरमेर [illegible] मप्रद नानरा॥ स्तुते मित्र पलत्वेन
दयासने लेणपवानिनैः दयारोहेद्रवहवधवकः
कवनकेषां॥ योनिसुकर नानानां [illegible] पाप
हेतल्ल॥ अन्यास्मर [illegible] वनापायत्सस्थानके
मरूपे॥ मध्यानमपूंभोहि निरां जावयन्ति धृतपः
[illegible] भेनतु यथा पातोलवरा तेहस्तस्पृष्टः ह्लोवन
तोराजम्रे वा कोतिप्राणसंशये॥ पशवीनांनिरा
नारं भुवं वमानुसर्पो पुरा अन्यकामास्पदलितम
चिताबलनवहिन॥ पराभलः कायः करतरसा
नेभिनवपुषा॥ मृकोकाहावहनि: मगतिमताका
जबदभया॥ किंविरयरिपाह्वयाहवरुपलो
चितामवेयदिन॥ किंविरयरिदापानीतिनिय
ताराजोभवेन्नाधिक:॥ किंविरयरिदापावन
वंतीसाध्वीभवेदंगना॥ ना [illegible] रयतिनिर्धनापिद
हवः पापवन्तुदोनुविन॥ नान्मछिद्रमपरे
यापरछिद्राणि लनयन॥ गुहेन क्रमेणवागानि
परभावयसीदयेत॥ पातालं लंवासमभुवा
माकरलनाने॥ यतिनसाज्ञा लेख्यविसकनाप
लभ्यते॥ पाकनी यो हिसोमित्रे विर्वलानिविभी
षणः॥ यमानमनजनेप्रोमि: क्रनेस्मसापरेजने।
ननयावाधनेसात्तुः क्रनवीपराजवः॥ वपामि
नमिमपोनिनीदानः सजनकालकः॥ ननावद
न्यानानीयाकिननिपरस्तनरः॥ नयावनरूना

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible] कपटेन प [illegible]
[illegible] दिया पुरुष [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
यवनेमयपेक्षमासाद्य सलंको॥ [illegible] थो [illegible]
समेविषवना विवेनयेन॥ विषवेषपू [illegible]
इ स्पनकुतोविषा॥ विषन्वशिविनाविषाह [illegible]
तैभूननविषं॥ विषयायमकौ [illegible]
तौषिया॥ विपक्षानूरा [illegible]
विये॥ लालावकः पवेसम यनच पूम [illegible]
[illegible] भानवे॥ तत्समवलि [illegible]
[illegible] याकुरामेइवेनि॥ समयः [illegible]
हीवीय भोजनन॥ ग्रमालसं [illegible]
तापूसा विषहू॥ मयावल [illegible]
रायानयया॥ मेषोवल [illegible] भानेमेयन
नना॥ भूय्सेवसनावीवक [illegible] नानेननतू॥ [illegible]
कालेभवमलस्युसकालायपूतिनल्ल॥ [illegible]
मनेकुलज्ञातृपंकुलश्रियाः॥ विममयाः पाटुनाट्र
पट्रंथभूलयसमोनिना॥ नविंशवमूलामिन [illegible]
त्रमाविनविस्वमन॥ यत्राविनडवेनाम [illegible]
गुणप्रकाशयन॥ उवेलिनदनमलोपयानिपा
वदतानिनलिदृवाकाभाविता॥ मूयरयत्रालम
येविशाविनेमनेनलदना॥ पिवऋषानिणम
पाब्बरतलानापरत्तिविलिखवनेपारपायें
मस्वनेरनालामपम्भावमलिनवसननान्न्त
नामूपनाना॥ मपामाम्हिमप्पारामिविक
षतामद्लाभ्याकराम्पामागेयायवस्थानिप
नमुपनयनेयवमापिलक्ष्मी वनासियोरक
कोतीमपवालविवमेयन॥ आह्नाम्मपुनलि
शकापयनविशषनः॥ आलागजायनेपापिसु
फागाभेस्नमयनान॥ प्रलक्ष्मीः शायनान्नस्याने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]

37

152

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

...गानेन॥ यता
...ग्रहा आम्रक
...दिमेर माधी
...व रागानि [illegible] ॥ स्वप्नाल्पमुखमक्षा खिलानि
हाम तैव मृत्तौ नलकरा भवंति॥ निक मल्हार पृच्छ
हम भुक्तौ गोप्रयव सौरी वैणिवाल नेला॥ [illegible]
लवा सावि ह्रिनाव गुल्लनाव ध स्वैकाय न नावे
सोघनः नानेन वलैभीय गन्धाप चपवेन मे नी
ने॥ कुघीने मरल [illegible] कम मनिप लवर्व॥ नमनि
[illegible] लिनो घवा न [illegible] नित्र गीनो तनन॥ स्वप्न शंसदा
नेव [illegible] ने मनम [illegible] नवकल्प चन॥ वृत्र [illegible]
शौ॥ नृप व मा मरसि वाघ [illegible] निय मृ॥ नवं
[illegible] नो चामि रत्नियमन अने [illegible] निः शौ [illegible]
मनन॥ मानेन रागान्नेः पृथाने मलोप न गंध तो विव
थः प्रयाने पृछ्या॥ गिरि [illegible] वा गानाप कानक प्राकिः
पुलिनगले वे मल्लीगाल के ते॥ यहिमा कुमापछवे
लपृ कव स्वापवोविष्णुरौना॥ ना किन घीव वन पंः
भिनेनृ रनी पा वलवः॥ विनथ धागा ले पनिस मा
केला लेनाविष्णु लो॥ विवोप ललपसलेनिस मःक
घानाप कलावयः॥ विनमसु विनाघलो गानाविता
38 मवलिनः पालेनानिनसा काली हाना ऊराव शी
कृनः॥ प्रपाव्हरमनेना गीगि ले वचनिवाम वः॥ विल
माश्रयतेलसो आनःश्राय लालिप ना॥ लिये कनम
ग्रामे संगतिर पराङ्मा निस्क्ष पारः घामे हान ऊ
लगुणा विहीना य मरसे॥ ननः प्रवृद्धाना पालिवनर
उनानालम घुना॥ कलोन विकासो वरमि रुव एव
मृगाय ले हो माकारी निक्षेन्न्या गृह नानाप घुम्नः
हृनप्रसाना हिलक्रमानारे पावेर्नेतु रू॥ प्रएव सर्व
हृत्तरा स्वा उवमाय वैवमरा ने॥ विप राने मनाय वृ

39

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

...ति॥ ...
...[illegible]...नकेवा
...[illegible]...नामनग्रा...
...रागनयत॥ नवनकेललोप...भवेत्समवं
पायच॥ ब्रलवेमवस्तगावयलेनेयरकनलया ति
स्थ्रनिवियातेतानक्रनेश्रनास्तिनिष्टनः॥ ब्रला
क्राष्टविक्राववद्रावेनानलयाह्नो॥ ग्रसिद्धाउ
व्यानेकल्यप्रनिह्रामननलपुष्यन॥ नासिनि...
रःपिण्यानाग्रनिश्चनलोपनि॥ नौनिनसाव
नाग्रनि...पयलिश्चके॥ नरण...नाय
...यनजन्मप्रेपुन॥ नप...पवलेनयत
...पुत्रगन्ववेनरेननाः॥ नत्तेल...
यत्रवनबल॥ वज्ञान वनवनय...
मायहै॥ यानिकोयत्रन...
मनेयत्रवननुत्राह्नाहंयत्नननच॥ वियनायम
पानुबंधुशरीरविवेननुध्रपनग्रामानिना य॥ न
स्मानिह्रवेनमवेनोरुतनलोयस्वमोविनिधन्ना यः स
भवति॥ आज्ञाराष्ट्रकर्मउ...यनिग्रउ...सान
इसानामपारलोरयो॥ मानाः मयायोमन विवि...
नकेनोलत्रेतोनवे यनेप्रयोलजनमा॥ ॥ इतिः
श्रीवालिकोनीनिष्यात्व समसोध्यायः॥ १॥ ५
मेःप्रेत्रनिनलपःप्रथलिनसमसवहरंगने॥ सप्र
मरपलाननःकपरिलोलोलयनःआष
ताः॥ नासासणविचारवहिनोपुत्रःपिनेकोषिः
लोभम...मनेयकापिणाकलिपुगेयनानन
येननाः॥ ...सालसरनोपिनोगनचुणतानान॥
सोङ्नेनेन...सःयेननेपुत्रननयनरःकालाभ
यथाश्वनि॥ ... किइननेगुणानेभ्रगुपान्नासरेय
नेन्यापराः॥ निःसिद्धायनवरनापिननयेसाप्य
मानीरेजन॥ धन्यानेयननपष्ट्यनिरेशामभगउल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ति नि वृप ॥ [illegible] लवना [illegible]
[illegible] वद वदा गाकस्याः कीर्त्ति [illegible]
[illegible] मनः ॥ [illegible]
नय ॥ परवि म [illegible] पर्व [illegible] नी
ग्रपरथ वृचि [illegible] पनन ॥ [illegible] नि हे [illegible] कः ॥ [illegible] यानन
श्ररतः यावव नयन ॥ विणलविण ये [illegible] ध्म के च मनः
नेचमे शून ॥ भोनन वपनाय नेनिहाः शुमा वि ड मनः
श्रासनात्वे वा सा [illegible] नास्तभा घास्ते दभो ननना ॥ पु
मासक मने पापु [illegible] लान वट भिवो हवका ॥ नारी न स्प
नि [illegible] तन पंक्रोपेनन पशुनि ॥ नो वा हू प्रवास
[illegible] नेन हि मात्रमाः ॥ रामे [illegible] वनि विन स्प
[illegible] तिः [illegible] नालाल नाहि [illegible] पुपना कु
[illegible] ननने [illegible] पालाव ला पाद [illegible] नि ॥ [illegible]
[illegible] सरहः प्रवासासा पा ॥ मे [illegible]
[illegible] यात्समा त्मसासं न ॥ [illegible]
[illegible] भूमा य वेनाल नलेजरा ॥ प्रसभागच्छ
नारी [illegible] प्राताल ननराः ॥ न नः कलिमि
[illegible] नि सो भि [illegible] तिसा पव ॥ ड नमामान मिच्छ
ति [illegible] ने [illegible] मव [illegible] पन ॥ माना हि सूल म [illegible] सा
ने [illegible] नेपनेन कि ॥ मन [illegible] मानः [illegible] नि [illegible] विला
मराला व ॥ श्रह निमयम नाः [illegible] पानामपृणा
ह [illegible] ॥ डन पाना न [illegible] नाम वमानाः [illegible] भय ॥ श्र
तिरा नाव लिवे जो हृ तिमाना [illegible] पः पुनः ॥ श्रुतिः
[illegible] माहपूर्ग्री वा हृ ति सवेत्र गा हि ने ॥ नाभिषेकोन
सस्कारः मिह स्या क्रि पनेव वे ॥ विक्रमाजित म [illegible] स
स्वयमेवन रे [illegible] ना ॥ वाणिक्य मादी भूतक [illegible] मानी
मिच्छ विला [illegible] विपन [illegible] कास्ये ॥ वृष्णा मन नाबासि
पवारि [illegible] नावसना पने [illegible] रि ना नि पव ॥ नानाहरि
डः मपन [illegible] ला भी सेवाः करणेन नया [illegible] येयः ॥ प
रापुका ना भिरन स्या [illegible] प भाव ने [illegible] तिना निव
वे ॥ नायः स्व [illegible] फल मिच्छ काले [illegible] गुण व
लवरनय ॥ विनायन ना फलः मन दी ये ना वी या

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

...यानं...लि...सुनालिन्नका
...ति...लि॥...बभा
...रावबो...लेभैसुलीलाङ्गरणात्पुष्पवं
ऊरेगमानेगपधूगशूराणीनंहनाःपवामेरव
पवे॥पकःपूमालेसकपानहूगायाःसन्नेपव
मिरवपव॥विमाननाउसारिलानुकीननेकपा
विवानेववलेगविसयपा॥ऋपं...लिङ्गनपवं
नाशानविरकभालपलसपलनेपा॥लियप
पलितियमिलेकेयथेनेनहलिनानहनि...पानन्ताक
नेकलेसि...नलिनिननुकयावनानुगाने॥गः
...लेसूदवनगुणाकयपुलनेपावालेनःश्रव
॥गसायेवपयालेनावरेलनियते...वयमानलन
ले॥रत्यश्रेवहसुकयूपहेनमानवलेपा॥...नेम
नेसवंविलसवेपोपूर्लिलवोवकरःश्रपेरःकके
पालिउःऊवलःसबयपोपानलो॥पलेपूवनमन
लेसूतसलिसमाश्रपो॥पवनलेगेरलापापृलाः
जलेवारलविमहे॥पविनसपशुभानेयहूःपूव
गुणाःसतः॥श्रप्रनालिलयोनिवेसपायागाव
भूनेपः॥पलेनेवेवलाभावाःप्रमारसपनेभ
नो॥श्रेयरेनोविनेलोकयोवनेपनमोयर॥श्रं
पियंपुरहलाहिकूमेकोतियाःरिपूरे॥वानेम
पोहनेवावःकोनिपमोवचेनमाः॥हवानेरापे
कोविलसातनारमुउरेन॥भूतनीविनमपाः
लेरावितलस्पायेलारेलो॥वोपिशाकनेवाय
सेरपेनेरपिलिबलो॥श्रेगुवेधेशानेनुलापरि
लिनेरःपुलनेपहनेनस्पापेस्यवापिकावसेवन
रयावलेवाकेविरेन॥केचविवयापीलिवयाः
गऊःलवंमरोपूलालसेवासेनहोलोथमन
लांगनलसूमिहावेऊनेण॥गाजनालिह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]

43

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible] णाने॥ कि॥ णावंजयाहिं
[illegible] नि भयपरूसाय
[illegible]॥ धायंतणा [illegible] बहुत्नेसामं
[illegible] नियनेसयं॥ अनेनेकायाणंधवः साउ [illegible]
भूयते॥ नायाति [illegible] विविदः साउ [illegible] लायवलोविय
न॥ वाहि लोपि सहसोभसमान [illegible] नवन॥ या
पियाघायेसाघ वयायोः साघ [illegible]॥ [illegible]
नः पवनेननवानि साघ मावयेन॥ [illegible]
सवसव [illegible] नायपि [illegible]
[illegible] अनलायनसायानसायेवसा
[illegible] म॥ निवासनेनिवामसनेनं [illegible]
नानसायवयाहिसः [illegible]॥ [illegible]
हृतिरु वाहि सिनेपनिनिसिने॥ पावलकायं [illegible]
रंयनतापियवाहिने॥ वनेनकजोहिलसिजोधिधरु
मपयाघुहे॥ नजोननेयवनेनभुकायेसेवु
हिंमायानवसानिपायं॥ सवसहसानवेसना
नेवेभोविनयानक्रियनेसंपमं॥ लिहूवयानानेप
माननेयेवसवपानसायनेननुपाउ॥ सुनवयानं
हृविरनसपयासूनहृपायेनरणनलोपं॥ पहुहृषे
लिघवनेनमठरणइनाणानं॥ साणिनमवभावनप
रलाकमयपा॥ नुसासभायवनसानिहूडाहूयान
नेयनवरतियपे॥ पसः सनोयवनसमयसालिस
माननयकलसाघसुक॥ नमंगलियवमनः पसव
नजोलिनयवेपरापकार॥ नरलिनयनहिनभुमे
साघेत [illegible] लिनयनसमवेनियुन॥ किनव [illegible] समहसा
पिल [illegible] सपनरसाया॥ रिपवोपालयपणलिव
पुभु [illegible] पानजुयन॥ ननलानेपरगाविसेसपुरुसोयः
[illegible] नेनरपासिहानयरकथनेनसविभवायसाप
सायारण॥ साश्रीयानमरकरानिमसवीयनाउ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]
नतोलसवा ॥ [illegible]
[illegible]
ननः ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] सनो गृहीताः प्रभुनोक्तः ॥ नृपश्रा[illegible]
[illegible]नः पत्नीनेग्राव वेस ॥ सर्वेतपानाने
[illegible]पाः पत्नीनां समक्षं श्रियाः ॥ तद्यो गा विसृपा
[illegible] हितेनो विवेन पुत्रान श्यामसमे न
[illegible] नेसवनि ॥ श्रीगुर्विप्राव मानन तनेव
[illegible]नेनान ॥ नन श्रीगणाकार्य [illegible] मनागुप्तचि
[illegible]न ॥ नन श्रीस्वनत [illegible] हिषि
[illegible] ॥ [illegible] नन रागेन ना [illegible]
[illegible] निर्वेन [illegible] शुरु पार पान ॥ [illegible]
[illegible] सपतिन [illegible] श्रुनाय काः ॥ [illegible]
[illegible] न सपतिन सपति [illegible] श्रुनाय का ॥ पिना
[illegible] मारे मनोरथ [illegible] वने ॥ रवेनिवाउ
[illegible] नेश्र [illegible] हिते ॥ प्र[illegible]
[illegible] धानना [illegible] न सखेने [illegible] काम
[illegible] नमथन लज्जादेप [illegible] नवगुनने
नः [illegible] हृदय पर प्रेक्षक [illegible] वं ॥ पूर
[illegible] स्वपरदृष्टरस च ॥ [illegible] पिति
[illegible] मपदृष्टपः ॥ मानभंगकरीक
[illegible] नायने ॥ [illegible] जना
[illegible] ॥ पती
[illegible] न कन्या प्र [illegible] विने
[illegible] मानं [illegible] होनवि
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] भिः परिवृते [illegible] या
[illegible] नापरनापुव नियने [illegible] ॥ ध्यानं
[illegible] ॥ ध्यानं चन
[illegible] ॥ ध्यानं [illegible]
[illegible] नने ॥ ध्यानं [illegible]

[illegible]

कविहृवः सीपुरविवत्तानि[illegible]भिमौलनि ॥ वि
मृगांघ्रमकदम्बेति निलैति निला निकापपमादे
हुलिलानि शखाक मृलेः ॥ मन हिनेकाविमपादि
पृवीनवाचोपमिनमाहृ वलाइनिकाघिमत्री
नो ॥ पाविविलालनरनाकहिपालेः पाघा
हृयोपितिमिलाहृवलः घृमा ॥ नपघाहि
नामलिचुनमखगनालिकुपन गाहिनात्पिव
पतालिलिष्टुनभकपयामिपाकेगुर्वि ॥ समा
रेखादिकापवाह विगललाना मनेविवन ॥ का
नानालेमुनत्कपासहमसप्तानान वात्ताम:
पवापवथलानानोवनेवमनेवान्कः विपा
लिमावाद्विपनेमावनवापुहृदं ॥ शंवसपावक
लेः पापांसुथापवपालिलिमिर ॥ पाड्राभगभः
यालोनावः शुघापापेनिः स्वहः ॥ वेपापमाढे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]
[illegible] नानाव [illegible] वदवनागपवयगुः कीडाय [illegible]
मेनमव्रनत [illegible] नन॥ [illegible] पवर्ग [illegible]
वमकामममा [illegible] नेनि॥ सु [illegible] निः [illegible] ॥ [illegible] तवनःपा
नवेयण॥ पनवनेउवव नुनाः पनानाामेयवायुवः
श्वनाःकमेतापमेपेमेश्यानेवमुनाद्वयः॥ तिद
गयवतिनायानवमानारेववन्नेवि॥ ननयाकु
ननाधीनापुकालिगननुमनेः। समुत्तनाय
[illegible] श्रीतिनामपः पनिः॥ सपववपालिनारः
[illegible] नमपलमीविनमवेन॥ [illegible] पनीमेत्रेपन्नी
गनेपनानेपवव॥ स्वः सृवेनपनो [illegible] पवेनाम
[illegible] न॥ निकाविलमपुनेवगनेवमने
[illegible] नमम्बदुरोम्हहमयीविनेन। किःपु
नेनुहु [illegible] मावनापुतत्स्य किनीवितनासिपु [illegible]
[illegible] नम॥ करेकपोपुविलोलाललला द
[illegible] नेनल॥ मरणायाननिविज्ञानेनानविज्ञान
यावनं। ॐ [illegible] कीटरवानसतरावनिषुक्तिनवः
ने [illegible] पवरवासपवेतुन्मनचार्पनः। नावझपची
नेनव्बीष्मुःयानेॐलोत्रनः। श्रुमानयचानेनाव
[illegible] थीनकसाविन॥ नगनःपनिरर्थिनांहिः
[illegible] मनमायानः॥ कोनोधिकनरलसाप्रीयी
[illegible] नलावव॥ लजावनः ॐलीनसावित्रेपाव
[illegible] मन्नतः॥ कारुपगावनेसोववावककनोतिमना
गाने॥ मनाषेश्वयप्रविनारुदुगोनिभूमयःमो
[illegible] नामवमानः पदेपवे॥ मनःसनो
[illegible] नेमापकलौलिनीनले॥ उनग्रावनि
मग्रावधपपतिननमननि॥ ॐलेयालेनसनो
[illegible] नानेप्रतिवल॥ [illegible] ववप्रमवः [illegible] शरि
श्री [illegible] विनयपनि॥ कुहुम्बविनाॐ लि [illegible] खं ॐ
लेवशीलनवगुमाञ्चमवे॥ श्रपकॐ [illegible] लिंकेला
रवापः प्रयानिननेवसमवीनाषा॥ उलज्यानि

47

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible] ना मा न
[illegible] ले स ख नि बा स्व रे
[illegible] नि ति न वे गो लि स र्प
[illegible] कवन॥ [illegible] नि नि ते [illegible] प
॥ नुणनुए ने षु [illegible] भ व नि नि ते [illegible]
भवं नि रा ग्रः स [illegible] न ता य प्र भ व [illegible] न रा: सु स्व:
मा स्रा ग्र भ व [illegible] ॥ [illegible] नि न य [illegible] ने ह सि र:
सा वि ल ता [illegible] ॥ भा स्रा नि व पु [illegible] भा श्रा [illegible]
ना: सु का ष्टा नी ॥ व स भा न स्व नि पि लि नी नि ब न्ने
ना: नि वि दि त्र स वे [illegible] भा नि व का मि नी [illegible]
हे श्रा वि ति पं का कि नी ॥ [illegible] ष ल वि व प [illegible]
नि ल नि वि रुं [illegible] ने॥ भा ना भा नि व मे नि वि:
[illegible] सु न: श्री [illegible] मि न स ने॥ [illegible]
[illegible] का नि न [illegible] वि प न भा व [illegible] मा
प वि मि ना क नु ना वं नि [illegible] भो वृ: [illegible]
[illegible] ॥ मा प शा [illegible] न म [illegible] न नि [illegible]
पा ल पो ल न मा [illegible] न व [illegible] ने नि
वि ना ने व [illegible] ना ना नि वि क न न प [illegible]
व या [illegible] ना ना नि [illegible] प्र म व [illegible] नि ना [illegible]
वे वा नि क वि क मों [illegible] पा ल॥ [illegible] नि [illegible]
नि पु वा भा र स्वा नि [illegible] ॥ [illegible] ल नि [illegible]
म [illegible] ने वं॥ [illegible] नि व [illegible] ने
ने नि क रा व न॥ [illegible] ना न भा नि वु ल भो न [illegible]
मा पु स ए ल ग ना न नि भा नि नि [illegible] ॥ न [illegible] न
भा नि [illegible] मा: व [illegible] नि [illegible] न भा नि [illegible]
[illegible] नि व [illegible] ॥ [illegible] नि [illegible]
[illegible] न मा [illegible] व व ना न कि ल उ [illegible] ने:॥
ना [illegible] नि ल व य नि सा न्य म नि: [illegible] नि ना [illegible]
[illegible] नि न: य नि पा ल य नि॥ [illegible] व [illegible]
[illegible] स [illegible] पी भु न:॥ स ल [illegible] नि
का न ष्टा नि ल [illegible] उ ला [illegible] पः॥ [illegible]

48

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लि[illegible]॥ [illegible] रक्षालयतो [illegible]
[illegible] वद्दववरागकारणुः क्रीडायूपपि [illegible]
नोलं स्वाधय [illegible] नः॥ [illegible]
नमूननऊथातिक्रि[illegible]नि[illegible]॥ [illegible]दीकृः
गुणायुनाथ्वाला[illegible]ऊलोनेष[illegible]ऊलेगुणान्यपाने
पायान्तरनवागनापुः[illegible]लोगुणाषद्गुण
पासवनति॥ सवीपिः[illegible]लनलेपिना
पूलोललक्ष[illegible]लना॥ मेकस्पूनकणानानूणको।
लेलयानिवननूणालेविने॥ वद्धिः प्रीतनलन
ह्रैसिलरूननामाधानिन[illegible]स्वपारूलोइ
लेलिनाइनवसनिनेरिधायनसेनमः॥ व
लालालिखसापवसाकियाज्ञ[illegible]नाप्येनेमल
कूवाबूरेनमनांतपेइननरांधिलसूसू
लेगना॥ नुत्राणसमझूफलेविधतिने[illegible]
गुस[illegible]नाभरः॥ प्रावोपासालियत्रदेषद्रुने
[illegible]नदेवघ[illegible]पदः त्दन्यिधोगःपरेणापि
नमसिद्धिद्धा[illegible]क्राम्मना॥ सूलेचबूढरघकादो
रूपालाउमरूणोधः॥ सभूलज्ञानमधूनःप
राउदयालिमालिनः॥ प्रथमिनापनम[illegible]ःनेत्रा
सूरूरणाविः॥ यियतेवावरेकापिरिपूला
वेनेऊनःक्षियं॥ पुगाल्लिक्षानिसामहिसेरि
केपासरहिबो॥ मानोबन्धःपावताऊः॥ व
रूपोपिनोवति॥ नसानननिरेवालजनन
लेसकाहिलः॥ प्रसेपालयनःकेबिदर्पना।
निलिप्ताग्ताः॥ यहक्काशाहूबबुमःमलाये
नम्मकेबले॥ नल्यापरायेबमोत्रुमाजुमते।
विराणपतो॥ हिमापुमापुग्रमनेनेहःहिम
सारफलं॥ प्रकृनाहेलयापारसृबूर्थ
निलिहिवा॥ कर्णकारमनालवाकेनिरूपा।

49

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

...नृग वेद्रकास्
लोके... निश्चरन्तणम्हसपुणो दे
गाश्रितः ॥ सामवाः सकोपस्यन्त सप्रमत्ते
दीपकः ॥ यन्नप्रस्रावस्तस्य पुणोधलोकार्व
हवः ॥ वालिवन्नालिकाम्बिद्कप्ठदविष
तियथुपाः ॥ ग्राधिननभानेरानेनं भुविनैः ।
किनप्राप्यते ॥ ॥ ॥ ॥ इतिश्रीनीतिप्रका
शिकायां अष्टमोध्यायः ॥ ८ ॥ ॥ ॥
समाप्तोयं राजनीतिग्रंथ
॥ शुभमस्तु ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible] ॥ [illegible] लयमा [illegible]
[illegible] देवदेवसाधारणः कीर्त्ययन्तु [illegible]
[illegible] मतः ॥ [illegible] यर्थ [illegible]
वेनमोभगवते [illegible] त्रिनेत्रे [illegible]
योगयानोहिमशैलाग्रे देवदेवं [illegible] ॥ २ ॥ व्यासमो
मकाशुमासीनं पप्रच्छ मुनयस्तदा ॥ ३ ॥ मन्वन्तरे
ह्यतीते मे वर्तमाने कलौ युगे ॥ योगाचार्येण व्यासेन
दृष्ट्वा सनवतीस्तन ॥ ४ ॥ तत्र [illegible] मुनिभिः शौनकादिक
व्यासोग्निसंनिभः सर्वे ते महात्मानः श्रुतिस्मृतिवि
शारदाः ॥ ५ ॥ [illegible] सर्वे पमते नानामि सकलाथि
नो ॥ ६ ॥ व्यास पितृवंशे [illegible] मुनिसत्तमः ॥ ७ ॥
नन [illegible] नयः सर्वे पमनं [illegible] तिगः ॥ व्यासवपु
र्दृनः [illegible] वर्णा [illegible] काश्रम ॥ ८ ॥ नानावृक्षलताकी
र्णे नानापुष्पोपशोभिते ॥ मृगपक्षिनिनादाढ्ये देवता
सनाकुले ॥ ९ ॥ [illegible] गीतसमाकु
ले ॥ [illegible] पराशरे ॥ १० ॥ सद्यो
[illegible] निगमानू नं ॥ कुर्तां गलितावै
[illegible] ॥ ११ ॥ प्रदेहि लिङ्गं भिवा [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] महा
नि ॥ १२ ॥ [illegible] गनेनुया पासी नो मुनिपुंगवः
[illegible] ॥ १३ ॥ कुशल
[illegible] नः [illegible] ॥ यदि जानासि मे भ
क्तिं [illegible] ॥ १४ ॥ पर्मेकयाय मेतानहृत
[illegible] ॥ श्रुतो मे मानवो धर्मो वाशिष्ठः काश्य
पस्तथा ॥ १५ ॥ गार्ग्यो गौतमश्चैव तथा गोपालकस्त
व ॥ आत्रेयो विष्णुरविनाः [illegible] गिरसास्तथा ॥ १६ ॥
[illegible] नयस्तु हारीतो याज्ञवल्क्यः [illegible] ॥ आप
स्तम्भकृतान्धर्मान्शंखलिखितस्य [illegible] ॥ १७ ॥ धर्मरा
[illegible] ॥ श्रुतिस्मृत्यङ्गवास्त
[illegible] मानव [illegible] ॥ १८ ॥ न [illegible] पुमा [illegible]
[illegible] ॥ धर्मे युगत्रया वा [illegible] न [illegible] क
लौ युगे ॥ १९ ॥ [illegible] सनातनं [illegible] किं [illegible]
वद ॥ व्यास [illegible] पराशरः ॥ २० ॥
[illegible] विस्तरे ॥ [illegible]

मेढः श्रे... ॥ ... के लोक लोकै दृ
...ने सयस्य ॥ योनिस्थानि सर्वाणि वाःदी
यंतेष्वभवंति च ॥ १९ ॥ न केचिद्देहकर्मणो वेदकर्मौ
नश्रुवः ॥ न चैव धर्मस्मरन्कल्पान्तरान्तरे ॥ २० ॥
अन्येष्ठैन युगे धर्मा त्रेतायां द्वापरे परे ॥ अन्ये कलि
युगे हृणां युगह्रासानुरूपतः ॥ २१ ॥ तपः परं कृतयु
गे त्रेतायां ज्ञानमुच्यते ॥ द्वापरे यज्ञमित्याहुर्दानमे
कं कलौ युगे ॥ २२ ॥ कृते तु मानवो धर्मस्त्रेतायां गौत
मः स्मृतः ॥ द्वापरे शंखलिखितः कलौ पाराशरः स्मृ
तः ॥ २३ ॥ त्यजेद्देशं कृतयुगे त्रेतायां ग्राममुत्सृजेत् ॥
द्वापरे कुलमेकं च कर्त्तारं कलौ युगे ॥ २४ ॥ कृतस
हृतयुगे पर्म त्रेतायां द्वापरे परे ॥ अन्नेनैव कलौ युगे
...हासानुरूपतः ॥ २५ ॥ कृते तु भावप्राणादेव चेत
योसर्गो नाद्वेत ॥ कलयुगे तु अन्नमादाय कलौ पतति
कर्मणा ॥ २६ ॥ कृते तु तात्कालिकः शापस्त्रेतायां दशभि
र्दिनैः ॥ द्वापरे मासमात्रेण कलौ संवत्सरेण तु ॥
अभिगम्य कृते दाने त्रेतास्वाहूय दीयते ॥ द्वापरे या
चमाने स्यात्सेवादानेन निष्फलं कलौ दानेन वर्त
या ॥ २७ ॥ अभिगम्योत्तमं दानमाहूयैव तु मध्यमम् ॥ अध
मं याचमाने स्यात्सेवादानेन निष्फलं ॥ २८ ॥ कृते चा
स्थिगताः प्राणाः त्रेतायां मांसमाश्रिताः ॥ द्वापरे रुधि
रं यावत्कलावन्नेषु संस्थिताः ॥ २९ ॥ धर्मो निर्णयाह पर्व
ण म पर्वदानं तेन च ॥ निलासौरेणगानानःत्रीमि
स्त्रपुरवाजिना ॥ ३० ॥ सीरं निवापरिहोत्रागिणगुरूष
त्राप्रणमयति ॥ ३१ ॥ उमार्यश्चप्रमृ वनेन सीकालियुगे
सदा ॥ ३२ ॥ युगे युगे च ये धर्मास्तत्र तत्र च ये द्विजाः
तेषां निन्दा न कर्तव्या युगरूपा हि ते द्विजाः ॥ ३३ ॥ यु
गे युगेषु सामर्थ्यं शेषं मुनिभाषितं ॥ पराशरेण प
त्योक्तं प्रायश्चित्तं विधीयते ॥ ३४ ॥ अहमद्यैव तद्वीजं पूर्व
स्मृत्वा स्मृतं बीजमिव ॥ ३५ ॥ चतुर्वर्ण्यसमाचारः प्रायश्चि
त्तं निरीक्षते ॥ ३६ ॥ पराशरमतं पुण्यं पवित्रं पापना

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible] ... लयनि ...
... वद्दवसाणपारगाः कोडायमपि
रत्ने विनितेत्राणि ... ः॥ ... पवं॥ ... पीव
तवणमविपमोणमावारपमवोलके:॥ प्रावार ...
जौनेभवेयमीयपरिसुवल॥ ४४॥ षटकसेनिनोनिवं
वन्निमिषिसुनक:॥ ने ... वनपात्तिभाघट्टक ...
हिदेहिने॥ ३ ॥ सेवो ... सुद्धे: पाणनपव
या॥ वे ... देवन संग्राम ... सातिपिनगंसक्रम:॥ ४५॥ र
रायुनि ... वानोवे सवदेवा ... प्रग्रन:॥ प्रतिपनेवि
नाने ... नेनिपापूपेमागन:॥ ... विवेटयेत्रसेनप्र
के ... नेणन स्वाध्यायवस्रानेव॥ ह रयंकलयेत्र
सिंसव ... पोहिस:॥ ४६॥ प्र ... पिसनभग्राणोगृ
लान्ये ... नेवनेने॥ हृवंदेवान गुर्णो ... सपमे:परं
पुरवं॥ ४७॥ निकग्रामीणमनिपियविमृसांगानिकं
यो॥ प्रत्तिभयमाणनोयसाव्र स्मारनिपिहचंनो॥ ४८
श्रमवे: सर्वलो विप्राहहवें ... निनसपा॥ वेसम्भास
रेना नियनेर् हव्योहिनेविने॥ ४९॥ वेसवदेवन संग्राम
भिदनकेगृहमागणे॥ अहसवे सवदेवानोभिदकाय
केवयेन॥ ५०॥ यतयेहिजलेहघाङ्गिनाटघासन
नेले॥ नसद्वमेमागान लयनत लेसागरोपमे॥ ५१॥
यतेन ... ब्रह्मचारीवपज्ञनस्सामिनावुभो॥ तपोरत्र
रत्नाद्वभोक्तावांछाय एवरेन॥ ५२॥ वेसवदेवन्ह
मरोघा: स्फाटोभिदयपोहिते॥ नवभिदक्षुलोदो
षावैसवदेवोप्याह॥ नि॥ अकुलावा वैसवदेवनये भु
जिनिहिजानपु:॥ नेषाममन्नेनभुंजीनकाकयोनि
अनिने॥ ५३॥ ... विहाननयो भुंक्ते योभुक्तेर दिण
गुड: ... सामहेरदोसिभुंजने॥ ५४॥ य
नयेके ... नेरत्नानामूलब्रह्मचारिणि॥ वोरभ्यो पभ
यरत्नानामपिनरकेव्रजेत॥ ५५॥ वोरे ... रहिवणार
लं:शत्रुदीपिनूयानक॥ वेसवदेवन्संग्रामेसोतिषि:
स्वर्गसंक्रम:॥ ५६॥ कांछभेरसहसैन्य ... तंकुंभशा

॥ श्रीगा [illegible] नवनेनै ॥ ५३ ॥ नि
नेसना त्रनिस्य [illegible] वेचो ॥ नानशृ [illegible] नि [illegible] वि
[illegible] हैनि [illegible] रपावग: ॥ ५३ ॥ श्रहट्टत्रत्रपानेन [illegible]
सविल्लि ॥ [illegible] नि [illegible] समकालव ॥ वा
पयोत्सवधीजानि [illegible] ॥ ५४ ॥ [illegible]
वापयेहीजेसपाठेवापराडे ॥ [illegible] वेनपाठेनप्रविः
मैनेवनसपानि ॥ ५५ ॥ [illegible] यन [illegible] लनेष [illegible] त:श्रव
एवान ॥ नेनिनपर [illegible] नानिदिनिय [illegible] नः ॥
नश्रीः कुलक्रमायानी [illegible] समनेलीवि [illegible] ॥ वेकला
क्रमभुनीनेवीव [illegible] पठ ॥ ५६ ॥ [illegible]
नमूलस्तेदेनकारयेन ॥ मालाकार [illegible] नेकय [illegible]
कारके ॥ ५७ ॥ लोहक [illegible] यारने [illegible] नेपालेने
वातिन्येकृषिकमीणिवे [illegible] निकदाः न ॥ ५८ ॥ [illegible]
लाहिवश्रुशबापरायने [illegible] कीतिन ॥ [illegible]
कैविन्नवेनसलनिष्कले ॥ ६ ॥ प्रविक्रिय [illegible] सम
भवसानभवलं ॥ प्रगम्यामनेवेव [illegible] :पननिपव
पा ॥ ६१ ॥ कपिलादीरपानेन [illegible] गामनेनव ॥ वे
दानविंवारेण शूद्र [illegible] नने [illegible] व ॥ ६२ ॥ ॥ ॥ इति श्री
पाराशरीयधर्मशास्त्रे ॥ कलियुगचानवें एवं विचारकथ
नेनामप्रथमोध्याय: ॥ १ ॥ ॥ ॥ अत: परंहृह [illegible]
चार: कलौयुगे ॥ धर्मसाधनं एवं [illegible]
गते ॥ १ ॥ सप्रवत्पाम्पहं सर्वपापापहारप्रणीदितं ॥ सर्वपाप
क्रूं [illegible] निवारकं ॥ २ ॥ धर्मकर्मनिरतो विप्र: १
कृषिकर्माणिकारयेत् ॥ हीनांगवाधिपनं [illegible]
[illegible] नवाहयेत् ॥ ३ ॥ [illegible] जन्म [illegible]
न ॥ वाहयेद् [illegible] वसमा [illegible] वेन ॥ [illegible] गाय
त्रीचाभ्यासे [illegible] पापपनुत्रये ॥ [illegible] वेन [illegible]
[illegible] ममपसेन ॥ ५ ॥ पक [illegible] विशाभोज [illegible]
कादिन: ॥ [illegible] पानेरेपने [illegible] मजिते: ॥ ६ ॥ नि
वे [illegible] पमस्तत्रनरो [illegible] कारयेत् ॥ ६ ॥ निलाग्रसा: ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible] ॥ [illegible] लवणो [illegible]
[illegible] रुवसरागारवणाः कीडा [illegible]
नोविकीया [illegible] मनः ॥ [illegible]
हृत्ति [illegible] का [illegible] सेरणयन्तोपम
णया वानो समासमुयान । पकाह्ववनदामोतिमकढि
सहलागवन ॥ ८ ॥ अपरः पाठः ॥ सवत्सेरणयनं
गोरा केवलेः आणिनेस [illegible] का हुवन [illegible] मोतिमकढि
हृदलागवन ॥ ९ ॥ पा [illegible] को वाय: हृकर
वालमा । अरहंतका विकाद्ववसवेनेनसमासम्लाः
[illegible] माणे वृली [illegible] अमाजेनी पवह
[illegible] निहनिहरणने ॥ १ ॥ सकालाखिलामसी
[illegible] कोटकान [illegible] लयतेन ।
[illegible] वति ॥ २ ॥ [illegible] नातोभ्यातसि
[illegible] । सचेतः सवणा [illegible] नेविर
निहिसाने ॥ [illegible] नानविमा
ति । [illegible] विमाणं [illegible] लिपाने ।
[illegible] वेसण
[illegible] लपकान ॥ विक ।
[illegible] नः । भवतलाप
[illegible] केरुने । चन्तणमपिव [illegible] नामेघ
[illegible] नः । [illegible] मिनन्मनोमर
[illegible] नसहलनके
[illegible] नसहलनके वैसणः प
[illegible] नसहलनके । मासेनेकेनसूहु ।
[illegible] नसहलनके ॥ [illegible] विमाणामाणेः
[illegible] । [illegible] वामे [illegible] ।
[illegible] । [illegible] हेन [illegible] हेन
[illegible] । [illegible] हेन [illegible] मासेन [illegible]
[illegible] । [illegible]
[illegible] । जन्मकर्म ।
[illegible] । नामधारकविपस
[illegible] । [illegible]
लीनव [illegible] [illegible] भालिस [illegible]
नवोदकं ॥ अपरः पाठः ॥ अनासिद्धामाहि ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible] कि शुभ

रस्थानत्रय॥ [illegible] योगः पृथग्लग्ने स्थि

केतना॥ जन्मनि च विपन्नो वा भवेन्नेषा च सूतकं॥ स्या

च लग्नसूतकं गोत्रे च वर्षे पूर्वे भवेत्॥ सायार्द्धे

मामोत्तिपंच रेवा [illegible]॥ धन्वार्थे स्थान त्रय स्थाने

षष्ठेतिथाः पुष्टिपद्मे॥ [illegible] न रत्न शुद्धिः सम

चरिन त्रय॥ पंचमि पुष्टे षष्ठे प्रोक्ता [illegible] यसगो

त्रिणः॥ पितरो च स्ममो अन्यो [illegible] पितृ पुत्रकः

लानान्तरिनु मार्गे [illegible] स्यात् सूतकं भवेन्न॥ अगोर

गिरिमन्दे शीतरे [illegible] न्तेषु च॥ वासे पेन पुत्रे न्या

मेसद्यः शौचं विधीयते॥ रेणुगान रम्ये नः कालि स्त्र गो

त्रः स्पृशते यदि॥ तत्त्रिवृत्त ममो रात्रैस्त्र स्नानाद्बु

द्विर्भवेत॥ आविपद्ता त्रि रात्रे स्यादार्पत्ना [illegible] प्राहि

णी॥ ग्रहः संवत्सरा द्वर्च्चा [illegible]ः शौचे विधीयते॥ नो

वेना लो यदि मृतो [illegible] मृतो बाला यने यदि॥ सच

ले सूतकं मात्र पित्रादीनां त्रिरात्रकं॥ अजातदन्ता

ये बाला ये च गर्भाद्विनिःसृता॥ न तेषामग्निसत्का

रो नैषां चैवोदकक्रिया॥ यदि गर्भो विपद्येत स्रवे

त्वापि योषितो॥ यावन्मासाः स्थितो गर्भस्तावद्दिने

सूतकं॥ आ च तत्पौरे दैवत्वाः प्रानः पंच म[illegible]

या॥ ग्रन [illegible] सूतिकं [illegible] सूतकं भवेत्॥ प

सूतिकाले संग्रामे प्रमदो यदि यो विषो॥ जीवत्सा

[illegible] नैनान्हि सूतकं॥ राज्ञा चैव समुत्प

[illegible] सूतके॥ [illegible]

[illegible]॥ [illegible]

ला॥ जन्मना च विपन्नो च यस्या [illegible]

[illegible] ग्रावधिः कालः सूतकाशौचे विधीयते॥ [illegible]

सः [illegible]नः [illegible] विशेष्यशौचे कदिने॥ जानं

[illegible] स्नानमूढानवे [illegible]॥ आग्नि संस्कार॥

पतेषां त्रिरात्रं सूतकं भवेत्॥ आरतं जननान्स्यः

[illegible] नैषां के सूतने॥ त्रिरात्रम [illegible]

56

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible] || [illegible] ल्लयनो [illegible]
[illegible] नेदवर्णकार्यः कीटा [illegible]
[illegible] सः || [illegible]

रोरमृतः पंच || गाभोयारोविपद्येत दशाहं सूतकं भ
वेत् || गोवंजा नो विपन्ने सद्यएव विशुध्यति || स्त्रीणां
शूद्राणां यान्नानास्कार्य [illegible] शः क्रमात् || सद्यः शौच
मप्रेताकारे वृकः स्यान्नित [illegible] || शुल्कवाशी शूद्रेयवड्
यतेवहूनां यानेः || सपिंडेनेव दत्तेन न तेषां सूतकं भ
वेत् || [illegible] गृहेयचड्य्यतेवहूनां यानेः || सपिंडे नै
व दत्तेन नैव भुंजीत सूतकम् || [illegible] नः कारुकाव
[illegible] नाम्न तत्पा || राम [illegible] नः श्रोत्रियाश्चैव सं
गः शोचाः प्रवृत्तिनः || मद्यतीमे [illegible] सूते सुग्राहितान्मि
[illegible] नः || रातोवसूतकं नास्तियस्य जंति द्विजातय
[illegible] नानाजं [illegible] द्विजः दशाहे शुद्ध
[illegible] पिताशुचिः || [illegible] प्रसविनायस संपर
[illegible] नः || सूतकेन भवेत् [illegible] षडंगवित्
[illegible] लिग्रामणे || न स्नात
[illegible] सपिंडेवनेयेद्विजः || सूतोयदि प्रसूतः स्याः
[illegible] पिता || [illegible] ल शुद्धेनलघुगे
[illegible] || सर्वेषामेव मातॄणां मातापितरो ल हि
न के || [illegible] मातरेव स्याउपस्पर्शनात् पिता शुचिः || या
वे सूतक [illegible] सूतकेन [illegible] भवेत् || यावेन शुद्धते
[illegible] नेयावः || [illegible] हेतुवयते तु संनरा
[illegible] सूतके || सर्वेषां कालिमतां नव भोजनं तं मनुरब्रवी
त् || [illegible] नदेवेत्तु न मरणजन्मनी || तावत्स्या द
शौचं विप्राणां [illegible] निकृतिः || शुभाभ्यामेव वित्ता
[illegible] सूतकं नेवदोष कृत || एकेनेव परित्यातेभोक्तादो
षमवाप्नुयात् || [illegible] नित्यमेदानेष्यानौ विप्रा नित्य
[illegible] || [illegible] विभिर्गृहे ग्रामकाले शुद्ध्यन्ति || नृणाम
[illegible] निलमि [illegible] सह || नृनिकासां [illegible]
[illegible] नः || [illegible] गीर्विप्रानायेना

णोगोग्रेषु च॥ श्राद्धेवैश्रावयन्नानामेकानां च हि नृ
तके॥ पठयत्पठन्नोवीरः सातुभिःपरिवेष्टितः॥ श्रद्धयायोवृ
भक्तोलोकान्यारैज्जीवंनभयते॥ पर्वस्वापोर्णमासुवामसु
रणेवाविशुद्धेवृक्षमूले॥ ... शृरुषोलोकेसूर्योस
ज्वलभवंतिवै॥ निश्चलं ... लद्धमीस्तेनवापिरा
मनाः॥ नणाविधसंपरकायः कार्त्तिकेमासेणांए
रणेवैपतितानांसम्यक्पापादितिपराकुलाः॥ मीदेप
रेविश्वतानाग्रुलसत्त्याभिनायुते॥ यत्त्वस्मेसत्त्व
वृविद्वेनेषुसमस्तेन॥ पनितवालोपर्वगाधेनरात्ते
कृतभिःसप्ता॥ लक्षनाटरेपोकपिसूत्रमेनसूक्षहे
शृप्रविश्वानुवत्रौ॥ नत्मोमयानेगाहअन्वेल्यावग्राम
यतेप्रविशंतिमलाः॥ सर्षुभेपहिंनेत्सूर्यत्वानाश्रुत
तिभास्करः॥ एवमेवंमलंभिन्नायवश्नाजीयत्वति
श्रुनाचंत्रालक्षीनेयवैः तिच्छिजेयामाः॥ पलेप्वेयंत
फलसानुसृवोलभंतिते॥ श्रद्धयोत्तमरुचेप्रेमोभू
नेवत्र्मलणं॥ दष्ट्रान्यावधाहिंसाचमणएयाभेनुश्रु
त्वति॥ नतेवामश्रुभंकिंचिन्नापवाभ्रमकुमेरं॥
जलांचगाहनंतेनोसपःसोचविधीयते॥ श्रीनेसूर्यनेत
यःसूर्यकालिलोतानुरवेलः॥ नयंतेवायुगाद्वेनोदि
गत्रयस्थविधेवेन॥ द्विजातेत्तननःस्लेंनदीगाचांस
श्रुद्दगो॥ प्राणायामशतेनेकृतंनाचलतेप्राच्यश्रुविधवेन
विलिप्ततेयदास्त्रेरेकंसतुपापियते॥ नरापयत्ति
वैपुरैतोतेयश्वविधेविरेः॥७१॥ इति श्रीपाद्मा
रवोमैपर्वणिमास्त्रस्नानकनिर्णयोनाम॥२॥ ॥
॥ श्रीतिमानारंनिकोपान्वेसहायदेवाभपत्रे
यःसार्ववमर्मनृनेशुपाकृतिलसनविश्वे॥ सयकोति
नमेहूर्लीसेपनेमासिमर्जति॥ सवेत्रवसमहरातिनेर
कंचयुपासते॥ येवासारुहृदेफाराद्वियेवाग्रेसम्रसाय
कौः॥ सर्वैतेपापसंयुक्तानेकोवत्स्यामिनिष्कृति॥३॥ वि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तत्तवकरा॥ ... लवणेतोपि

... वदेवसंगावसगुः कीडसंस्मपि ...

येहंतुपनणवृहेत्स्तनः प्रवत्तवोत्तेयन॥ नृतोप्येमो

यवसैवात्तिनतसेरकारमहेति॥ पा॥ तोमिहेतसूतोह

पंअास्तोननतेवातिते॥ मेसशांतिनयेविशालेपिस्तु

हेहभागिनः॥ यत्रिताय...गासुवेवंचानेपापामो।

वस्त्राः॥ नमस्कृत्वेनसु...कूरमालितणएवंव॥ सुरु

सुलारितिवेस्वापः सुरुस्तुलपयात्येवेन॥ सुरुस्तुलस्तुतेपी

नोवासुभत्तोरितनवंयं॥ सुरुपलतेपयेवस्वापःत्रिपलत

पयःपिवेत॥ पलमेकंपिवेत्सतिः नमस्कृत्यसुवाहने॥ ८

इतिनमस्कृत्वे...विशावरणलक्ष...वर्णीवामचाति

नि॥ सूत्रैःसूत्रैष्पूर्वमेवानायोचेनेत्सकक्रिया॥ ममया

नस्थानेसामान्येतेयद्गोलयत्नतः॥ इहचविधिपिवंयेदं

जुबोलिपितारक्तक्रिया॥ शुक्लपतिनोभायोयसवनेय

योरितमेन॥ सप्तृतोलभतेसोलवेयवोवसुनःपुनः॥ स

स्तानायाश्वभार्यायाःसेनिदिश्चेनगच्छति॥ पुरुषोवा

लहत्यायाःफलमासोपिसेशायम॥ सप्तमोमावरेवि

सुःपृतिनःविषुकामनः॥ पवाहवारसप्तवापंदश्या

हमेयापिवा॥ अश्वमेधसहस्रेकवानावहत्यनुतन्नस्माः॥ १

त्रिरात्रंप्रेषमेदेहितीयेकृष्णमावरेत॥ नृतोपपातने

गोकस्यकृष्णसोनपनयो॥ वनतंसरमारात्रंस्थानरावकःप

वेमसूतेः॥ कृत्वाशौद्धायपलेषुसमभेवंदेवद्धयं॥ १

अथेमहाभेचेववधात्मासंदहंकुमावरेत॥ पदतसोल्याप्र

माणनस्ववर्णोनत्ररहितांणं॥ अतस्सोलानयानारीभते

रंतोपनिषृति॥ मामृतनरकेयांतिविषवावेपुत्रीजेता

रविहृवायितेसुविभतोरयावसन्यते॥ सानुतानायते

वालेन्दुकरेवपुनःपुनः॥ अष्टूष्टापेहभतोउपोषत

वारिसी॥ नैनलेगाबसांगच्छेत्सानारीनरकंवजेत॥ १

नोवतमतोरियानारीउपवासंव्रतंचरेत॥ आयुसंहरतेभ

तेःसानारीनरकंवजेत॥ कृतेभर्तारियानारीउपोषव्रतंव

रेतो॥ भर्तोरएखच्छेत्सावेमृतास्वर्गेवगच्छति॥ बापवा

नोवेमानानांनउयोश्वववःप्रभो॥ गर्भपातेवयाउया

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

न्नूरेभाषणञ्जविन || पय... ...न्याद्यहित्तुणग
ध्यानले || पयाव्हिवेननस्यावेनस्याहस्रगोविधेयते
नवहीणत्तूयत्येतोनञ्चवेतोएवासके || पतिक्रुसूय
येघातनेनस्वर्गमहोयते || पञ्चवेचाणूरेनातिगोत्रेतो
वनिनिक्षिते || नयेवत्तुविसी...मपिण्णःस्याघ्रनेसूले
नकार्यमत्रनातिवनामिहोत्रम...विवा || सेवेक
कमेवणलःनस्यधर्मःपरणुवः || परधर्मोक्षिपात
ज्ञानविणनोरकांक्षिवः || कन्यापतिसर्वभतोपमायः
त्येनवाच्यते || नामिवाञ्जरतेपत्नमामिभोनेनात्र
नः || कुरसकमेवणलसमस्यधर्मःपरणुवः यथाव्वा
नान्हेवीनयसदेवेघ्रतेहिति || देविणोहेवृमेदीजेद
नवीनोपलमाघूयात || नदूनरस्त्रियोनाभोवोदूनो
ऊणगालको || जोवृद्धिरुणकोनामसमनेमेनेनोगोरं
लकः || धरसःतेवनस्त्रेनस्यस्तेनविकासमनः || स्योनेन
मातापितावापिसपुत्रःस्वस्केःभूवेन || धिनवापुत्रस्व
पत्युर्वरनारीस्वनाभूय || सातायुगेत्रवपमेणनतोपः
पतिक्रिरने || पतिविनिःपविवेनःयावेनपतिविसतं || स
वेतेनस्केयातिसानाहोनावपवमः || देयुद्धोपतिवि
त्रेवकनायाःशुक्लमेवच || कृष्णानिस्वाशानायसो
तास्थाइसयणचरेत || सतासिहोत्रमेपातउकरुनेयोत्र
ज्ञेयिते || पृविवन्नासविहेय्यःपतिविग्निलक्ष्मवेनः || पति
यत्र्वःप्रबलिविते || नोरकेननवावावावकत्याया
पतिकुर्यात || पालितग्रहणमेकायानपतिवसमपेय
दे || नपाणयेपरेभूकेनरोषःपतिवेरने || नवृद्धशानाय
दातिष्ठेत्पनेनसाविपते || प्रसुतानसऊवलि...
रव्ववी...या || विक्रयाक्रियमाणस्यपतनेनपमेवोरिल
उविहेयानेनस्यचपतिनेकेननेनपा || योगस्थानेस
मानूकेनरोषःपविवेटने || नष्टेमृतेप्रव्रजितेक्लीवेच
पतितेपिच || पंचस्वापत्सुनारीणांपतिरन्योविधीयते
ग्रामनोव्याक्तिनांचैवनदयाद्गन्सरावधि || षड्मासाप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नित्यं [illegible] ॥ [illegible] लवर्णोपि
[illegible] वदेव संगमवर्णाः कीटा यथोपि
नारीव्रतं [illegible] मनः ॥ सा मृते लभते स्वर्गं यथ
ते ब्रह्मचारिणी ॥ तिस्रः कोट्योऽर्धकोटी च यानि लो
मानि मानवे ॥ तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीय
ते ॥ व्यालग्राही यथा सर्पं बलादुद्धरते बिलात् ॥ एव
मुद्धृत्य भर्तारं तेनैव सह मोदते ॥ मृतानुगमने ना
स्ति ब्राह्मण्या ब्रह्मशासनात् ॥ जीवन्ती तद्धितं कुर्या
न्मरणादात्मघातिनी ॥ जीवन्त्या सन कृत्वा नाले तिः
सध्यवत्रिणामपि ॥ उन्मत्तानां न यत्पापं नास्य भार्या
विधीयते ॥ विषवायमभवन्या निर्देशात्पुत्रवत्रि
ना ॥ तस्याश्वामाः पितृवेश्मस लज्जाबद्ध सर्वदा ॥ प्रिय
वाक्यं युक्तं देवसे भोजनं नाच्छादनं नित्यं ॥ पन्नेभ्यो
पिबलान्नं वत्रां भोगो विधीयते ॥ ५ ॥ इति श्री
पाराशरे धर्मशास्त्रे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ ॥
वृकश्वानशृगालेन यदि दष्टस्तु ब्राह्मणः ॥ स्ना
त्वा जपेत्स गायत्रीं पवित्रां वेदमातरं ॥ गवां शृङ्गोद
केः स्नानं महानद्योस्तु संगमे ॥ समुद्रदर्शनाद्वापि
शुना दष्टः शुचिर्भवेत् ॥ वेदविद्याव्रतस्नातः शुना
दष्टस्तु ब्राह्मणः ॥ सहिरण्योदके स्नात्वा घृतं प्राश्य
शुचिर्भवेत् ॥ आमे ब्राह्मण [illegible] हीनेन शुना दष्टस्तु ब्रा
ह्मणः ॥ तृणं व परिदिला कृत्वा तु त्रैभ्यादि विशुध्यति ॥ ५
सव्रतेन शुना दष्टस्त्रिरात्रमुपवासयेत् ॥ सघृतं या
वकं पीत्वा व्रतशेषं समापयेत् ॥ अव्रतो सव्रतो वापि
शुना दष्टस्तु ब्राह्मणः ॥ प्रणिपातात्तु वेदस्य नवि [illegible] व
ह्नेर्दिनः ॥ चाण्डालेन श्वपाकेन गोभिर्विप्रैर् [illegible] ह
तो यदि ॥ आहिताग्निस्तु विप्रो विषेण [illegible] नवा
[illegible] ब्राह्मणाद्दिप्रलौकिकाग्निवमन्त्रकं ॥ स्पृष्ट्वा
गवा स्पर्शन्तु पितृमेधे पदेऽनिरे ॥ अजायते [illegible] वै
[illegible] शतमन्त्रास्मगात ॥ तस्याः शीतिर व पृष
तीरे प्रत्यालेवमनः ॥ पुनर्दहन कांचेव पञ्चवेल
पृथक्कृत्वा ॥ आहिताग्निद्विजः काष्ठि प्रवासे काल
यदि यान ॥ देहनाशमनुप्राप्त तस्याग्निर्वैतनेन गृ

(6)

...वेः ...
नित्र समास्तीर्य कुशैस्तु ... कृति । षट्शतानि
शतं चैव पलाशानां च वृन्ततः । चत्वारिंशच्छिरो
दद्यात् कण्ठे तथैव च । बाहुभ्यां च शतं दद्यादंगुल्या हि
दशैव तु । शतं तु जघने दद्यान्नाभिदेशे च विंशतिः
अष्टौ वृषणयोर्दद्यात् पञ्च मेढ्रे तु विन्यसेत् ॥ एकविं
शतिमूरुभ्यां जानुजंघे च विंशतिः । षट् पादांगुल्या हि
सप्त ... विन्यसेत् ॥ शम्यां शिश्ने विनिक्षिप्य
मेवं अरणिं वृषणे न्यसेत् ॥ जुहूं च दक्षिणे हस्ते वामे
हस्ते तूपभृतं न्यसेत् ॥ पृष्ठे तूलूखलं दद्यात् पृष्ठे च मुस
लं न्यसेत् । उरसि क्षिप्य दृषदं तण्डुलाज्यतिलान्मुखे ॥ ...
मुखे हैव ... प्रोक्षणीं दद्यादाज्यस्थालीं तु चक्षुषोः
... कर्णे नेत्रे मुखे घ्राणे हिरण्यशकलं न्यसेत् । अग्निहोत्रोप
करणं ... तत्र निक्षिपेत् ॥ असौ स्वर्गाय लोकाय स्वा
हेत्येकाहुतिं सकृत् ॥ दद्यात् पुत्रोऽथवा भ्राता अन्यो वापि
बान्धवः ॥ यथा दहनसंस्कारस्तथा कार्यं विचक्ष
णैः । ईदृशं तु विधिं कुर्याद् ब्रह्मलोके गतिः स्मृ
ता ॥ दहन्ति ये द्विजास्तं तु ते यान्ति परमां गतिम् ॥ अन्यथा
कुर्वते कर्म त्वात्मबुद्ध्या प्रचोदिताः ॥ भवन्त्यल्पायुषस्ते
वै पतन्ति नरके ध्रुवं ॥ शुना घ्रातावलीढस्य नखै
विलिखितस्य च । अद्भिः प्रक्षालनं प्रोक्तमग्निना चोप
धूपनम् ॥ शुना च ब्राह्मणी लीढा ... नद्यां स्नात्वा ...
... पञ्चगव्येन शु
द्धिर्भवेत् ॥ ॥ ॥ इति श्रीपाराशरे धर्मशास्त्रे पञ्च
मोऽध्यायः ॥ ५ ॥ अतः परं प्रवक्ष्यामि प्राणिहत्यासु
निष्कृतिम् ॥ पराशरेण वै प्रोक्तं मन्वर्थानुमतं यथा । क्रौ
ञ्चसारसहंसांश्च चक्रवाकं च कुक्कुटम् ॥ जालपादं च
शरभमहोरात्रेण शुद्ध्यति ॥ बलाकाटिट्टि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] वदेवतो ज्ञापयन्नः कीदृशं [illegible]
[illegible] न्तः ॥ [illegible]
भानोश्च शुकपार्श्वमानपि ॥ अटोनां चेत्रयानी सु
अलेनक्रमोजनान ॥ पृथभावकपोतानामाधीतिनि
नकः ॥ प्रतनेलेलुभमैवैशब्दप्राणयामेन सुज्ञानि ॥ सूदू
प्रपन्नवाच्याणां काकोलूकनिपातनेन ॥ श्रपञ्जाधीदि
नांत घृतविकालमा[illegible]पीनः ॥ वल्गुलीचकोटकाना
चकोकिलाच्च नटीटकाना ॥ लावकान्नकपादा सुशुश्र
नेनक्रमोजनाना ॥ कारण्डवकोकांतपिंगलाक्ष
रामापि ॥ भरद्वाजाभिहनाश्वापोवमनाञ्च विभवेत ॥ भे
कृष्णाभवाणाञ्च पारिजातकापिञ्जलाना ॥ सर्वेषांपदि
णाचैव प्रकृत्यावेण सुज्ञानि ॥ हूलोलेउलभामरासपा
मणारूपाणमे ॥ कृस्तंभोजयेद्वि प्रलोकूरण्डवटाणां
विंहिकांश्वामोधाशिल्वकंमेनिपातनेन ॥ वालोक
फलरोगाणाञ्च प्रकृत्यावेण सुज्ञानि ॥ दूकजेतुकबूता
मृगानवश्वाणाञ्चानकः ॥ तिलप्रसादिनेटघाकापुभ
लोहितनत्रव ॥ राजेनवद्धनं वामहिषोहनिपातनेन
प्रायस्थितमहाराजेविशेषसर्वेगाहून ॥ कुरंगवान
रसिद्धेहित्वाद्यनिपातनेन ॥ शुद्धेनममराजेणाविषप्रा
णानपंचानवा ॥ मृगानरचारह्व प्रतानायत्तचात
पेन ॥ प्रफलाकृष्णमश्रीपारहेणराजेणशुज्ञानि ॥ पव
वनघातनोव सर्वेषां वनचारिणा ॥ श्रहाराज्ञोषिनः
निषिद्धजपेकोनानवेदसा ॥ शालिनेका [illegible] कंसुद्दवि
यंवाघतुल्यानयेत ॥ प्राजापत्यकृच्छं कृच्छं कृष्णैकादशा
दहिता वैश्यघातेत्रियंवाश्वनिर्दोषेणापिपातयेत
सोपिकृच्छ्रं कृष्यं कृधोकृत्वाविशानिरहिताणा ॥ वण्णाले
नकृतःकश्चिद्धाणेनकर्पवन ॥ त्रियम्पार्वेपेन
भूहेणाध्रुनेनवा ॥ वण्णालवपसंप्राप्तोकृच्छ्वानेवश्च
ध्यति ॥ वोरःपापाश्च वण्णालादिवर्णाणाभिहतोयदि ॥
ब्रह्मणाञ्चोपवासेन पंचगव्येन शुद्ध्यति ॥ पवपाकवोर ॥
वण्णालेविप्रासमत्वाहितोयदि ॥ द्विजसभाषणे ऊर्घ्वा ॥
स्नानविधेवानयेनस्नाने ॥ वण्णालस्पर्शनेनैवसवासा

नमाविशन॥वएालेसक[illegible]तिरा३सुएवास
लैः[illegible]वगामामापद्रीसरएालानसुविः।व
मनेः॥वएालेकपयवगा[illegible]लोकश्रेने॥वसलावे
एालुटष्मीनानसगुश्राहिनमवलोक[illegible]
नवपोधुवीनावानलमेववव॥प्रतानाक्षापमावेनपु
वनाउेएसुश्राति॥वएालकवे[illegible]एापायेनो॥पाप
वनिहिनः॥नलएालिंपनेपंत्तपानाएससमावे
न॥पहिनपपवनेनोपंपामीयपपुनोपंने॥पानापम
प्रकनेपपकुकुसानपनेनपा॥वंपेनस्तानपनेविप्रः
प्रजापवनवेदीविपः॥नरपतिवेवेदेस्यः।पार्वस्त्वम
पुहिकुन॥प्रतानालुजनेनेविप्रःवाएालानुसं[illegible]पःपिः
वा॥गोमृत्रयावकाहारपापानेप्रापुस्यांति॥गुकेक
ग्रासमत्रीपाक्तोमुत्रांसावकानेपि॥रा॥रपाकेनि
पमूहसावपनेवसमाहिरोन॥प्रेविनानेत्ते[illegible]
लनिहितनेपरिवपनेनि॥[illegible]
कर्त्तनवगहे॥रातिव[illegible]नापंकानस्वनोपंपाहिक
पनितमुत्रराहिंपपापिहुपानमेकशनो॥पावस्तुव
हनेनस्तपाप्रिहपापसंकलानो॥पाकेरभापुसुनेन
मपिघावरिनवेपंदीरएवेपंसहुनकाचेसंवापुव
यावकं॥भाववहतमुनीनसर्वेपएालमोवेस॥फल
रभनूतोरसासपिद्योपाववंकमावृ॥फलमवक्षन
कवभवेनापापापारिने॥वितेभोभोजनरसाकेदे
एामावटदिएा॥नूलमोवेवक्षाएापरस्तावा
त्वमृएापे॥कारेउदीनरएानिरहेज्यांकुलाचा
ने॥कसंम्पग्नकपोसलवएानेलमंपिवी॥तिल
फलानिरूलांनिवहिक्षपांपिपोदनव॥मपवस
हमृनेमुकयाजूलएाभोमनन॥निसोगावोहृषवे
कटस्पाद्विप्रवृरतिएा॥रनकसुशमंकारीवल
उकारीनमुकमंसः॥वनएंनमूहेवेवप्रविताने
प्रतिश्वन॥तानावृनिकुनिउंयांनसवीनःस्मापंपसि
वव॥शरूदाहनउवीनशाषमवेसमाचरेन॥प्रेरस्पा

64

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible] ॥ [illegible] लवर्ति [illegible]
[illegible] वस्य समावस्तुः कौश [illegible]
स्त्रंरांबेनतस्या [illegible] न्तः स्पर्द्धावतित॥ नसा क्रुद्धी
हिनिस्त्रत न्नाणानि विसर्जयेत॥ सपूर्णेन पूर्ण
त्वेन स्नान्वने [illegible] वावन॥ मामुद्रा दक्ष मिश्रो सोपः
मुनानेये क्रूक्ष॥ ध रा॥ ॥ ॥ इति श्री पारावारेयमेषणा
मुपवमापायेः॥ [illegible] ॥ ॥ श्रीमहाकालसमुद्रवावे
मुद्रयसोपालेन सपुत्रे॥ कामि रूपत्सयनेन त्र यायश्चिन्तनेक
सप्तभेवेन॥ सावामह [illegible] र्तीचतुर्दशी पञ्चमी [illegible] त्पा १
या रूद्रा ना नार्वी नोवाच क्रामे रहस्य कथय भैरव॥ तव प्रिय
त्वरहस्य सर्व सापवमधाप्रदाय पृच्छ॥ ओतदाना नवैसा
सपुरवामा नवनिर्देयेत॥ मुद्राणां नोपु [illegible] सम्बूड
शलेमशुद्धानि॥ यावत्वान न्नमुष वैवतु यो ऊस्तराणा भ
वन शुद्धवणस्त वेष्वा पिमसे यो ह्यहः कुमि फुले॥ वाल
[illegible] म स्कूना पवना वेन शुद्धान्ति॥ यायिने वाम
[illegible] गामसु मैनेवि यहस्य पुत्र॥ पवामसु ननेह्ये मे हिनः
सभावेयेत्वंय॥ प्रपवान्नैव एणानुखा॥ तयत्र
वेनत्र ग्रहः॥ सर्वे पं म मवामानि दिनै नेस्म पारतापि
[illegible] वेल नग्रहः यो क्रूः नयेवालन्तु ज्येष्ठा॥ श्रनो
नामा नाभक्षे होमः नस्मा नानग्रह स्नुन॥ श्रावे इति
यत्पा कावदेहे निनिनि लिखे वनाः॥ प्रणमामि रसाया
मनिम्नोस फल मधेन॥ त्रिमहानापरि वाल भा
मस्त्वाने नो पिवा॥ सर्व मन्त्र ग्रहः पयेन नमायनुवे
सर्वानि॥ [illegible] री रस्मात्प यकार्य वरनि नियमत्य
मेन स्यावेच्छु कनी रः पंतनि निर्यफवः॥ मपुर्वनेपु
भोग्रा होयमुको पिवेर हिनः ग्रमेवा कार्वि ना नव
श्रु रूपै त्रणात्रा भवेन॥ नमैव नियमन्त हा [illegible] त्राणा
यानमस्यने॥ कृपाने स्नापवास वनपुरपेन मपुन्य
ने॥ न्या निष्ठ मोघंपं वे व प्रायश्चित्तं मनेवेवत॥ विना
प्रामहवणायो कृपा नमा [illegible] ग्रसवालक॥ महाकालव
सेयःसारसवेसस्पर्क रोवन॥ च सस्यानुग्रहानेव
पदेनियमय त्रणा॥ महाकाले प्रायश्चित्तं निष

65

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नलसा॥ ... तप ... यन्तिके यन्तक
... ॥ सर्वमवति निकेन्द्र यस्य चक्र तिन्त्राणः आ
ना यत्र भाषन्ते श्रुत मन्ति देवताः॥ केन देव सप्ताचि
प्राणैन स्वनमन्या॥ उपवासम् नयतेनानमेधी
फलेनयः॥ विष्णुः सपालि नयमि सर्वतेन सान नः
ले॥ सप्तात्र मितियज्ञाकार्य वदति निति देवताः प्र
तो मया प्रीरसा कार्य मग्निहोत्र ... भवेत॥ नाले
तो नगम स्मीपं चिष्णुलोके प्रविश्यते॥ यथा ...
रकेनेव सुरापि सलिलानि नेतः॥ श्रमनाश्चकीर्तिस
युक्ते मविकाकयात्पूर्विते॥ नद्ये संपूज्यानि न
तस्याने भस्मनाश्रुतेन॥ भुञ्जने पुनर्विशुद्ध्यमा
त्रेन विमुक्तयेन॥ नजनशिश सत्तथा ... भुक्ते
क्रमाजने॥ पारकसोनुभुञ्जीतयेकस्यान ...॥ प
नस्तलाल स्नानं वा भोजनं नत्रि विज्ञेयेन॥ पञ्च ...
विद्वत्रस्तु स्तिलस्वर्णं च॥ यथा ...
यस्विस्वदासमूह॥ स्नानं ... के ... पुनाका के
नवारितं॥ के ... सु ... भोगि ...
न॥ ... विशानिर्मभवेन ... कं ...॥ न
... ॥ काकेः पु
... ॥ तिला ...
... भवेत॥ ...
... भवेत॥ ...
... ॥ ...
... भवेत॥ ...
तनदर्पण॥ प्रपाने ... सर्व ... हिः पदानां ...
हिता॥ ... सर्वेषु लोके ... नाम ... विः ।
भस्म ... ति॥ ...
पादस्य ... भाजने॥ भूमिनिः ...
मासः॥ पुनःगार ... न॥ ... संस्काः
सौम ... ने॥ ...

66

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible] ... लगते ...
[illegible] ... कीड़ा ...
ले सभाजनने ॥ [illegible] गढमता।
लनंतले ॥ पाणीण स्तुनमेपिलेस्तु डिल।
भाविना ॥ रुणयेरहेनानस्तुबिखमानामाजे।
नेस्वने ॥ रनभीस्तु अतेनारी विकमैयानगाछ
ति ॥ नदीवेमनस्तुअंगेलेपेस्वनविद्यते ॥ प्रथ
मेकनिवागालीहिलैमेबणबातिनी ॥ रजस
लाननीयेरवंनपेहनिस्तुस्रति ॥ हश्वरजस
लोमेक्षालनेवाछे णोबालपीतनथा ॥ पकराजे
ववासनपंचगावोनस्तुअति ॥ जसलानस।
स्वकसुवंनसूद्रेणावायसे: ॥ नावेनिद्युनिराक्षा
रः सानकालेनस्तुस्रति ॥ भस्मनास्तुअतेका
भाताम्बमासहेनस्तुद्धति ॥ रनसास्तुअतेलानारीनदी
वेगेनस्तुअति ॥ वृक्षवल्कलवीराणादीमवल
[illegible]सामा ॥ उर्णानारकवानावप्रोतनणान
[illegible]भाते ॥ तृणिकावोपचनानितेलयुका
[illegible]नेव ॥ श्रोतवयित्वाकनापेनप्रोतयतन:।
[illegible]भि: ॥ वेणोपक्रकरभूणीण्यांखवमेफ।
लानिव ॥ नणाकाष्टस्तनोचैवउस्काभवणा।
नस्तुवि: ॥ तूलिकावापपानिस्तुघ्योंबरणा
निव ॥ श्रोतवयित्वाकेनापेनस्तुद्धिभवणेनवा
वेसनस्करमुयांणगासवमेफलानिव ॥ तृण।
काष्ठादिपान्यानांस्तुस्कांभवतणानस्तुवि ॥ मा
णीरमणिकाकीटपुनगर्क्तिमिश्वर्तरा ॥ मेध्या
मेध्यसूगानांपिनोविष्ठुमस्तुरत्नवीनं ॥ स्तुविश्च
भिगनेनोप्तुरुषेखुणणविस्कंधः ॥ मधुमधु।
लिलैरनोनाष्टिपमेवोरने ॥ नाम्नलेतेकले
वैवभूकाम्वैतानुलेपने ॥ मधुपर्केश्रमामचले
क्तिपंपनौविद्भुः ॥ रक्षमगेप्रवासेववाबाते
वासनेस्तुव ॥ रत्नणावान्सेरेहणमूर्केकमीणि।
वावरेन ॥ दनेनिष्टेवनेचैवरतोक्तिष्टेनयान्

ऋा॰

67

पामैव+

68

पे:॥ पृ[illegible] भवतो मृषोत्त
प्रमासो ही नि नी धो नि म[illegible] धः मो नि लक्ष्णो ॥ वि
प्रमत्त निलक्ष्यो साधि निह मं त्र प्रवी ॥ प्रवित्रय
स्व वेसा ह्ये म नुधो निलो सत्ता ॥ विप्रमत्त दि
णोक, सो मा नि ध म नु प्र वी ॥ शे ले से न प्र कत्र १
ण मनु ना सा व ने त्र व ॥ उ द्व रे श्री द्वना त्मा ने स म
यो ध मं मा वे न ॥ आत्मैव दो त्मा ने ध पु ना त्मैव
ति पुरा त्मन ॥ आत्मानमनु दे न्मा ने ना त्मा नम
व मी र ये न ॥ इ वी इ: यो धि का ध यने त्मा वी ध
य ने सा यो धि के ॥ आत्मा न दे धे वो को भ ता ०
भुं भा इ व ना पे ये न ॥ आप न्न ले न ते वे श्रो यो वा
धां र न वि न ये न ॥ आत्मान मनु रे स्मान्मा ल्क ध्यो
य ने मा व ने न ॥ आ दि न वि श्र सं मै षो वा म्ना स
श मा ने ॥ अप्र श ले नि दि ध्या नै ना ले व मी दे त्रा
ना ने ॥ मा ह न्न न्न मैं दू ष्ठ आ दि ना ध्या थि ये धे ना:
न मा न्सा नें न प ये मे न्न वे न द्व शो ने ॥ अन
पां ह पु भ ना दि न मा ना प दि व मे ये न ॥ ल ल १
प्र ले वि वा के व जु रू ले मु हो ॥ सा ये ही प न म स्तो नि
ने ना वे व वि पी य ने ॥ मधो स्ता न ज प ज यो म ध्ये
ह्रो मे स्ता ब ने ॥ पु द्य मा नु न नः आ दि वि शु के त्रा
नमा वे न ॥ ९ ॥ इ नि श्री पु रु षा द्वि पा रा चे
स्वे प्या य: ॥ ९ ॥ ४ ॥ ग वा र वे प न पु न्सा नो भ
वे म्ह र का म न: ॥ एका मं कृ त न पा प स्या प य श्चि
त्तं ग य भ वे न ॥ वि ए व दे श न नं ह प मे शा स्त्रा व दे
श्च न: ॥ स्व क र्म नि र्ना ल ना ले छा पा धे नि वे द ये न
वे द्वि वे ल गा क व वृ त्ता न ले ष्ट्र य पा दि ज: ॥ की डा सि
नो पि य न्न भू पु: स र्वै प मे: प र: स्म नः ॥ सा वि त्र: १
प्रै व गा य आ स पो पा स श्च व नि ना: ॥ अव व त्र कु न क
मो णि आ सि ण ना म प्रा र क: ॥ अब ना ना म स चा ण
पि ए मा त्रो प जी वि नो ॥ म हू स्त्र स म वे ना नो य री

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]

[illegible] येनगा [illegible] कीर्तयमपि [illegible]

पवेन निवेदने॥ यदेदं [illegible] शुष्को नौ [illegible] मे मनः

नेते॥ तन्मां पश्यन्त पाहि भगवन् कारमेव गच्छन्ति॥ यत्र

देवा न यो वा [illegible] पुनः सु पुरेद पारगाः सुपर्मे इति वि

वेदः पूर्वेण [illegible] पा॥ अग्र यमालागमनेनाग्रे ये पर्म

प्रवदन्ति वै नैषा मन्त्र वानेषां संत पुनः [illegible] नेन

ने॥ यथाय मन्त्रिन पानो यमा [illegible] नाके विनश्यति प

वे पश्यन्तु से [illegible] यो ये ब्रह्म [illegible] ति॥ नैवगच्छ

ति कर्मेरं नै वगच्छति सरं॥ [illegible] नाके प्रयोनेन पा

पेन यथा निनेष यवन॥ [illegible] नाप [illegible] यानात्र प्रनं केरणा

[illegible]॥ [illegible] ये [illegible] पापमेव प्रणश्यति॥ वेना

[illegible] पि वेदं व लो [illegible] त्रिणः॥ [illegible]

[illegible] निपुनाः॥ प्रनाहिनात्रियार

[illegible] पंचने पंच वेदनः परिषत्स

[illegible] निता॥ [illegible] यची [illegible] हि

ताः [illegible] निरेनेषां पुनि [illegible] कीर्तिता॥ [illegible] नी

नाम भिन्ना यथा [illegible] यानि नेना॥ [illegible] विद्या

[illegible] नाना [illegible] वेन॥ [illegible] निवं वल्मी

नि प्रतालेनेनले [illegible] पा॥ नयो वा कि लिख सर्व प्र

[illegible] नि चानलः [illegible] सामपा

[illegible] नः॥ [illegible] ... न [illegible] यथा [illegible]

ना [illegible] केवलेनापपारकः॥ [illegible]

नेन यथा [illegible] यथा [illegible] नेलः॥ [illegible]

[illegible]॥ [illegible] नेषां कि

[illegible] नेन॥ [illegible]

[illegible] ने॥ [illegible]

यथा [illegible]

[illegible] मा॥ [illegible]

यथा [illegible] लनेषा नै॥ [illegible]

[illegible] पूर्वकैः॥ [illegible] नियो हि

नानामवारकाः॥ तेहि नाः पापव [illegible] णः ममनाने

69

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रकृतानाः ॥ तेनास्य नुमन [illegible] नवरे द्विजः ॥ स
येनैव प्रकर्तव्यः स्वल्पापि [illegible] दनिष्कृतिः ॥ श्रोतव्याः
स्तु इति श्रुत्वा [illegible] नाकनेयदीक्षानि ॥ [illegible] पमानयः
भूत्वा तमानं पुरुषगच्छति ॥ पंचयते [illegible] पंचपंचपष्ठे ति
द्विजोत्तमाः ॥ त्रैलोक्यपार्य यने नै [illegible] ई यानि ताख
ये ॥ तन्नविताननो [illegible] भोयानत्राय भोजनं ॥ मू
ले विप्रेणयतनपुरुषेऽभसी भवति कष्टवत ॥ प्रायश्चि
त्तं समं मूत्रा देवनाघ्नन्नारनः ॥ सर्वेषां वेषपनेक्षु
त्वा त्रिसंध्यमवगाहनं ॥ स्वान्नं कृत्वा हि नानि [illegible]
मूयान्स्वं समाचरेत ॥ ग्रामेनार [illegible] कन्या
नप्रयच्छति ॥ मातृमातृपितृस्वसा [illegible]
तितु ॥ मातापैतृपिता [illegible] न्न [illegible] ॥
यतनेन [illegible] ते [illegible] ॥ [illegible]
तृयेनक [illegible] ॥ [illegible]
केयु [illegible] पतिः ॥ [illegible]
घन्ना [illegible] नाहिजः ॥ [illegible]
यायोहते ॥ [illegible]
प्रा [illegible] न [illegible] च्च [illegible] भूतस्यानि [illegible] नेविये [illegible]
यः [illegible] हते ॥ नृणां
मानुषीयान [illegible] नामपारकः ॥ यथा [illegible]
लः त्रीषु यथा [illegible] निष्कला ॥ यथा [illegible]
सानेनया विप्रेगनक्रिया ॥ ग्राम [illegible] नेय पारन
यथा [illegible] तिनेल ॥ यथा [illegible] ग्रामे [illegible]
[illegible] ॥ यत्पठति महाविप्राः [illegible] रता [illegible]
[illegible] नेषु यथा [illegible] ॥ तथा
पितृ [illegible] ने [illegible] भद्रापि [illegible] ॥ य [illegible] विताने
[illegible] भुंत्तो [illegible] भोजनं ॥ मूत्रे विप्रेणय
[illegible] भसी भवति काष्ठवत ॥ गायत्री [illegible] विप्रः
[illegible] तः गायत्री [illegible]
[illegible] द्विजः ॥ [illegible] पि [illegible] नः [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तिलतिलकं ॥ [illegible] रक्तलेपनी[illegible]
[illegible] वदवेदांगपारगः क्रोडायमोप
नखमुखः [illegible] मनः ॥ न पेमसे भावाय गुणायवीर
इमातं ॥ स[illegible]लवपुनं सूनाम वेले स्थानमा वरेन ग
वामप्येव [illegible] लिवावेरमनभूमेत ॥ उलिवृधितिरो
नेवामारुतेनेबुतिवायरि ॥ नकुर्यास्यामनः श्रयते।
स्माद्र मंतरी उयन ॥ प्राप्नोयालिवान्योरुद्रदेवे
त्विलेपिवा ॥ भवत्यनेनकर्मा यनेनवृत्तौ वैववन्नके।
पिवेवलेगुपिवृतोयमेलिवानो धुस्वविमान ॥ पातिले
यवन्म यत्कुम वैप्राले: समरु रेत ॥ ध्यालना श्रीराख्य
वाभूयः स्वाणप्रतिनेत ॥ सुचने ग्रा ण्हत्यापागा।
मागां आत्माल्पमांस ॥ नोवपस्यातुर्यवृत्तणप्रायश्चित्ते
तिनेतिस्यात ॥ [illegible] नेनपत्कसवेभूनेनचनवि
ने ॥ [illegible] मेकभक्तेन पत्कारुस्यास्यान्याविने ॥ एका
नेनकुभोमोस्याहेकाहमहतायान: ॥ प्रायश्चित्तेन
नः वीवे[illegible] ॥ नाशिणादीलिमारा
नमरुर्विवनबंधो ॥ विप्रभ्योदत्तिणा[illegible] विशानि
नेपंचुनः ॥ ध्यानाणाभोजनोपिवानगोत्रः सुचानसष्ठ
य ॥ हारितेनोपवक्ष भक्ष्यपीतिहिनिनेनकुभोजनं ॥ हो
हितेनान्हुयावी स्नातोहितेनोवाषु भोजनं ॥ अह्वेवे
कभक्तायोत्र्यहवेनकुभोजनं ॥ त्र्यह्नमयाचितेन।
स्मात्रापुभक्तः त्र्यहंपरं ॥ वृषोत्स्याभिरनानोयः कुर्या
त्रिपत्र्यर कार्कृदा ॥ पवनेनिपिनस्नेलस्य दरावृषोतिण
पववं ॥ भोस्याबमपि भुक्तानोब्राह्मणोनानेउवेलः ॥
नस्वेलिणानिपापेनवृषपत्र मिवांभसा ॥ ॥ ॥ इति।
श्रीपाराशरधर्मशास्त्रे समसोध्यायः ॥ ॥ ॥ गा
वासंरक्षणार्थाय न दुष्येद्रोधबंधने ॥ तद्वधं तु न तं
विद्यात्कामाकामकृतं तथा ॥ दण्डादूर्ध्वं यदन्येन
प्रहारादि निपातने ॥ प्रायश्चित्तं चरेद्विप्रो द्विगुणं गो
वधे पंचकेन ॥ अंगुष्ठमात्रः स्थूलश्च बाहुमात्रः प्रमाणतः सा

म्पलाशाय ... न॥ मन्कत्नाय
नेवायिहत्वानामि द्वेनोपेव॥ ममपायात्पपाय द्ब
न्यवसुप्त्वप्रेवन॥ यामेवायारे कृत्नाय ोपे यत्राय
वनेयारे॥ सुवेव्वाभिभुत्नायोशायानेद्वेनेविव
ते॥ नेलभेघुत्सलनेनभोनलेनद्धि ... ना॥ विपृ
न्यानवरभोत्ताविपनेनात्तियानेके॥ यन्वेनापि
चिकिन्सोनमृफ्रगभेवेमोह्नता॥ पवेकृत्नेविपवे
नप्रायाश्चित्रेनवियाने॥ विणसेपारेमेवेस्पानेनेहो
पारेनाभमेसिंयिन॥ पादेवनत्रनेमाचेषुरूत्याणाभेवि
वेतने॥ पारेवरोभवपनेहुपारेमम ... ना॥ विपा
रूयोविविवमानुसमोविवनेनिपानने॥ पोवे ... प्रपु
गढयान्‌हिपारेवासाभ्‌ननं॥ विपारेमोमृषेवे
वेवचन्योमिपुनस्लन॥ नेश ... गायानेदे
मुपनेवाभवेनन॥ स्रन्यनाय स्वाक॥ जनेपो ... ह्वा
स्वेवनणावारेभेतासन्न॥ त्रिमुकालेप ... वे
त्नृणानवस्रनेनया॥ प्रयाप्रनेनाभभूने॥ हितुणोवोमने
वेने॥ माकेणेनत्रिसोनमावोयेनेमिताहिने॥ स
गभेशे याचापारेविलासलहनेन॥ लायूलेपारे
कृतुस्पानहापारावोश्योनेभनने॥ त्रपारेवेवसुंत्रु
नकुक्षमवेनिपानने॥ प्रणभणोषिभगावकाहिभे
गनयेवेवा॥ यारेनीवालिवणसेपापांश्येनेविषे
ने॥ सयभगात्रुकनेवायावनानाग्रणाभवेन॥ या
वन्तश्रणमुवीभीनावत्रस्मयेनसदा॥ ग्रणाभृगंरे
वानेवा॥ यावनहफुत्रणाभवेन॥ गांतुपन्नाहुणस्पा
यनमत्स्नावीसृजेयेन॥ सर्पंपहिनेतवीगन्नीन॥
देहाभवेयरि॥ माचानेनचनस्पायेन्नायः हिन्नमस्पा
वेरेन॥ ७॥ विपत्रानेवह्नावेवपनेरोपनेपिवा॥ से
त्वमिमावानिवेवप्रियनेकालवयेया॥ ग्रहमावे
नयचवपापश्चिमायेमहोले॥ गाद्वलोटकपायाणः
पारेविज्ञामनेनव॥ आपारयानियोगावनपापकः

लोहाढ़के ॥ तेस क्लेन पागाकेवा हि स्याद्रेतिश्चे
के ॥ वान पेवैगावे वे षमानावे तो पितः स्वयः ॥ तमस्के
कुभवेनपृष्ठ्वेतिन्कुष्ठे त्रयोरस्मा ॥ तस्मकोचेनसप्त
कालहानाविमानेनपावो ॥ प्रायश्चित्तगोपनार्थायप्राय
श्चित्तेन विषये ॥ प्रतिलुत्पहंवा विषये वा तुना
सिके ॥ नपुंसकममचारे प्रायश्चित्ते विनिर्दिशेत् ॥
अग्निनेन्द्रवत्स्नात्वाब्राह्मणेभ्यः सामनेवरेत् ॥ नासावे
येपादलोनुचेत्सर्वेतिपानने ॥ तं ध्यायवर्हिर्विपर्यनः
अनस्यानास्य पेयिना ॥ इकेपारायावे लोवंपकपा
रविभावेनः ॥ आयनेनूपने वैव भावः पंहरणेनपा
पेगोस्नगणपावे ह्लैमिनानिवपस्थवत् ॥ तत्रापा
पेनः पापापाः श्रुद्धेनयहिवापभुः ॥ भवेनेनात्रपा
पेयः प्रायश्चित्तीप्रहारकः ॥ सात्रमेनावेपेवेतश्चि
यतेकोलमधे यात ॥ कस्मावेननस्यात्प्रायश्चित्ते
मत्राहति ॥ ननाहिकेवलेननवत्वेनेनत्रोनिना
कार्यवेवलमलेनवभेनतोमूनवध्मनीयावद्धा
लिनिहिताम्रगुणपीना ॥ कृष्णकापोतुवभीयतेतु
पर्भरहितरूपमृते ॥ पारुलमोयदानिषुतायश्चित्तेव
यने ॥ प्रतिनत्रभवेन्मृषः प्रायश्चित्तेनकपभवेन ॥ ताप
वापावनीरेवीश्रुवनेनात्रसंसापः ॥ इध्यीवपनदा
लिना चत्रलेभवणभूमिना ॥ गृहेवापिवनेवापवद्धा
गोत्रियनेपाति ॥ पारकृत्के भवेनस्यभूषणार्थंनयत
हते ॥ मरणेनभवेनस्याननाशाकिल्विषीस्यनः ॥ प्र
रघ ॥ कपवापोत्रबृहतके रेणुमेके ॥ अग्रमन्त्रोपितया
क्रीडनस्त्रानमोनिजोवपं ॥ आरापितानारसाकांश्चित्र
ववश्चानवमाभवेन ॥ वारोहस्यामिश्रभुग्वाहुपमेक
वे ॥ कृपानुक्रमणेचैव मंगाः पापेनशादिषु ॥ यदवप्रि
यतेकश्चित्रयः पापामसाव रेत् ॥ मनः समस्रवश्च
वेदिनेवाहयेदनना ॥ कामाकाम कृते नकोपारणेवा

ने॥ प्रकाय स्या भवस्या [illegible] पवे [illegible] गुवन ।
श्रपइवेनइ केवानट सपानवेगुवा॥ [illegible] रयइयर्से
त्कानेगुप्रायश्चितनविग्रने॥ वेइमइ [illegible] तिवेरी
गुपानरं कनेसिक्षति॥ स्वकायइइ [illegible] नेप्रा
यश्चितविनिहिसवानु॥ इलवाशवकेइवसएइ
वापोइनेभवेन॥ गोन्द्रइसमवा [illegible] नि गुका
भवतिनइपात॥ निसिवपोनरोषेगुसपेद्या
ग्रनेगुव॥ श्रविविधुनिपानेगुप्रायश्चितनवि
ग्रने॥ विंवनावइनावधपनेरोषेनेप्रा भि
वभिस्वप्रयोगेगुप्रायश्चित्तनविग्रने॥ गोस्व
याणवपइवेगुवपला [illegible] वेभवेन॥ प
यारिकविनिदिप्रप्रतस्थेवरहनलिन॥ प्रा
स्प्रदइ [illegible] प्रायश्चित्तनविग्रने॥ पकार्ता
कोघइभिस्सीनेनमा [illegible] सा [illegible] धीनः ।
हिवे [illegible] गुपलभ्यइलोनिवनेपने निवस
नपुने॥ पकाहिगुइनिकेविहरेवाबायइ
नोयसि॥ पापपाइनेइनाभ्यातवेगुलेइपकइप
क॥ वइनासवतानावपकेयामारगेभेरका॥ ले
सर्वपुद्धिमायानिसपकेयलवानः वेन
गुइपिइहाव्यापिप्रसेइमाभवेन॥ लनाम
वतिइहनेपवसनेवणभवेन॥ ग्रामापोनाहि
नस्वेवप्रधानेनवगकृतिॱ॥ प्रायश्चितनयपाप्रा
कुमाइवोग्रायणवेन॥ केपानेइरणपोय
विनुणग्रनमायेन॥ विनुणनप्रनेबोणेइ॥ वे
णाविनुणभवेन॥ राजावाराजगुवोगाप्राहण
वाभेइपकृनं॥ ग्रहनवावपननेधामायश्चितेन गु
यानि॥ सवोकेपामगुइनपकेरपेरगुलद
हुपवनारीकुमारीणापिरसावपनेभवेन॥ न
हीणाकेपावपननेहरग्राचननेपा॥ नवगाहे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible] न या ॥ ता [illegible]
न [illegible] जिनेन ॥ श्रु ता ता शु प का ः
[illegible] न वे पन ॥ उपवा मननु ता गे शु पा का
[illegible] पुतं ॥ तो शु वे तो म य तो रे ल य म पि कु ः
[illegible] ॥ [illegible] रे ह प व म ये च प वि वे का य प्रा प न
[illegible] लि व तो या: क्र लि या मो म यं ह्र ते ॥ प्य
ल ना अ व णा या: म व ना पा रे पि उ थ ते ॥ को पि ला ः
[illegible] ने [illegible] प वि वे पा प ना या ने ॥ प्र भा वे म व र्षा
मो कं पि ना या वि गि ष्य ते ॥ ता म च म्य प ल स्या न
ति गु णा ना म य स्म ते ॥ तो रे म भ प ल स्या हु भ वि
व म ल शु भो ने ॥ प्रा ना म के प ल स्या न ल म कं उ पा
स्ये ॥ लि पि उ पो स्त के व स र्व पि शु न का य न ॥ त्ता
[illegible] ये म या ता शु वे म य ना ने नि मो ग्रे ॥ प्र ण्या ये ः
[illegible] लि द्दो ण व रु पि [illegible] ति व रे पि ॥ ते मा मो नि न ये
[illegible] स्य ना [illegible] मा ह क ॥ मा णि को नु प ला पा
[illegible] न वा वि ने न ॥ म च स्त मा शु ने न के शा ग्रि म
नि यो ॥ ते म यु या ल [illegible] भं प्र छि गा गा स्म श ल ः
का ॥ श्र ये वे व सा मा य ग ना त्ते न न मे नमः ॥ द र
वि क्ति मे ना [illegible] गा य ग्रा श णा वे न व ॥ ते मं के ह
न यु ण वा: त्रि पि वे म ण वे ने ऋ ॥ प व गो त्ति ग न पा
प र ने ति घ ति रे हि ना ॥ प्र लं छ वे र ह स्त्र वं य या पि ः
[illegible] पि य न ॥ घ र ह न ल क ने च्छ भुं सा न प नु स्म ने
म य मो हि गो शु वे हि ते ये ता म यं ॥ न्न तो य श ता व
ने ये र पि ॥ प व म स्ता पि: घ हि: ज पा र के प का सि ः
[illegible] ने नि ग स्ता: ॥ प वे श्र ल छ वे ना म ग्र ने ॥ ना व व ह
को सा न पु [illegible] न लो गु स ना मे ये व ॥ प्रा व णे शु वि मा ः
घ नः न हो लो वि न ने वा सो ग्र न मु व स म ॥ वे रे न ः
त्रि मं पं स्ता न मि तु के स्व गा णा म वे ने न ष्या ॥ व प म
पं उ ने मा रा कु स्तु वा ज्ञा य णा स्म ने ॥ भू हे व [illegible] न ति
हु ते शु ला नि य म न न मा ॥ भू मी व या प न शो क यें म
व यं घ ने म ला ॥ य हु पो मो व प क्र त्वा प्रा क्षा र पि [illegible]

75

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

केति सुयाननं ... ...
कीवकस्त्रिवारकालागामम ... ...
नस्मान्‌माप्रमापयाप्रपमनन ... ॥ ...
वालगोशुचिश्रुवतिकानकाम ... ॥ पप
निकायः लीनायनंपापभवतिमिति ... ...
कानिशुतमायापाकश्रुतमायव ॥ श्रपाकसाव
यापशुकैविमःवाशयपालेवान ॥ श्रायावसाजे
नाशानमस्रानसुत्रजनः फल ॥ श्रानाश्रलिनु
हीनाश्रुद्वेमानमस्रक ... ना ॥ पववपतागुण
मिव्यापवान्नेयवलेशुलने ॥ वननमपानेरस्याय
वारेपाकराविःसाह ॥ पशुरेसयालेरम ... नेम
हियाधे ... यो ॥ लिवैवलेमक ... ...
नसमाधेन ॥ गागमनेतेन ... ...
लालरलेन ॥ वेश्यागमेत्रि ... ...
लालटलेन ॥ श्रयवाबामाहि ... ...
लश्रुस्नेति ॥ लिपत्रपानेः ... मयः मयानेन
केनस ॥ पवश्रुतरकमि ... ...
तेमुर्येन ॥ पारवनाश्रहंसायापा ... ...
कुणवक ॥ यरवत्यामिप्रमनानोपः ... ...
क्रियां ॥ पनलिवनरलिपरशावधोलिपवर्व
मैन्यानमवभुनानोश्चरक्षालानरतेला ॥ न
सालियानिपावनपमपत्रनिवासमसा ॥ श्रम
साहवाभुनेसलाममपवृषतसः ॥ सवाटानेप
शपवन्नश्रुतकाभमकरापिनाभि ॥ शुद्धिःस्वाद
प्रऊवैन्नापावनसंवनसारवप ॥ तिवैश्रुतेनामप
हशालोत्रिमनवाषुलि ॥ प्रपापेतःपिनसालि
नेपशमपवच ॥ ननोपवनमलेधकेवनर्या
मन्नश्रुलि ॥ हनिसावेलिविनवाकः ॥ प्रल
नाश्रुलाश्रासाहपानाधेदहलकः ॥ यानस
सुरांगोतेपाननेनारानउपाने ॥ समानेसप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

...लालनेवेनरानेः ॥ पकैमे...
वाराण...ने ॥ तिपवाविद्या...
...॥ ...पोवोक्षस्माश्रयवज्रपत्रपरोप
ने...मोक्षोव नेतिमाद्यरूतेन ॥ नेप आ
...नेनोपनिरूपितवः ॥ वामाशेगुरुद्वेदः
स्याधा: ...णिनिवाः ॥ नोवतेवामभात
मृना भने ...लिणे ॥ नोवुरुनेनिराप्तमेव मृतेनभने
तिरति... ॥ नवश्याव पउवोनेनहूद वेवाधुका स्व
वधाय नेनयाद्रूनेनस्तयमुदीन्लि ॥ पः सापिषकू
नेप्रनेपृ...नेपानयते ॥ सपुष्यन्नेनकुपा
तिपोन ब्रूवोपस्नायने ॥ राजनेनेवमनसासर्वतोर्हे
...नगने ॥ शिघ्रहूनेनमाकुणनाविड ह्यानिला
नवः ॥ हर्षे समग्रहनेनमप्रयुक्तनेपालयमः ॥ दव
...नेन...देशासमचक ॥ नेनरणवृपि
...समभीजनमिवोघरे ॥ पोवेसमकाकनेव
...नितान्त ॥ प्रसृतनायनेत्र...
...नेत्रिविवहिने ॥ नौपोवोदां...त्वधानि
लोसामि मातृ ॥ नावहंवैपुत्रिविवच...नर्प
...न्नंसतन ॥ भूपमावे...नेदधाद्रूपभावेनेश्ववव
...लतानेवे...सहदोनानेकेचनेन ॥ मृत्य
...नेपृनृहिकाया...चरने ॥ केवलनृपनेय
पेनतिराश: ...नगतेः ॥ सपिणीकरणं कार्य देव
...मन्विने ॥ प्रवोकपिलीकरणश्राद्धानुना
तिकाययने ॥ ...नवत्सनेलाधोकः कालांतरेभोः स
नास्तिनः नेम: कालेन...
इति श्रीपाराशरेयमेशास्त्रेसूक्ष्माध्यायः ॥ ८ ॥ वा
...निबद्धन्ति ॥ प्रगामसाम
...नेन ॥ एकेवेदपिय...
...मयत ॥ सूमावसावप्रमीनप...
यतोविधिः ॥ ऊक्तूमालप्रमाणेनग्रामसवपरके ल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ी ।
६ ॥४४॥

॥
नेनधीतेरूपाझाबिनमोनेन॥ नमःव
रुगुणिवसणाहिसापरवेनि॥
सुपाकिन्मासपिगछानिपद्धेनो॥
हयंसुस्कुरगाहोसमुनेछया॥
वएगोलौसुहावेयाहिग्राछानि॥
नेसुख्यवनेयामिपुनेहशान॥ मानेरपोभिग
छेनधीगिनीमानेलापिवा॥ नेसुपनेमपुरनेनाग
छेहोलिसुछाणिनावरे॥ वोसुपयाणचपडु
पनयागुयाराम्मानिकूनि॥ रोनवानमसेकनू
लेशुन्सेमफनिश्येनेवन॥ शरानेननवसक्रपो
नेसुधीनवारापव्रपो॥ रशगोभिमुनेरयाने
मुदिछगोरीसुवेन॥ पेनसुरोलनमारणमा
हृथानृश्वधानेना॥ सुरयनोगुवोचेवधानेर
घानपवबो॥ भनेलानोहमोजावसुनापणजव
वेन॥ वुवालिय:मवचनेनासुपिगीवाजुनिवः
दिन॥ विगाचसुपवामनविशाणमेगपतिना
न॥ सुपीविवपनेशन्वाभुमापोवेचयबुरेने॥ गा
हयसदेवागारयानसुंविपागवोगमवेने॥ दे
भमनसपरागमाउंभिनेवानेनवय॥ सुरियाद
खपतेवामरमासीसिंगभवे॥ वएगरोसुपद
सेपकेयावगछेनवाविय॥ विषाणमपुयनेग
नाहसोसुनेसकाशयन॥ पकरूशीवेषपोस
बीवेयकोबेणलुरिका॥ गन्वाबालपणकुमा
त्रयाचघीपनेविनो॥ मणीवेवपनेशन्वामुजो
यासातुकोसन॥ विगाउसुपवाससमारसकागवेन
लेपिवेन॥ सोनमनःसंभिनश्नवागामयोरयक
देवे॥ नेउसिन्वानिगाहुगोहदवाउसर्वेनसेमाः
भानरयोपिगाछेनुभमीनोमानलालिसू॥ नस
नमोहनागछेनजीणिशुकाणिबाबरेनो॥ शव

80

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]क्षालनो [illegible] नमोकेरक्षनया॥ दो[illegible]
[illegible]न्यामिवेनस्यानेः॥ पक्रमेक्रोपेने
[illegible]भवेन॥ च्चिनवमोन्नयापदैनावने
[illegible]॥ पायच्छिमेनन श्रीकेच्चयोनच्चालण
भोगम॥ [illegible]यदि णांट्यानच्छुहिंस्वायघुवा
येथीन॥ चतुर्वेणांख्ि यांपांवेक्ष्क्ष्यानपनेत्रूरे
ने॥ यपाश्रृंमिनपानभोनस्नानसौनिनछुष्मति
वैरियाच्छेनभुन्नापारृहोनावाचलाखवेनच्छुन
मानपनक्षक्ष्यपुच्चपंपाराभोभवेन॥ नेक्ष्नेखु
कोनपानारीनोक्षनैपापकमेभः॥ पाजापवे
नपुंस्येनश्रृंनोनावेदलाखवेन॥ धनन्पर्थयापे
ष्वापयस्यनापासरायेवेन॥ गायश्रीजपमान
स्वपानापसेमहापवेन॥ नारणानननयछुभेदपु
भनीविवागने॥ नामनेरुपरेवाद्युपतिनापापकमि
णा॥ खाष्ठतीनपरखमवेनापुष्कचामिकलाप॥ पु
मोनिन्यनिनायानत्रालणांसेक्षयाग्रमेन॥ नानो
पुष्मीमिननायातिननस्नानननरागनः॥ स्नपुस्नायापू
स्नात्रब्रह्मपुमिवावववपकी॥ पुनरागमनेनस्ना
नस्नापवचनन॥ पुस्नामसमलिनायावस्नासा
णांवलनलस्त्रियं॥ मावेनरपान्यातिननस्नापव
नहरून॥ सेपुनच्चेन्नस्नावेनाररमभनःजुचिनप
ापारणावपाकेनछुरेननरुहेभवेन॥ नच्छेच्चुः
नेगुरुकेवयववन्योनपापयेन॥ नानेच्छुण्णयपाचे
वस्त्रकांछच्छसिवयेन॥ रानारास्तापपानसवोल
केपाछुपाणोभवेन॥ ताष्टापिपंचगाबेनकास्य
निहपाभस्मना॥ पायच्छिनेवराहुपोचालिणनाप
पारेन॥ गोष्ठपर ति णांटस्यायानापनस्भावरे
नो॥ पुनरेवांपमेरारांचपंचगव्यंनप्रक्ष्यानि॥ [illegible]
मसे[illegible]भमछुजपानत्रालणभोजनन॥ उपवास[illegible]नः

79

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

...विभ्रमस्याव...[illegible]...मेयुनरानं
गुरुनिष्ठानित्यमस्ता॥ प्रकाश[illegible]
...भूमिगनसाथा॥ नरुघनी[illegible]
मस्यामिरा॥ प्रापन्काले नवे प्रणशोभीवां
विवनेयेव॥ मानेशुत्रेभवेदमागाय[illegible]
ने॥ ग्रहन्यहनयोधीनेगायत्रीहिनसंभवेत्॥ सदा
संवत्सुत्रनेपापाङ्करगः केतुकायथा॥ ॥ इतिश्री
धातासायेपमेसाधेनवमोध्याय॥ ॥ ॥ अथप
नेनीसंसवगालानुमयापिवा॥ यदिरम्
निविश्चणम्रकुचाजायणवनेन॥ नपेयुन्नवि
पोवेयपायुर्वाजायणचवेन॥ नाजघाविन
भायोभायोंपतीलनसंसृज॥ अजगपुनाचवेन॥
स्त्रीभुक्तावनेनसपूता॥ प्रकमाजापितेनस
स्नाणमणङ्गन्नयणवेन॥ नाड्डमोनलाचे[illegible]
निरयःनतपायञ्च॥ स[illegible]ननकानेप्रभोजनं
स्याद्गमेववा॥ माकिनमुनिविज्ञाप्रंमचोपीहिन
मेववा॥ यदिभुक्ननेपिपण्णप्रतेज्ञासनतापिवी
तान्वायमावनेनपूर्कप्रस्नृवेनपाचुन॥ व्या
लेनकमानेरग्रवेनसायेनमभवेन॥ निलह
भोरकसिवेनश्चत्रनेनाजमसुश्रय॥ स्नुपमो
म्भेनास्वेपचनश्चेनश्रुत्सुनि॥ नविधिचलेया
वेश्याःपानायमेनुश्चत्रानि॥ पयमलशुनलवन
ब्रातीक्रपलं मन॥ पलाण्डुगृञ्जनियामसेव
स्वकृववकानिव॥ उघृलीरमविदारीवेरकान
तोहितं॥ त्रितजश्वीवासेनग्रञ्ज[illegible]वेनश्चुनि
नोपियखेववेरान्वकिपावनोश्चाविश्चेनो॥ नद्रद
पिहितेनोगणा[illegible]कलेषुलिनपा॥ श्रुतेनेल
नमानेसलंशुडनेलनपाविनं॥ तत्वानलेनदेविप
शुनेश्रान्तश्चद्रभाजनं॥ मथ्यमासरतानिलजीवं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

क[illegible]नेनै ॥ न[illegible]वनयोहिप्राः[illegible]सि
वनरल[illegible]ममलालनेमध्यमेमसनिवनि
ने[illegible]मेनिनोनिनने शुद्धभोनयनहिमः
श्रता[illegible]ननविमाः विनुके गुनके पिना ॥ पा
यो[illegible]न[illegible]ननसवलिलतानिलिलि शतगाय
त्रा[illegible]सनगुण शुयनेसुन्नलनके ॥ वेशपपवश
नेनवनतेयसशानउपानन ॥ प्रालणसय
ग[illegible]कणणणयमउपानशुदिः ॥ अपवाबाम
देवेनुमाहाचेवेल शुशनैः ॥ पुकाउगायस
नेनविशवशपसमागाने ॥ पक्षेविसपृहुंसृत
भोनमभमेनुनेन ॥ आपकालवधियलगु
के[illegible]मानलोकेने[illegible]जया।
हायोः[illegible]पठव ॥ शपसनोपिनतोपोलकुल
[illegible]मूलिताः पुने सूदंशुभोनमाद्गःपापाहि
मेनेनिलै[illegible]न ॥ श्र[illegible]कन्यामशुनगोग्रालणन
नेसमायः[illegible]मोमवेषसाचिमसकोगल
नोपिनः वेपपक[illegible]मसूनगोग्रालणनिनेमः
[illegible]नः गोपालवशुयृतेपोभोन्याविपनेम
सायः नेवकन्यामशुनगोग्रालणनेनसह
नः गलमेउसु[illegible]नः सुनावपरिकैलिनेः
[illegible]नसु[illegible]ग्रालणनेनसह्वना ॥ प्र
यमोनिमविनेपोभोनविप्रनेसपापः ॥ मपमा
[illegible]भोज्यानापासोपयाः ऐवन ॥ शुकामउ
नर्दिनः[illegible]पानगपाम[illegible]मसमाहिनः ॥ बालणाः
[illegible]पावे[illegible]ः शुद्धावाशुद्धशुउनि ॥ वसके
वोपवासेननेधाशुद्धेअनेकुतिः शुद्धाणाउ
पवासेननभ्यासानेनशोपन ॥ उपवासमस्तुण
[illegible]पाकमा[illegible]शाध पन ॥ मउधलननः[illegible]य
[illegible]पवशोत्रिसंनिपो ॥ समराञालपादर्म[illegible]श्र
वि[illegible]श्रासमूलकः ॥ श्रग्रपेसोमायपञ्चाप

81

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्री ।
ः ।।४४।।

[illegible]

82

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मोभूयः [illegible] ऽपि धनवानवान
स्वकर्मैतो ॥ मध्युनेविस्मिस्मेवस्वानस्वावि
धानस्मे ॥ प्रतानाप्राप्यतित्रिद्धस्वत्तास्वस्व
वोपुनः ॥ पुनःसकवमहेतित्रपावत्ताहि
नात्मयः ॥ वपनमविलारत्ताभत्तवयग्र
नातिव ॥ पूर्वनेतिह्वनातेत्तपुनःसका
रमहेति ॥ मत्ता स्वस्पनश्रुत्रयप्रानापत्तस
मात्हिशान ॥ पवनानेतनःऊपोन्त्ताताप्पोता
श्रुविभवेन ॥ नलाग्निवपूनेववप्रश्नमाना
मकेपव ॥ प्रनावत्तिनमेनघोकपश्रुहिवि
धौयनो ॥ प्रानापनत्रयणथेनोघाभगमने
नच ॥ पूघकास्वागोदनेवाणश्रुतिने
त्रयः ॥ श्रालालास्वप्रवदामरणगस्वावन
श्रुणो ॥ प्रणोतवथवनेकृन्यायानापनत्रय
येन ॥ नान्हूपरतितामारयानश्रुद्धिवाप
भुवासयोन ॥ श्रुवानेभपापनश्रवणव
श्रणस्वति ॥ स्वानानिपवपुण्यनेकोतिता
तिमनोषिभः ॥ श्रीग्रंपवाहणाश्रास्यावयव
तिंवामेववा ॥ श्रूयमस्यनास्वानमेववा
लावेवमण ॥ श्राणहिषुतिवश्रासस्वाययथ्यं
गोरनेस्वन ॥ यमानपश्चेणस्वानेनहिम
श्रुयानेनेव ॥ स्वास्वावगणापास्वानेभवतिं
मानवः ॥ स्वानापंसुवणाक्षनेरवःपितृगणे
स्मर ॥ वापुस्वनप्रणव्यतिहविनाःसलिला
ध्यैनः ॥ तिरथांबेविवतेनेववतिष्ठाउनं
क्रतो ॥ नस्यात्रयोउपदस्यमक्रन्वापितृतर्पणं
श्रुवाधनयेतयःपाकास्वान्यामसमतेहिनः
शत्रुमेधापदरिश्रहृवातेनःपिनहूवना ॥ नेले
वापिनलेवापिनलाद्वापिःवाहिश्रुवि ॥ उपं
सूर्यंममायूत्तानउभयत्रश्रुविभवेत ॥ स्नाना
दोन्यादनेस्वमेभुकारयापसर्पणं ॥ प्रववत्र

83

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नत्वा भक्तः स्वा...मो...पुत्र॥ मारुतेयस
वः इदं स्मृतिन्ये वचरंबन॥ सर्वेषां मे वल्लीय
नेनसामोपरिवृते यन॥ ततो न दानं नृपेहा
मः सममृगवहूस्थाने॥ अन्योयाबाह्मणोगोविंद
स्माज्ञापरिवर्तेयन॥ वलयहस्ताभरमाहे ससम
नोपद्रहरोगवि॥ ३ नमतो यानो पीन रत्न भवनि
नतय॥ प्रहानिधा स्रुतेन कथं वा दशनस्य नोक्ति
लु यह गोचवि वा हृदये यावेदीको नानेत्रु पे:
इति पद्मपुराणे प्रकारस्याध्याय:॥ ॥ कल्वनिथो
पदाम: पाङ्मस्य कृतं नल...गोपीकृतांकृता
दीव वल धो पारिकी तीन: वनं शेषमस्य...
यापि...कृपावन॥ वपनं नमानकनेयाकेची
पानं द्विनिनः श्रोतेन समप्ती वाराम्भर: सोर
हकारक: सृहकारेणानु यावे भेनावेर लिकोन
क:॥ गाजले सु व गोसुन नदी पसव स्नोसुव नेपा
वनसुनो ये सुग्रामे ...यासुव पायदेनवेनो
यानि सुएण गलवान सा या रहयापानतानिली
एस्तानयातनमायने॥ ताम वेद सम मारेया त्रे
लमेवयसोचिते॥ मने हस्ता मनु इस्यस्विहर
कनु लागा: सुधनेपानकोसमा शकनानेवनि
हृतिः अस्य वा वभृत्य स्ना ता सुंसे भव ति त्रलि
ह॥ पुनः अन्या गतो वृषभ वा मा य पुस्त सूर्यानि॥ १
पारयत्स्वर्णव स्नानेण भोजननानि विशेषतः
सपुत्रे सहस्र भूतस्य कृयाङ्गलं एण भोजनं गवा
पकशानेस्याच्चनेदेया स्वरतिलेण श्रीलनानं
प्रस्तारेन स्वलहमानिसुवान॥ पुनस्यानाशार स्या
त्तेलाकानाशाकनाशन॥ शुभेस्त्रा करानपू
वधेव कारणश्रुतिनि॥ सुरुपवाशन्याषु कूर्य यमि
सोवेमनुह्य॥ पः पृथ नु सुएव या कामि सवपा
पे: प्रमुच्यते:॥ ॥ इति श्री पद्मपुराणे पाताखंडे
होत्तराध्याय:॥ २२॥ समाप्तमेयपाताखंडे नि:

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

85

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

... उष्वनी ...

गं श्रात्रैश्रुस्मिन्नुदाहृत:कौथन आग्निनक
मः। एकभक्तापिकानां ... नानां नस्थानो
निर्द्दिष्टेनैलत्तूपैवनन्निष्ठो नोच निर्णय:॥ ३
निपात्तपश्चत्वाधिसामान्य:सप्तशब्दनेः॥ वैव
श्रतिपदैश्चैवलक्षणानेगमनने॥ मौनथानि
पदस्त्राधिनिर्णयो द्विविध लक्षणा द्दीबाव लक्ष
निपदैनिर्णयोऽनुनमथवा॥ यथाऽनिहविक
ल्पैस्तैषाग:प्रतिपदैर्विना:॥ नचकार्पेविव
र्णादिप्रतिपत्तविलासवचौ विके:समुन्निक
णिन:प्रतिपदाविशेषनिर्णय:॥ यथाहिनीयाः
सामान्यनिर्णय:सप्तशब्दनाः॥ मन्तृनस्याप
नात्मैवहितीयानिर्णयोक्तने॥ चैत्रशुक्लहिनी
यथास्वेमप्राणेनपश्चलने॥ ... महि
पमस्तन्नादिके क्रमान्न॥ अयथानिह विकल्पादि:
योगपेक्षा ... यामी वन्धा
निवेपस्ववपक्षनने॥ कुनम्बनीयास्सामानि
निर्णयलक्षनेन॥ आलोसननृत्तीयायोविधि
श्चैत्रप्रकीर्तित:॥ सौभाग्यशयनाख्येचत्रत्र्नेन
चैत्रकीर्तिने॥ मन्वादिकल्पनीयापोर्वाणनेन
स्वनेनचम॥ यथाहिननृतीयायोदर्शलेनेकत्यमे
वचा।आदिवर्णनेबाउ आाडंदानादिवर्णने॥
चैत्रेवलक्ष्मीमहिते विलक्षणानन:पर॥ ...
86
भाद्रनीयापानिर्णीपक्षहिधिः लक्षना॥ भाद्र
शुक्लेनृनीयायोहिमगौरीप्रपूजने॥ माघशु
क्लनृनीयायोहिमूर्दानादिकेनथा॥ नथा
मार्गकृनीयासगौरीपूजांश्रकीर्तिता॥ नन:शि
द्विविरुद्धादिकार्यवत्यादिवर्णनो॥ अनन्तरं
घोसमान्यनिर्णयलक्षनेन ...॥ गत्वनाथं व
नुर्थाश्च निर्णयलक्षनेनने॥ चैत्रगणेशापश्ना
वचनर्थोत्सेषव॥ तुमासनाभद्रपदेगणेश
लार्थनेविधि॥ वेदस्वनेदोषाप्तनवनकां

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

निषेधनं ॥ ज्येष्ठाष्टिन चतुर्थ्यो नदेवीकेषु मासः
सावेन ॥ माघे शुक्ले तथ्यां च कल्पवृक्षेः श्रा
वणेन ॥ तथैव पार्वती पूजा विधानेन फलाः
दिके ॥ धेनुव्रतन थोव्यो चंद्र मासे तत्रैनयो ॥
ना गोपवासः सर्वी स्वगणा गास्पद समजने ॥ न
थामिइ विरुद्धादिकार्याकार्यविनिर्णयः ॥ श्र
वणा मासे नस्य लान्यनिर्णयः कथ्यते अथ ॥ श्र
वण मासे चैत्र पंचम्यां नाग पूजनं ॥ तथा श्रा
वणे पंचम्यां नागे लेख्य पूजनं ॥ तथैव कृष्ण
मन्वादि पंचम्यां शास्त्रि नस्य च ॥ नाग पूजा समहे
शणी हस्याश्च स्वप्नन क्रियाः ॥ श्रावण्यां शुक्ल
पंचम्यां कामपूजात्मवादिके ॥ पंचम्यां श्रवण
की स्वकार्यो श्रवणपूजनं ॥ तथाासिद्ध विरुद्धादि
कार्याकार्यविनिर्णयः ॥ अथ मासा मान्यतः षष्ठी
निर्णयः स्कंदराज्ञतः ॥ आषाढ कृष्ण पक्ष षष्ठ्यां तु
कार्तिकेयस्य पूजनं ॥ भाद्रपद षष्ठ्यां च ललिता
कार्तिकेय बालकन ॥ तथैव कृष्णपक्षे लादिक
पिलः षष्ठ्यः ॥ कृष्ण पंचम्यां तद्वत वर्जनं षष्
ठ्यां तु स्नाने ॥ अश्विने शुक्लपक्ष षष्ठ्यां तु विलस्तः
निर्मायिका ॥ कार्तिके शुक्ल षष्ठ्यां तु स्कंदषष्ठ्यां
स्कंदनिनाः ॥ मार्गशीर्षे षष्ठ्यां कथा चंद्रो वांछ
महोत्सवः ॥ सर्वान्तिके षष्ठ्यां तु कार्तिकेयस्य
पूजनं ॥ तथाासिद्ध विरुद्धादि कार्याकार्यविनि
र्णयः ॥ अथ मासा मान्यतः सप्तम्या सप्तमीर्वः
निर्णयः ॥ चैत्र तस्य वः शुक्ला वैशाखे विष्णुसप्तमी
नधैवाषाढ समस्यां विवस्वत्पूजनं तेन ॥ सप्तम्यां
माघे नमा मिशयात्रिकाया पः प्रवेशनं ॥ मार्गशीर्ष
कृष्ण सप्तम्यां रविपूजनं ॥ अचला सप्त
मी माघे पंचगः प्रमकेसैन का ॥ सप्तमी श्रवणस
मी रविपूजनं भास्करस्य च ॥ तथाासिद्ध विरुद्धाः

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दिकार्याकार्यविनिर्णयः॥ प्रथाहस्पालस्मा
मान्यनिर्णयः पोवकीर्तिनः॥ चैथेश्याकाह
मीकृत्यवैश्यादीवाहमीत्रने॥ केषाहस्या
नश्यारैवीष्ठिवपोःषुजनेकमार्॥ याघाढे
मासिवाहस्यामहिष्यः प्रथुनने॥ आवणे
मासिकृतस्यजेमाहस्यांविनिर्णयः॥ भाद्रे
मूर्वाषमस्याकानयाज्येष्ठाहमीविधिः॥ मु
हालक्षीव्रतेनेस्तमहाहस्यविनिर्णयः॥ दे
वीपूजाविधिस्त्राद्धवालिदानविनिर्णयः॥ लो
हाभिसारकेकमेवतकेसादिपूजनं॥ नथाः
षष्ठानिनायापाश्रस्त्राघोक्षपद्मनाभः॥ कोषा
हस्तसमासमामाधेयीकाहमविधिः॥ फा
लगुनमासिचाहस्थालस्वीसौनापमूजनं॥
उपाहमीनिर्णयस्नसवीरविवस्मनं॥ न
यासिद्दविकंडादिकार्याकार्यविनिर्णयः॥
नवम्यानिर्णयः श्रीकृष्णाभावाल्लदनेन॥ न
वम्यांमासिवेशालेचैत्रकापस्वनेविधिः॥ ये
ष्ठकमासिकायस्नानवाणाकेनवमीस्तुये॥ वैशा
ष्ठमासवाणनः कोमार्यः नवमीस्तुये॥ आश्विन
मसानवमीश्च काकसपवोधिनी॥ नवमी
नामलीमासीमहानन्दानवपच्या॥ उक्ताम
रावतीप्रजासवेसवनवमीव्रते॥ नथासिद
विकडादिकार्याकार्यविनिर्णयः॥ दशमा
मान्यतः पोवकोदशायत्यानिर्णयः॥ दशम
मानवपोष्टेवैस्वारचैवरनेः॥ विपिनेदशमा
मावतस्थासामापूजनंचैव॥ दशमीमुचकर्बुदं
लपवन्काकुलागकस्थव॥ नथासिद्धविकडादि
कार्याकार्यविनिर्णयः॥ एकादशीनिर्णय
मेदशमुपकीर्तिनं॥ वतानकल्पस्ततोपः
स्नानकालोऽत्रकमः॥ व्रतस्यालनियोगनेक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तो फलोनिर्णयः ॥ चैत्रान्हकिमणौ शुक्लावाल
पुष्करः स्ते दिने ॥ प्रोहेलनेचाग्रे विस्मृतिनेसेका
रुपीवने ॥ प्राप्नाकृष्णस्य काटपर्यपालिस्तुः प्रस्ता
पनककर्मः ॥ एकादृश्यपभारप्रेरनन्यापुरीव
नेले ॥ कार्तिके मासि शुक्लापामेकादश्यपाशुचे
पले ॥ तथा पाशोनाम्बशुक्लहूः प्रोक्तनः परं ॥
मार्गशीर्षे हिमासशुद्धादश्यपकादश्यपीश्ववा ॥ यो
कः कोमगाधरगोविन्दानार्चनेविधिः ॥ शिवस
नान्सर्वाः स्यपदपापहम्भोबांधि ॥ अर्थासिद्ध विकृ
द्वादशिकायां कार्ये विनिर्णयः ॥ द्वादश्यां नि[illegible]
यक्षायाश्रवणाद्वादश्यां वने ॥ शाकम्भोन्यापने
वद्दादश्यां वंसमुत्तने ॥ मायेविन शुद्धादश्यां व
निसमयनाचम्नवेनः ॥ तथासिद्ध विकृद्वादशिकायां
कार्ये विनिर्णयः ॥ प्रोक्तदशीतिर्णयां पूर्णयान
गद्योप्रादश्यां ॥ वापोदश्यां गलप्रसाय मरीपशुः
कार्तिके ॥ कृताचानिद्रापाः दश्यां समेनन तथा
यच ॥ तथासिद्धविकृद्वादशिकायां कार्ये विनि
र्णयः ॥ सामान्यश्चैव चनद्रश्यपानिर्णयश्चैवमासि
वा ॥ शिवपूजा यतद्रश्यां समेननतथाग्रव ॥
कामं निर्णयतुविधिः कृष्णितः क्रोदशाविधिः
हेमपत्रयव्रलनेपुन्यैवैशिवपूष्पे ॥ तथान
न्नानस्यापिनिर्णयः पूर्विकीर्तितः ॥ तथाप्रन
[illegible] ॥ शिवमावि चनः
[illegible] ॥ तथासिद्ध विकृद्वा
दशिकायां कार्ये विनिर्णयः ॥ सामान्यतो विवि
दिवः प्रोक्तमासस्याविनिर्णयः ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ आकर्मविधिश्राद्ध
[illegible] ॥ भाद्रपदे [illegible] मासस्या
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]

89

त्रिहराहूना ॥ कौतुपराप्याम्बिलक्ष्मी इत्युक्ता हाने
हेतुत्वाच ॥ कार्त्तिकामयाद्ध्याभिरानेत्रासोद्
गर्वैन ॥ भूमीत्सर्गक्रियानीराजनपदार्देनने वद्य
मार्गशीर्षो चैत्रयुक्ता प्रतानेलवणास्थैच ॥ स्थल
कौभाशाने भूतेहिकैवोद्यमपोर्णिने ॥ माघां
वतिलपात्रणां दानेत्राहेनमपार्त्तिको ॥ होलिं
कानिर्णयमुर्व्वमूलमास्मयोगोका ॥ स्वान
नेर्थविशीघ्रलेमहाचैत्यादिपूर्णिने ॥ वेदुग
आवणसर्वोत्स्वपूर्णमासस्वोतिना ॥ नयानिह
विरुद्धाहिकापीकापीविनिर्णीयः ॥ धनारिष्ट
नन्तःपोक्तोमासमासान्तनिर्णयः ॥ निर्णय
वृहस्पतिवारस्वलेपात्रेणविनिर्णयः ॥ मरामा
वोयसत्संज्ञालभ्योगानान्पोक्ता हि नः ॥ अयोग
पोबिययुगयकालभ्यायान्तनःपरं ॥ यायाग्रवधा
नुमितयुपैर्णवर्द्धयविनिर्णयः ॥ निर्णयश्राद्ध
नप्राप्तमासककलामतः पदे ॥ अप्रास्याचीविधि
श्रुतिवृयानमोसक्षमानिब ॥ निर्णयोयनवेप
स्याविवाहस्यानपोवव ॥ हिराणामनकालस्य
पोक्तःपककरणोत्तिहि ॥ इति तिथिनिर्णयो व्रतप्र
करणस्यापस्याक्रमणिका ॥ अथाद्वितीयस्य
श्राद्धप्रकरणस्यायानुक्रमणिका व्याख्योलि
का ॥ तत्रादौ श्राद्धविशेषेमासस्यानिर्णयः क्र
नः ॥ श्राद्धस्वरूपनिरूपणं श्राद्धकालनिर्णयः पर
श्राद्धकालनिर्णयश्राद्धान्नतोहस्तपनिर्णयः ॥ श्रा
द्धेस्वास्वनीगृहानपैकोद्दिष्टपार्वणो ॥ नेय
मस्वतन्त्रेहीनाश्चस्वक श्राद्धविधिक्रमः ॥ एक
स्मिन्नस्यनेकेषां श्राद्धानां करणक्रमः ॥ नव्या
पौत्रापत्नविनः श्राद्धकालानक्रमः ॥ श्राम
श्राद्धविधिश्राद्धयानकालस्वपकीनिनः ॥ श्रा
द्धांकालालपारीवकिपन्कसपेहकोविनः ॥
जीवत्पिता महालेस्वपोक्तः श्राद्धविधिलनः ॥ ने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

न्मासाररहः श्राद्धमहालयो विनिर्णयः ॥ कोप्यश्रा
द्धननः श्रोकेनवश्राद्धननः फ ॥ तिग्मो मासिका
नोत्सर्गश्रीकरणाननः ॥ सपिंडीकरणोत्रोणाप
तिश्राद्धविधिः क्रमात ॥ सपिंडत्रिपादीनो सं
कल्पश्राद्धमेवच ॥ अथश्राद्धदीपिके श्राद्धनीमश्राद्ध
ननः पर ॥ संक्रान्तिनिर्णयश्राद्धमनसामस्याति
लेयः ॥ इति निर्णयामृते द्वितीयस्य प्रकरणस्या
नुक्रमणिका ॥ अथ तृतीयस्य इत्यस्य द्विप्रकर
णस्याक्रमणिका ॥ इत्थं प्रकरणस्यादौ श्रा
द्धेय इत्यर्थं यहूः ॥ ततो निषिद्धइत्यानि इत्यस्त
द्धिलनः परे ॥ भूस्त्रिरयपशमेपांत्रस्तद्विरनःप
रे ॥ ततो धर्मास्त्रिस्तद्धिस्त्रवल शुद्धिलनः परे ॥ व
र्णास्त्रिद्धिलस्त्रक्रमेणपरिकीर्तिता ॥ श्राद्ध
देयपरस्त्रस्यातोकथितलननः ॥ इति तृती
यस्य इत्यप्रकरणस्यानुक्रमणिका ॥ अथ चतु
र्थस्याचतुष्प्रकरणस्यानुक्रमणिका ॥ सांवा
शौचेवेलन्नारीपानशौचेनननः परे ॥ ततस्तननः
नाशौचेवश्याहिविधिरत्रव ॥ वर्णोवर्ण्यानुनाशौ
चे मर्वमाधारणाननः ॥ यहाहिकेशसंस्कारेच्छ
धिकाक्रमलनः ॥ नापराणावलिस्त इस्मर्पशुद्धा
क्रमलनः ॥ नश्राहारोलत्यविधिः ॥ प्रमवाप
ह्रोनवेतोस्त्रकारेत्त्वं नमस्पच ॥ शूनिवेद्यविवे
वेनप्रयक्तियाक्रमः ॥ रत्नस्वलासूतिकयोस्तेनपो
शुद्धिरणश्च ॥ रजस्वलापशुशुद्धिश्च कालभेदास्तपो
हिता ॥ पंचकेप्रमनानोचरोगार्त्तानिर्वनः परे ॥ का
लनयागोमर्वमाहगोपेन क्रियाक्रमः ॥ ततः सं
न्यास्तकालस्त्रकथितलस्तेनवे ॥ नष्टावर्णावि
वेकेणाविशेषः लनकस्यावा ॥ ईशायांदिकसं
न्यासावतिनवाद्विविभागननः ॥ इत्थंभेदलक्षणाये
वामयः शौचादिकंतनः ॥ अनुत्तामविज्ञानीया

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सपिंडशौचमप्यथ ॥ तथा मातामहाचार्यश्रोत
नियमःकृतः ॥ अनौरसादिकशौचेतु गाथा शौचमेन
यं ॥ सद्यःशौचं राजन्शिल्पिप्रभृतीनां स्वकर्मस्व
वेषांनरंस्कृतानांशौचंनहिपातनलक्षणं ॥ अस्पृश्यक
तानृपदेशस्संस्कारविधिर्विनः ॥ अशौचनस्यनं
स्यानीवदानेनाकर्मनिविधिः ॥ अथात्मगमनोशौ
चेष्टापम्प्रिवचनस्यन्न ॥ अशौचसन्निधानस्तुलि
तपिसल्टनेनो ॥ अशौचीकार्यवर्ज्योत्किकर्मणां
नियमसूत्रं ॥ इतिश्रीनृसिंहकमलाकरविरचिते
निर्णयामृते शौचप्रकरणं समाप्तमगमत्का ॥
अथ तिथिनिर्णयो लिख्यते तत्र कर्मकालनिर्णय
सौर्येनरंगान्तयानि निर्णीयते ॥ अन्येनाप्यपारावद
विधिः ॥ नतु ॥ विधिवशेन प्राप्तौ नियमः स्या
दिकेसति ॥ नतवानस्यपूर्वप्रयोगविशेषणाभि
धीयते ॥ सर्वविशेषणाक्येनस्यमानार्थसिद्धु
मेव ॥ नन्वलनास्यतिथ्यानामपि प्राप्तमाप
ताहिविधःप्रवर्तकोनिवर्तकस्तु ॥ नत्वप्रवर्त
कोयथा ॥ अभावस्यायामपराह्णे पिंडपितृयज्ञेन यजे
नचरेदिति ॥ तथा ॥ दर्शपूर्णमासाभ्यां यजेद
त्याकुलानिलोकके ॥ अनेनविधिवत्यायमनु
निलेनवधनि ॥ निवर्तको यथा ॥ अमावास्यायां
माधीयेत ॥ नमुखायेन ॥ नदिवाश्राद्धंकुर्यात् ॥
नायाद्वैफलस्याति ॥ तथा ॥ अमावास्यायांनाय
बहुसमकालामृपिविहितं ॥ नैलेशवनस्पत्यादे
ष्टानादिचनवैदस्यभ ॥ एवंस्वभयपविधपविधतुकु
कर्मणोपिकृतानुवेतनित्यपागम ॥ नतु
कालेहिकर्मचोदनात कर्मणा कालपानं ॥
नासामान्यविहितसिद्धमेव ॥ नथाववधिः ॥ पौर्ण
मासमास्यां पौर्णमासायजेत ॥ अमावास्यायाम
मावास्ययायजेत ॥ तथैवतिथि ॥ तिथिनवकं

वाराहिस्मायनेषु गणपपपर्ययोः ॥ अथानगुणभावेन
नह्यातेष्वप्यनेनकमाइति ॥ एतेषु निश्चितोविषयं
गतेन नितीतिनयः ॥ कालालित्थयः इति वाच्यं ॥
मने ॥ तेषु ऋत्विचक्रः घोष्यातिप्रयःपमिह्रा
एव ॥ तत्र विशार्द्धकृतात्मकेनाहोरात्रेण सूर्यमं
डलस्य काष्ठाचेद्रमण्डलस्य प्रथमा कलानिर्गमे ॥
शुक्लपक्षतिपद्भवति ॥ द्वितीयाहोरात्रेण द्वितीया
याकलानिर्गमे द्वितीया भवति ॥ एवं तृतीयाद्यः
ऽप्यूह्याः ॥ एवं क्रमेण पंचदशाहोरात्रेण पंचदशा
कलानिर्गमे सूर्याच्चंद्रमसो स्थितविप्रकर्षात्स
पूर्णिमा भवति ॥ एवमस्यां पूर्णिमायां स्वपर्यां सूर्य
लस्यैकैकोरश्मोनाहोरात्रेणैककलापरविमण्ड
प्रवेशादमावास्यायां पद्भवति ॥ एवं प्रवेशक्रमेण
द्वितीयादयस्तथा ॥ एवं विशान्नमेलनहोरात्रेण पं
चदशाहोरात्रे कलाप्रवेशात् सूर्याचन्द्रमसोर्भृयाम
सन्निकर्षात् अमावास्या भवति ॥ नद्रमेणो विलेस
यः पवो विप्रकर्षः सूर्याचन्द्रमसोः सा पौर्णमासी
यः परमः सन्निकर्षः सामावास्येति ॥ कालेन याघ्र
ऋषिहाबाराणि विहितस्यार्याविश्वनावृत्ती ॥ सूर्या
चन्द्रमसोनानाप्रकारः एककल्पयेहिति ॥ नन्व
विंशात्कृतात्मकेनाहोरात्रेणैकं न तत्र मुहूर्त
तेष्वर्णविश्वपरीये ॥ सत्यं ॥ लोकप्रसिद्धोऽह
निमेषादिरिति ॥ नो दोषलवः ॥ नोष्ठा क्षणः ॥ नेस्त्रा
काष्ठः ॥ नाहि घान्कलः ॥ एतं हि काष्ठा स्फुरते षोति ॥
तथा च गर्गः ॥ अक्षिपक्ष्मपरिक्षेपो निमेषः परि
कीर्तितः ॥ दशतिमेषान्नाटिनौ मह नमरीव लवः
स्मृतः ॥ द्वौ लवौ त्रुटि रुद्रुकः काष्ठः पंचकाष्ठा
स्मृताः ॥ त्रिंशत्काष्ठाः कला प्रोक्ता कलास्त्रिंशत्तु
क्षणकः ॥ ते नवतिं घटिकाहोरात्रः इत्याह भगवान्
विहितेति ॥ एवं एतमानमहाभागेन प्रकारान्तरे
णाकथितं ॥ कथितां भाषितैः ॥ घड्रिः पलैस्त

पलभाग्नं ॥ त्रिपादंगुलावला रशुक्लिनेवनकं
गुलं ॥ स्वर्गो माघे शाकन्यां तथालंगुलकंचके ॥ व
धुभागोनत्यार्विडनाडिकाघटिकास्मृता ॥ न
क्षत्राणि भमाया पादेयावत्कालेन पूर्यते ॥ भेकाला
नाडिकान्नभाघटीभागाविनाडिका ॥ नाडिकाव्ये
गुरूनेष्यानिपंचदशावासरः ॥ एवं तान्विलयाप
देमासङ्घनवत्सरः ॥ स्वस्वर्णमासाद्विमानंवा:
मत्यलोके ॥ एवंभ्याम्लघीप्रे: घटिकृत्नास्याङ्गवे
मिथ्येवे ॥ गुनोभिपंचभिस्त्रैकामाघेकः पौषकोः
त्रिनाः ॥ भेवन्योत्रुघभिर्माघैः स्वस्वर्णलिः श्रुनःसकः
नः ॥ पलस्वर्णास्त्रनत्वारः पंचवर्णायघ्रको निमा ॥
मिनि ॥ कर्षः चलवन्नभोगैः सुक्ष्यास्वरुणः ॥ नडके
त्रिवर्णे ॥ मासैतलोत्तुलिप्रस्थोत्तुलाः प्रचायस्मा:
षकः ॥ नेषाः घातः कर्षोलोपलंकषीवनस्य ॥
नलवंमपिनिमीलनाविधांगलेखिपिवेवमियर्ये
नतिगोपमा: यथोसकनयालारभोगीयनमि:
निवेसत्ये ॥ विशाम्लरुतनोलिकाशोनाम्केवाव:
द्विचांनानिमीलनासेप्रातीवेनानिनांमिपुत्वेपिन्नाण
यमांधमोभंगयमफालसस्वर्रोभवन्नः ॥ नमेकस्मा:
त्रियोलिनेडुयवायामिलेननोत्रियोविनिलेकमे:
कुत्रकनेवोमिनिपेरेहवणोनिर्मयःकनेवार
निमिडे ॥ यमोप्यमेवपाणेनियदेइकामोमोकि
लेनोक्तो ॥ ववीटुपलत्याद्वैसाविविधानेथिल
त्सपल ॥ पमोपमेवपादेवानिथिनुपानेवतेति
रक्ति ॥ विवै: समोनिथिपेया ॥ एकानिथ्यः पूर्वादिने
मध्याकृषापिनी ॥ मन्यान्यासिन्दिनेनावेपवभव
नि ॥ दर्पोवृद्धिः ॥ नपोनानिथिवपिरर्धदस्य पवृमः
यत्रेकानिथ्यः पूर्वदिनेमध्याह्नादोपकावर्ते
युगापापान्यासिद्दिनेनथ्येवपूर्वानिथ्येगोपका ॥ हि
मावयः नपोनानिथिपिहिसम्पुपवासः ॥ यत्रै
कापूर्वदिनेमध्याह्नेमृता ॥ अपरापान्यासिंस:

94

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धेवर्षेष्विति श्रवणेनेति ॥ तथापि हि विशाखोत्तराषा-
ढाहस्तमूलक्रमेण पूर्वोदितेषु हितेषु वा द्वितीया-
दिभद्रारहिततिथिषु प्रारंभो नातिकोपः प्रयाणकः इति चन्द्र-
सैलाभ्यंतरादिनिषिद्धतिथिषु विपक्षस्याः पूर्वस्यां ति-
थिमात्रमिश्रवेणात्रिव्यावामि त्रिकक्षस्य रूपमावि-
धिनत्वस्यापूर्वस्यांसिद्धिः ॥ एवं विहस्तेन परविद्धः-
स्वेनवास्वपापामेवनिषेधो भवति ॥ तथा नक्षत्रह-
गोणाम् ॥ निमित्तकालमात्रस्य तत्त्रिचैधानिषे-
धमा ॥ विधिप्रत्यनिषेधानयनिषेधः कालमात्रं-
के इति ॥ तत्र पूर्वविद्धेन परविद्धेन पूजा-
यां नक्षत्रविशेषकं अनुष्ठः ॥ कोष्ठम इतिचेक्षत्रेन-
मयीमिषधः ॥ पर्वनस्य मिस्रमासेन पूर्वया पर-
या वा तिथ्यातिथिभ्यं कृतविद्धाहः ॥ तथा रूपभेन
तिः ॥ पद्रूपप्राप्तिनिषेधात्तिष्ठ पूर्वामयाम्रा ॥ वि-
शिष्टकृतिविधौ तिसमाभ्यासविधिः स्मृतः ॥ न
त्रैविविष्टिवधमिश्रितिसामान्यविषयेष्वभवति
गृह्मग्रहकल्पवस्तगात ॥ नागोद्धारस्थानादिष्विस्कि-
पेवस्वग्निलक्षणा ॥ भूतोद्धारस्थानादिभिहितेषु
समर्गात्तिथिमिति ॥ सत्यं ॥ एवं विशेषवेदन-
मात्रेतिथिविषयः ॥ तडागकूपमंडपाणां ॥ वनदे-
शोपवनमीनवस्थावस्थानमीतिथिषुः ॥ पूर्वोत्तिथि-
ऋक्षेषु तिथिभिर्वद्धकृतकं ॥ विद्धि ॥ नक्षत्रामी-
पेवस्थानादिभिःकारणीविप्रनीत्युक्तं ॥ नक्ष-
त्रकृतोत्सवकालेन नक्षत्रामीपदिहृप्रपतेः ॥ पाप-
मूलेन वात्तेय मेकारणास्वपोषणं ॥ तथा ॥ का-
लेत्रापि विज्ञास्यां दशापि कालप्रमित्ति ॥ म-
हापिकारणीन्यकाहाः प्रमाणोषधे ॥ इति
भविष्यत्स्मृतिवाक्याभ्यां विहृद्धापि वह्निषपते
मम ॥ श्रवणादिस्वादिसर्वप्रकारैवैष्णवैलक्षण-
वैष्णवासविषयः ॥ पंचदशानाडीवपत्रवैलक्ष-
णमनथ्यातिरिक्तः विषयः ॥ तडागेनियमे ॥ सर्वे-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रकारैर्योगयसपवासरस्यष्टकः॥ सार्धसप्त-
कानैर्योगैर्वापतेर्वने॥ इति नक्षत्रवारैश्च
वीतनक्षत्रतिथिकैर्निपलक्षववणापवंदशमीता-
थवचस्यात्मिस्थैर्यप्रकारैर्गगपतेः तिथिनक्ष-
त्रयोगच्छानिनीयायामवर्जनमत्रैनितिथिः॥ इदा-
नीं समाहस्यन्महि विनक्षत्रैनुतिथिविनिकल्पताः
तावसूसनसर्वानक्षत्रानानापदोषाणापितिथ्या
वेवाविहितवर्णपिहरिनक्षत्रस्योदयकनिष्ठ
विपानेन॥ लग्नमेभिहितकिलनोषवासादि-
तामिति॥ सूर्यांगिसंक्रान्ति विदद्युर्द्ध्यायाहर्ष पूर्वति
थास्त्रिमयामस्यात्यन्तिनिष्यां वैस स्वाप्यते॥ अ-
नोववनसामयेो॥ सानिष्ठिलसहोरायस्य सर्व-
मास्त्रियैनार्थैः॥ बुधेमानक्षत्रवसेय स्रासन्न
मयोनितिथिः॥ यानितिथिसमनुष्याणांरूपयानि
भास्करः सा तिथिः॥ सकलेदिवसः स्नानाध्यानुक
मेव॥ उदयेन्नवसविनाकोनितिथिरतितिथयोन
सा तिथिः॥ सकला सेया स्नानदानजपादिषु॥
सा तिथिलसहोरात्रं यस्यामस्तं तिभास्करः॥ उदि-
ते देव यस्मानी पित्र्ये चास्तगते रवौ॥ द्वित्रिशुभ
मकृष्यासातिथिर्हव्यकव्यपोर्विति॥ अधस्याष
मर्थः॥ इत्याहिस्रुत्यादिपीत्यादैवककर्म॥ यु
त्रमयापि स्रुत्यात्पितृपितृकर्मकार्यम्मिति
एवंजाबालिनिजस्वपर्मसनवचनेरुद्दयालक्ष
पिव्यापनीमासनतिथिरनस्तामान्यनयाशस्या
भिप्रायात्॥ पूर्वापरवेदो मुहूर्ताल्पयिकालेन
पवेलवसवमीयते॥ पवपूर्वापरवेदान प्रसा
सर्वतिथिष्वविहितसंकर्माण॥ फलातिथयश्चा
पक्रमान्निर्णये॥ तिथ्योरुवयनिर्णीतेस्माइति
सिद्धं॥ इत्यु दोहारपकप्रणम॥ इति सूर्यसेनभू-
भृद्विमलयशः सोमसागरात्रोदितो॥ इति तिथीया
मेनिस्मिन्नपारदाहारनिर्णयो जातः॥ श्रीमत्

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

णोऽनसिद्धलक्ष्मणस्वन: । श्रीसिद्धलक्ष्मीप
स्वनः श्रीसिद्धलक्ष्मीघटस्थापनस्वपीस
द्रमाहिम्राप: सिद्धस्यास्वत: ॥ प्रातेपाश्चकु
नेषकृतंस्वरस: ॥ श्रीसूर्यसेनप्रभोर्वैसेकम
णिकाललेनिर्णयसमवाल:उनाथ: ॥ स्वपोः
॥ एवंनिर्णीतोनिर्णयेसिद्धोनासौनिर्णीत
हेकभक्तासिद्धनानास्वरूपकालस्युलिङ्गप
ने ॥ नचनानिवृत्ताति ॥ एकभक्तानुक्रमाया:
त्रिनोपवासेस्वचनपोभवति ॥ नचैकभ
क्तानमहिलापर्यपमध्याह्नकूपर्वलिपमते
भोजनं ॥ तदुक्तं ॥ दिनार्धसमयोतीतेभुज्य
तेनियमेनयत ॥ एकभक्तमितिप्रोक्तंमन
स्तस्मादिवैवहि ॥ एतदेकभक्तवृतेमध्या:
क्तन्यापिव्याप्तिपोक्तं ॥ नक्तंतन्निस
ग्रहे ॥ मध्याह्नव्यापिनोग्राह्याएकभक्तवृते
तिथ्य ॥ तोयाध्यपनापरा: ॥ उदयस्थायवासर:
नक्तस्यास्तमयोनिर्णय: ॥ मध्याह्नव्यापिनी
व्याप्याकुलभक्तवृतेनिर्णयोविति ॥ यत्रमध्या
ह्नमध्यव्याप्तिभक्तस्यापत्स्वनोपाभाग:
विभागक्रमस्याप्यावसायनिर्णयेवक्ष्यते ॥ ए
वेभ्योत्स्वाव वैरिकास्यभपाहस्पीचहि
कर्मोवर्षेवैरिकानमक: कालस्यावक्काली
मध्याह्न: ॥ स्वयापुनवासिन्वेरिकोपायक
भक्तकनेपो ॥ सूर्यग्राहेपुनमयोनीमेह:
निवक्तस्यानर्थकप्रसङ्गन ॥ एकंस्पाव:
श्वेदिनेएकभक्तनिर्णयोमध्याह्नव्यापिन्या
सप्पोहिनोयादिनेमध्याह्नपर्यनास्पिनाः
पासापिनस्वमनिर्णयहेडो ॥ हेडिमोडिकापे
सैर्योगेनहिनोगहिनीपिमध्याह्नव्यापिन
ग्रसम्पेन ॥ नत्वामध्याह्नकाउपविसर्वाहिनेस
न्नपोहितीयदिनेनयवशामध्याह्नकेव

ष्टव्याप्तिमयोत्तरानिषेधे ॥ परं मध्याह्नव्याप्ति
मान ॥ तथा स्मृत्यन्तरे उक्तार्थविशेषोल्ल
मध्याह्नव्यापिनेयमस्योक्ते ॥ नन्वहल्लेख्यादि
निषेधः परस्याव हि कुल्लपाश्नुलेन यथा
कामधेनुकृत्यानां ॥ अपर्विषे न्यचनयथा
प्रयोजनं स्वमद्रोपयोमेहिने स्याहिति ॥
नवेत्नमति ॥ उच्यते कर्मकालव्याप्तिनिषेधः ॥ न
स्मामेव मध्याह्नव्यापिन्यां कार्यं ॥ प्रथमपरानि
षेधः ॥ संवन्धिनो न्यायमतयपोयश्योनेकन्या
न ॥ तथा चोक्तं ॥ कर्मणो यस्य यः कालस्तत्का
लव्यापिनी तिथिः ॥ तया कर्माणि कुर्वीत ह्रा
सवृद्धी न कारणं ॥ एतान् पूर्वेद्युर्नाप्नोति न
चेत्कार्यं परेद्युः न स्वल्पे स्पृहा परेद्युर्न म
ध्याह्नव्यापि मध्याह्ने ऽपि तिथिव्याप्तिमोति ॥ न
द्राह्वि नीय दिने एक भक्तं यतः कार्यं मध्याह्न
व्यापिन्यामेवैकभक्तं विधानात् ॥ यद्वा त्व
कर्मकालव्यापिनां स्मृतितिथिपूर्वाह्णे परेद्युस्त
था चोक्तं ॥ देवं पूर्वाह्णिकं ग्राह्यं हि सा व्यापिनी
वैकालिकी तिथिः ॥ यो यस्य विहितः कालः कर्म
णस्तदुपक्रमे ॥ विद्यमाना भवेद्यो तु तिथिः ॥
उक्तमेतद्धि निवन्धासु ॥ यस्तु पूर्ण दिनेद्वये
पितृत्वं कर्मकालस्पर्शिनी ॥ तिथिद्वये
न हि सन्ध्या स्तु ॥ हि सायाह्ने वैकालिकी तिथि
र्वनाले ॥ यदा पूर्वेद्युः किंचिन्मध्याह्ने कर्तव्य
व्याप्तिनत्वादिति ॥ किं तथैव स्मिन्दिने एकभक्तं
सम्यक् प्रतिपत्ति ॥ उच्यते स्मिन्दिने पूर्वाह्ने
न मध्याह्ने तिथिः ॥ सामान्येन एवंसाहितं
वैवग्राह्या ॥ एवं वैदादौ परा विमुक्तव्या ॥ यदा
पूर्वेद्युर्दिनद्वये पि मध्याह्नव्यापिनी न तदा पूर्व
वाक्येन तिथिः ॥ तदुक्तं मोहनसरो ॥ व्यापि
नि कर्मकारणानि तिथिर्भवेदिनद्वये ॥ वैधवा

...नतिथि...

विनिर्णयः स्कांदे एकभक्तविषयः॥ यस्य यत्रा
भूतमेकभक्तविषयः तन्नथावेव कार्यं॥ बहु
न्यवचनं॥ तिथिर्येनोपवासे स्यात्सैकभक्तेपि
मातिथिरिति तन्नरूपवासानुकल्पत्वेनाभि
धेयमेकभक्तविषयमिति माधवः॥ तत्रयन्त्र
स्मृतिस्था निवेधापनवाक्यो भयोमध्यान्हव्या
पिन्या सैवैकभक्ताभिधानविधानादि हीरा.
पः स्मात॥ अत्र सूत्रोपवासानुकल्पमेकादः
श्यादिविषयेकभक्तं रागेरेखेति॥ एकभक्तेन
नक्तेन वाल्हस्नानरागिपोविति॥ इत्येकभक्ति
थिनिर्णयः॥ अथ नक्ततिथिनिर्णयः॥ नक्तं ना
माहर्वरणानेनसोपिता रात्रौ भोजनमिति
दिवसा दिवरात्रिविनापि त्यामेव नियो कर्तं
व्यं॥ नक्तं स्कंदपुराणे॥ दिवा त्रिवनेपश्च
एकमेवातिथौ स्मृतं॥ नक्षत्रभयव्यापिनं
उर्भीदिवसेनैव नो॥ प्रदोषभयव्यापिन्या सैवे
तिवल्ययः॥ कूर्मपुराणे॥ प्रदोषव्यापिनीयः
त्रैवस्रुतनारिवायरि॥ नरायकंदत्रनेकपा
सार्धाप्रयतिथरदिति॥ प्रदोषलक्षण
वतैवोक्तं॥ त्रयाम्नमितीसंध्यावटि
कात्रयत्र्याने॥ सायंसंध्यांत्रिवटिकाना
स्तादुपरिभास्वतः॥ प्रदोषस्त्रिमुहूर्तास्यै
इत्यावस्तंगतेनत्र यति॥ त्र्ययष्टिकस्त्रिव
याम्॥ घटिकास्मकेय प्रदोषश्चापि घटिका
त्रयंसंध्याकालः॥ नक्तनिश्चयोतंशिरिल्य
स्थितां ग्ये नक्षत्रनतमित्रभोजनं कार्यमि
ति॥ संध्यायां भोजनंनिषेधात्॥ तथा च स्कं
दे॥ चत्वारीमानि कर्माणि संध्यायां परि
वर्जयेत्॥ आहारं मैथुनं निद्रां स्वाध्यायं च

99

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वते [illegible] नेनिरूपं॰
स्य संध्याकालस्य सम्यग्ज्ञानेन तद्वर्के शाकाद्रे॰
णात्रिघटिकात्मकसंध्या श्रुवोलोकाद्यणाः
भावान्॥ संध्यानामटिनरात्र्योः संधौ विहि॰
तासंध्योपासनाहिः॥ संधिस्तुवेलामानंसमे
इलोपलक्षिसमयः॥ नस्यान्यत्राक्रियायाः॰
स्त्रीविरतलेनतावतिकालेकर्मसमाप॰
लान्॥ सुलोपेवापेसतिसंध्याशब्देनसंधि
संबंधः॥ पूर्वोपरेवाक्रियया मः कालोलं॰
क्षते॥ पूनस्तुवेदमेइलोपलक्ष्यादिवेलावे॰
दयायोग्यः॥ सायंकालः॥ कश्चिद्दलस्य
तारकोत्पत्तिपर्यंतंविविधिः श्रुतेः प्रातः
संध्याकालः॥ नक्षत्रोदयपासूकर्तव्येन॥ प्रा॰
तःसंध्यानक्षत्रसूर्यसायंसंध्यासभास्कर ॥
प्रक्रमः॥ नपत्नाहीनसाविज्ञीपन्थेला
दकोस्थानं॥ संध्याप्राक्यानैवेहनिषुला॰
सूर्येदर्पीनादिति॥ त्रिघटिकात्मकत्वंसंध्यं
कालोपुत्वेकालः॥ देवाहस्तमानेसंध्यो
पासनाहोनोच्चह्रिकायपर्यंनेकर्नेत्वना
भानुदापनाथसंध्यागर्भिताह्निताविहि॰
तानलपनाहिपरस्य॥ नक्षत्रलाविहितो
भोजनेसंनदर्वेषुनष्टकर्तव्यो॥ नक्षभो॰
जनसप्तक्षत्रदर्शनेविधानेभविष्युसुरा
णाभिहिते॥ मोहानेनाहिनेनोक्तंमवदेति
मलीविणः॥ नक्षत्रदर्शनानन्तंमहंसो
गणाधिपेनि॥ अनावचनेनक्षत्रदर्शनाद
तिलडोपेपंचमी॥ पुनस्तुनक्षत्रदर्शनेप्रा॰
प्यनक्षविहितोभोजनेविधयमित्यर्थः॥
नक्षस्यपर्वादिनेवविधानात॥ नक्षप्रातः॰
स्त्रिहिंवात्रिमुहूर्तेव्यापिनीचनस्योनक्षत्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नेकार्यमि[illegible]ष्ठनेनञ्कालांतिथिः पूर्व
ह्लिनेप्रदोषव्याप्तोतिपरह्निनेलमयामाः
क्रीनविशेषणत्वेव्याप्नोति किं विहास्यतीति
नेतत्त्वन्नञ्चनेकार्यमिति चेत्॥ उच्यते
पूर्वेद्युरेव कार्यं प्रदोषव्याप्तित्वात्॥ नञ्च
नावलिना॥ प्रतन्त्राम्लि ष्ययःसुतापःकर्म
सुष्ठानतापिका॥ नञ्चतेषु सर्वेषु रात्रिषो
भः प्रपूर्यमाने॥ इति॥ एवमेकादश्यां नञ्च
नेयमस्तोव्याप्नोति नोक्तं॥ प्रदोषव्याप्तिनीग्रा
ह्यामहानञ्चतेतिथिः॥ एकादशीविशा
स्माद्विशुक्लेकृत्स्पिवासमः॥ इति॥ यदानं
क्तंतिथिः॥ पूर्वापरयोरक्तोः प्रदोषव्याप्ता
तितदापरेः वयाख्यातिश्रावणेः व्याप्तिरा
ते॥ यदाहूतावलिः॥ यहिस्मारभ्यावक्तो
प्रदोषव्याप्तिनीतिथिः॥ नदोत्रत्रत्नञ्चाक्तोप
रुमय्याद्यापिसायन॥ इति॥ उदयात्रयापिह
यारात्रावर्णीयसः॥ यदानञ्चतिथिः पूर्व
परयोरक्तोः॥ प्रदोषनव्याप्नोति॥ नदापरे
द्युःस्याः॥ किंतुद्वितीयेनञ्चापद्वैप 101
रोपनलक्ष्येकार्यं॥ नञ्चकलतण्णू॥ प
दोषव्याप्तिनीतृस्याद्विवानञ्चं विधीयते॥
ग्रामनोहित्पण्णांघ्रामानिमनिषभास
ते॥ नमर्कनञ्चमित्याज्ञननञ्चभेदनेति
थि॥ मिति॥ नत्रुनञ्चवनस्याताग्रोमेनन
मेनकवचनविहिते॥ ग्रामकाया ईगुः
ण्वमानतेविरोपरतिवेय॥ विषयविशेद
षवचनविशेषणसामान्यवचनानांचा
धःस्याद्विरो॥ यदानञ्चतिथिभाजनेपदो
षमपिकेस्पाशतिपरह्निनेवल्पस्पृशः
नेनदाप्पुकेतेवनञ्चसप्तिविनाभिवनते

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

न स्थिता [illegible] येषु बलान ॥
मेवनं नं प्रदेश मध्यापि न्यासे मेवनित्यो हि
वा नक्षत्र कार्ये ॥ नराहस्य मतुः ॥ त्रिशूत्सर्वे
स्त्रियो बालो स्त्रि लिपि गतां वसौ नि थिः ॥ न
प्यासौ रत्नेन नक्षे महं देव स्वभोज्ञ नामिति
श नि नक्षत्र नि थि नि र्णयः ॥ अथ यसंगानः
नक्षत्र कालनिर्णय ग्याने ॥ स्वर्या ल मनि
ध्यापि नि न क्षेत्रे न क्षत्र नन्ने कार्य ॥ यत्रस्य
न वे यामि न क्षेत्रे दिन स्थेयत्काल कालमय
ध्यापि नि भवनि नराप्राये रवाकृ याते
नायुक्ते नक्षत्र कार्ये ॥ न क्षत्र वि स्व धर्मो नेव
उपाषित नं न क्षत्र य मित्रि विसन्न म यातः वि
युक्ते न युक्त वा नास्ते नि शो शे नामम हे
नि ॥ पूर्वो नि शी यपा हेन प्रात्राज्ञ स्वी न्क
न क्षत्र प्रायो ने नि यो ॥ पूर्व या स म न व न ने
वि रोध स्मान ॥ यत्रक य रा प्रात्रा स्वी नि न
न क्षत्र प्रायो ने नि यो ॥ न क्षत्र ने क यो हे नः
ने पारा ने न या वि नि ॥ न क्षत्रो प य स्य नि षि
वि वि न क्षत्र वि हि ने न के क भक्त यो य यो श्रा
सा ॥ न क्षत्र स्क ल ग ता तो ॥ न क्षेत्र य य से हे
य त्रि शी या र हे भ व न ॥ य ता से य हवे स्या
न थ्या न क्षत्र भ व प्रा ति ति ॥ हि नि न क्षत्र व न
का ल नि थिः ॥ अथा या वि ल नि र्णयः ॥ न वि
द्ये न या वि ल्प स्य क ह रा नि र्ष यो वि ने ना म
न न य क भक्ते न न के न न ये ष या ने न व स्या
हि व व ने ष या वि न स्या म व हा वि ष य न्त
वि शे ष ट र्ष ना न्ते हि ष य न क्षत्र ने व सी य
ने हि नि वे स्म ने ॥ निशा या वा र स्व ॥ स्व भ व ह्ना
र स्व भ व भो स्य ल स गे ग प यो भ ह न य चु वि
धिः ॥ न क्षेत्रे नि र वा वि रा व वि य य वि ने य ते

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नइरवो॥ देवनाव... मंनेरा॥ अणुत्तरविमाणा...
वयविमाणी पनेनलोयं॥ पत्तेकणाणसहीनानं...
गणोयनेनलोसं॥ पेयंनामस्सरोणनवीनेननिली
यंने॥ लोयंनिम्मेपंनेस्सयंतगेनसारेवणमसु
त्तवणापावाभयापविगीपंने॥ पुमारमनुपरमर
नेयपवाशकलेवकदेरशादि॥ पुनस्वयाविनमेव
सायनेनयासभवबहुविभेअरनिपानसंकल्पा॥ न
वाविपमम्भवबहुरायमयाविनवनं॥ पुसब
सामासनपकभक्तस्पलावदेकभक्तवनमपा
ऋवापिनयामेवनिपेसनिसंभेविविपोयबे॥
तिवसेपरपूर्यनयाभोवनासंभेवसनिवारे
सापरमूर्यनयाभोकवं॥ स्वपरापाभिवहरि
सेइनिसेकलस्समभंगःसपान॥ नलवयाविनसे
सेसेकनस्वनेनेकभक्तकालविपानान॥ नय
सोसेनलवकियनेपुबनिपेम॥ कालस्यागलेना
गसेनसकालसलापोगीने॥ वनसालेपासे
भवान॥ नउयकमेपसिन्कालेरनिपराईन
लाकिविदेरलोनलस्सोपसिडविपयरनिव
लसे॥ लनवकमेविसयवाससिदे॥ पुयावि
नसलोपसिलोवनस्सालोपासेभवाता॥ नउप
कमेपसिनकालेरनिपरापीनलाकिविदेवा
नेविस्सेपासनस्सरसेनोनेरविपानरपीना
न॥ नपाननमासिवमेकाररणकपारिसेव
येपिवेयनेनसंकालासिकारेरपिकेसेका
रपणासिकालोनेरविपानन॥ स्सनपयारेवा
नविनस्सेपासनलारेरपिकालोनेरविपान
पापसाहकारणेगसस्लेनाकियेनव॥ कालें
नेसिराहावसमपसिडिसज्ञावासवनपसि
डविपयसलेनाकंविकाहा॥ पनेकामक
भक्कारिसनानालवेरनिपेविहायावणरसि

यते॥ वेधो पक्षममाव्या विशा... विशाखे ऽनिष्ट
स्वच्छंतिरस्थनत्रैनिवेधो विधेयो विधेयोपिने॥ या
निधिरुद्रयाम्रस्थदिनाप्रत्याधिनीनस्यात्सा
वित्रानिषिद्धः॥ नक्षत्रःश्रावणःपात्रसमायिनव
कुर्यात्॥ नरहरिसन्यवनः॥ उदयस्यातिथिर्या
हिनमभ्येहिनमध्यगा॥ सानवैश्यस्यातिनाव
नत्रार्थभासमनवंत्रितिनि॥ यत्नेतिथिरुद्रयात्राः
स्यादिनाप्रत्याधिनीसत्ववेश॥ नस्याद्यनाः
मामांशेसमाप्तिंवाकुर्यात्॥ नरहरिस्वयंमि
ह॥ उत्तरार्द्धवर्त्तिमानेदयपवेशभवेत्तिथिः
ब्रतस्यारंभणंतेनस्यमतेहपत्रकृत्स्नकर्मणि॥
मन्नवचनेसमासिपूर्वाश्रवणादूर्ध्वमाकामि
पराश्रवणादूर्ध्वंकृत्स्नांमिकंनैवोनिकण्ठमर्व
गच्छनेरनिवेच्छन्म॥ वेदनैवोनिमेधपक्षस्यावे
वाखएनिर्णयोकियाभेषयाम॥ भावाभावौवि
धायकौयावत्स्याद्याक्रोविरक्तेसमयान॥ रति
उपोसनमेरुविरविनेतिरोधाहनेयकम
कादिनिर्णयः॥ इतिवतंसेनयथोहिमलयपः
तौरसंगाराइतिम॥ इतिनिर्णयामहेनमिसम
कभक्ताविविर्णयोनानः॥ स्वण्वोपवासादि
ष्वनसाधारणत्रयमनिष्टनिर्णयः॥ वसस्यपने
मृत्यशुक्लपवेद्विनीयानृतीयपाश्चक्रयामा
द्वितीयाचद्वितीयायुना॥ वनचौर्यवस्या
पंचमीचवष्ठ्यो॥ वष्ठीसमम्या॥ समम्योष्टमा
षष्ठमीनवम्या॥ नवम्याष्टम्या॥ एकादश्यौद्वा
दश्या॥ द्वादश्येकादश्या॥ चतुर्दश्यौपंचदः
श्या॥ पौर्णमासीचतुर्दश्या॥ प्रथमावस्थायति
परा॥ प्रतिपदमावस्यति॥ यत्रक्रतिनामयुः
ग्मासेन॥ प्राभूतानिमहदोषावत्त्वनराशोः॥
इत्येतद्वादश्यौवक्रावतुर्दशपाचवषुतिथिमा

प्रतिपच्छ्रापमावस्या तिथिभ्रंसे महाफलं
अन्त्ये मन्ने महादोषं प्रवदंति मनीषिणः
ति ॥ पुष्मोहितनौ या ॥ श्रीमित्तनौ या ॥ ष्टम्यं च
न्दमी ॥ भूतपंचमी ॥ वरुषष्ठी ॥ मुनिसप्तमी ॥ व
सुअष्टमी ॥ रन्ध्रनवमी ॥ रुद्रएकादशी ॥ नव
ग्रवाकेषु शुक्लपक्षे तिथिशोवा प्रवृणाद्देना
नि शुक्लपक्षप्रमानोति कथंज्ञायते ॥ यद्यो
वाने ॥ चतुर्दशपंचवृत्तिमृति ॥ प्रतिपच्छ्रापू
मावस्योतिचतुर्दशीपूर्णिमाप्रवासहृचर्था
न ॥ प्रतिपच्च्मवस्योपमसाहृयपोन ॥ पूनिप
हमावस्यासंभवात ॥ हपाभीप्रकारपोगे
नवमीप्रवानकार्यो ॥ नहरौ ॥ मृष्णादिप्रयः
मीकार्यो सर्वत्राप्रयायाश्रवा ॥ शुक्लान्तहि विना
यम्मा दत्तस्मायस्वेनोप्युक्तो ॥ प्रयाणसमप्तू
वेपि ॥ संपूर्णादिद्यामीकृपामिश्रपाप्रवैप
प्रवा ॥ शुक्लपक्षे तपानिनदशायाः पुगाढ़ि
को ॥ तथा ॥ त्रिशूलतोपिकर्तव्यायानितिथिर्ह
हिंगामिनीति ॥ वैषायनषुर्विरोम्नमवाके
भैद्र्यपत्रश्रिवांषस्तवन्नमुक्ते ॥ शुक्लपक्षेति
थियुग्मसापरस्याभ्मायिनीतरवि: ॥ कृष्णपक्षे
तिथियुग्मसाथरस्यामलसिनीरविविल्पश्रापि 105
वाकेषुक्रमपक्षशुक्लपक्षपरास्माहृद्विवया
चवलस्यने ॥ तहके ॥ शुक्लपक्षेहिमेवृत्सम्
हिर्गवतिमाकुर्पान ॥ कृष्णपक्षेवपरीभो
निर्यातासापितोमुनौ ॥ पुनःशुक्लपक्षेकृस
पक्षपक्षेपोर्वदिसयोपलन्नृपालांटवेनपा
त्वबचेनापिचूर्हिस्यापांमेवतिथीनाह
म्नवचक्रानन्नपूर्णास्याटितिचेनेवविषयमे
टाइपक्षे: ॥ ग्रामाहिवाक्यसपूवनादिविषयः
नाहृडि:स्वयोः मस्याह्निकविषयत्वात ॥ न:

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]

ध्याच निगमे॥ द्वितीयाद्युक्त उभमानां म·
न्यनानिषमाहु॥ एकोद्दिष्टं च तद्वाप·
ह्वद्दिराभवेदितिति॥ निषमाहिवनाहि
श्रुमर्थः॥ वतनैवनैष॥ निषिद्धकालेहिशु
मानांह्रदासवेहोषु॥ वनस्थाद्दविभा
गेनविनानायोध्यवास्थिनविनि॥ वनस्थाद्द·
तीयादिकुश्मननायस्यास्वनिषिद्धवनाहि
केकनेवतिनिषिद्धवश्यहुरुभाषस्यनारेको
द्दिष्टादिकाद्दिकुर्नेयमितिविवस्थास्वस्था
इतिसामान्यनिषिनिर्णयप्रकरणं॥ अथैव
पंसेनवधूप्ररिमलयपाः होशेषांमध्याद्दिरिने॥
इतिनिर्णयामृते किरस्नामामच्यनिषिद्धनिर्ण
योलातः॥ अथप्रतिपदादिविशेषनिषिनिर्ण
यः स्कांदभपाने॥ प्रतिपदोनामसुनिपद्धा वा
क्यानापरस्याविनोपपदिहास्मतुदैवदर्पणनुश्र
यते॥ नरकं॥ नंदे विप्रतिपदमाननृपोक्यानाः
मितिवेननं॥ विशेषपदिहाराथ नेदेवक्षनदर्प
ने॥ नत्रपथमपतिपर्णियंतने॥ प्रमानंस्वना·
मतिरुक्मिभविष्यावेषोजायपा॥ तिथ्यौनो
प्रवेदापस्मात्प्राप्त्यामयपत्सृदास्त्रः॥ प्रतिपद·
देख्वेप्रतिपदननमोच्यने॥ शुक्लकृष्णेप्रतिपदा·
माधस्यावक्रेकवुर्याः॥ नरकंपुग्मवाक्ये॥ प
तिपद्वाद्यमावास्योपि॥ वेधीनसिनापिद्धके
पंचमीसप्तमीदेवेदशमीचत्रयोदशी॥ प्रति·
पञ्चनवमीचैवकर्तव्यासंमुखीतिथिः॥ इति॥ स
मुखीसायाह्नव्यापिनी॥ ह्रस्वादिशेषपि॥ द्वि·
तीयाष्टमीचैवपंचमीचत्रयोदशी॥ चतुर्द
शीचोपवासे हन्युः पूर्वेनयात्तिथौ॥ उपवासे
सप्तमीचैवएकादशीनिरिदिनमिति॥ द्वितीयापं·
चमीदशमीत्रयोदशीचतुर्दशी॥ स्वेवे दाउप·

106

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वासादिविषयेस्वस्मात्पूर्वांभुक्तंवांचनिर्णिंस्स्नल
स्नमौनस्वेवेदांइत्रवांनिर्णिंहत्वात् ॥ एवंल
प्यनिषद्वितीयान्नूतीपाविडानीपश्चानेद्दनिल
भ्यते ॥ एवंचनूर्णांवह्निंदचमीयुनानोपश्चाने
त्रमोहृणीश्रुतीमात्मावस्याश्रुनर्हर्णीपुत्रनालो
केरवः ॥ नन्वेवंसति ॥ प्रतिपन्नद्वितीयस्यापि
नापत्तेभवचनेनविरोधःस्यादितिचेन्न ॥ स्या
पत्तेभवचनस्यानेलकाशौचकालकरणोरःचेत्
विषयत्वात् ॥ ननुचनर्णांचहींस्नुपूर्वमीवैदलि
ख्योपिभूतानीतिनिरामववनाविरोधइति
चेत् ॥ शामववचनस्यगणेपवत्तयोर्योनिक्कि
चनर्णीविषयत्वात् ॥ पद्मामाप्रियेपस्यगणा
ख्यानविषयत्वादितिविरोधः ॥ नन्वेवमपि
मन्दर्णीणस्नेवेपन्स्नोवयेपरदयीयपरोसली
मारनीसृकेः ॥ नन्न ॥ ब्रह्मास्नमावंसमावस्याकृ
मापत्नीयमादर्णी ॥ एनाःपराभुनाःसर्वाःपूर्वे
पुत्राःपाप्नेपुनारति ॥ आपत्नेभवचनेनवनर्द
र्णीपार्णीमिनपुत्रमवाकेननविरुद्धनितिचेत्
नापत्नेभवचनस्यकृष्णपक्षयोर्दर्णीविषयित्वा
त् ॥ निषेधस्यशुक्लपक्षयोर्दर्णीविषयित्वात् ॥ इ
तिविरोधः ॥ शामवाक्यस्यविषयमाविशेषन
विषयित्वात् ॥ निषेधवाक्यस्यसमाविशेषवद्
विनिविक्रत्वात्स्याविरोधः ॥ ननुसमसोपव
त्रापमीहृतंनीसृकेनपरापिकृष्णपक्षेहमीवव
कृष्णपक्षेचनदर्णीस्यापत्नेभववनेनस्याविरु
द्धमितिचेन्न ॥ निषेधवाक्यस्यशुक्लाहमीवि
षयत्वात् ॥ एवंकृष्णसमिहवाक्यस्यानिगमादि
वाकेपाविरोधःपरिहृताः ॥ इतिप्रतिपन्नस्या
मावस्यनिर्णयः ॥ अथविशेषनिर्णयः ॥ तत्रवै
शुक्लवनिपदिपूर्वविद्धायांनीयामनादिक

पन[illegible]
सा[illegible] केनेष्य || अत्र च होलिकानन्तरं केनेष्यनात्
होलिकायाश्च सर्वं विज्ञायाथ च पश्चानन्तराद्
वनस्पतिसर्वं विज्ञायामेवेयव सीयते || अत्र च ति
पतिस्थानस्याय श्रुपेस्पृष्टस्थानादिकं क
र्तव्यं || तत्र होलिकाभूतिविलेपनं गोमयेक्षा
वालकादीनलेकृपयोवगाधोमयेन || तत्रके
भविष्योत्तरे || चैत्रमासि महाबाहो पुण्या प्र
तिपदा वरा || यस्तस्यां श्वपचं स्पृष्ट्वा स्नानं कुर्या
न्नरोत्तमः || न तस्य दुरितं किंचिन्नाधयो व्याधयो
नृप || भवन्ति कुरुशार्दूल तस्मात्स्नानं समाच
रेत् || दिव्यं नीराजनं तत्र सर्वरोगविनाशनम्
ति || तथा || यद्वृत्तं मधुमासस्य प्रतिपत्सु विभूत
ये || कृत्वा चावश्यकार्याणि सन्तर्प्य पितृदेवता
वन्देत् होलिकाभूतिं सर्वदुःखोपशान्तये || भू
तिवन्दनमंत्रः || वन्दितासि सुरेन्द्रेण ब्रह्मणा
शंकरेण च || अतस्त्वं पाहि नो देवि भूते भूतिप्रदा
भव || तत्र गोमहिष्यादि पञ्चवर्णं भूम्यां पत्र
भिनिःक्षिप्तपादरपदं मांधीविद्यात्त्रिका || दि
नेश्यानृपश्राभिलाद्यनरानृपावसथ्य || इति
तथा बोधक || विद्यामगार्दशनि षिभूविवस
पश्चाभाषति पञ्च हरे || हौणोक्तं धनेश्वनि
मिःअहिश्वृतान्तया एवं शुनेविधये || नवस
वैविज्ञायकनेमायावलाश्वि वेलिनेमिति ||
तथा || याकृपः स्पतिपतिशुः नवस्याद्धनयास
पः || पूतनाजाडीतोवर्तमाने श्रम्भ्रमागोवामहीवले
नित्यं वृन्नायामवैव विधानान || तथा || नल्ला
याहस्पीनेश्यालेपूशुनदपाकच || भद्रया
गोकुलंकोशः सर्वेषां वा विनश्यतीति || भद्रया
द्वितीयायां || हेमाद्रौ || प्रतिपदर्शसंयोगः
कौत्स्नेनागबोमते || पाविद्धयस्य कर्पासम्वद.

ग्यनक्षत्रः॥ तथा॥ प्रतिपद्यग्निकरालो द्वितीयोऽप्यल
यो वा तृतीयेने॥ चतुर्थ्यां चैकविघ्नो नैविन्नमाषाकृ भू
रथमित्यादिषु तेषः पञ्चविंशातिथिषु प्राक्॥ वर्ध
मानतिथौ नेत्रतिथिप्रमाणवर्णतिथिरितिवा
क्याभ्यो विशेषः स्याद्रिति चैतत्रयं पद्यानिपं
क्तिद्वितीयाप्रकाशेव इत्युक्तौ संभावनानीह
सप्तम्या विशेषवाक्यानां नविशेषः॥ अत्र पञ्चप
दानि काद्विपुरुषेन्नथा तिथ्या द्वितीयायां चैवं स्व
क्षेत्रे संभावयेत्॥ नेऊ क्रमस्त्वादेनविशेषेद्वेडा श
तनायेन॥ द्वितीयात्रिप्रकृतौ विस्वति पयपद
हो को॥ अन्वासनावनरेषुं पचनः सो मदषु।
ना रिति॥ अथवा हृतास्वपंचपादिभक स्वस्याव
तर्याभागः॥ अत नष्ट पक्ष प्रति चहिथा मत्कृते वै
ज्ञाति तौ द्वितीयामध्ये वर्णिते नमभवाद्धा कोरूलं
कार्ये॥ नरकः भागानामस्वपे॥ गवीको गृह्णितेय
न वा जो हृष्य पवे स्मः॥ सो मन्त्रानां पञ्चकेन निलव
भौमजनको मणी नि॥ चेत्रादर्शोने द्वितीयायां तैव
निषिद्धं द्विगामित्वा यु वा किंच॥ साधयरामा
सप्ताविंते द्वितीयाच्चेशपिनसंभवति वध
स्यापि शुक्लानीमिकलवान॥ निषिद्ध इत्यर्वविकं
ज्ञातिनीयाश्वपवृद्धिग्राम्येः॥ उक्तं भविष्योत्त
रे॥ युगावाहाग्राभिनाशिमासाद्धे डोमतिवद्र
वः॥ नष्टेयावाहाराजवत्रै निषिद्धः प्रोमकमासि रज
ता॥ यत्कामलिङ्गवः सवी मासेऽस्व लक्ष्मीतः
त्यात्पातिथिनष्टवाः स्त्रो युग्मा वेवनतान वं
नि॥ सर्वेषां द्वितीयस्यां निद्धधात्ययह स्वलवकः
नायाका कामवापान॥ नन्वोदेयन तेवेव्र
म्यकवभीष्मतीयादिनपूर्वीवाकाप्रसगाइ
नि॥ अनुसंवर्णितसंभावाया सर्वाल कोऽन
गतानिकर्मकालव्यापित्वानिषिद्धेऽं

109

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देवप्रतिपक्षोक्षोःनाशीशाश्वतिमद्येमनवयम
गृधाणांकृष्णमुखोने॥ भूतवाननेत्रगोवर्धनम्हृता
कार्णं॥ गावस्थालंकृतोनिकुंजः॥ वाहनतोरंजनेवं
नेत्रन॥ नंदकेकुलनूपुरातो॥ कालगोवर्धनिःस्पदो
धनंवाधिसमावेन॥ भूवणीवालकपाणावःव
नाप्राबाहहोहविश्विनि॥ गोवर्धनिसलनामेवः॥
गोवर्धनधरापरागोकुलंवाणकारकः॥ विन
वाकुकनकायाणवोकोविश्वेदोभवेति॥ गोप
नामेवः॥ लक्ष्मीर्योलोकपालानांयेनरक्षपूलार
क्षिता॥ नूतंवह्नतियत्तांयेनमरणार्थंब्रह्मोहेति
ब्रह्मनःस्नेहमेगावोगावोमेमेनगृहेनः॥ गावे
मेश्रद्धेपुसंतगावोमध्येवसाम्यहं॥ पुंडवाचद
तिपूर्वस्योदितेशिवेभक्तस्यादिव्यरूपयोर्ज्ञाति
मिनेगोपालसनिवदनमूलानलेनमर्वक्ताणी
गक्षेत्रः॥ नंदकेकुलनूपुराणे॥ नलोपपालकवेलु
गोपूर्वेमोदिशिभाग्न॥ मार्गपालीगवृंप्रोपाते
गत्वभगृहशं॥ कृपाकापमगौहिसालंभके
वेदभिकृतो॥ कन्नेहोमेंहिंनोत्रेनवृंधोपाम्मा
गोपालिका॥ नमस्कारंनमःकपूर्णमध्यानेनम
वेनः॥ मार्गपालिनमस्तेमर्वलोकसुखप्रद
विविदःपुत्रदारादिपुनरेहिप्रभीरुमी॥ नीरा
सनेनवनेनेवकार्यप्रान्यनयप्रदे॥ मार्गपालीम
नीनीनयतानिलोवाह्याबंधः॥ वालानावाकं
ष्टवैलवाललागाप्तुईनानघः॥ मार्गपालीलष
हेत्र्यलोरामःस्तुःहेवोलिनाः॥ अर्थाननेयव
पश्विकाकर्षेणापिकार्य॥ नंदकमालेदृष्ठ
गत्तो॥ कृपाकापामगौईहृषपरिकोत्सवकृतो
नवा॥ नामिकनोरानपुत्राहीनवणांलक्ष्मा
नः॥ गहनीत्वाकषेपिपुलोपचामारमद्भुतः
नपोत्रदीनमालीनांनयोराज्ञानवकाटे॥ नय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विक्रमिदं राज्ञा वस्थीन प्रपन्नन: ॥ अथान्येऽस
वेद्वाग्यो राज्ञा स्तु स्वस्न स्पाल: पंच्रस्तुके वसा
मागां लक्ष्मणं व लिमालि लव सर्व विवारचा स्रो
पद्धांव लिश्न पिलान न्तीस्य यं यथृ शांकि
तन स्यात् ॥ नहास्त वेद्यान् फलं भवति ॥ लवा
श्वनतारहे श्यालायान: लेवलिमालि लप्त
नेपथ्यः ॥ नरक कुलन्त्र गाती ॥ कल्पेन न सर्वमे
वेद राज्ञी है ना पुनीकं ले: ॥ प्रजा मूल्यान्स्थाला
नाभमो मृद्लकेशु मे ॥ वलिमालि लस्त्रे वे देव
तोके: पद्मगके ॥ मवोभ्र गतासे स्था विष्य वेग्रा
मग्लोन ॥ कृष्णः गणा नेभे कृस वं दान वृसे
भन ॥ मेघांड प्रवृस्न कि रीहा क रक्षुरल ॥
हिभुन्वैस्य वा ज्ञान काव्यविनालयः स्वयं ॥
रहस्य मध्य आस्वांपो विधालायान नोभे
शोकस्याति रहस्यान: पालायापुत्र कन्तुरले:
सस्याचा वालिपन्नान् फले: पुष्पेन नावे पन
गलिख हि पात्रस्मानि रीपेन क्रूरं नलम ॥ या
निर्नालि लयस्य क्रमेयवेसप्रशीनम ॥ य
सर्वी यन्त सान स्वल्प वाच विशारू ॥ नल
हेभवे स्वबं विलाः मीनिकं परमिति दीया
स्तव्यनिपृम्निः ॥ मन्य मास प्रति पत्स्व 111
कलितना हविपाबानग्रसिद्ध: ॥ यदि
विधान तासोपिगमदावेन सर्व विडाय
मेवराच: ॥ नजाटिवन विशेष वनकालेखा
पिनोयासे निसिद्धानः ॥ ग्रंथ पासंगीके कि
विलिखने ॥ इयं च प्रनिपक्ष कुवार्लासिध्
स्पृच्यते ॥ नरके ॥ श्रुके पा च नि धंधाम वेका
स्यासोर श्रो ॥ सिद्धभागोप्रराषा फाह स्न
श्रवलोक वनो ॥ श्रमवा निश्व भकमीति का
यो मो ॥ इयं भौमवासवेष्ट पवासवे च विक्रमार

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मेरुकं॥ कुलेनेवेस्सरेवांसाप्पानपमुर्वभाइपात
माकलेवखरेवेवसुवंपोसहवलेपेदिति॥ न
ग॥ वुधोधनिहाभग्गीहलमूलसमलिला
तमोगापंचमीयतिपदेयवोमिविवुमेयेहि
ति॥ सामान्यनःसर्वोस्वापसुतियद्यादितिरिः
भवस्सारयलक्षिपःसस्वतिपोवस्सः॥ तिथि
पात्रत्नमालायाभक्तः॥ यत्नावक्तिविरेवि
तितिनागलेपःकपोलिपौवेदितक्कम
हेसाः॥ इगोनेकोविलुहरोरुवासुपावेक
पोधतिसगगाहशुःरति॥ कालुहसीपि॥ सु
तिविरंवगोरीचगरीपाकतिलुगुरु॥ तुर्यः
शिवसरलम्पापममोयाहविस्मा॥ श्रीवैवः
इंवधनिपुटागलतिथिशुकुमान॥ शुक्के
मियकायवेविभावलारिसुनपूर्ण॥ यवमासा
पासीकारश्रीहाहयोगिसवेवसेवनोकः॥ श्र
श्रवेकारस्माणिवोहाहयाविलतिनोयामे
दः॥ सुनसूसर्वोसूसपदगानःसवलोविघामे
ल्पस्वधनिपनवातिथिपलेमनवक्रिसनासवो
वमारेववयपकार्थ॥ नडकेवक्रिगग॥ पं
तिपधुनिसूनसाहिनेपायावेवेदनः॥ द
112 भस्पामनकस्पापिवूसंस्नागुरुस्यव॥ वः
वर्णीगतानाधयपगोपनेसवेवासे॥ सर
स्युयानवमांवुतसमामोभास्करस्पव॥ श्रद्ध
मावचनरेश्रपोमेकारसपाश्रीनस्पच॥ ब्रा
ह्मणिवश्रयोरूपाहवेद्ममदनस्यव॥ योमादी
नोकगीयानापवमोयशननभेवन॥ पवेणी
दीलिप्सियांसःपनरूपगमस्वपीति॥ प्रति
पदाहीनापंचदशानिर्थीनांत्रिरायुमानल्प
श्रानसाविकाशणोनिसराभवंति॥ नडकेः
तमासायानलवभस्यवनपाचविक्राशणो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

निसर्वोलितप॰ ..मान्मयः॥ कानष्टमपोष्ठ...ल
कलास्थ्यष्ठसंकेमेभवंसनमम्भ्यहेलाः लि ना
ग्रग्रवग्रनिपन्तेनृपत्वंने॥ सर्वोन्नृपनिपन्ते
बनालविनासवाप्रकार्यपयाहमोनः॥ वि॰
वाहेप्रनिपत्रयोवेनवालनधामर्वूर्मिलि
नवाप्रलिपत्रष्टीकाहमः॥ पूत्रप्रनिपदे
हनकाहपूर्वेहिगामनेचवनेपेन॥ नहके
नवेष्ठष्ठधीपनिपन्नपीमननान्हंनाके
धर्मविहपाव॥ नयाव॥ कमाःस्वेवाहगलन॰
पवेन्नृमधामिपाष्टिमे॥ वगमधपानयापके
गिमापनूप्रलिपूर्वाल्हिषु॥ ष्प्रपमपः॥ प्रतिप॰
हननृमांचयोगौनौहितीयावशाध्यानतानसे
नतीयृकाहग्रापाजीपा॥ चवयौहावपपो
नेवृत्या॥ पंचमीभ्यारपीवनासा॥ षष्ठी
वनस्थाः पष्ठिमापोसमीपोगोमास्या
नाहपो॥ संवुम्मासोमवस्पपोपेशाक्पायो
गौन्वः पलेनस्मनि॥ अनलोसामष्टवोपाजा
निवेधः॥ रविभौमशनीनामस्थनमेकूस्प्र॰
हेमब्रस्थमतिपत्निपत्येचमीचहशभवनि
नरके॥ मृगपाष्ठनस्थः कपष्ठ्वंकानामेषा॰
वनगोपवमोसान॥ वषः केषापनस्वन
हकस्नगांसेनपृआनियिःस्पात॥ अथसं॰
घेः॥ पतिपहापाष्ठनिःनिष्ठयोमेषापी
लेचनगोसवल्पिनःपूवमीवपूपकेचकगो
मवन्विनौ॥ अनस्पवविमोमस्थलीनामन्यन
मकूवयहमेषवपस्पनिपनिपन्पवृहह्ह
वृस्पमनिहिनीयापचमीवहप्ता॥ मिथुन॰
स्पेनलौपापूर्वमीव॥ कर्कटस्पोवनषपेल॰
स्पेनलौपापूर्वमीवषपोदपामी
पंचमीव॥ पूर्वषष्ठ्यास्वनत्रिषपोदपामी
वसिंहादौनोवनलासमवन्विनाः॥ अनष्ठक

113

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ग्रहेसिहराणिसुवष्टन्दनंमौवरुह्या ॥ कन्या
ह्मैनमसीहगमीवरुहा ॥ ७ नाषकोषैवह:
षणुहषस्तुनसारिथयः षामीमावपत्रा
दीनांचनरांसंयमिन्यः ॥ सनसुभवःनिष्क
पुकारश्रोघामीमाच ॥ नकरसैहारश्रीसः
तौमा ॥ ऊंअस्यग्रधारषामीसामोनस्या:
वनरेषामीमाचेनिहहेनिहनिपनिपनि
षिनिर्णयः ॥ श्रीरतु ॥ वैसेनसुष्ठहिमूलपणः
होरसामनाइरिते ॥ हनिनिषेधान्नृनंसिसम
कलग्रनिधमिणेगजानः ॥ ॥ यषाहिनोया
निर्णीयते ॥ हिनीयानिष्कृपनाकारिष्ठनः
तीयाषेनेवगसा ॥ नरकोनिगमे ॥ ७ गमाके
नि ॥ नस्या ॥ एकादशाहमीषष्ठीहिनीयाचव
नरैषी ॥ चयोदशीनमावस्याउपोषः सःप:
गलिनः ॥ सुयाहमीवनरेषुपोषहे ॥ चयारषो
कुसाश्रमावस्यावरसाविशेषानिरिक्ता
नवुषानिपत्नहिनीयस्याहिनीयायानपछ
नरनिवाकेनहिनीयांपाःप्रनिपकुकायः
विधानून ॥ नमीपकारषीवहीनस्यावेवाषु
मीनिषु: ॥ वेधाहषनानाहन्नुहषवासनि:
षीमिनमारनिवावेयनहनोयाउनयानिषे
धास्त्रविधयनिवेस्मनंसर्वविरुधविधान:
साषरविरानिषेधस्यच ॥ यमाहिनीयानून:
कुयनचनाविषयनाहविरोधः ॥ यमाहिनीया
यानुभागिनीभिश्रोनरोभोजयेन ॥ नरपमासः
लिकेक्षिपतेरलि ॥ स्नस्नयायनबलसवंश्रोर
पत्रनडूलसंश्रुमितिष्यावेवकनेमा ॥ एरमो ॥
एकभक्तेननकेननिथिवंश्रोरयाचने ॥ निपि
लापनलिकोग्राधापारणेनवपानिषिषि
नि ॥ सेवनीपि ॥ कुसाहमीषहनस्यासावि

114

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देवरूपेणनृणां ॥ [illegible]मेथ्योरथीरभाउपोध
पूर्वसूधनाश्ति ॥ इहलत्नाय श्रूष्मग्रयुसना
हिनोयाउपवेश्यपकोधेन्यपवासश्रा[illegible]यन
पः ॥ यत्न ॥ लनशास्नितपुतेषुमासेष्ठप्रव
णाहिष ॥ भुश्रूष्मालोश्रनेरूपोत्तयपान्तक
लाहिको ॥ मिति ॥ नूनोयापकागंप्रायाल्य
पावनात ॥ दिनहृयपरमहृहेवदेहदयन्या
सिनेन निंपयेननातूविसपन्न ॥ खर्वदर्णी
पत्रोसन्याहितिलवतिषाः पररुनायाप
वसन्यवविरहात्तिस्यविरोधः ॥ इतिहि
नोयामामान्यनिर्णयः ॥ सथाविशेषनिर्णय
यः ॥ नवैवेत्र्युष्कोहिनोयाया[illegible]सूयस्नाप्नि
पूनाचूकार्या ॥ नरकेभविष्यानन्त ॥ वेवस्त
त्कहिनोयाया सूमापुत्र्यायकलार्थिभिः ॥
प्राप्तसूर्यानिन स्नावकर्नव्यामसरसंनम
नि ॥ हेवीपुरारणे ॥ अमाधावकृनापूर्वहि
नोययापस्नपे ॥ हविष्यमन्नेनवधादयं
प्राप्ताद्येनालिनं ॥ फलमापोनिविपूरस
मर्वत्रतमपुरूवमिनिवेचहिनोयानि[illegible]
यः ॥ प्राप्तव्यालिवनमोस्यकृस्नाहिनोया
वनस्पश्रपितृसृन्नपूप्याप्नननेकार्य ॥ वत
श्वेमितापवेछिन्नकमेव ॥ मृत्युवननस्पश
मिहाविधिपनेलिखितः ॥ कार्तिकशुक्र
हिनोयायमहिनोया ॥ श्रस्यायउननाबन
कन्यायमेसजेयनतसेश्रु ॥ भगिनीभिश्च
नरोभोज्यः ॥ भ्रातृभिश्चभगिन्यावायहा
हिभिस्नकायम् ॥ नरके[illegible]सनान्पश्राणो ॥ कृ
नेशुक्रहिनोयायाथमपत्राक्कैवपयस ॥ स्व
नेकन्नाभागुश्राययमलोकेनपश्यनि ॥
मणा ॥ कृते शुक्रहिनोयायापाविनिनलप
नोयकः ॥ माहिपाममनमारहकावेसृहर

यातोरिभः ॥ वीक्षितः किल केंद्र दृष्टेन सौम्यच॰
निशानहः ॥ कार्तिके शुक्लपक्षस्य द्वितीं॰
यायां नराधिप ॥ यमो यमुनया पूर्वं भोजि
तः स्वगृहेऽर्चितः ॥ द्वितीयायां महोत्सवो
नारकीयस्य तर्पितः ॥ पापेभ्यो विमुक्त॰
मुक्ताः सर्वे निरबन्धनात् ॥ तेषां महोत्स
वो जातो यमराष्ट्रे सुखावहः ॥ अतो यमद्विती
येयं त्रिषु लोकेषु विश्रुता ॥ अस्यां निजगृहे
विप्रेन्द्र भोक्तव्यं न ततो द्विजः ॥ स्नेहेन भगिनी॰
हस्ताद्भोक्तव्यं पुष्टिवर्धनं ॥ दानानि च प्रदेया
नि भगिनीभ्यो विधानतः ॥ स्वर्णाभरणवस्त्रा॰
न्नपूजा भावेक तिपत्र कारस्ति ॥ एतत्स्वः भ॰
गिन्या विधिवल्लिखितः ॥ इति यमद्वितीया॰
निर्णयः ॥ अथ कालस्य द्वितीयायां चित्रगु॰
प्तः कायस्थ सिद्धेनास्य पत्रिका शुद्धा नरे
यमवाहन पत्रक्षितायां भवकार्यं ॥ न॰
क्षत्रियेनैव घोषे जनन्यानुष्ठाप्यन्ते॰
तोनि सिद्धान्तः ॥ पदस्थयानानां वावविषु
निर्णया भावात् नित्यं तु नित्ये योगः सर्वे
पचोरेसमः नक्षत्रे ॥ द्वितीया यायां वेदस्य
इति ॥ यत्र सिद्धा विरुद्धा रिक्त मुख्यते ॥ द्वि
तीयायां तु पारेणां सिद्धा भवति ॥ उक्तं च ॥ उ
पवासे द्वितीया वेदहश्यो समसीषन ॥
नेहोनवां यहस्य लक्षणं तु विकासी हिरण्य
केति ॥ अत्र स्वदेकायो भःसिद्धिर्भवति
ज्योतिष्मिन्नापुत्रके ॥ सोमदेव भट्टश्रद्धः
सर्वोरभोश्वविषिद्धानि तिथिः स्याधीति ॥ इत्ये
शुक्ल बाणा वितृड्ढानस्यांश्च भकमेकाये
न इत्ये ॥ भागवे तिथि हिराणि स्पृष्ट द्वितीयाम
समीक्षनः ॥ एषा महानपुत्रस्य षासर्व का
यैश्व गिनेति ॥ द्वितीया पाद्वेवाशिवेन्द्र

116

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मेरुण्यौ स्मिन्भागाना मनेत्र नारंभणेहि केकुमे ल
कुर्वीत ॥ नटकर्मभाककरेण ॥ त्रिनपोहिकोद्धि
तीयाद्बीर्द्वयोः सुप्रसीधुकुर्वीत ॥ उद्धरन्हस्तौ
यनकरणायानिकर्माणि ॥ द्वितीयायांत्र स्त
णाप्यनिविकल्प द्वितीयावर्णत्रिमलापहस्ताला
भेकृत्वः ॥ नद्यास्नानात्सुवर्नायोभवति ॥ नटकर्मभा
ककरेण ॥ यथारश्यौ द्वितीयायां रश्मावावि सु
पतः ॥ सूत्रविवृतिर्यालोतौलावेषुःकर्ण्यनुवे
ति ॥ तथा ॥ ताभ्यत्वनार्दैशमोद्येयोरश्यर्थः
द्वितीयाद्विमोघतिइति ॥ मलापहस्तालनिवेपु
पूवतुलिमतोभित्रिकथ्यकेचिति ॥ द्वैत्तोतस्या
द्वितीयानीमामुनावायान्नतकार्यं ॥ कर्मणः
कैनोत्रिष्टोति ॥ पाणिनी सामान्यगाबोर्कु ॥ प
नर्मानस्था रवौ द्वितीयाद्यभवति ॥ नटकर्म ॥
पूर्वकानामादिनकोतिषयोद्वितीयाश्चबीपकुः ॥
पाककृपोः सूत्रकर्मयदत्त ॥ कथ्यान्तयोवामिपु
नाबलयोर्मगाहूकोध्यौललामकरयोस्त्रभवे
तिरुपाः ॥ शाकुरामीनः ॥ अन्नामघ ॥ अबलाक
मा ॥ नागरः ॥ सिंहः ॥ कोधीयुष्विकः ॥ करणेन्त्र
धस्थितेद्वितीयाद्यभवति ॥ नटकर्मभवति
द्वितीयाविलोपः ॥ पृथक्त्वतीयानिर्णीयते ॥ न
नरभाबानिविकानतीयाचनर्षोपुनेवोपवा
सौद्विशुणाहा ॥ नटकर्मविसृधमानेवे ॥ पकर
रणाद्वमीघहीयाणिमासौचनरेशौ ॥ सुमाव
स्यानतीयावनाइयोधाःपराविनाइति ॥ नवद्यु
ज्ञानालोनिपूर्वकारकेपुत्रीभ्या द्वितीयाङ्गाया
प्रेमयुक्तेननौवैशेषइतिवेन ॥ उपमेघाकरस्फु
रभाविद्यपयात्रात् ॥ नटकर्मबलैरवर्ते ॥ रभाव्या
वर्तौयिलानतृतीयाद्विनमस्म ॥ अनेऽसर्वे
कर्मोद्युणाणवकायप्रास्ते ॥ तथा ॥ अनेग

117

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उपे स्त्रीरंभाउपो ष्पायं सयुनेति ॥ ततस्त्वा
ते ॥ तस्माहमोऽवनर्यौवसाविंत्रीवस्येस्यैको ॥
श्यशाघ्रयोऽस्त्रीरंभानोपोष्या: पत्संभुनोऽस्ति ॥
यत्नस्वभातृनोपास्यरंवुंगैवेवकार्या ॥ प्रयमाव
नर्यीवृतेवकार्या ॥ अंभाप्तनास्तवृहितीयापु:
तानुपत्नवावोपिस्तूयते ॥ नरुकंवसवेवनी ॥ न
तीयानकनेवा: हितीयेयाहनाहिमो ॥ हितीः
कांयहनातृपःकतोनितनापमः ॥ संवत्सरकृतेः
तेहनतयमेताऋत्यातेरहि ॥ ऋताम्तुसमस्तुगोपि
हितीयाप्रायसंयत्नात्वतीयाकृक्तेनमः ॥ स
यानिनरुकेघोरकालस्तृयमवारिस्तुः ॥ नयाः
वनुवेव ॥ हितीप्रायोपसंप्रुकायाकवोतिविमो
हिना ॥ सावेपप्रमवयोनिप्रवहेतिमवाभिः
सरति ॥ एवंश्रीगोहितीयाक्षिहिनुतीयाकवः
तोहेषः प्रहृष्णाते ॥ वनणीवृनायाफलाप्रयंमि
स्तीतेप्रपा ॥ वनणीसंहिनुयानुमातृनीया
फलप्रदा ॥ मवेपाकस्त्तीतापुनयोयस्विपृतेती
ति ॥ एवंमनसनृषिपृवीविद्यापुलिपाटकानिवा
कुमानिहानंभविवयपेःपालीनिनिहोतरति
तनोयानामानामिर्तिनोपः ॥ अथवेयनृतीयस्तुः
क्षायांरोलननवीयेस्त्वाने ॥ नयणवृनीमोम
अवसंमृनालोलयेन ॥ नायेनागवणोरहिताव
सृनानिवकृयाते ॥ नरुकेदेवीपुराणे ॥ तृतीया
संयुतेहंवीपाकोतानृमत्विनो ॥ ऊकमापुवक
पुसमपीवक्षसवोपुके ॥ लवणपथपसीपिस्त्वर
मनेनविहृष्टन: ॥ प्रोहारयेननीवनसपिवेम
नष्टयेमस्ता ॥ नायोतामारणकार्येप्रानहेयाव:
रहिता ॥ हेमवस्त्रेनपानानिनाभलानिमन:
लघ्या ॥ पाककेरोमानृनिलवःपंवनयोम ॥ सोव:
तीनिसमाकार्यपानन: पाकानलघ्या ॥ वन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

र्नात्पुरैवपापुमाचस्टिभुक्तानया॥ अथैवमे
भागपापयन्तवनेव॥ यत्कर्कविस्तृणाते॥ वस
नमासमासापन्तीथायजनतेप्रिये॥ सोभा
ग्यपमटातोभिकार्यपुस्तवलोविफलभिरिति
श्रसाभ्नविधिर्मूत्प्रशताणिद्धष्टवः॥ वितन्न
न्वाद्दम्मासिमतोलोवनः॥ रपंमन्नादिरोप॥ न
रक्कंमस्तुपुभ्रात्ता॥ प्रापापुष्पहन्लवमोदार
पीकानिके विना॥ नृतीयायंचवचेचस्यतथे
भूरूपदरस्यव॥ श्रावणोचाष्टमीकृस्यापक
वीवेकादशीनथा॥ विनाक्षाहस्पदशमेसा
वमासरूपस्रक्ष्मी॥ प्राववास्यापिमार्गसा
लोष्टमीवरशीनथा॥ श्रावार्जकानिकेमा
वेचतिटववितिपानः॥ एतासमन्तासुयाः
पुनिमिःपूर्वेरशिवभिःरितितिथेचनन्तीयाति
यः॥ प्रयूवैगाकिसुदीरनोयायोगौरीहु
नानक्बांमलप्राकेनशौरस्यान॥ नरःकृ
तुगणोगौरीस्नानकमे॥ नृतीयायांवेषा
रिवेताहिपायैयपत्रनगेन॥ नरौउभयसतेन
शिवलोकेमहीयते॥ इति॥ वेषापावुछकार
नीयायेनायुगादिरेवयन्नीयायाने॥ नरः
नंवन्नमोलायो॥ माघेपचदशीकुलान्नभ
सूचयपोदश्नी॥ नृतीयायमायेचयुक्वालव
लोभेगुगादयः॥ भविष्येनरुपारोष्टेन
वमासुक्षक्षपनस्वकानिकेनेवमासकुन्न॥
वेनातिसिनन्नीयायावेशालेसमपूर्यन॥ दशौ
नमासमासमस्यपत्नदायरपुष्प॥ कलिःकस
रपोट्टयमनमेममासकानिकेना॥ षष्ठस्वलश्रा
त्रो॥ वेशावसाविमामेषुकापानृतीयायांमना
दनः॥ वहनलोकांविपयाशरीशिधेयासवंला
रयन॥ एवंवात्रमासप्रमामाहगावारवेवान्कृ

119

नं॥ दत्तोयेकृतनमुगादिविसृजेनलकं यंभेदन
मवस्थितं॥ इयच विसृष्टनाहोमालिबुद्धको
ह्यपिनोयाह्या॥ नदृकंभवेणाओनरेइ
शुक्रेदत्वनाकृवेषुगारेकवर्षोवेदुः॥ शुक्रे
सर्वलक्ष्मीकेकार्येकृतेभवेकालनोलक्ष्मीकेदत्तं॥
नारदीयेपि॥ वसिष्ठउवाच॥ वैशाखेशुक्लप-
क्षेतुतीयारोहिणीयुता॥ दुर्लभाबुधवारेणसो
मेनापिवायुताथवा॥ रोहिणीबुधसंयुक्ताप्रिः
सर्वविद्याविवर्जिता॥ भक्तकृत्यापिमासेनदे
निश्चयेपूजाकृतं॥ तेतेविनायकोपीनागरे
तीव्रपसमृतना॥ विनायिरेहिरण्येयोगामप
केतिप्रसमस्तेति॥ श्राद्धेमत्स्यव्रतापवाहिन्केः
ग्रासेसूनम्॥ देवनवेनगोरेनावगारीनांव
तिनोयः॥ मद्यानपवपानावावक्कालनामोपि
कृतयति॥ अगारीनामपिसर्वेषामपनाहाषं
पितेवनयुगाद्यन्तृत्के॥ युग्मवर्गीहिंगेनमाक
हिविबंधनमज्ञाहाहिविसृष्टपुराणेपिकेदने
पालोयमथ्यःतिलेविभिश्चेष्टयानिनभाव
यत्नोमनुष्याः॥ आद्यकृतेनेनसमासदृष्टावर्ष्ट
मोमेनत्ननयोवदेति॥ मत्स्यपुराणे॥ कृतेत्राद्यं
विसेनेनमन्वादिपुराणादिषु॥ स्नानंदानादि
सादसेपितत्वतोमितिदपानं॥ महाभारतेपि
पुत्रमन्वाद्यायुगाद्यासुविनिषिपत्नृत्हमानवः
स्वातोऽक्षयावदत्राज्ञमनानेनफलंभवेत्॥ यु
नसुपुराणविदयत्नाविहितमत्राद्याविधये. मा
वस्याक्षयतृतीयांकौयूजयेत्॥ विलक्षुमाहिवत
तीर्थोवगासोपिसिद्धनं॥ पुत्रेणविलक्षमाहित
लक्ष्मीपूजनाच्युत्पात्रभिहितं॥ वैशाखावासन्ट
नीयायांश्रीक्ष्मेनेजूनाहरं॥ नारायणाहन्ति
त्वाप्रथ्वपयावितीयते॥ विशाखानरयगतोबी

120

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कं ॥ वेगालेशुक्लपूर्वेनतृतीयायोनसंयुत
मानेयोनृःस्थानमुख्येनसर्वकिल्बिषः ॥ न
योक्तोयोग्यवेदोमायवेविमुग्धस्तृतीयेन ॥ या
द्धलपाद्विनालिभ्यः यागत्रयस्तुपनीवयवाक्रि
ति ॥ इतिहृदयनतीयानिर्णयः ॥ अथान्यत्प्रवक्ष्यामि
अभावतृतीयायथा ॥ नेपथ्येशुक्लतृतीयायांयान्ति
शुक्लफलार्थिनी ॥ नावीस्थिर्येस्थितानासतीति
यममास्थिता ॥ अनंतियमगरहीत्वाचतस्थ
यिविल्लकंडेश्वभ्यांतिलेष्ववाश्वप्रीतस्यायाप्य
वमोभास्करइतिपत्तापिलमप्येवदिकायांश्म
लभोयप्राप्तिभुक्तामेरपितोकलत ॥ नयमवं
कोक्तिमयोदेवोसत्प्राप्यवागम ॥ नस्यासभ्रवो
पूर्वोभिभुवोपविशामसर्वोप्यवारदेवीनमा
नेःसामसवेते ॥ लिहत्वमृषोलिसगपर्यन्तंनिष्ठ
न ॥ वास्तुराग्नुपाणिवाहितमानेतोममयेः ॥ वि
सृज्यसूर्यानेमथातिलकयः ॥ ननोद्विनश्यापन्ने
वनयोभानवियावयथाग्रमनाग्रावययोपगहः
सनालिकेरयान ॥ इंत्वनभगिघ्यानेयोकेय
गा ॥ नेपथ्येशुक्लतृतीयायांस्नानानियमतत्परा
कृत्पाश्वपचन्ग्लीनरमानार्दनाकृती ॥ नाम
पंचदशतिपापालिमत्याब्राहवनीयके ॥ पंचमभा
स्करेतनः इत्येवंपंचवक्रयः ॥ पंचमाममथमाशु
लातिहेतवेशुक्तस्थिता ॥ मृणाजिनचक्रके
नैपायवल्कलपाणीनी ॥ सर्वोभयामयशुक्ताद
वीमेभिश्चवोकृह ॥ महालक्ष्मीमहाकालीमहे
मायामहामहो ॥ गणावयश्वतासिधयलक्ष्म
नरामहो ॥ नरस्वतीवेश्ववतीमेवोकामहास
नी ॥ सप्रणोवेतेमानेशुताभूभिःपत्रनेभविन ॥
वनयोमाहिनश्चवसाहानेहोमरघोने ॥ नदा
सायेवगापराभगवाभावनालिवाः ॥ होमे

121

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रूर्धर्यनामानो ज्ञा स्थाता सर्वगो हिंशो ॥ देवाःसु
नापकृतेष्ठः श्वश्वपृष्ठादि दीपकेः ॥ कक्षुका
रेतेवैद्यं रानवांगुनपाविन ॥ स्थपथैरवेनोरे
वः सौभाग्यपृष्ठकेमेवच ॥ नीरकेपान्यकेचैवः
रूक्तंभक्तंरूमनत्वा ॥ निघायावापावन निलाल
वगोषाकैरागुरंम ॥ निघायावा शिवपान्यानं
पावनं निलश्रुष्ठनिलाः पाकेमक्ष मिलाः पद
केनापुरेवेमर्थैः ॥ एवंमेषपिकाकापीविभाले
मेपशोभिता ॥ नम्रप्रभूनपेरेवोशाम्नास्वर्गे
पशोभिता ॥ पद्मासने नसंनिधापाकन्यापाने
रवि ॥ ननः प्रातमध्यान्हसायांभेचभेननरीरेपने
वेष्टसर्वविदेशे हिरिविधूमीरपानरो ॥ क्रन्वेद
पुष्टवरूपोनक्षभ्यमुरा वाहिनः पिवः ॥ नवशांकि
स्वरूपा सास्ननमाविशीस स्वने ॥ पनिदेवस्त
नालेहि मरुहेदेहि नमोलने ॥ पवदाममापेथेवी
प्रणाणपम्यपूनः पुनः ॥ देहिमश्रागश्रीयमेविवि
धंवरूमशिके ॥ रत्नदाने निधानेनभ्रातागान्यपू
पसिके ॥ स्वपनीकाव संवलन्प सर्वोपदस्कुसंसने
निवर्णं चविधिपानेन ननः पश्रामसापूपेन ॥ दे
पत्यानिजभोःन्याचि वृत्तवयंमधवेनेः ॥ हस्त
कपमपाचीर्णा हविरभागचनेपस्य ॥ ब्रमोने
गल्पश्रनपे देवन रसवरं श्रुभम ॥ रसवलं मः
परोक्राणा स्वविशेष निधापिन ॥ कापेनेषु
हषीवापि त्वाननेनं भावत्नपुवि ॥ भायीपुत्रेषोः
रसेभोगाकलं हृति भविष्यति ॥ स्त्रीणांचाभ
लसोभाग्यं गारिस्था सर्वकामकम् ॥ स्वपनी
रूपेरलनोवेश्रीकराणा अश्वमम ॥ स्वनाशिव
प्रेयानिनमोविले एवं वने हिनिरेभावनी
पात्रनम ॥ एवं भारूपरी षकृननीया ॥ का
चनांपीमोरीरूतामेसनापुरास्पवनेवपीदः

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यात ॥ नृकर्के भविष्यन्नोत्तेषु ॥ गुडाश्चपालस्नानेरले
वामानिभस्यापेदन्ने ॥ तृतीयाश्रुक्रपक्षाम
वेफापेयास्तृतीनिभाद्रपदत्वृतीयानिर्णयः
श्रुणमाचश्रुक्लतृतीयायां श्रुमासमहेश्वरीयो
धेयःलवणदानेरपात ॥ नक्षत्रे भविष्यनोत्त
रे ॥ माघेशुक्लतृतीयायां गुरुंमपलवणस्यच ॥ दा
नेश्रीयत्करोनानहीन्नावश्रुक्षसपवा ॥ तृतीनक्ष
यानेदेवीलवणेननस्वयंप्रभुतेनृ ॥ एवमन्यान्य
पितृतीयावनानिचन्तपीयक्रान्ति ॥ कार्याणी
तिसिद्धान्तः ॥ पतदृष्यानाक्तमन्नत्वंपितृतीया
व्रतेषिपक्षेनागौरीपूजाकार्या ॥ नक्षत्रे ॥ वन
स्थापितानाम्सपोर्यन्तमन्वेवासेदृति ॥ नक्षत्र
त्रैवामसमवोहितेनतीयायांमिन्पये: ॥ मुक्त
मितविक्रमाकिकोलिखोने ॥ तृतीयाभौमवारेण
मिहा ॥ नक्षत्रे ॥ भौमेषष्ठीतृतीयस्यादृष्टमीवज
योदूधी ॥ मूलानिवतोमृगोश्रुभासिद्धोचेन्नव
भाद्रपान ॥ तृतीयावधवारोगाविरुद्धा ॥ बधीर
निराभवणीदस्यमूलस्यमेलिना ॥ तृतीयानव
मीभरएदृभिर्विवनिनेन ॥ विरुद्धयोगाश्रुभक
मैणाकार्ये ॥ श्रुणाद्यकृत्या पारे ॥ तृतीयादिन
यानिपिडसंग्रामेय्यापानिवलोपयोगिवकर्म
सुतेसिध्यति ॥ नक्षत्रे ॥ नमालयो ॥ नयासंप
मवेलायंयोगिकार्यानित्तवेन: ॥ एवंबतृतीया
यवृभौमसप्तमीनामम्यनमेक्ष्ररुग्रहेमिथुनराशि
स्थितेसानिदृष्टाभवन्ति ॥ श्रुपाश्रुनसुरंनमुक्ष्मे
व ॥ तृतीयायांमानेयापिस्थिर्योगानीत्युत्सनि ॥
सुनस्वयापानकार्यो ॥ क्रमान्मयोनरानेप्पा
मिलापुरुकमेव ॥ श्रीतृयोमेनभूभहिमलपद्माः
होसागरादिने ॥ इतिनिर्णयामृतेसिंघविणे
योश्चतृतीयायाः ॥ इतितृतीयानिर्णयः ॥ प्रथा

123

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रमासारेषु वनर्थी निर्गीयते ॥ वनर्थी निश्चितैः
णेषावनेऽरुः दनर्थी ब्रनेनरुला दानर्थी श्चनवाधि
विक्रेषु वनेषु धंवमीषु नेवग्रहा ॥ नरुकें विनामे
शुभाम्नीति ॥ विमपर्मानेवेषि ॥ पकारक्षीन.
शावहेषू नवणवनर्थीका ॥ उधोघ्यः पर्स
ग्रस्वापनाः सुवैणसेषु नः ॥ गतेश्रावनर्थीन्नतो
षाषुनेवावेग्याचनर्थीगणानुरुप समालः
विघाषग्रावनेऽहूति ॥ वृस्रवेवनेषि ॥ वनर्थीम
हिलापनमास्रनी धापकनपहा ॥ चनर्थीवनूः
नीयाघीमस्रषुणपकनपदा ॥ क नेयापानिपि
वैस्नगणनापरुपनो विलीगणनापरुनः
रागेश्चपनीनि।तेषापचनर्थीन्मर्थेः ॥ नपाः
स्कनरुगतो ॥ कुराषूमीचनर्थीवमाविज्ञोवर
चेनकी ॥ वस्कृउपेस्थोरभानोपोघ्यः पसंघुना
ध्रुवापिगतोशुगणेशुचनर्थीवैवेरिनग्या ॥ ध्रुम
पाप्रगाभूनानीनिनिगमवाकेनविगपः स्पा
न ॥ एवंमाचस्रकंपवेगोषीवुनर्थीकुः वनर्थीनि
प्रमिग्रा ॥ मावबदूलावनर्थीवननोपाषुनेपोथी
नरुनंपुगणसमस्रुपे ॥ नोर्यास्रुनर्थीवदपेषुस्रा
इगीचेनभर्यरहीनिकेनि ॥ वनस्पयनाषीवना
त्रिवेनाः पनाविनृधैनिनपैसनापूर्के ॥ प्रयेषुषु
भेनिवन्मदारथीविहिनंदीपोनमवश्रानि पदै
हिनापुउपनेनिगमयेने ॥ वनस्पयनेनि ॥ दाः
रश्रीविहिपायेनुमनापापएषुपायनम्न ॥ दाने
वनर्थीमामानुनिंर्वयः ॥ सुपाविघोषभनिर्पयुः
वेयस्रकंवनर्थ्यानकुलकारेभिर्गुणोप्रास्रधुवे
विलासवीन्कामानुवापुषान ॥ नरुके ॥ दवीउ
गणचेश्रीमानिनिथिकनप्रकरुपो ॥ गणपे
कारपेनसूनानदःकाल्पिभपास्पान ॥ पुनर्थ्या
विश्वनाथपावनवैकामनसमरुषश्ने ॥ नेपरपुः

124

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

क्रवनं [illegible] मनुष्याः ॥ नरके घन्तपापे सल
येषुश्च [illegible] बलात्तात् सर्वं समाप्नुतो ॥ नरो
स्नाम्नान [illegible] तोभिः सौभाग्यवृद्धये ॥ उप
हाशे च तिथि वियोगिने [illegible] स्त्रविरिभिः ॥ द्रोके
पयोभिर्देवैश्च पञ्चगव्यैः सगन्धैः शर्करैर्वृतैः
शुक्लैर्वस्त्रैर्युतैः ॥ पुष्पमाल्यैः पर्वस्वर्कचन्द्रयोः सिता
व्या ॥ नव्रतान्यायपूजनं तु सानरानां टिके वशा
न्यतां भवति ॥ नरके भविष्यज्ञाने ॥ त्रिवायां
नास्ति वा धानवृत्तमोति विधा स्मृता ॥ मासि भाद्र
पदे शुक्ला पियुज्ञ के प्रपूजिता ॥ ब्रह्मणाज्ञानेन पा
द्यानेषु पत्नो भिन्नपत्तथा ॥ क्रियमाणो यथानयोगं
कृष्णावर्ते नित्यमस्तु पैन ॥ इयमेवगणेशा चर्तु
र्थीं विधिर्भवति [illegible] लिखापरास्त्रनवर्थे
स्तुयाने ॥ मुहूर्त स्याकं विधिं [illegible] पर सजना
सर्वकार्यसिद्धिर्भवति ॥ नरके च नारदपराणे ॥
भाद्रे शुक्ल चतुर्थी या पापभी मना वै [illegible]
मस्नीमा गविश्वेशा मर्वापि नान्नामे सा विशेषे
ण चैव ब्राह्मे चैव न पञ्चरूपेण ॥ विरूपं नाशि [illegible]
मिथ्याभिभवति ॥ एसा नारदश्वा विस्मृता तो ॥ के
ष्ठोके मन्त्राभ्यां नेय पूर्वेन ॥ नरके पापाशमसू
नोकस्यां तिथि वर्णयान्त शुक्ले चे शु मपरपाने ॥
मिथ्याभिधानिं नकपानेस्याप द्रूपनं नेसरा
हीं वस्त्रानपा सिद्धः श्रेमनामिभिर्वपवेश ॥ क
न्याहि नेभवः श्रीस्वरूपवे ॥ श्लोकस्य सिद्धः प्र
सीनन्मस्त्वा सिद्धः नेभुवनान्नः ॥ सकुमारक
मानु श्री मु वैश्वस्व मनकर्ति ॥ श्रुत्यापि कस्य
न थीं भूमिव्योमा [illegible] ग्रहणा न स्या ॥ नरके
ग्रा न ॥ मुना वप्या पसोमन नसमधी भाष्य नाम
ह ॥ चतुर्थीं भूमि च्योमा [illegible] वाह्मीमी ॥ च
न वा ते पापो मे ना: स्वर्ण पर्व समाप्ति ॥ च स्नेच

ताणं ॥ शुक्लचन्द्रर्षो वैरात्रदशांने विषये नि तो ष
रुक्तः ॥ वासवद्वीभिशाल्लस्वनिशाक्रवभृतोव
ष ॥ स्थितनत्रयत्नयाां मायायामवृष्ठाण्णं निऊ
मः ॥ ननसूनर्षोचिट्टेनृपयन्नाडी शुभानवः ॥
पवैसे गागांकेवाक्यपोगृहेबाष्ट्रस्फुजः ॥ प
यन्नास्येठेदिसलवपः ॥ वाक्यांमिहः प्रथमनमिधि
स्त्रायां पांचनर्षो शुक्लचन्द्रर्षो मित्रवर्षश्रुतिभ
रूपदृवनर्षो ॥ यज्ञभारपदृक्तस्ननतव्यायः
वोधितम्रंशेख्यायां स्वगुणकवनर्षोलभोग्
दिसंक्लादेःकेषां निपूर्णयोपेन ॥ नरंकै ॥ पंचम्या
पूर्वाह्णगन्यायै के लाटदेवीस्कपांदिन ॥ नन्नम
म्यांतांविलयवेपञ्चनुपवन ॥ नरकूम्यां शुणोह्न
वेनागृहांकतां ॥ पतिमपापेदेवीप्रवृणवेन ॥ न
मवस्यांविधिपूर्वन्नेमृस्वपवर्दिरानेकर्षतां ॥ नव
म्यांदेवी स्वमानिरुपाणीनवांदिग्रव्रतुर्थे स्व
गर्भ्रूणंपेन ॥ नरूकं देवी श्रेणो ॥ कन्यापांक्र
लपवेन नृपिनाद्रभेणिव ॥ कन्याभद्रपदे स्व
यं ॥ नवम्यांवोपृपवेदेवीगीनवांदिग्विभिःस्वैः
शुक्लपदेबृहन्नवर्षोदेवीकपांभूतादिने ॥ पांने
वनपंचम्यांसापृपवेनगुलिलेशःशुभैः ॥ नूनम्यांपृ
त्रिकायनायशुद्धायांमपिपाठ्यां ॥ सूनलन्नापूः
वेवशमानेतापृवेदवदनि ॥ ह्याश्चिनवनयाां
126 मावसूक्तनवर्षोवरसात्रों ॥ नकुकल्पुजेस
ताणंवैसेसन्नान्नो नकभोमानीश्विपृमांगोनि
नकुकं कल्पेश्वणां ॥ कंभेशुक्लचनव्यानिऊत
वृधोः सवृषिव ॥ तंसन्ध्यांहिनकाषी समपा
मानिश्चियान नवदनि ॥ रपमपूकल्पवनपीमनि
स ॥ प्रतेवरमत्रशणाभवेद्रवभक्तः ॥ इमाधन
र्षोमाचेनशुक्लपोपोगिनीमाले ॥ पाभनः
पिनाद्रहावपवःसांगश्रुंभेगोलेः ॥ स्वरूपनः स

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हितात्मात्मात् स्मात्यूलका समतोत्तमा || नमात्मैक
स्मात्मानवृक्षसमर्त्यनेरैः सौभविशेषनः || रू
लक्ष्मैः प्रपानेनसम्परभस्ता समाहितः || रू
रूमालवकाभ्यावृतताइचैः सककवणैः || सु
वैश्वेषु लक्ष्मीपैप्तीपैवलिमिरेवव || गुरोरु
काभ्यावपमालवणानाप्यपालकैः || भूनाहि
पशुविविधानपाविपाशुश्राभवः || सौभाग
भूस्थापत्रामोक्षयवन्वभिसरेति || पोत्स्वैः
रूरकैः || हूलोपुरणोमिपञ्जनस्वनपौन्यका
मात्रैमामित्रसयासेवनपौजलसेउना || ३
पोभापामाभूउत्रूहननोयुरुभविषानि || रमि
मावनयौ || अनुष्ठवर्षचनहृपमानोवर
वनप्याविरुजनमाति || नरूकैकलवाणो || व
प्रपौमाणोश्रोधैनरूसपदैस्वपानुम || पाव
भग्रलिमासवनपौगालनायकै || मस्य
वैपिनाकपहिकभक्तैसमाहितैः || सुवाल
वणिवमणोमिनमोननः || हिनोयेवस्तेवा
यनरूक्प्रतिवनपिवेवा || रूपोद्गाणापुमभ्यपूः
रूनमेरूपावितनपा || पुवमेवप्रकवानिवनयैः
स्यारूपोवणा || नवस्वनणैसमुपनिरुश्रापनमा
वौन || रमेवरुचनपौविप्रनसवार्थमायकैः
रतिवरवनपौत्रिनमः || सुप्पफालावाणिमुप्र
वनहपमाप्यगतापायनपौत्रिनम || मरूक्व
राहूगणाणो || सुपविभ्रवनेराजनरूपवाभिः
सुगाभुनन || वनपौफालापोमासिपुहीनरं
ब्रनुस्थिं || नमहारूणाराजेदनिलानपारुणं
स्यजन || नरैवालोब्रहोनमतैरोमालणोड
व || वनमोवपूनलवरुकैनावकनपवमे || १ ||
सोवणौगजनवक्रतुरुकवाविसुपवरापयेन ||
प्रायसेःपैचभिः ९ अरूपैनपैवमनया || ५ रै

127

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कं नाथं नमेवसर्वेविज्ञैविशुध्याने हति ॥ स्तुनाहे
मांहिमंद्धुगाय ॥ हित्यारांगप्पुरायगमानेनना पं
लेभांसांपकरसंपनभंग ॥ नागात्मतनेहरह
मुद्दवाधकृत्वारहस्तपानमोवगुप ॥ भूनेनम
भेण्यनाकृत्वासाहानेननिलामकृत्वाश्रात्म
लेभांटलालघनप्रिनस्वेनकमस्त्रोपान ॥
पवुमासवनद्भुयवनेभूलाग्रावाउक्षकूवं
नक्षांसोवर्ताविलायकशतनमायंक्रयाहिनि
प्रयोगः ॥ भविष्यामेरेनविपोषत्कः ॥ वनस्थि
वतानननभिप्रायेग्रनानिलः ॥ स्वयानिनां कं
विषयमलपथुकेनिसेकत्न ॥ वर्षयेनमाग्नि
क्षित्रनवलपाभेवन ॥ विनवाकलंटानघा
दसोनिफलमीगिसने ॥ ममपशुरागोनं ॥ वनवर्यो
नकमरघाद्दसेनिहमवालो ॥ ब्रनेयेनाथयं
नामसर्वेतोकफलप्रदायिनि ॥ स्वनेविष्णुग
वेभिवारादस्पलावापुमासेशुभयवनव्योर
पिप्रनेविपयमितिगमपूने ॥ नमनोगयोवेनाय
कघनानिकत्नवनय्योलिंगितेत्रमानिहमेः
याग्रुकचनय्योमिवनद्मयोगित ॥ श्रुयानिलः
गवनय्योटिव्रतानिपवमीउक्तयावनर्थ
मितिसिरोनः ॥ केशवेद्दगोउवनय्योमथ्यार्क
128 मापित्यस्रपोद्यनाग्रात्मसेशतापयावपेवस्यो
मारोकयान ॥ नुस्कंश्रायमसमस्रुपे ॥ यगांम
धर्हिवेपवनपूरणोहीफलोश्वान ॥ हीराणाः
भव्रममपवप्रपुनःसंगपारपेनरः ॥ विप्राणानस्व
नयोनिनचाहिंसेनिपत्रगः ॥ प्राववर्धी ॥ कूर्म
पुराणोपि ॥ निर्योउगाकृपानावसमुणोद्यायं
याविधि ॥ श्रावणोलारिनागानोशोषस्पवम
हात्मनः ॥ पूजाकार्याउघगन्धहीरापायवं
पूर्वकमिति ॥ कार्तिकस्नकंचनय्योमिनिक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नरके ॥ पतन्ति यावन्त सर्वोपि चतुर्दशी तु ति
थिम ये नागणेयाः पूज्याः चतुर्दशी गणिता ग्रो
नकाले ॥ चतुर्थी मिश्र विरुद्धादिकमुच्यते ॥ चतुर्थी
श्री निषेधेनामिश्रा ॥ नरके ॥ यानो चतुर्थी नक
मो चतुर्दश्यां पयोदिताः ॥ शानता रात्रावनिम
नाभाप्ये चतुर्मि द्वयः ॥ चतुर्थी गुरुवाराः
विरुद्धा ॥ नरके ॥ जो वेद्यमो चतुर्थी विद्धा
वो नरफलाणि ॥ वेननो वारुणा चैव विरुद्धं
गतास्मि न निमिनः ॥ प्रतिकूलं यमुच्यते ॥ यावप
वा निविवत्र पूनायतेह कमेव चतुर्थी रिवि
केति पिपुकार्ये ॥ नरके भालत्रयणे ॥ चतुर्थी
न चतुर्दश्यां तेष मोवाविमुके ॥ यमनेतु म
नेभेदमोभयो माभिवाविर्ते ॥ विमालिनुम
यो गृह्णा पूनतो कपरानिवेनि ॥ चतुर्थी यो
गिताश्र निवसति तेन ते ॥ शुनत्नमास्तवा
मुषपावानका पो ॥ कमानुबीनवातेयनं
नुनेशनिकत्वान ॥ गोविमोमद्यानिनामम्यतेम
कौके ककेदस्पो यातिच चतुर्थी शुभकार्ये वसि
ता ॥ प्रायाश्रुनत्यशुकल्यान ॥ तृयंश्रेष्ठकमा
स्थिमानि चतुर्थी सदा भवति ॥ एकानवातेन
केरपशो इतिद्वितीया निर्णय एवोक्त म ॥ इति
श्री नृप समममेक्ष्य विरचिते तिथि निर्णयामृते च
तुर्थी निर्णयः ॥ अथ पञ्चमी निर्णय उच्यते ॥ पञ्च
मी तिथिस्तु पाचनादि चतुर्थी युक्ता ग्राह्या
नरके निगमे ॥ शुभावज्ञानीति ॥ नागवासेय
प्रतिपत्पञ्चमी चैव उपोष्याः परसंयुता इति ॥
पैठीनसिरपि ॥ पञ्चमी सप्तमी चैव दशमी च
तुर्दशी ॥ प्रतिपन्नवमी चैव कर्तव्या सम्मुखं
विर्तितिथिमसदा वो मायाऽक्ष्याणि नी ॥ पूर्व
विद्धा ...ऽद्धा ॥ तथा ॥ एकादश्यां नपाष्ठी

129

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सुमावयावनोपिका ॥ ३वेघा: परमेसुकोमरु:
सूवेताम संपुना इति ॥ चवस्थे: परापंचमीपवेसु
नावन थोपुनैवोपोष्मरमर्थ: ॥ पवेसीवेवे: प
वसामयन खोपुकापुकापाविपलान ॥ वस
वेवतवेवमेनपरविज्ञानिमयामु ॥ यथा ॥ पु·
निपलेवभूलसाविनेवरयोगिमा ॥ नवमो
स्थामोकृगमोवेवनपुष्यः परमेपुना ॥ इति ॥
यतवसवेवतववन ॥ पवमोवयकनेयाघष
पुक्कावतार ॥ नोहिस्थ पुनाताविपाकनेया
कक्तावनेति ॥ ननाकेरोपवनासविवस्म ॥ ना
गमनाविघपव ॥ नइकेमहनने ॥ आवेवोप
वमीस्मुक्का सुप्रोम्मतामापवमी ॥ नोपविमपता
पंचमस्सुत्तरपीसहिनाइति ॥ नवक्षम्सा षुमी·
मरवहोपिवरातिजनरेपी ॥ पना: स्वविनुना
कापोनिपानेलिष्यनेपापाविपि· ॥ मकेचोपे
मासविघपमिनिवृत्त निमिम्मापे ॥ वेसामे·
हेनपवयाकसालोपा ॥ केवविहेयोगपंच·
पंचमपोगुपोषापषपालेरपुनपनि ॥ नइमक·
तहुगतो ॥ स्पापाकसहुमहीनकापिपु: को
माविकोसमना ॥ कोमारमवेयनयसर्वेयोपो
घोवेइति ॥ पूर्वेहितेपंचमामिनयर्ह ॥ नपा
स्कनगुगतो ॥ स्केरापवासीसीकायपंचमो
परमेगुना ॥ जिनकृतानिमहलापमानूवेउना·
मघोनि ॥ पञुववतेशसुरोपगामसपपमो
विपालान ॥ पवमापमहीपुनापरापोघालवि
पानेदेवाभेदेनयावस्थितेसकेरापवाससेविघ·
पमिनोविरोप: ॥ पुनः केरोपवासस्यालिपि·
कोपवासादिपुवनयोपुनैवपपनयनमेतं ॥
वेसम्रूपरपवमपापुननोहिनागापपानेस
मपहेस्पुनेनेवपरयान ॥ नउमकेरवीपुगतो·

130

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चेत्रमासशुक्ल मे ॥ पञ्चम्यां पञ्चपञ्चवी मा गान न
लायान्महेनु मूल ॥ तोस्सोपेस्लनेवयदयस
वे लक्षेय हमिनि ॥ मल्ल्यगता नूलाताम्रतेल
ग्रपवार्केयणा ॥ नामाश्रेवनूकनेयातेताते
ल्कयातिता: ॥ अयः सर्पोक्तानि लेयानाभाऊ
धेनुपवमी ॥ कणाश्रुनृपकनेख्याहिल्नवाव
ल्वोतमभूश्रेन ॥ श्रमसमाविधमसलेगाइतिवे
ग्रपत्रमीतिलय: ॥ नृपश्राववाल्लक्षूपवमो
सयसभयेग: ॥ पुर्ष्वेयोतेमृपेनतृष्णाज्जिवस्र
हीयाद्बोकेरखृथोः यद्रालरौत्तिमः लेमत्यनन्यो
नेगुखालालाभोऽपन ॥ एवंकनेकथविन्मयं
मयनभवतिं ॥ नइग्नृभविष्मनेवर ॥ श्रावतो
मशिचेवसभाश्रुकृपहेनरोपिया ॥ हासुस्तामय
नोतेत्ल्वागमयेनविषोचुणाः ॥ हसनुपेहिय
मदेवरधिहवीकेः कृपेः ॥ नन्यश्रुघ्ययाप्रह्र
वैश्रुयास्लगाणवोचनयेगाः ॥ यवनस्यामृलनयवी
रूताभालाभोकिश्यमसा: ॥ कलेवासपेनोवीर
भयमवतिकयविवि:लिभाषुवलपवमी ॥ प्र
याभाइयस्त्रूक्रयेवमाणशेशयवमोअन ॥ न
ग्रयापेशालार्य ॥ कशपपारेल्लमश्रीमस्नय
श्रक्रभूश्युमलतशुगाकमहाशेणायामसवेपा
पोवितिभृक्ता: मठेवंममान्यामयेन ॥ नइके
श्रकलश्रणाणे ॥ सपाैलेशुरानसवेश्रनुाताेश्र
ममशृनम ॥ यतवोलैनसवसापागहोराति
श्रुचाते ॥ ह:वश्यंभिवृनश्चुनायनेनमसं
घाय: ॥ कृस्पानानवेवनेनसंपदश्रुवनंप
ह: नभुस्पेश्रुकपलेनपलापवनिपवमी ॥
नपार्लकनदाहानाकन्लानिश्रमभेवष ॥
श्राम्लागोरश्यियाविंशास्रशवापिवहानने
कुनानेमिनिकेकमेगलाानिसगहेधन:

13.1

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वेहिसमथकाकक्रौनगोमृयतपवेषिकें ॥ सेगा
वेनिसमधूकः नानृभुवायवोभिला ॥ नव
ममक्रवेलिखाभक्रिपुकायशमेभेन ॥ पर
वेश्रविविपेःषुण्ठःपुपेसेपेलवथाभेनः ॥ नवे
नेवयसंपव्रमृत्संपटपाषुभैःफलैः ॥ सृष्ठो
संवक्षु ॥ कथयतार्थिभवहानोक्षियोमयोग
गोनमः ॥ नृमद्रक्रिविविषुसमपेनेनक्षयपं
क्रनः ॥ गरहोनाक्षेमयाटवेनहाभवेनसर्व
हैन ॥ एवंपूजानवनिवर्नेमवेनपाल्वास्मा
हितेः ॥ सृतनविधिपिनासवबवोसिक्षनमृ
वेन ॥ स्नातोमपेनपत्रास्नानेकुपीइत्थापने
मया ॥ मृवायोनवयेनमयेरखैक्षेयागपा
तान ॥ यांनमाःसमक्रवोनखवागनेनरवयः
क्रिनः ॥ नरिलेःमाहिलुपाश्रकमेडलसम
लिना ॥ संस्थापकलशेषोनानाक्षेपषुसं
नेषुव ॥ स्नापयेद्विधिवद्रुक्रयानपापावमदेः
नव ॥ एवंपूजोविधिनिवेद्यमक्षौभ्याववासमा
हिताः ॥ पावागोनक्लतेयभक्तारवालकाय
वर्गोः ॥ पवतागायागेःफलानृसानुभ्योनि
वेदयेत् ॥ यतनमावहनेष्ठकामोनयोनाय
पाविधि ॥ पूजनेविधानासमाप्तवमेनक्रमा
यपेत ॥ सर्वपुत्रेनतृयन्निपवन्मधावगापेलि
क्रावेयवसौबनम ॥ त्रयाक्षिनपुकपेवृमा
णवेम्हनेकुपामपनमाघूनेसेमयविले
त्वायपिनासमूपश्रीयसिक्षगापुमानानै
वेदयान ॥ नेक्लेभृवयानानर ॥ नथाव
सुवुनेमास्निपेचमयाक्रफनलवल ॥ क्रवाक
शामवेनागांमिशानामरवपूजयेन ॥ खनो
रकामोपपमात्वापयलाविशायने ॥ गो
धर्मैःपयसासिक्तैःभवेद्विविपलया

132

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मूलेनोक्तकृष्णादेनत्तस्रो घाहूणोव्या ॥ न्या
गेना भद्विनोह श्यानि भाद्यानि वैविभा ॥ श्रे
वणेवश्याश्रग्नाधिन्नके धाण्यारेश्याः सवोनि
ल्यानेवोरेवने ॥ नक्षत्रे हेवेंगराणे ॥ माक्के व
नर्णेवश्यो व्याणेवस्मा तितेः श्रुमेः रेतिनि ॥ मूल
स्विनर्णवमो ॥ श्रवणमावशुक्रूपवसौश्राण्व
मौ ॥ नवमूरनेसेसन्या ॥ रसनाम्नवः रेभाक
गौ ॥ नक्षत्रे श्रुग्यास्मश्वे ॥ मावमासेल्पः
श्रेवश्चक्लारोपंवमोतिचो ॥ रविकम्मोत
मोमूलवकनैयश्रूमहेल्लवः ॥ राना निवप्रे
योनितेनमूध्यानि मापवः ॥ एवमामाल्पः
स्थिके रोपवासनाथनाश्वनि रिक्तानिपूर्व
मोमूलानिवनर्षोपुनः पंचमयामेवकार्यः
ग्रीनानिडे ॥ प्रथमसिद्धविकस्थाहिकेसिद्ध
ने ॥ पंवमोउत्स्यापूर्णासिद्धाभवन्ति ॥ नक्षत्र
उत्तरश्रावणेवत्स्यापूर्णामासीविद्यातिक
का ॥ मोभ्यात्रयोदसिहासुलपाश्वयुत्रे
स्वरेति ॥ रथशानिवारेणाविरुद्धा ॥ नक्षत्रेसा
रहस्नानवाघ्राढोरेवनीविद्यापुनसह ॥ पं
वमोवैववघहोचस्रयमासासरुक्मेनोनि ॥ श्र
वेमूलास्नुभंकन्यारण्या ॥ पूर्वाभद्रनन्य ॥ पंच
म्यारिमूलोनिपिश्चसोगस्याविवाहयाअणो
निकोपेछकादिकृमोणिकन्योति ॥ श्र
धानावस्भ्यामूलोव्यायिपिनकर्मेमुका
न्यशुभकर्मनकार्यं ॥ नक्षत्रे भाष्करेण ॥
विवाहयात्राप्रवेशनिकानि शुभानि स्वका
र्यतानीवाहिकानि ॥ श्रीपनिवृपि ॥ स्मणो
समागृलाविवाहयाग्रमयोहिकेशानिक
मेकार्यं ॥ नरुवर्षापिनेस्यमेवक्रानान्य
हिरस्याभमर्वल्यादेनि ॥ वाहिकेनामा

133

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुत्रथोकिंपमामाहं मोमहिवं कुम्मे॥पं
लिकेनयरे लोगपकनोदिपाणन्पकेमम
पं॥सुभमालाहो निसुभं पोनलाहोहे॥
मगाइविवाहाइ॥ रसुंपवभोरनोमम
पूनोनाममायनमेपूरुमेरुरयरमेवाहिं
नावयपूयालि नेसनेइपुभवोनि॥पवोव
नूलोमविपंचभीयाहिसमकानाय॥पुवर
हिलापुहिलपानिनीसालयापव॥
नकाया॥नेनेपमच्छा सुमेरुसमेव॥प
सहुपगानाहसवोसविपवमोगुनियिपं
वेनूपोपारयानागःमुरुयः॥मुनोव॥पोग्गाः
होलाक.गोनो पूवमाहननेभवेहिपिनिपु
वमीनिथि नियांव॥जुयाववीनिगीयाम
यहीमिथियूदयापायासाहिगुनमसोपुनेव.
काचो॥नरसमतहयोरेनि॥मुहस्यानिनागु
मे॥पकारम्पापूहमूपवसीहिनोवावचर
यो॥सुभमाप्रमावनोसुभवनाइयाच्छःपवानि
नाइनि॥कवलिसमपूयेय॥वहारस्मोवमा
वम्यानुकम्पस्मोरवो॥पनाःपरुगुमः
कायःसनाःरवेलासगुनाइमि॥विस्सयमो
नोवि॥पकारपासूमोपसीहिनीयाव
वनूरंथो॥सुभावस्पालनीयावनाइपाच्छः
वताविनाइनि॥वहास्समभोगुनायःपूनयाव
विपानालं॥नया॥नागविइसपापुवद्योभा.
उविइमरेस्वरः॥पकारपीकामविस्यानि.
सूलामभलिनामनइनि॥मथाव॥नहिप
ष्टीनागविइसकनेयानकयववनेनि॥नाग
विइसपावघीसुवविरालसमसो॥इथा
मीकास्याविहानोपसूसमयानुकसयवने
नि॥नथाइलीयापंवमीवदारिस्मावि.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मिन्त्रागालिः वन्तैववनेमो श्रुराणश्रुवसि
श्रुवावेन ॥ पंचमो गुक्रापानिषपासुसमगो
तुनेवोणष्या ॥ स्वेंरषष्ठीनपंचमोगुनेवोय
ष्या ॥ नरस्तो ॥ कस्माद्गुमीलन्नषष्ठोभिवराव
चनरषो ॥ पनाः सर्वगुनः कामीलस्थनेय
यग्ग्भवलिने ॥ श्रुम्यान्यापिपूर्वविद्रारिपायक
मावनालिस्करषष्ठीतिसपत्नेनयानमेपाले
निमित्तोनः ॥ सुनिषष्ठोलमाल्यनिर्णयः ॥ सु
बादश्रुकषष्ठोस्वेरषष्ठी ॥ नयपंचमपासुपे
षष्ठ्योलक्रेपूनयन ॥ नइरूवाहतुपाले ॥
षाबाकोश्रुकषष्ठीनतेषकोमालेक्रोस्म
क्रमायमयेयनयसुवगाफेष्यवादेवशनि ॥ भा
इपरस्तुकषष्ठोमतिर्हिनिणपूनस्याकानि
केसहस्रावमारसूर्यकापशुयने ॥ नयलानर
नारिककर्ममलपभवनि ॥ नइक्रेभविषोलम ॥
येयभास्पदेमापिष्ठषष्ठीस्पाइरनर्षभ ॥ इप्या
वयक्रागुणासुरवाणानाश्चभान्स्य ॥ ह्ला
नहानर्भेत्कसर्वमस्यामरपश्रुप्यने ॥ पसं
पतपानिमानापेरतिणणयथमामित्रिनम ॥ प्रम
स्नहमालिमापूनश्रुष्यनेनाथकिंविशेः ॥ स्त
मवपूर्वपंषष्ठो ॥ श्रुस्त्रानाभास्करमसृन्या
वागुव्यप्राचिमसूपलपाणने ॥ नइको ॥ श्रुकेभ
इपरसमपाहानेभास्करमनने ॥ पापानेपब
गव्यमृदुषमेषपलपशरभिनि ॥ भास्परस्क
लघुष्ठोमोमवावनगहिणा ॥ नहवाणव्याहीप
नपोमोनवषुम्काकोपलषष्ठीमस्वने ॥ ननोग्र
नेपवस्तादिभिभास्करहनपिनाग्रानलणाव
कपिलरपाले ॥ नइक्रवाहतगणो ॥ नभस्य
कूलपचेवाहिणापानभूहनेः ॥ श्रक्राष
ष्ठोपरानमकपिसापाकिनिना ॥ श्रुनोपवा

135

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सर्वेस्य मे भास्कं तनुय सूनेयेन॥ कपिलोव हिरा
गयस्त्रा कृतनुक संल मेत॥ श्रुणाणस्त्र मस्त्रोवि
गुणत्रकः॥ भास्मा सुखिलेपर भानोवि वकार
स्तिये॥ पाले ऊने वर्णाहि ताप साधुश्री कपिल
मयेति॥ श्रयणा स्पर कृसत्र श्रीयेव रमा
मित्र पेलिका॥ पुनस्त्रा वरवे कपिलाघ श्री
भवेति॥ श्रुवभूस्पर मासत्क सपन्नव श्रीरा
हितोन ततुभो मवरवस्तुत्नीयान येगानाय
नतोके गनेव यायुत्सा॥ नकेव संघटा॥ नड
ऊ॥ सेयोगेव॥ चनागतिनु दिशा पर्वे मेहिते
ति॥ कर्वसपर स्वसितनुर्वं शुभे भवकत्र
तिपायान॥ श्रुनश्च बुवराणवं सिनेवा पयवको
गवतन्त्र पूतं भव॥ मेव यारा॥ भाइपनुष्कवछ
पेवल्स्ष पूर्णभोचाते॥ मायु शेवल्गा पिनेष्टा
साभमयस्वरे स्यया याणिलेव सूर्वं विडेवपया
स्पने॥ नरकं॥ नर्दसा राषुल ममेघेघाग नोवि
स्त्रवे॥ वस्त्रव श्रीश्वन ऊपूर्णिवंवि सुत्राश्व मनर्ना
वसनश्री पयवश्री हवामाबाये रूनि॥ चेदः
वह्रासिनपर सवृणवया पपत्वताह्नि॥ म
हपस्ष श्री॥ सयाश्विनशुक पेचम्पा स्वापिता
कारेस्या॥ समसोहनाथवस्त्रा संघानस्य कृ
कायामुसं भवकेवलायोविलम्बवालेभव
तोकाय॥ नत्रायेभजा॥ गावता सवयया याप्रिंग
मस्याग्रग्रहापव॥ सकृतलेवं स्तणावायोदः
त्रालेपिकृतः पतं॥ श्रीश्रीलपिभवेत्ताने: श्री
कल श्रीलिखितन॥ मैनयो मिसुयागकृ सत्रो
उगतूपनः ति॥ स्यास्विन षष्ठी॥ कानिकस
कृष्णोनभो मवाराजुलोय कि संसूस्यावाकिम
होस्वे ऊ यात॥ न ऋतेमनापञ्चगात॥ वाश्विके
कैलवायवश्री भोम वा रघुपाण्याने भोम वार

136

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पुम्पीस्यने ॥ महाषष्ठी निसापूका सुवेपाव
रातौचिः ॥ नृत्यास्यति निवेदा क्रिमदे चौपाघवे
हिने ॥ बह्याव क्रिसम भयेऊ यो हे क्रिमहेतस.
नोमति ॥ वृष्णुकेवैकातिकमासिनिकृतार
यौ ॥ रनिकाविकषष्ठी ॥ पृथ्व मार्गपौषे शुक्र
षष्ठोस्कंपनारके हनवान ॥ पूनसपस्कं दे.
मूषस्यालानसूनालि ॥ कमहूपमबौनि ॥ नर.
केभौविष्यमानने ॥ फंमागौषिरामूसिसष्ठी
भावसप्तम ॥ तृणपर्णपहरायलाषीवाषा.
नागहंपिया ॥ तिहंस्वप्रारके षष्ठी शुक्लाहक
गृनवन ॥ रमानेनरोगिनाकातिकपस्या.
निषिः ॥ सानरानारिके कमेन स्याम लपमु
चूने ॥ र्लिमाघमासे षष्ठी ॥ पल्लवगगनाद्र म.
गो नृषषष्ठौ गुनेषिपूर्वनेकं पष्ठनपन ॥ नरः
कैवल्पोदसा सूत्रस्य नौनि ॥ पृथ्वसिद्दविनरा
हिकनदारैज निपमसिपे ॥ अश्च गायनियुक्ष
दोमास्त्र ॥ भामेनापृष्ठीमिडा ॥ भोमीः
नलौपावषौवेस्यालिरश्मिन ॥ पष्ठीसाने भेडे
नरकू सोर हलोनूराषाढ्या वनौविप्रपास.
ह ॥ पंचमीवेव षष्ठी वग्गयेमाग संहवालिने.
नि ॥ चषौगंलिनवैगतकवाविप्रयोगः ॥
नेरं कैसलमनलायां ॥ निषेस्व षाता वपत्र.
मेत्यायागंमेरटहाग्यामिलने छनेमनि ॥ मृ.
नः सपोगायकवाभिलातकोविवनेन्यः
भूमकमेनसूप्रवे ॥ भृगाविपृष्ठेनिय हिहेनमवः
कार्यकनैषा ॥ पनिपनुषषष्ठीनिस्नमेव ॥ शृ३.
नैसाभ्येगात्रानेवनिषि ॥ पष्ठा ॥ दनकाल
ऊरस्थलालिनाषोपपुत्रकम ॥ नापनेष.
पुमावस्या पनिपारसन्नेचनौनि ॥ नुष्ठाव
नमानापा ॥ षष्ठीपुनेलषवमेषमोक्षेरोगक्कि

137

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पोनेवमनरेपोषु ॥ ह्रोसेवनेनषकलाद्गु
सामाडुवयाधेषुनपोवरेतेरंति ॥ मुपरेनं
काहोरिलिषुपलाकलिनन पावेन ॥ नुहुक
त्वानेवाषंनंनेवव रेन पावनमषुने ॥ तिष्वि
त्वकालिकीग्रासानपामषणानेमनीतिविन
मुञ्च षुषुनेलसिसुमकानिसनेलतानमेव
तिषिइ ॥ ननमषेपुनेलच्चानतुहुक्कहे
नमषुष ॥ पयनिलनलिषयः स्पानिसतेलनि
षिधन ॥ षमंगसपानिवधेरुसावेपरेरुपो
पातेरंति ॥ रविभेमषुनेनामलघनमेकरग्र
रेविरहिषुनसनिषुषोऽनुश्मवति ॥ ममसुमे
करनेकाथेनमहितीषुमानिगिषुषकानहारे
नवरहमकवनु ॥ वक्षोपक्षिमपाषिमी सारु
त्वोपागलकापोगासपणहिमरुलुकान ॥ ॥
इति षष्ठीनिर्णयः ॥ अथ सप्तमीनिर्णयोऽपने ॥
सप्तमीनिषिद्ध रूपवासाहिकुरवेषुनवृपाषा
नरुकषषोनिहि ॥ नपाव ॥ बषुष्षमावमा
वमावसपोकुलपहेयपोरुषी ॥ पनाः पवश्ना
शुभः पचाशुकेतासेषुनाः इति ॥ षषयरासम
मेसाषवेश्रुनाषषोवेमर्षः ॥ वेकीनसिरुति ॥
पंचमीसप्तमीचेनिषषिभुवंवते: रवीविरापा:
विपनान ॥ नपानागविझनपाषषी करुवेवि
होहिवाकुः ॥ कामविहेभवेहिमनग्रासल
वकसरेरंति ॥ सप्तलागः पंचमी ॥ करुवेषषी ॥
हिवाकुः सप्तमः ॥ कामहिषपोरषो ॥ विलं
हास्पोव ॥ नपाव ॥ सप्तमीनाष्टमीषुकान
सप्तमीषुनाष्टमी ॥ नपा ॥ सप्तमीमपाविस
नवोपेक्षा स्पाकलावनेसाहितवने ॥ पाहि
हान्विपाषु सप्तमीनषीषुनवपोषातेसिरु
नः ॥ इतिसप्तमीसामान्यनिर्णयः ॥ अथा विशे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ढः ॥ येषुकर्म्मस्माश्रमनकारिभिः ॥ कृते
श्वमेतिभागा विपुला तिमहानपूरति ॥ वि
श्वावेष्टु कर्म्मस्मृत्याति [illegible] मोत्त्वनकार्थे ॥
नरके भविष्यातो ॥ समर्म्मोक्षकरणं ॥ त्रैलोक्या
समम्मोयापन्तेषु यत्राघातोमम ॥ निसर्प्पैः
स्नानं योन्नपापोह्ये पोकतं नायमीति ॥ प्राप्य
धर्म्मकर्म्मस्मो विरुसानामस्तुपीनानः ॥ न
ज्ञानेनैलमः स्नानेनैव हृदयेपूपदीपादिभिः ॥
स्नानं भक्त्या भोज्यादिने वपदपापा ॥ नरके
सकलं गतः ॥ प्रात [illegible] कर्म्मस्मत्यो विष्णु
नामभाषुतः ॥ ज्ञानैः सर्व्वानन्त स्नानेन योग
धपनेम्मानि ॥ नयुवक्राम्कतो भिमः सम
देवर्णाके ॥ भक्त्या भोज्यलयायोपैः उभय
पोविसोपनुनिनि ॥ शुभ्रिनयुक्तस्मपुण्यामः
लय कायाके वसानाप्रवेनिमे विनापल
हृयकाविलपौत्रिकामानोपनयासहपव
म्याम्मापिनारेवी स्नापयेन ॥ नरके लिङ्ग
गुणं ॥ दत्तामोद्धव तुम्मत्याके वसायोप्रवेश
येन ॥ तस्मानिविनायुविलसापकसाभ्याशानि
केनस्या ॥ नयावपुनिर्म्मादेवः स्नानाभुक्तप
वेयायेन ॥ स्नानेव विष्णुपदे वृक्षपुनि ॥ नरके
समम्मापयेत्कामस्नेनि ॥ नागायोपवेशकस्त
मो ॥ नयुषवेहिनेः पोषाकृतनवयनः स्नाना
र्थं विसवोपनोः सेयुल्यवालसाम्मोनप
तु ॥ नवः सर्व्वमधुवनेमिसायेषहीन ॥ नरः
कस्मश्चनागो ॥ पहित्वमोत्तहिनैनेयुनेदेवाकृ
निसम्भुनः ॥ श्वेतिनैः कसयपानैनेमिसोनाम
हितावः ॥ समस्यानेनमाख्यातो लोके सि
विवनम्मो ॥ षष्ठावस्यापनेकायनस्मेमि
यसमानवी ॥ नयोषयासः कृतवन्तः भैरवाण

त्रकलानिव ॥ त्येनागरणि कार्यं पूर्णीर्वे नः
व्रतु संस्थनम ॥ समस्या वपुर्न कृ या मानः स्त
नापुनेरर्वे ॥ नानाकु समस भाः भस्पोप
हुमपेषुभ ॥ मधनावयधृनेना हि मानुपव
समृहिमः ॥ त्रासनागाभोनृयेपस्त्राहोन
माथाञ्चमानवः ॥ पृथमामविहंभयसुनः
वापेनरनपुकः ॥ क्लिनदृपेवभानकुत्रोपिप
मुर्वेनपुफमुनमिनि ॥ हनहयसममाषुषः
मायनि ॥ सायगुक्लसमस्मोमदनासमभीन
पंनेचोचमने ॥ सामर्थग्रहणानुस्या ॥ नसपाभ
हगात्रपुत्रापिस्या मानानासंयंनरोस्यान
नरकैभवेविधानवे ॥ मानु सपश्रुक्लमुदेनसमः
मोयायिलोवन ॥ नयनीकामसायाकासर्व
कापहगाभिथिवीनि ॥ फनिवेंहिवायोमूपि
मुपेग्रहणनस्यानश्रुक्लमायस्यारसमी
मुकोनपवेनालाकोनस्यालानमापाफलः
मिनि ॥ मावेमामिसिनवदेसममीकोहिभाः
फना ॥ कर्यान्तावर्बीहानभमाग्रनोगपः
वेपुरहनि ॥ पुर्ववेहानमयनु ॥ पुपनमेषकृतंः
वायेमगामुमसनेनमुह ॥ नमूनागंवयामुकंः
भ्रमाकरीहनसममी ॥ ववननमकंनेपापयः
श्चनेमाविनेनराम ॥ मनेवावाकापनेपापस
नासानावपनुनः ॥ रतिसमविपयापूस्वाः
नाभेमसमसभिके ॥ ससुवापिसुमाग्रुके सूः
रमाकरसमनि ॥ रयंमेविवारेगाछेनामः
पयनदेगाशुकामहनेयोमकानयरसर्यः
मुर्वेपेन ॥ नरकंगागेगा ॥ गवेवारेगाशुका
पासमभाप्रुनगपानि ॥ वेनामयपनहवेयह
नयेपश्च हिवाकरामिनि ॥ रनुगयगेमावेमाः
मे ॥ वेनामनरवागि ॥ हरमञेनपायोधीः

140

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ष्टागी धैपुत्रवृधः॥ पुनामये पूतलस्यात्मसे·
नात्माकूर्मतो विवादति॥ शुभ्यापि समसो·
मौसमवृद्धे लात्रुक्रमानुहोफलप्रदा॥ नरक॥
सौमवृद्धेन्यात्वस्याभानुवाश्मप्रमुमी॥ मे
गात्रकादि ते प्रश्रेवनृप्यौवाहनेरगो॥ मृ·
त्विचिलितकोकर्मशुभवायुद्दिवाश्च भम्॥·
घायावर्धमहरवा प्रानुकूलनाविरन्कूहनम॥
गृहेवनस्पतो शुक्रावनेश्वरोक्रमप्रमात्रलनरा
वृहीमेविवाराभ्याशुक्रापोसममध्यापप्रका
त्योपोगाभवंति॥ नरक॥ वहुपुत्रसमप्रमोयो·
गोवार्हसुमालिनः॥ कोपोधप मकोः
नामसदसाकगृहाद्वमनि॥ ०दरस्पागलाम
मर्वमासमसमीनिशिश्रवनिलुलाटिन्मः प्र·
पः३कच समुख्याभाकरस्यवेति॥ सुधर्मेद
विकदारिके लियते॥ सुममीत्रुपवारोलासि·
ज्ञभवति॥ स्केत्रपलारहिनी यात्रुहाल्गी·
समसौख्यतिनि॥ समुध्याश्विवायतासवलो
त्वौविरूद्धपापाभवति॥ नरक॥ समस्पाद
नकरवासरापदिस्यादास्युप्रतिपरन्वन्तन·
स्नमध॥ सवतोश्शनिभिःफूहीविनाः समामः॥
समयावदः शुभफलवर्तीतिभियदनात॥ समः
मौर्यविवारणोगाद्धिविकस्त्यागेषुकल्विद्विषो
बौलित्यनेपया॥ विपाउस्योगालित्पिवासना
मानदरवाद्रभावरपुष्परूनस्वगरोगुघे·
भृगुनीतिनिभिडाहृति॥ समस्पाघहितोषा
कोवनतोषिकाकिरूपौन॥ वनेपोष्टिकाद्र·
नौपाहाहरपोः समसौश्रवरूपौन॥ हंसकला
न॥ समसाग्रामामन्तकस्थानेलसीगे॥ समसा
निइनवमोत्रचमेषद्यस्थितुः॥ लापूर्णकरवि·
सौपनाम सके मृत्यु ध्यहति॥ रविभौमशनैः
नामसप्तन मयनमकूरग्रहे कन्याराशि स्थिते

141

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ममभीष्टुभकर्मकृतनिविहशा॥ नत्तृकं पणः पोषा
विमुपाहि॥ ममस्याचरायपो पोमिनो सायरख्या
यायुनकृपोन॥ वायछेशानयाविन्दुकाना॥ ह-
निणाया न्हनेममसी निलोय॥ श्रृयाहमीनि
लोयिने॥ नत्तृकाहमीन वमीयुनेवयासा-
नत्तृकं॥ वहरन्यायारिनि॥ घलनेवनै॥ नवम्या
मह्हकायोस्याहहमीसवेगउपरिनि॥ स्वरूय
नेयपि॥ श्रुक्षपरेहमीचेनशुक्षपरेवनरेषो
सर्वविहशानकर्नव्याकनेम्यापसेउना॥ सुप
बसाहिकंकायेयवधर्मःसनूननमसृहि
वृहस्पविनुपि॥ वकृटपणाहमीउषीयोमि
मासीवनुरेशो॥ हसेविद्याउकनेव्यानारपा
षः पूराविना॥ निगमेपि॥ घणाहस्याववमा
वस्याने॥ पहवाकेपुहमीवनरेषोसकेव-
हिनबोहस्याहिवाकेः पवविद्याविधानान
नाहमीसमसीयक्नासमसीनाहमीपुनेनि
ममस्याननयाहमीनि॥ नयाभावुनुहमह-
स्य॥ हनि॥ उपवानेसममीलनयमीविहेवोपः
यानिमिस्याहित्याकेः शूवविशानिमपाश॥ श्रु
क्राहमीनवमीचानिसरोवृपोषोनि॥ श्रमाहयो
हमीनस्वयायेसर्वविद्यायोष्या॥ कसमपहास-
मीनसाभामनः हवविद्येवग्रामा॥ नउवे॥ कस
पहोहमीचेवकसपहेचनरेयो॥ सर्वविशा-
नकर्नव्यापरविशात्रुकयविहिनि॥ नवरूह-
मीनवमीउरमसहोसाहेमहोनसवः॥ स्याव
ग्राकांशिवरेशपररयोकमयुनयोनिवाको
नपवहयानमयोहस्याननवमीउक्रमव्यवसा-
क्रानसमीषिहिने॥ कृसपरेहमीचेवनिवाको
नपूर्वविशाहमीःग्रामासमपूकामिनिविशेष-
हनिचसम्ये॥ नवमीउक्राहमीश्रयनानीसवरह

142

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पन्वाहुस्वाममहेस्वरस्वलाविषपकुस्वाहुमीलवः
मीयुस्नैवस्रहा॥ यमयत्रनेस्रसामान्यनःसमः
मीयुनैवसमविरोपः॥ नरके॥ गुरुमानवमीयु
मानवस्मावाहुमीयुना॥ सर्पनाशोस्त्रपापा
दमामाहेस्वरीनिश्चिरीति॥ गुरुमीनवमीपुः
पीयुमामाहेस्वरीनिपीरिति॥ गुरुमीनवमीः
याणीमामहेस्वरहना॥ भोजनगुलीपुष्प्राकाय
पा॥ यहूमाहस्तलेपागीनवमाप्राप्निमचेये
ने॥ हस्यागोगीहुमयागुहनायास्यामहाफल
मिति॥ सहमीनवमीपगीहस्नायास्यम
हाफलमिति॥ गुरुमीनवमीपगीहुपाःश्रा
मिकहपोहेमायामहाफलमिस्यर्यः॥ सर्वनु
इत्रामामहेस्वरहनाकृषाहुस्पानवमीयुके
यामवकार्येतस्ति॥ इतिश्रीसामान्यवि
धिः॥ अपाविषापमिलोपः॥ नयकेसहस्रमा १
मीनवप्राकाहुमी॥ नस्पाउनवेहनहवउमाः
पामहावस्माककलिकः प्राप्नुः॥ लिगाङराणे
मशोककालकसुहायोपिवेनिउनवेवः॥ वे
वमालिसिनाहुस्पानलयाकमपाप्नुयाचिति
प्रापानमवस्रु॥ नामप्राकनुराभीहुमधमा
सिमश्रस्वः॥ रिवामिप्राकसनमीनामश्रो
कसहाक्रविनि॥ प्रमापाप्निनगुरूकाहुस्यामि
वस्थामसहाफ्लाकायी॥ नरकेमाकीडयाउरा
णे॥ पारस्थालेमुहायलाक्रियनेयावचवाधिः
को॥ नस्पोमसैनेकाहुस्पाश्रनुत्रामकिसमवि
नः॥ इत्यउमापचवाषिकोनेनवनवृक्षस्पाः
नेवेकश्रकृपनिपयुक्रमाहुमीपयैनाक्रियः
मातावस्माभिपोयने॥ अनुश्रुपाहसेनः
पीलस्यावदपोनसवःकापेश्नचेवाहुमी
मुखवेशालेशुकाहुस्पाउपोषितस्रामः 143

कलसेनुस्वालेणालिनालेरेवीमसीवा
लकसुरिमः॥ स्वपलिलसेपनपरकेरा॥ली
रनेवयरस्यानवमानेरवधास्तगाकमारीसु
भासायित्रापारंणाकृयोन॥ नेरकरेवीसुराणे
सहकारफलेस्वालेवेपलस्वाघमोदिन॥
स्वामनोरेव॥ भास्वापामोसीवालक्रवास्मिः
लेपनेफलकपरंरूपंपवस्वायिक॥ फलेना
लीफलमिति॥ निषन्सवापरीपा॥ प्रतिलेवस्स
रेस्वापृनाकृवेनिवेनः॥ संस्वापरवेपा
सापेःकेनस्पापवमेनव॥ फाकेरासोवेवः
पवस्पोवियपानने॥ स्वामनःपुरपोवेव
रहिणंशाकिनोदवेन॥ सर्वनोधामिवक
वैसुनेनायोनिभूगविनिवेपाकाहमी॥ स
पमेपहमुक्राहस्पारेवीयनवणका॥ उक्रः
वसुमरगामो॥ स्रवाहस्पाउगानालासुस्का.
हवीमहासनी॥ वापाघरानवेशणासुकप.
वेननेणनेहिनि॥ मेपुहकसाघस्पापावस्सा
कार्या॥ नरकभविषणसुवे॥ सेहमाम्रिकिस.
स्रहसुस्ताहस्पोविनाणने॥ पःहनयानिहवस
मीणाहाकेवनेनरभुतिःपेहाघमी॥ स्वाबाप
श्रुकसुस्थानमुपावितोहेविहाहिनयानस्वा
नामहिषमहिलीनास्वारवीननेवस्वापप
स्वासनयन॥ नरकसवेउगागा॥ सुहस्पावनस्वा
घाठेलिशानोघनस्वापंपेन॥ स्वयस्वामाच:
कपेरेखूनस्नस्वापिलसुपेन॥ भुपचेरनकर्
रेवालकःसिनमिलक्रुप॥ भस्पाणकेरपा.
हणीन्याचकानिशुभानिच॥ रापपेन्कन्पः
कावियाभोनपेरानुहरूसणा॥ शाकिनोरवि
लोहस्यामहिषवीकोनेवेन॥ रोवमासा.
हेनेनेवसर्वांकामाम्यपचकानि॥ रस्याघर.

144

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

छत्रवमी ॥ आवगणमासि महाविस्रष्टमाकोस्त
मानसपुत्रीतः सनेमाष्टमीतिथौ पते ॥ तत्रस
कामे निष्कामेता सर्वपापवासः कर्तनाः ॥ पू
कवेणोपत्यवापङ्क्तीः यथा ॥ तत्रपूर्णमासेवा
चोनेकाकृता गुलिनवम ॥ सो नवा देपस्थे
केक सान्नमाष्टमी दिने ॥ तथा ॥ तेमाष्टमी
दिने पाद्यपाद्य मेधे हिनो नम ॥ वेतोरुव जते
तेपांधकेन नवसगय ॥ पूजा सप्तश्व पु
स्वगोविपः स्त्रीवधोपिवा ॥ नलाके शुनिशाद
लतयनी विप्रवेसुहे ॥ पून जर्वतिमाननः
कृत्सान्नमाष्टमी ध्वन ॥ नेभवनि नकपापप्या
लाम इतिकान ले ॥ श्रावणो वस्ले पडे कृत्स
नमाष्टमी ध्वन ॥ पक्कोति नेराप स्पाना पर्व
चलगहसः ॥ नकुराति नेरापक्तनयन्ती स
भवेध्वनम ॥ यमस्पंव पुण्माप थः सप्ले नराको
ध्वनाम ॥ पूतीनानुगानेवेव कुलमेकानरश्च
ने ॥ पानिनेलकेवाराप अंकृशमवा सरे ॥
श्याद्रवोकेन क्षाष्टमी भोजनेम हायेषा
नायते ॥ रुपवासमहाफलं सव मस्तु ॥ नरम
विस्तरहस्प ॥ आनापापसप्तकाकुसान भ
सिवाष्टमी ॥ गुरुत्तमाप नुभ्यनेतो पापावास्प
महाफलेति ॥ भविष्यपाने ॥ ग्रानेव धीवा पा
नेन मङ्गकोपमेनेत्वन ॥ नेरोवाप्य पयला दी
यथोकफलमापयान ॥ ७३ सेतानमा राग प
सेभाग्यमनेटन भव ॥ स्त्रपामहनो भवा
क्वनेवकुवमाग्रपान ॥ नप्ररिवविमानेन
वसेलहलैपंचि ॥ भोगान्सुनाविपालोक
गुणगणवाहिशगनः ॥ सर्वकाममस्प्रदेह
सर्वाहरवविवर्जिते ॥ सर्वधर्मेष्ठनेपार्थेस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

क... ले ... कलेसुपविहाणानाणुपत्ते
लगोकुलसंकुले ॥ कलेसुपवविहट्ठपावगापवेसमवे
हनवेयमे ॥ यम्मिनम्मेहेवट्टपावेसमवेलकाकपा
कामहे ॥ समनन्नहितेपापवेहुस्सवेसपुने:
मिते ॥ हन्नतेभवनेस्सुद्धानतेकुहाकिइविणाले ॥ पवे
पवयकभयनवनकुद्धाविमेभाणनभयभवन ॥
न: कालवर्षीसाहितिमोमाणनभयेनमम ॥ न:
ग्रहेवायम्मनेयसहेवीकयासुहितेनमम
ग्रहवेमनहिस्मानोपमसाहितेभायमिते
स्कंपडगाणो ॥ वनेनाराथ्यदेवेगावेगकयाय
हितेममम ॥ नवमवमसहहिसाणनेपुसमाहि
नेभवम ॥ नेमाहमोवतेपवयकुंलेनवाल:
मा ॥ कारयंनपवालोकालनसोनेवाकिसाग
भवेन ॥ समागावाहुवेहंसामसमकुलेभवे:
सवेन ॥ मिसोनिसव्वकार्यासिकुलेनमाह:
मोवले ॥ हन्नाहिवाकोकपवासमनवापहि
काउथिकाथमहाउपाफलपुरुणाणुसवे
णाद्धोपवासवनकाये ॥ नपुरुवनकोहशाम
हमणाक्रियनेरनोरानोविवार्यनेले ॥ सामपमा
हमोपुडाविड्डुभेदेमणोस्याशकाणा ॥ नेगु
पुडायामहमेदे: पख्या ॥ पुरुसमा ॥ ॥ न
ना ॥ ॥ पुपिकारवेनिद्धिविधा ॥ वववविडाणि
सामन्नेनपिकावेनिद्धिविधा ॥ नव ॥ पुरु:
समापिरोहिणासहितासहितेनवेनायविः
पा ॥ पवविडाणि सामन्नेनं पुडाविकानुहवे
हितेनेहिणासहितापराहितेनवारोहिणामु
हिता ॥ उभयपवरोहिणासहिताने हि भवि
पा ॥ पवंउभयविधा ॥ पवेविडसमापिरोहि
णीसहिता ॥ नवहितेनिरोहिविधा ॥ विडाहि
कानवर्वहितेपवरोहिणीसहिता ॥ उभयपव:

रोहिणी महिना ॥ १ प्रथम रोहिणी रहिना
वेलि वन विधा ॥ पं॰ प्रभृति हविधा ॥ विद्या
पूर्व विधा ॥ ३ भवे वांछा सुख विद्या भेदाना मु॰
ने बोध प्रकार भवति ॥ विविधा वा वो
ने भेदाः ॥ सुप्रार्थना रोहिणी पुत्रा धर्मी
नेयनी सुख ने रूपका ॥ हितीया नव मो
धवा सत्य सामवार पारणा मेन पुत्रा ॥ ९
वेन प्रात प्रकारा महि ॥ ९ ऋद्ध नम पिल भ
सपोधा सा महाफल ते ॥ नम श्रेयस मा॰
स्यादि मासा भि प्रायेण ॥ श्रद्धा पिका पि
पा ३ प्रथम रोहिणी रहिना ॥ नृ स्या सहणी
पा गुण वा सिद्ध कना हिनी वा क्रि निश्चल पा॰
व्रतो क्रया ॥ नर ॥ निश्चि नव ध्वनि पमेति
सिद्धि ने चपा व्रतो ॥ प्रती मध्या पारणो न॰
धने भेद मसवा सूर्या ॥ प्रथम श्रेष्ठा पक्ष
पूर्वे लिने पाद हिन वा रोहिणी गुरु सं॰ वेणा
धा ॥ नर ॥ विशु वर सं ॥ ऋद्ध नम पिहि
रहीय क्रिया सुखि सिद्ध रूप ने ॥ मुद्रा रोहि
णीय दा ने मेध तत्त्व पाव सहिति ॥ पाइ
शो पिको भ्रम रोहिणी गुरु का या सुख णां॰
शुभे का हिणी या सिद्ध तिथि न वग्वि ये
पारणां कया ॥ नर ॥ रोहिणी महिना ट
यांवि रहि सत्य पो सुता ॥ विपो गपा रण क्ष
शुभे न पो भ्रम वा दिव श्रेनि ॥ नक्षा ॥ स पथी
केष्वते पा मेघ ये कोपि विशुद्ध ने ॥ नव्रे वप
रणो क्रु गुरु वे व वर विरा रिनि ॥ नं पाव ॥ भां॰
नेक पूर्वनि श्रेष्ठ वा विषा सत्य भा रन पारणा मिति
प्रभृ विद्या पिको भ्रम रहिना ॥ सत्या विद्या
ग्रामे वाव रूप ति शुभ नेपार णा कृपा नृ ॥ नड॰
क्ष ॥ क्र साह सौ क्रम पव ही शिव रा यि वल

147

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

148

देखी॥ एनासर्वांगुनाकायोमिन थंने पारंगे
भवेइति॥ निगम॥ सर्वविना सनिरोगुभ
देवस्त्रवणाविना॥ उपोबाधिपवक्रुयोन
हेतवक्षुपारणे मिति॥ विज्ञाहिकानुसर्वेहि
नेपशेतिबायमि मोगुन्नाकुलको रेल
शुक्लि ठौनि नमाशुभीलिलेपु॥ सुषुभाः
श्रपराक्षुक्राहमोतिर्णोपने॥ सेवस्पोहः
मात्रुह्वापिसर्वविद्ववग्रासा॥ नहक॥ सु
वणाइणोनवमोहर्वाविकूलाशनो॥ सु
विद्बक्कनंथायवरायोयलेहिन॥ शुस्फुः
सर्वविरूपणोसे हामनुनुस्वर्यरेनायासि
हस्यामर्थेश्वागस्यानोदिनेस्वानिमपुवोपः
कमयभाकवा॥ एवंक्रुननारीसमनेमह
पनिश्रुयवियोगेनामुपान॥ रमेवपरोमि
महारोषः॥ नहमेयुराणासमसुखपे॥ सर्वः
सुमीतिशियर्योनमामि भाइपस्मविन॥ सः
वोहमीतिसासेयालकायोपमेश्रुता॥
नथा॥ यायेभाइपुरूमासिशुक्राहम्पोवः
भावन॥ सूर्वाम्मवेपेइनांमेषस्नलेघवः
लेपेइति॥ स्पेघायोमसनेहोमनेनःके
हेवशानिना॥ नरस्यकः कामिुमिय्यवः
पोमेवशुणानहवयोगानुः॥ सहानेपाव
लोकपोहितास्त्रवणाहिणामिति॥ नव
सुहाभूर्वविहृत्रापवासेपारहेनेवरायेनहः
उवानिषंमनभुवनि॥ नरामहानेशाया
भोननलिघपाटुनोरापुपवामः प्रमये
न॥ सवनपुक्तः॥ पायनास्यवपारोप्रक
मेवनचनसमाम्यर्थनानुभावप्रेत्रन
स्पणोरसमामिरेवनस्पाशिलिबे[illegible]॥ प
शिलिष्यिभानकालः पारणामाणा॥ पार

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ताद्योतं ॥ नेदं ग्राभावेगिनयवलोपः ॥ लि-
ग सिद्धं स्थितं ॥ स्थानस्थितं ग्रामानां भावेहि वे-
पागतं तु कार्यं ॥ नउकं ॥ नित्यमदृष्यो पंरता-
त्रे नदंद्यानत्र व्युपेक्षितां ॥ अपवृत्ते खचत्कृ-
स्यात्तेनापूते हृतान्न ॥ श्रस्याये ॥ नित्यं दृष्टे
कृत्य व्यातेवायनरत्नेकृपान ॥ श्रयवापं
देविति त्रिभवनः स्थानं ॥ नदापरद्दलितं सच
वपास्युक्तपोन ॥ दितृनेवसर्वोपवासेष्ठ स्वा
पुगानमिथ्यने ॥ नित्यमेमात्स्यनाना ख्याति कृ
तीनप्रगामिति ॥ अनस्थपराभानतानि त्रि
दुस्कालेतिस्रुभांनो भवति ॥ नदानुचेवगार
तोकार्यमन्त्र्यात्स्वनेनुपगात्कार्येमिमल
मोनुवपूर्व्व ॥ नउसमतोविज्ञापुकभयवगो
ह्लमोगोहिनाया मनखुश्यामनहस्य धाथिक नेन
ग्रग्यानानाभिधानसर्वे विज्ञापवासा विक्षपति
वेदया ॥ सममहोपुनन्यापृष्ठन्या स्थला स्मृदे हि
नोत्रम ॥ ग्रानपूर्व्वविनोधा किपुकत्वानामभवि
तेहि ॥ नव्युयषाभिकेगूरेथार्कंव्यासाहिमः
९ तिमसं ॥ ए नद्वयनेनापवासपञ्चपवास
स्वस्यवणान ॥ किनस्वं विज्ञापगुपृथ्वीहि
नोपहिलं विहिनस्यापूरातामगवतानविपाय
मनेज्ञानानावनेनश्रेतिमृहिकतरादृत्य
रेवस्तनस्यारेतिम्रराफलवपापाते ॥ श्रय
शुराविज्ञाबापाहृ सो श्वपं गावेतातु हृतोश्रक
तामयेतेयाने ॥ नउकं ॥ अपंतायोधतोहतप
पराकृत्याहसोभनूत ॥ नस्यानभावंनद्योरी
हृतिकापूहिलम्रतामि ति ॥ नश्वफलनेव
धपानि ॥ सप्तवासहद्रष ॥ नोनत्वकृत्वानसी
रश्रीतिं ॥ नष्ताच ॥ नाहिरातेसहिनाकृत्वा
मासभाह्रपरेनप ॥ अपंतावश्यद्वांपिकः

149

लपाबापस्तभवेत् ॥ नमनानो नागमापृथ्क्वो
लभमहारीरीषः ॥ नमेबोपव संख्याभकपो
नयेबलाग ॥ पृथ्ग्ये नपोगोपेनोगापन्त्र
स्येमलिमा ॥ नपंनीलामस्नागिस्नयमाना
नमारेनः ॥ निपनामापृथ्विलाना सनान.
मृपवनेपेरिति ॥ पृथ्भारपस्केमप्रेतिनि.
लादिमासाभिमपेना ॥ माकुशिपगनाो ॥ प्रा
नापयेतसगुकामूसानभामिवाहमी ॥ नूप
नीनामस्ता योकासेवोपाधामहापूलेति
स्येपवेलिनुपरिलेबापेबापेषोपूहिमो
योगःसनुपाघः ॥ पसानतिथिसूनदिनम्
पथर्पगमेराहिलोबोगलदोनेबापोः
नसुके पमगुणाम ॥ सूचोबाहमीकिविम.
वमोसकसापरि ॥ भवसृष्पूसगुरुःपमना.
पमार्हेसपता ॥ पूतिवकेशानेबापिसभः
नेवृनिबाधृतिति ॥ नपाव ॥ पपनोलेना
नानावपनलूनापिनैपः ॥ पेःकूनासृवः
लेमामिस्तभमापृहिलोपना ॥ किंपनवृथ
बापता साम्लेनामिद्विपापनः ॥ किपननेव
मीपमा संकाकोलोतशमिरेतिनमामुहू
मीतिलोपः ॥ पपभासंपलशूक्रापूमीतिलि
पने ॥ सेवहवोहमीमागुकापि शवैविरेवः
पमा ॥ नहके ॥ ष्मामोगशीनबमीहवैवि
कूनापने ॥ शवैविरेवकनंपापीनवरायो.
वलीदिन ॥ शमपाहवैविहूपानाभूसलनद
यगहिनापासिहूस्या सपो.गलेप.दिनहवो
मप्पबोपक्षसमभोकब्धा ॥ पवक्रुननार्दा.
समलनमसपलिगुवेविपोगंनाशुपांन ॥ सृवे
वपरोग्यमहालोषः ॥ नहके भगणासमश्रुपे

150

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

151

वीषु मीनसाकर्ण्ये नेषु ष्ठा मलेवव र्तेरिति
नेदृशीनवमी शुक्लनः ॥ कार्त्तिके शुक्लपक्षे
पश्चिमा विधानमुपवेशो त्रिषु मल पुष्करा वा
पर्यक्षका मैकालक्ष्मी दिव्या सत्या ॥ पुष्पपू
कर्पूरादिना पद्मा च ॥ तिरस्कृष्ण मी लिता
ए ॥ भाद्रपदे शुक्ला पूर्णिमा नक्षत्र योग सम
लिता ॥ महती कीर्तिता नस्यायष्ट वीरस
मेयत ॥ अपराह्ने विद्धि पाल लक्ष्मी नस्वनवप
निरते ॥ लिङ्गपुराणे ॥ कन्याके या पूर्णिमा शुक्ला
नाष्टाहे महती हि मा ॥ मूलस्वीय विहा तो पञ्चा
न प्रयत्न यत ॥ व्रतनामक मेषु स्पष्टा यैनेनमस्तु
मांमेषु ष्ठा यैनेन मो नमः ॥ शिवाये नेनु मस्तु मे
गोलक यैने नमो नमः ॥ इति ॥ अनिलु [illegible]
एन्ये ष्ठा अनेन हव्या भावो पिकार्यता ॥ तृ
कमनुस्य श्रवणे ॥ प्रत्याहिक नष्टा युक्त यत्नेष्टा
देवनेत्र न ॥ प्रातिनेष्टा अनेन यत्ना विहितनकव
लोकुनि ॥ निषिद्धे वा वेदस्या हि लोये केवल
वनकृति ॥ अस्ति नशक्ति नमि यन्त्र यानमहा
लक्ष्मीव्रते न कार्ये ॥ पुष्या स्विनमासि कृष्णाष्ट
म्या देव च नेव स्थर हिता यो महालक्ष्मी व्रत नक
र्ये ॥ नस्तु दोष्ट य कालव्यापि ग्रा मेव ॥ चन्द्रोद
यव्यापिनी विधानात ॥ ऊन प्रो नवलक्ष्यो स्वे
यैतद्रूतनसमा पयेत ॥ नेत्र कृष्णाणा मनमष्ट
ये ॥ कन्यागता केषाव भक्तनेषु नाम्निये व
ने ॥ कृष्णपक्षतल स्यकोन्नद्ध ननसमापये
न ॥ अस्तंगते ॥ समुद्रो ष्णा संयुक्ता न
कन्यागतेष्टमी ॥ दुर्गोत्सवः सिनेपक्षे
श्रीवृक्षनवफलेश्च भव ॥ अत्र सम मीडष्टा सन्तु
केलिवर्त्ता क्षपा विशेषतो ॥ सिता शुक्ला
श्रवणन दृष्टा संभवात ॥ अस्विना सिताष्टम्यां

152

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इत्यौक्तव: कार्यः इत्येनावक्मात्मूर्ध्वविधी पने
न्याव ॥ पूर्वरात्र्यमलिकम्यवतनेयोनताति.
थि: ॥ नस्तानस्थानि पोकार्यमूस लक्ष्मीश्वनं.
श्च भमिति ॥ रोषवनश्यवनेनचापुरानास.
मनूतेषोतं: ॥ सूनतीयायुत्स्थीवग्रहसीया
वर्षीस्त्रो: ॥ रोषसूनभिमनसक्रामवेसप.
कतीविनितिनि ॥ रोपासूनतैवाकु: ॥ ७अमी
भागृयतात्यायनायानीसाप्रकोलिना ॥ नस
सवेषयवेनत्याज्यवत्यागनेवयो ॥ विशाव.
तापातिस्मस्यवनवमीहविनाहूतियाये ॥ ष
श्रवत्यागनेनिवेपेवेवनारभाविवय: ॥ न
ग्राव ॥ विरनेवावमूर्ववरुषम्यानायवृास.
शेत ॥ ७अहानवमीविडाम्लेहत्याघवेरु.
वौ ॥ नववमीनिष्यपः ॥ रेवनोनरहत्यानेवि
विहिनमवेमरिनेषनिदोषवतहूपम ॥
चिहिनामहिनयोवूलनाारत्नमासाया
शुक्ले ॥ यवेकु: स्त्र्यानिष्यनिहयावसानं.
थात्स्येत्समहिनेमरकमूपाय: ॥ यःस्यापीभ.
वतिनिपिवयस्यचाक्कात्रिरस्यक्त७नौ
रवनेहे ॥ एनहिषवनवूह्रयवनेनएपकमी
यानेनयोरेवशायपूानेयो ॥ श्रमृत्याघा७श
वर्षमाप्रस्यवनमूानरोदोषसभवे.कर
तासमस्येन ॥ पूम्यताषिमलिसभवेदोषव
नेन ॥ नद्वनियमेन ॥ नघाबोक ॥ श्रियाचं.
नेभाइयरहिनाइमीपात्भवकन्यासगाने
वस्थे ॥ समायपनन्यानियोनपावूसये
त्लहवर्शितोनोसुवन्याइलि ॥ नवमीवप.
निषधोपिवडेरयादवीनिषः ॥ वृक्षादया
र्दपविषकूनेवापिलेवाइरानेवमीविडा
कायो ॥ नडक ॥ हवीपरविडावायासावं.

153

वंशोद्भव समरा || विभूकन्तीषु मीहे मरात्र एका
यो || नवेत्रषु वेमर्यो: || स्वीमय रात्मोचनेत्रि
लोप || युगा स्थिनेमा सिद्धुक महायमोन्ति
तीयते || सा चन नमो पुके वृत्तगौप वासाटि
श्रुयासा || नदङ्के || वृहास्य पोरिति || नाह मी
समसी यूका समयोनाधु मेधूना || नव मा
महकार्यस्याद्रद्दमी सर्वहात पोरीति || नमो
व || श्रद्धमीन वमीएका मृहोस्मा हेम हेम्म
वहति || नमाव || श्रधमा चनन्दृमा वनग:
मानर मन्त्रिको || स्वनयन्नाखिने मासि:
विणोकेनायनेन रथ्या शिभिवोके || नम:
मीएका पाप वसापृस्वा भिमानान || नम
मीएका वसर्निसे भवंसर्वथा वर्ननीया ||
नमम ह्रादेष श्रवणान || यथा || एकान्ते
पदस्पृश्राविदेनि राधेस मानके || देनिआनो
नूराना श्च समसी मृतृनाह मी || नमामः
वेपयत्नेन समसी वेप संयुता || वर्जनीया
हमी वाय सदावान मसभी फुमीसि रेने || नमो
नमसी यालसे विज्ञा वर्जनीया सरहमो ||
नेकापि साति स्थि: स्थाप्य यस्या सू यो भया:
इयोभवेदिति || मान राज्ञो यभी मयरा कृ के
पि || नहि वानलिया पिचविहृ विहि नान:
चससमो मास्यो परना || यहि ना हमो हा:
षाभवा नवमी श्रमे रापिश ज्ञानमा नवमी
रयेन वमो भोम जो रोण वएका यथा स्नान
ना || पंडके || सहस्या गुटिते ह यो हतो नेन्ते
मो भवन || ॐ नो वाया रो भवन यह जनो याम
यवन: || रयेम हमीम सेन तेज गारवो वा:
छानू नवे ण वाएका मयान वमी एयाते
पडके || ग्रापाय पक स्नेक पवे व यामह मोम

154

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लसेगुमा ॥ पूर्वो याषाढः सगुक्रा कृत्तवहुयग.
नायका ॥ सामहानवमी नामसेलोकोपि
मेजूर्ल्भा ॥ नष्याघ ॥ कन्यागतिसूविनवः
शुक्रपदे हृमीतथा ॥ मूलनक्षत्रसंयुक्तासा
महानवमी प्रकीर्तिता ॥ मूलेनत्त्वसंयुता.
श्वैव ॥ यङ्गकेऽगीत्तसेवे ॥ मूलेनापिविहिसंयु
कासमृत्यान्यामृगाष्टमीत्रयेः ॥ लेणमाषेणा
ममण्यास्त्रपिसूर्यादिहिस्त्रीघिता ॥ नवमी शु
क्रायापाश्चास्पुटेवीउत्तराशुक्रे ॥ समजं
यंतीजैकार्वेः खंतोमयानथकायवः ॥ नवम्यं
पूजितादेवीदयान्यानलनंफले ॥ साभ
यपामूयपविंशोवमाधम्यांसात्वदायिनी
नमूलासपूजनीयानवामुद्रामुद्रनायिनी
नध्या ॥ मूलमृगोभाद्रपीरेवद्यूनायघाल
उत्तराषाफालयालिविशे ॥ नक्षत्रभवनाम
नायमणीये ॥ मूलेचसूजयेदेवीनध्यास
लिलदेवेले ॥ वेष्टुदेवलनवेपूजायां.
यः फलाभवेटिलि ॥ उत्तराषाढकेभवत्र
सतिलेभवतेपः ॥ नक्षत्रेयोग्निवे ॥ मः
लाभावेलकलैमासहष्टमीनायमोत्तुना
वेष्टशुक्रापिकनैष्याचाष्टमीनवमीयुः
तेतिनध्याव ॥ व्रतपतनंवगहत्वदिनी.
यायाभृनंपतः ॥ तनीयायोकेवचक्रेव
तक्षोपमोलिमेलम् ॥ पंचम्यामाटष्ट
लेपृयोचव्युद्धेनथा ॥ गहादंयारसः
सप्ताभष्टम्यापूर्विम्रवमान् ॥ नवमः
वमसटेव्यामलिंहेस्वविनाशिनी ॥ स्व
नपवर्वप्रण्यास्त्रमाष्टमीनवमीउत्तेनतु ॥ १

155

CC-0. Gurukul Kangri Collection

मुखेवयंयानेविशेषमकः॥ यथा॥ घटेनागः
मनेरेखामवीबाढः सपूजनं॥ उवाच्वयवालेदः
ज्ञास्रवणाच्चापवनिलिनेनि॥ एवंनयमोगुरुन्
हृम्पारेवीसपूजनोरयकाधिन्यानवमणावं
रुपान॥ नरङ्कस्वैगुणोनि॥ नृयोरुपवरादं
कारमरोस्यारवणायदि॥ वोलितानयकनं
थनवृंदेवःशुभावरे॥ वलियेनेषनहृष्णा
गुरुभणाभवलरूपेनि॥ नथा॥ सुभम्पागुरविन
नृर्पेदिनोनेनवमोभवेन॥ प्रभानेवलिख
नेनाकिंपमोग्रोपलम्पते॥ नवमणानयसं
मृयेरगोरेगीनिमास्त्रिदीते॥ नवरविक
ज्ञानिवारुपालिकुपेनेयथा॥ सूर्यभृत्व
भरारेनावधोवेनरुकविन॥ मवीमिदिप्र
दासाकिभम्पापामविनाप्रश॥ भम्पावाभू
कस्यांसुमधेस्यारत्पानेशिपा॥ नभावाश
प्रमोविरावरुपोर्दग्राहमीवयेति॥ नथा
विस्रेयकामरुहमामनमरुसाकरोक्षितः
नरुप्रनाफलेनतेनेनारमविमानिनोनि
पभवोकेःसमसोविरूपामेवरमौनाव
विधानाहितोपूर्विवेसमे॥ पाहमौसम्
मौविरासनोनिधिरपयथाक्षिनेमारि
नेनवर्षेहि॥ नहिवयन्मनुर्वेविरावाक्ष्या
नि॥ नरकस्मानेसत्रहे॥ यदास्तपौहयः
नृपासवमौवापारहनि॥ नदाहमौपकु
वैनसमनोमहितानवेनि॥ नपावरमे
स्तवी॥ उक्तोलियथा यद्रदंयोन्नेनवा
प्रिय॥ रवीहमौनराकुर्यादस्यपानमु
भभवेद्विनिधानेशुनःसमसोगुरेनेनृ
येपूनसाहमीभवेत्॥ नवडगोम्लवं
कुर्यानकुर्यानकुर्यादशारदानि॥ ह्मीवं
नवनानीयामव्यानमहस्यनेरपारेस्ः

156

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

निनुकर्मोपक्रमादृष्मोनिबंधुवाक्यानि ॥ तानिबं
लपटनवस्यांगितिदनरेवोद्धवोपनुटगाले न
कुस्मादृष्म्योक्तियमाणरेवीपुनानिष्मयाणि
कुम्पदेखमीचेवक्रूम्पटेवनटेशोन्याति
वाकेक्रुम्माद्दृष्म्यः दृष्टविदृंप्यायुधारूपामि
धानान् ॥ कुम्पटलवस्मोपृतनुटेवीयुवा
लो ॥ कुकथया ॥ कुम्पातांकुमपटनुपृतनेथि
न्नोदृभधिका ॥ नवस्मोवोपयदेवोपोनवाय
तिनि ॥ मयपूनपिलेनिपूननकियापास्ममा
नकनुकपाः पूर्वकालेकं निस्यपायपास्य
नुवमोमायपोहिनिवोपनकियाकालनव
मोकालनुपेयुस्मांविपानान ॥ द्धायनयपस्य
मामयणुंदेवादृष्मांपूलक्कविषयंपवर्ण
न्ना ॥ नलवविनुय ॥ विज्ञानृष्मोहदेयोविदेवी
पूरनविपावनु ॥ देवीमाहास्म्यपाया ॥ स
पृष्मोचवरदेवणनवस्मांचेकपेनसप्ति
ग्रम्बुद्धास्यानिनासृस्मोम्वविप्पापगाजलप
न ॥ नोवयावस्यवपूनापूर्वकलाकुसमाष्ट
स्मामविदेवीपनादेवीमाहात्म्यलोचपा
दम्बुयपालः ॥ श्वनस्वाविकदृगाकयानिकु
स्माहमीविधयापवनलेसपेचेन ॥ भोस
वीनथाधुपनायपणोपनन्याभोनरान
दिनितोपपुनानिनपालिकक्नानिवाक
तेरादृरणोपानिस्वनिविकटाहिनके ॥ न
नभूपनापयणोपभोजपाजोपास्वाकेभो
विजृवपनिवनुनिलानिनचलिवचनानो
वेशिद्यायावनभिनिचनत्नेषावचनानी
पुत्रोपयोनलपवसहितं ॥ पहिंनानिमु
निवचनानिलिखने ॥ नामानिवेनमु
निषणोनेनमोदृहः ॥ १ पंचयुक्तपोलो ॥ यु
क्तानि ७ स्मूर्मवचनानुलिखने ॥ कि
वमनवाष्पनिवचनानिस्तुलादिनामाष्टे

157

समणे विहराविपिवणाणि॥ तएणंसे॥ मखलिपु-
त्ताणि नेमासिखङकल्पाणकतीरणी॥ त
म्मणतिपुताकम्माननिलवत्रिपिण्वन्:॥
इति सूल॥ तएणंसमणेविहराइमोसुवीर
नेपहिलेकियमाणाणिवुपनिसकलानव
मोवनहिसवणे॥ किंवमूलेनहाविज्ञापम
इति मूलयोगोवोयिइविधारपु॥ तएणंस
विगताकायांनि विइआविस्सरमोग्ना
विकुलेनपुताचकायपतिमलयागावोपि
इ॥ विपरवीविरसूपानिणेपिथाहोसूने
पेनी॥ पण॥ विस्तृहणनेनलेणंसिनाहू:।
लवणभवे॥ लवणभवेहिस्सुरावण्णाकानेव:
किंवा॥ विस्सरकापिकनेणासुपनेनवमो
गुनेनिनवमोएनाविरः एसमाणेएनविं
पि॥ रमणापि॥ समणेपालसविहावंर्क
गेयासूलइमोनिसमणेविहराणलिगपु:
तिमलणगणलिपः एसमाणेएनावेपि॥ किं
वसमणेविहि॥ कुसपूलसिंहाल्लाहनवपः
मूलपागयागसएपालियः सेणुणेसमासिहा
एमुपहिपयणे॥ तएणंवणकेमासीकेह
ठितेन॥ भूनभव्यसमसुराणं भूनभव्यापा
पाहिपयने॥ भूनमव्वभुभवेसाधेनयाः
समणसागमरासिधाने भूनभव्यासिआणे
गुणहिपानेइत्थयः॥ तएणं॥ पवयणप्पसा
तत्थापंइत्यवाभूलसाविपराणवनायिपु
विधानान॥ समणेगोविहराविहरसयापाव
किंइविधापकनमेवस्सापं॥ तएणंसमणेविहरा
विधानानपणेवणने॥ महावीरोभगवं
नोभएयामंपियसदिना॥ इयाणिस्सापपरा
गेपयनेभणहारसूयोणोदि॥ एयंभणाणिसा
नससमोवबनः॥ किंवविहिकवणचवनः
नयएगोहसमाहियाविसिसभवाइहवारा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विविहेनेसेनारेयाहिवामासूकलकाये.
विकुरे विविहेकवणासिकायेमघ्वेः॥ न.
रोनकूमणायनिवाघघवाणान॥ पया॥
विहिमनणामहाहृष्णामहास्ननाकेतोने
मुः॥ नमयहजेफलेनसंमुन्नेनाहमवमा
तिनेति॥ हनाहुयहियानेचघ्णणयसि
हृयणा॥ भविष्णाने॥ नलहमणाभहका
लोरहणमनविनायिनो॥ पाउभूनामुः
चायायागिनीकोहिभमहू॥ पुनमये फ
लनीमुसनानिमायिसहनिमानवेदिति॥
मुहलीनिछलणाहिवायनाघनेयिने॥ ते
णायाशनिनाहबोवेमहीणपनोसिनोः
नमाणमलेषघ्वलमुहमाणनिशिमलये.
तिलि॥ घेचभोजवाणीये॥ नसिकानेनिछपंसि
विघाहनानवममसेषाल्पापहनाति॥ १८
ममसेषालनिघपयरमअमोविडायणसुवि
णायोवेवेघिहनमभवान॥ नकेवलेहव
विघहनायावहरावंपविहिहनानकाये
मधेः॥ हचेवसमवाहिप्रायेविहिनंबेव॥
सनेयपयास्मानिसिण वे विघानिवाकयानि
नानेघकोवघपवेवमपानलीशानिनाकिं
विलवहपवानयानानेयाहेभूपमावायएा
हिभिरहमीसामान्यतिलीयेयुवलीवना
ति॥ नमहाहमीतिलीयवाकेयनोतिचता.
शकेनोयम॥ पता॥ आंशायकृत्स्नकपसेत
याहमोमूलसंघुनोति॥ कुमाणनोसावि.
नरोश्रुकपसेहमोनयानि॥ नपा॥ मूलना
तिरिह सेवक्रासहानामानानीउये॥ वे.
शमायेणमममा ब्रपिमायाहहायिने.

159

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar

ति॥ इत्यादिवाक्यानि नवैवलि स्थानानि
नानि सामान्यनिर्णय प्रकरणे मिश्रप्रकु
ते निकल्पागमोक्ते निर्मलयुक्तेत्याहेति
शेषलिंगोत्सर्गस्य मापवश्यानिपातलना
न॥ नपा॥ ग्रहणेन मरीचिकादिश्च मन्वाद्यं
दिश्च विशेषनिर्णयः नकर्म॥ निर्णयानि
तोपकर्तृणामित्येपीते॥ पत्रसामान्यनि
र्णयस्तत्रैव विशेषनिर्णयः॥ श्रीपोत्सव
महाकृत्यादि स्वसननयपंचमे नः॥ यवन
मामान्यन विशेषनिर्णयस्तिदिः॥ नवरूपामा कृत्यं
देवविशेषनिर्णयः सूर्यादिन॥ सनपवन
स्पंशकः कासादिग्रहणं नाम निकनिवृद्ध
कार्येः क्रुतरनिमन्त्रणं॥ एव चूर्णनिवेनः
नानेन वरांकनानि नेष्टास्वानि मूलवाचानः
विहाइनिर्णयप्रका समाप्तौ कल्पादपीतनी
यानीपलापनि पंचेचन॥ यथास्त्रैव कार्य
हि पापात्सिकाने॥ यत्कर्म विसर्जने पानि गुरु
प्रसिद्धेनस्वामिनेपहेप्रागेवन नवरात्रिके
शावशोनो मनुष्यमीकिं यो कार्यः कर्त्ता
श्रेषविनिर्णयेषु॥ सूतनकवनेमाले चन क्रोः
त्यत्रैवस्वभवेन॥ देवोपूज्ना यकनेसात्पश्च
यज्ञः विधानेनः॥ रतिनवनपुराषोच नेमा
नेमनन केषरोपकं त्रैभवेदिस्त्रयर्थः॥ नथाच
नूतनके यूतने पूर्णके तानेचेव विशेषनः॥ देवी
प्रति दिपपूर्णकं नैवान्न त्रशेषनविधनेशानि॥ अ
नुपाहृदे वोपकनादि केसनकाहि पानेसनि
नयमेव यज्ञादि कुर्योहितिविधानामा॥ अ
थोयामेत्रनामिनहोमादिवृकार्यपनक्ष्मिति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ग्रथ नवरात्रि देव्याः पूजाविधानं यथा ॥ आ
श्विनशुक्लप्रतिपदि कृतस्नानपूर्वकं भक्त्या दि
निपसंकल्पानवमी यावत्कलशमालाल तो म
ण्डपे वस्त्रमानलतत्त्णे देवीं संस्थाप्य वस्त्रमान
विधिना देव्याः सम्यक्पूजां कुर्यात् ॥ नवमंडपल
नी ॥ देव्या गृहे प्रकृते वा चतरस्रं सुशोभनं
रत्नस्तम्भकलिकाद्येश्च चित्रितं कुसुमैरितं ॥ गो
मयैर्लेपितं शायशालिमश हसमन्वितं ॥ तन्म
ध्ये वेदिका कार्या चतरस्रा समा शुभा ॥ नवा
सिकामनेत्रसौम्यैकमपल्लाजितं संयुतं ॥ नवपू
र्णतिष्ठाप्य सर्वसस्त्राम संयुतां ॥ सर्वरत्नमयी
शोद्धर्यो वनोहार संयुतानितां ॥ मुक्तचैतन्नभीक ।
विरेहैप्रभिष्ठविराजितां ॥ तस्मराटकवृणां ।
श्रीत्रिवन्याप्रामिषेवितां ॥ पीताम्बरपरीधा
नां नीलकौषायसंयुतां ॥ ग्रैवीयकमकीयस
नपुमामग्माल्विता ॥ नानारत्नविचित्रागक्तके
हैनविराजितां ॥ श्रेणीकक्रमस्माकोणीकंपरे ।
नस्तप्रोभितां ॥ नितम्बविम्बसंम्बद्ध किंकिणी
कानना हितां ॥ मूलचक्रकरेशक्तिवज्रचा
पामिपधारिणीं ॥ हेटाह्ममालाकररकूपानं ।
पात्रालमलंकरां ॥ नरश्रेष्ठिनपिरसमहिष
कोपरामृतां ॥ निस्त्तानोधतकुंकुवनालाय
मौसियधावृतां ॥ देवीकरधृतग्रीवशूलेनार ।
सितादितें ॥ देत्याकरवालरक्ताश्यलेलव्कापिल
सूधिंजं ॥ नागपाशेनविबिसंहर्षेतेलापि ।
विद्रुतं ॥ वमद्रुधिरवक्रेणाभन्वतेचसंराकं ।
था ॥ इदनां गलितदेनेदेव्यापिंहनपाभितां
संवृत्तौमाहेचेत्रणामेश्यमानांसंस्थितां ॥ द
जयेत्सायंतोदेवीनेनानियममास्थितः इति ।
अत्र नियमश्चदेवपुराणोक्तः ॥ कन्यासंस्थ 161

रंभोपलं ते शुक्ला माघस्य नादिको ॥ श्रयाचिता
यीनकौशीनैका श्रीवा शुक्वाम्पतः ॥ नैदिका
प्रतिपत ॥ मार्कंडेयपुराणे ॥ निराहारो यता
त्मा नीलनत्मनस्कोमम मोहनाविस्पुलकान् ॥
पूर्णको मन्या निराहारो वा मात ॥ विष्णेतर।
वा इत्यान्स्वेषोक्तो ॥ भूमिषु गधीत धामत्येः कु
मारीः पूजयेत्सदा ॥ वस्त्रालंकारदानाद्यैः स
तोषयाः प्रतिवासरं ॥ वलिवस्त्रप्रदुष्याद्दे
हनेमासमघाकेवल ॥ त्रिकालपूज्ये चैव जे
यतो ह्युदरायामहं विजयोतद्रपरिहिव्यन
मेवस्तो रे ॥ समप्रालिकादि पालविधिं दृगो।
सवेष्मेस्को यथा ॥ सप्तनान्तः स्वपूज्या लितव
लेपरिधाय शुद्धेन स्वामवदनंकमेः समोमा
मवलिख्यति पूर्वकाला ॥ पूर्वाभिमुखो वा
समप विषयमेऽवपुरूपाणि वाचमाभिमत
कामनाप्राप्त्यर्थं समप्रालिकादिपावैकेप
ज्ञेदिति संकल्प्य ॥ एकाग्रमनाः सभामानादि
पौरस्वन्त्रिपोनवलोकदेठीमनसा सम
र्चयेस्थाने स्वर्गोऽस्वावरतल्पवः ॥ परमात्रेविमक्तो।
विवेकज्ञानवान्यदेहिति ॥ नवरात्रशुक्लेप्र
तिपदारभ्य नवमीपर्यंतं प्रतिदिनमेकोत
रवृद्ध्या द्विगुणवृद्ध्या वा प्रतिदिनं नवा पिवा
सुवासिनवान्मारेण संपूज्य कन्या भोजयेत ॥
स्कंदपुराणे ॥ एकैकां पूजयेत्कन्यामेकवृ
द्ध्या तथैव च ॥ द्विगुणं त्रिगुणं वापि प्रत्यहं
नवकं च वा ॥ नवभिर्लभते भूमिमैश्वर्यं द्वि
गुणेन च ॥ एकवृद्ध्या लभेत्क्षेममेकैकेन तु श्रि।
यं लभेत ॥ एकवर्षा न या कन्या पूजार्थे ता।
विवर्जयेत ॥ गंधपुष्पफलादीनां प्रीतिस्त।
स्या न विद्यते ॥ द्विवर्षकन्या मारभ्य दशवा।

[illegible]वर्षादिक्रमेण ॥ [illegible] स्ववर्षा पूजयेद्यथा
विध्युक्तमार्गेण ॥ द्विवार्षिका कुमारी स्यात्त्रि
वर्षा च त्रिमूर्तिनी ॥ चतुर्वर्षा तु कल्याणी प
ञ्चवर्षा तु रोहिणी ॥ षड्वर्षा तु भवेत्काली
सप्तवर्षा तु चण्डिका ॥ अष्टवर्षा शाम्भवी तु
दुर्गा च नववार्षिकी ॥ दशवर्षा सुभद्रेति न
मभिः परिकीर्तिता ॥ अत ऊर्द्ध्वं न या कन्या
सर्वकार्येषु निंदिता ॥ दुःखदारिद्र्यनाशा
य शत्रूणां नाशनाय च ॥ आयुष्यबलवृद्ध्य
र्थं कुमारीं पूजयेन्नरः ॥ सौभाग्यधनधान्या
दि [illegible] फलाप्तये ॥ सुभद्रां पूजयेन्न
रो [illegible] इति ॥ पूजामंत्रस्तुत
ये व्याप्तः ॥ प्रातःकाले विशेषेण कृत्वा भ
गो विशेषतः ॥ आवाहयेत्ततः कन्यां मंत्र
णानेन सुंदरी ॥ मंत्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातृणां
रूपधारिणीं ॥ नवदुर्गात्मिकां साक्षात्कन्यां
मावाहयाम्यहमित्यावाहनमंत्रः ॥ ततः
सम्पूजयेद्देवीं मानमंत्रैरिभिः पृथक्पृथक् ॥ ॐ
जगत्पूज्ये जगद्वंद्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणी ।
पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोस्तु ते
इति कुमारीपूजा ॥ ॐ त्रिपुरां त्रिगुणाधारां त्रि
वर्गज्ञानरूपिणीं ॥ त्रैलोक्यवंदितां देवीं त्रि
मूर्तिं पूजयाम्यहं ॥ इति त्रिमूर्तिनीपूजा ॥ ॐ
कालिकां तु कलातीतां कल्याणहृदयां शि
वां ॥ कल्याणजननीं नित्यं कल्याणीं पूज
याम्यहं ॥ इति कल्याणीपूजा ॥ ॐ अणिमा
दिगुणाधारामकाराद्यक्षरात्मिकां ॥ अन
न्तशक्तिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहं ॥ इ
ति रोहिणीपूजा ॥ ॐ कामचारीं शुभां कां
तां कालचक्रस्वरूपिणीं ॥ कामदां करुणो
दारां कालीं सम्पूजयाम्यहं ॥ इति कालीपू

163

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

णा॥ उपवासाशीम[illegible] श्रवणे दु
नी॥ पूजयामि सदा देवी चंडिकां चंडविक्रमा
मिति चंडिका पूजा॥ ॐ महानादेरकरी पुताल
मर्दे देवन मस्कृता॥ सर्वभूतात्मिका कालरूपी
श्रावर्दी पूजयाम्यहमिति श्रावर्दी पूजा॥
ॐ दुर्गे मे दुर्गसंसारे घोरा भवदुःखविनाशि।
नी॥ पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गतिनाशि
नीमिति दुर्गा पूजा॥ ॐ महारौद्र मोहव्याप्तं का
त्यना सा भाग्यदायिनी॥ रुद्ररूपिणी देवी
समन्त्रं पूजयाम्यहमिति रुद्रा पूजा॥ प्र
वमध्यं चैव कुर्यात्सा मारीनाथ नलेल॥ वि
शुके च ब्रह्मवैवर्त पुष्पानतनतोरभिः ना
नाविधैर्भक्ष्यभोज्यैर्भोजयन्त्यायसीदिभिः
मिति पूजा पूर्वं कुमारी मद्य पंचतत्त्वैर्विन
यितं॥ ह्रीं नायिका गीह्याणी विलासफल
समन्विता॥ प्रयोगिनी सर्वपूजां गीत्वा पात्रस
वगिता॥ स्वात्मवर्षामसुरस्ताकन्यासमं।
कश्च जयेत॥ ब्रह्माणी सर्वकार्येषु जयार्थे
रूपवं पूजा॥ ना भार्यं वै पुष्पवं पार्श्वे न्या।
र्थे पूजयेत् पूजा॥ राकिणी चात्य नो याथिवना
पूजयेन्नरः शक्ति॥ नवरात्रे देवी पूजाकरणाम्
मध्ये हुस्वामे वज्रयोगं॥ नन्दकं तव संपूर्णा।
णि॥ नत्राह संसारसकालोहत्यं यत्नं विनाशि
नी॥ प्रादुर्भूता महाचोरा योगिनी कोटिभिः
सह॥ अन्यथं सज्जनी यासां तासिन्नेकनिमा
नैवः॥ उपोषितं वै तृधूपदीपमाल्यान्नलेप
नैः॥ आमिषैर्विविधैः शाकैस्तथाङ्गसगुणात्प
नौ॥ विल्वपत्रैः श्रीफलैस्तु चेरनेन होतेन
च॥ नवम्यां तु कृतस्नानैः पूर्वे चन्दनलेप्ता।
म्रणा इति॥ अथ यात्रा ब्रह्मगिरिं ततोपि ष्वनस्तु
लं प्रति पदमारभ्य महानवमीयावदष्ट

164

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कान्यं लोहाभिसारकं कर्म कुर्यात ॥ यथा
केदेवीग्रामे ॥ अश्वयुक् शुक्लप्रतिपत्सा ।
नियोगेशुभेदिने ॥ सर्वेशुभं: यथानामप्रथ
मेष्ट्रियमारेयत ॥ नस्मान्मास्मेनेरत्नवशुक्ला
मोत्ररयामसदा ॥ प्रजनीयाग्नेयगानवमी
याव्हरवहि ॥ कर्मस्त्रियनकार्येतदाते ।
कार्तिनेदिने ॥ धान्यंभल्लातकंशुष्कवचा ।
सिद्धार्थकास्तथा ॥ पंचवर्णेनसूत्रेणकंट
नेष्टितंवेष्टयेत ॥ वायवोवोरुणः सौरेः श्रा
श्रीमेवे: सर्वभवे: ॥ वेस्वदेवेलयाग्नेयहे
मःकायोदिनेदिने ॥ नरेगारवनीयाख्या
मेष: पाल्हपाणिभि: ॥ नेवलाग्राकंविनेत्र
नेववाया: कथंचनेति ॥ भविष्यात्तेरविशुभ
उक्त: ॥ कन्यागतेसवितरिशुक्लपक्षाष्टमी
नवमी ॥ मूलनक्षत्रमेवकालासामरानवमी ।
स्मृता ॥ नस्याससदापूजनीयाचामुण्डामुंड
नाशिनी ॥ नस्मोयप्रपुष्पज्यतेप्राणिनोम
हिषादय: ॥ सर्वेतेस्वर्गतियान्तिघ्नातोपा
पंनविद्यते ॥ यावन्त्रचालयंमात्रेपशुस्ता
वत्तूरस्यते ॥ नतथावलिदानेनपुष्पाद्यो
पलेपने: ॥ यथासन्तुष्यतेमेधौमाहिषेवि
ध्यवासिनी ॥ वलिदानेमेषमाससमोहिता
देवनाक्रमाणा ॥ यथवविन्ध्यवासिन्यान ।
वरात्रोयवासिन: ॥ एकभक्तेननक्तेनेनवश
स्याथाचितेनवा ॥ पूजनीयाजनैर्देवीस्था
नेस्थानेपुरेपुरे ॥ स्नानातेः प्रमदाह्येत्रा
शौवः होत्रुयेदेपः ॥ वेयपेः शूदेभकिव्र ।
कैलेसेरन्नस्त्रुमानवे: ॥ स्त्रीभिश्चश्रावणा
हेलनाहधानेमिरवृत्त ॥ यथाभिलाषैर
र्यितप्रतिपत्प्रभृतिक्रमात ॥ लोहाभिसा ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रकेकमकारयेद्यावत्स्तम्भो लोकाभिसा
रकेसिद्धान्तेवत्तेवोके प्रागुरुकम्बुणाद्दे।
पुण्यतात्कामिरलेहृत्वे मेरुपकारयेहि।
ग्रनवमतकरेवर घोरप्राहस्त्वप्रमाणोमि
त्यर्थः श्राग्रेयामेरुपेतानि साधन्यत्वाभि
वासयेत् ततस्तथाग्रमणः स्नातः शुक्ला
म्बरधरः शुचिः ओंकारसर्वस्वाहान्तेन।
लिंगेन्द्रयातहूते लोहानामामवत्सवे
सानवः समस्तावलः सदेवः सम्यग्जातो।
वृद्धया प्राकलीकृतः नरेगासमभवस्तवे
लोकस्य हृष्यतेहितो पात्रात्स्वयमेवस्तत्
वर्णाय समस्तेनहितेः क्रतस्थैवकृष्णाला
राजानसुपहारयेत् लोकाभिसाधककामे
तेनैनहर्षितैः स्नते धृतपूर्णायतनलो
तेराज्ञाश्च समलेहृते भ्रामयेद्भगवोनि।
स्युनरिक्षोद्युस्तते क्रमानन्तयतिःसा
स्त्राणामंभ्रुक्त्यौयनरेवताः तस्याभिसाव
णाद्रात्नोविद्ययःसमुदाहृतः पुत्तामेत्रा
मवद्यामिष्ठुरापणोकाननहृतव येःश्रुति।
नाः प्रयक्षीतिकीर्तिमायेयप्राव लोकोति
तत्राद्देवत्रमेत्रः ययामन्नुयचत्वारयति।
प्रिवायेमोवतस्यरा तद्याचत्वारयराजा।
तेविजयारोग्यसिद्धये इति प्रथमामेत्र।
मेत्रः प्राप्याककरसकापा.दीर्घरिक्षरया
दूर प्रोत्सांरागाप्नुवीरतेचामचामरदे
मं प्रयासमेत्रः गधर्वकालजातस्त्वमा।
भूयःकालहृष्वकः वृक्षाणः मन्यवाक्ये
नसोमस्यकर्णस्य च तेजसा चैवसूर्ये।
स्यपुत्रीनातपसातथा प्रभावाद्वरुणस्य
सर्वासवेनरोगाम मेरुस्याद्विचयेन य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

... ॥ लविगात्रपुत्रो मित्रकोमल
भेचमौंगसर ॥ स्वरात्रैमेष्यमानात्मौवो
तारस्वतार्थिभिः ॥ ज्ञानरुश्चैः श्रवाश्चैवत
स्मात्वातोमिनस्मर ॥ यासातिश्रस्तस्तागस्ते
न्मातरहापित्रस्तातथा ॥ भ्रस्थार्थान्नतथा ।
ह्रीचहृदिव्यस्तुपरंगवः ॥ स्वयंचेवरमसौ
वात्रुद्धेमपपूर्णतिरुक्कृतो ॥ व्रजास्तुतागति
ह्रिपूतचपापंभवेत्तव ॥ विक्वानियोस्तथा
गुरुदेधनिनंगम ॥ विश्वविजितस्समरस
रुध्यात्वाजयोभवेति ॥ प्रथमजमेवः ॥ प्रा ।
क्रकेनोमहावीर्यंपापमवंगाचेयामस्ते ।
पाश्रिगाजमेलस्तनश्वानात्रायणाधज ॥ गरु
स्मान्मामन्तवातिस्त्वयिमन्त्रिहितानायथा ॥ सा
रवन्त्यागुधात्वाअरलंतमद्रिसन्दरः ॥ प्रथमा ॥
नाकामेवः ॥ हिरण्यकशिपोपुत्रेपुत्रेदेवास
रेतथा ॥ कालनेमिवधेयद्वयदनिधुरस्थान
नेभाविनोमितोमितथैवायथापामयास्माश्चसम
ये ॥ प्रतनारवतीनाम्नाकालरात्रिस्तथासर
ना ॥ सरस्वत्रिपुरस्वर्णान्यताकेनमयाचि
ता ॥ प्रथमस्तिमेवः ॥ ऊपुरेरावणेपमः पुश
हरेतोयवामनः ॥ सप्रतीकाजनेनानीलप
नेष्टोतवयोनयः ॥ नेत्राशुत्राश्चपोत्राश्चवना
न्यष्टौसमाश्रितः ॥ मेदोमज्जागजस्तैवराजा
मेकोगणपवंच ॥ वनेवनेप्रस्तुताः कलस्थानि
समस्तान्यपि ॥ पानेगाववसवोफरागादित्या
समस्तगणाः ॥ मतोरंगलनागेरस्वामिवत्यी
पालिता ॥ प्रवासुहिजययदेगमनेसत्तिमा
भजे ॥ प्रथमाविरमेवः ॥ श्रीमित्रिपामनः विद्व
लोहलाधागेदरामरः ॥ श्रीगर्भोविजयश्चैवय
मेघागस्तथैवच ॥ रत्नष्टौतवनामानिसर्वयं

167

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मुक्ताविधेयसा ॥ नमस्तेकान्तिकान्तंगुरु
हेवोमहेश्वरः ॥ विश्वायपूर्णीवेनेदातादे।
वेजनास्ते ॥ पतामहोदेवः समापालयाम
वेधा ॥ अथधनुःप्रारम्भत्रः ॥ सर्वोपधमहा
मात्रमवेदेवाविस्तृतन ॥ चापमासमरेवत
साकंपुरवैरःमहेति ॥ अथखड्गरिकामन्त्रः
सर्वोपुयानाप्रयमानिमिनासिष्वाकिः
ना ॥ मुलायुधाविनिकृष्यहताममेपिपुर
हृद ॥ वोदकायेप्रदत्तोसि मवदुष्टविनाशि
नी ॥ नयावनानिनाचासिदेवेभ्यः प्रतिपा।
दिता ॥ सर्वेसत्वायश्रूताक्षिसर्वोपुयनिवारि
तो ॥ कुरिकेत्वंमोनिनाशांतिपक्षनमो
स्तुते ॥ अथकनकदंडमत्रः ॥ प्रोक्तासत्वाय
तुदानासाधुनायत्वाणायचा ॥ ब्रह्मणानि।
मितस्त्वांसिद्धार्थहारप्रसिद्धये ॥ यथादेत्क
विद्देहिजयतोभवभूपते ॥ नाडयस्त्वेसिमृत्व
वोदेमदंडनमोस्तुते ॥ अथदंडमत्रः ॥ दं
डमेवमपत्नीनाशोरोद्धदयमदेवनः ॥ यथा।
नीशनगोवेणध्वगृहीतेवोदिनः ॥ भवरूप
तिसेन्यानात्यथाविजयवर्द्धनः ॥ नथास्तत्
वनादेनस्थेसाकेशुदरावदः अथपाशमं
त्रः ॥ ॥ शुणसत्वागीतविशुणानीमवालीनाव
मगले ॥ विश्वनाविधृतोनित्यमनःप्रातेत्व
तेमव ॥ अथसिंहासनमत्रः ॥ विजयोजयदो
वेतानिशुद्धानीभयंकरः ॥ दुःखहायमेदः
पुनः सर्वारिष्टविनाशिनः ॥ पतेपुष्पेसवि।
धाप्यसात्वसिंहासनमहावलः ॥ नतासिंहास
नेतिवमत्रवरचेष्टायनो ॥ नमस्तेसर्वतोभ
द्रमद्रोभवभूपते ॥ त्रैलोक्यजयसर्वसिंहा
हासनेनमोस्तुतेइति ॥ अथयवकणीचिका

निरुद्याभिश्च स्थानेभिर्भिल्लीभिः ॥ लोकान्मिस्ता
रकैकमेकनैवमेव पूर्वकं ॥ यमेकेनानेनया
प्रयाप्य पूर्वोक्तेनानमार्चयेत् ॥ ॐकमवाप्य
केवेदनवनैः सौमैः शैलयहाच ॥ चौचित
मात्रा दैवी कृत्स्नमेगम्यवैयदङ्गमिः ॥ कृष्टे
सप्तमक्ष्मसमैः सप्तपदीपैः सनैवेद्यैः ॥ मा
सैर्वल्युपहारैर्मंगलगाहैः सम्भ्रसितैः ॥
विविक्त्र्यलत्वैर्यानैः स्पर्शनैष्यानिप्रविधा
रिजललोकैः ॥ नैद्यैः सवस्त्रारत्नैर्निवे
यत्तमवैमेवमभृवत्य ॥ पूजामंत्रकं ॥ जय
नौममालाकालीभद्रकालीकपालिनी
दुर्गाक्षमाशिवाधात्रीस्वधास्वाहानमोस्तु
ते ॥ बिल्वपत्रिकामंत्रः ॥ अमृतोद्भवश्रीवृ
क्षमहादेवप्रियसदा ॥ बिल्वपत्रं प्रयच्छामि
पवित्रं ते सुरेश्वरि ॥ दुर्गां संपूजयेद्यावत्
दिने दोषणपुण्यकैः ॥ साचभोग्यानसंकल्प
नस्यात्फलतोयतः ॥ ततः खड्गं नमस्कृत्य
शत्रूणां वधसिद्धये ॥ खड्गेनविजयेराज्ञः
भिर्वेचान्तनोखड्ग ॥ ततः पुनः प्रणम्याथ
खड्गरत्निरुदयोपीव ॥ सर्वकर्मेवकोखड्ग
प्रत्याज्ञाने निपिणा ॥ नैदनेनैकपीनेतेः का
र्यत्नमहास्तव ॥ पर्वतस्थैनिशानीवात्रम
नेवा हृतास्तये ॥ अतस्त्वन्नाहिंसान्मसाता
ज्ञानव्यालसम्यक्गान ॥ पानमर्यप्रानेवा
पितद्र्पं वायंदेवता ॥ स्नात्वा सर्वदृष्टैः ॐमे
पूजयेत्पूरमेस्वरीम् ॥ कापालिके प्रलहे
यजलहिंदोपहत्के ॥ कवितुपापि
नोदीनाविहतोन्यनावकृधृत ॥ भनेप्रम
वलिरण्डं मत्रेणानेनमामिम ॥ सरके मन
लेमान्नेगयपुरुपालनैव्रत ॥ श्रीकौवारामस्

169

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लेनहि दिवहि दृवकिरह्लि ॥ मन्त्रमाह ॥ वलिं
गृहाणेति मे देवा आदित्या वसवस्तथा ॥ मरु
तश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगा ग्रहाः ॥ अ
सुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः ॥ डा
किन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः
दिक्पाला लोकपालाश्च ये वा विघ्नविनायि
काः ॥ जगतां शान्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महु
र्षयः ॥ मा विघ्नं मा च मे पापं मा सन्तु परिप
न्थिनः ॥ सतृप्तानपिताकृत्वाकृतादुर्गाम
होत्सवे ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तो याति भार्गव
तीपुरीं ॥ ह्येतत्सर्वमाख्यातं दुर्गोत्सवं म
होत्सवं ॥ पठतां शृण्वतां वापि सर्वोपशमकारि
वारणं ॥ इति महालक्ष्मीनिर्णयः ॥ अथ दुर्गो
त्सवप्रसंगाद्दशम्यामपराजितापूजावि ।
धानं लिख्यते ॥ यथा ॥ दशम्यां पूजयेत्पश्चा
द्देवीमपराजितां ॥ कलप्रीतो ग्रामसृत्या
जीवती पल्लवान्विता ॥ दशवेणीकृदशराज्ञः
कर्त्तव्या सा प्रयत्नतः ॥ दशम्यां च बलिं राज्ञः
पूजयित्वापराजितां ॥ दद्याद्दिक्षु मनोयोगा
त्रां कुर्यात्ततो नृपः ॥ नीराजनं प्रकुर्या ।
द्वाजतो नीराजयेद्बलिमिति दुर्गोत्सवे ॥ अ
थ कार्तिकशुक्लाष्टम्यां गोपाष्टमीनवमो
पूजा कार्या ॥ तदुक्तं कूर्मपुराणे ॥ शुक्लाष्ट
मी कार्तिके सा स्मृता गोपाष्टमी बुधैः ॥ तत्र
170 पूजां गवां कुर्याद्गोग्रासं गोप्रदक्षिणं ॥ गवा
नुगमनं कार्यं सर्वान्कामानभीप्सता ॥ इति ॥ प्र
बोधशुक्लाष्टमी सा बुधवारेण युक्ता मह
महेस्मृतेन ॥ तत्र महेश्वरपूजादिकं कार्यं
तदुक्तं भविष्योत्तरे ॥ बुधाष्टमी यदा देवि शु
क्लाष्टम्यां बुधो भवेत् ॥ नदानमामहाग्राह्या

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

महामङ्गलकीर्तिना। तस्यां स्नानं जपो हो
मस्तर्पणंब्रह्मभोजनं सर्वानन्त्यंमहादेवि।
कृष्णोद्देशविधिवद्धैवेति इदमेवंभरणीन
क्षत्रयोगेनजयन्तीत्युच्यते यदुक्तं भविष्यो
त्तरे शुभेमासियदादेविचाष्टम्यानगतेश्व
मे नक्षत्रेजायतेपुण्यंयल्लोकेगोदउच्यते
तदाजन्मासमाहात्म्यपापाजयन्तीयष्टमीमता
तस्यांस्नानंतथादानंजपोहोमश्चतर्पणं।
सर्वेकोटिगुणादेविकृतंभवतिकृत्स्नशः।
मेदंभरणीतिवराहोमहिरेणोक्तं यथा वो।
ज्ञाशिवुधौभरणीयित्राणीति अथमाघकृ
ष्णाष्टमी साचभीष्माष्टमीत्युच्यते तत्रभी
ष्मतर्पणंश्राद्धंचकार्यं यथा माघेमासि
सिताष्टम्यांसलिलंभीष्मवर्मणे श्राद्धंचये
नरास्तस्त्वेसपुःसंततिभागिनइति. तर्पण
विधिमंत्रमाह वैयाघ्रपदगोत्रायसांकृति
प्रवरायच अपुत्रायददाम्येतत्सलिलंभी
ष्मवर्मणे अथफाल्गुणसिताष्टम्यांलक्ष्मी
सीताचपूज्यायदेवागारादिकेवास्मयोर
नानदेवभोज्यंनान्यतः तदुक्तंब्रह्मपुराणे।
फल्गुनस्यसिताष्टम्यांस्नात्वाद्यसलिलेकृते:।
लक्ष्मीःसीताचसंपूज्यागंधमाल्यादिभिःस
देति ततःअरुणमस्मदैपादेयाःसहस्रशः
तत्सिद्धंतथाभोज्यंभक्तितश्चैवबांधवैरिति
अथबुधाष्टमी तस्यांसंपूज्यायासिताष्टम्या
यदाबुधवारोभवति तदाकल्पोक्तावि।
धिनापूजाऽनमस्कृतंकार्यं तदुक्तंभविष्यो
त्तरे यदायदासिताष्टम्यांबुधवारोभवेत्त
दा तदातदाहिमेग्राह्याचैकभक्ताशनेन।
वैः बुधाष्टमीतिसम्पूर्णायथोक्तपालदा।

172

यतीति ॥ अथ यातिषडानामाह ॥ संध्या
कालेन षष्ठे ग्रहसंक्रमे वर्जनादेने ॥ यथाह।
मोनवानेव्याहुतिग्रामपुराकन्नमिति ॥ अथ
सिद्धाविरुद्धादिकालव्याने ॥ अथ सोमो सोम
नो सिद्धा ॥ तथा ॥ सोमवहीनलीयामासह
मो वज्रयोदप्योति सिद्धलघ्नं ॥ अथ रुद्यानेव
रुद्धानलीयाधष्टोत्रयोदपूर्ये क्रयाति यद्यः
अत्रमशमोप्रयोगीकार्य यथा ॥ जयाहम
शमवलोपयोगिकार्यापामिषुतिद्विर
सिनानिरति ॥ अत्र स्नानमासमवलोनिषद्
यथा ॥ नारीकेवारेन च संक्रेमोपनेवहनन।
बुतिपानशोरो ॥ नपद्मसंपोनचविहिब।
ह्योरसंपगारहोनचपर्वक्रमकरतिपद्मसंको।
हमा ॥ तथापलमहमोहिति ॥ तथाअह
ष्मादिषु नायाहधगातोक्तः कदाचिदपि
विहान ॥ पौर्णकपालाग्नौनानावषेमेति
लौनिक्रमपराः ॥ अथ मर्थः ॥ अहम्याय्यौर्ण
नारिकेलेना स्नान ॥ नष्टमांककपालनखे
फले ॥ रपुष्मामत्रनालीपाके ॥ एकादश्यां
नवाने ॥ शानसंधामि ॥ हारसुपाचसे ॥ विल
त्रयोदश्यां तिलवातीके ॥ नाशोदश्यां घः ॥
नेषामलमपुष्टि क्षौदिमहाएनत्वनमित्या।
थः ॥ तथा हस्यादिवानभोक्तव्यो ॥ नतुक्ते श
न्याहस्मादिवा भुक्तागत्रौभक्तावपर्वणि।
एकादश्यां द्विपातात्रौ भुक्तायोजाययाणवे
दिति ॥ अत्र चतुर्दश्याष्टमी चैव अमावस्या।
च पूर्णिमा ॥ पर्वाण्येतानि राजेन्द्र रविसंक्रा
न्तिरेव चेति ॥ अष्टमी च चतुर्दशी च अमा
वस्या पूर्णिमा ॥ रविसंक्रान्तिश्चेति पर्वाणीति
कालादर्शो कृत्वान ॥ भूनाहस्मा गोपपर्वने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]

न्वयाः पूर्वयुता परा ... ता तन्नाष्टमी
व्रतानि निकायं सूयते ॥ अथवा ॥ शुक्लाष्टमी
चतुर्दश्यौ चतुर्दश्यौ थ्रुवाकार्याः विसंक्रमेषु ति
थ्याः तेषु ॥ शुक्लाष्टमी कृष्णचतुर्दशी पूर्वे वद
वाभिधानात् ॥ कृष्णाष्टमी शुक्लचतुर्दशी पू
र्वविद्धा मानेना प्राप्ते ॥ निषेधस्त्वाह्मपर्धय
वेत्येतद्वशात् मृताष्टम्यो रविपुनर्वसूचन्द्र
दर्शनानामष्टम्यौ सह अष्टमी प्रतिपद्यता स्थि
वः शुक्लपक्षः ॥ अष्टम्यां चतुर्दश्यां मिथ्याकर्म
व ॥ अष्टमेदर्यामीष्ठरपूर्वेहे वत्सा स्थितेष्टम
कार्ये पूर्वस्यां ॥ परः परेषामित्युक्तमेव ॥ नवी
मिथुनकन्यासुरेवाष्टमीरथ्या ॥ मिथुना
वलयोरित्युक्तमेव ॥ अष्टम्यामेष्टान्याहिषा
योगिनी प्रतिवसति ॥ नवयात्रानकार्या त
योक्तमेव ॥ ॥ इति श्रीसर्वेश्वरेन मस्के देवि
चिते निर्णयामृते अष्टमीनिर्णयः ॥ ॥ अथ न
वमीनिर्णीयते ॥ ॥ नवमीतिथिरुपवासा
दिष्वष्टमीयुतैव ग्राह्या तदुक्तं स्कन्दपद्मयोरि
ति ॥ तथा ॥ अष्टम्या नवमीयुक्ता नवम्या चाष्ट
मीयुतेति ॥ तथा प्रतिपन्नवमी चैव कर्तव्यौ
सम्मुखी तिथिरिति ॥ तथा ब्रह्मवैवर्ते ॥ अष्ट
म्या नवमीविद्धा कर्तव्या फलकांक्षिभिः । न
ष्टमीयुक्ता विधानात् ॥ तथा च ॥ नक्तयोर्नव
मीनात्तवशु भूत्वा करा चन ॥ तथा ॥ नवमीद
शमी चैव नो पोष्या परसंयुतेति परविद्धा ।
निषेधात् ॥ नवम्यष्टमीयुक्ते वोपोष्येति ।
सिद्धान्तः सैव नवमी सामान्यनिर्णयः ॥ अथ
विशेषनिर्णयः ॥ चैत्रशुक्लनवमी सा उभयत्र
मोक्षोपवास परः चेदिवसे ग्राह्येयं ॥ तदुक्तं
भविष्योत्तरे ॥ चैत्रशुक्ले तु नवम्यां
तयोर्द्वयोः ॥ उपवासपरोऽत्र यान

175

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तिष्ठति ॥ सप्तशुक्लकन्यापूजितामाघो
नशुक्लपक्षे ॥ समर्चयेत्सुकन्याः
ण्मासान्विभः ॥ विमानवरमारूढो देवलोके
महीयते ॥ ज्येष्ठशुक्लनवम्यां च ब्रह्माणीं शु
मासमभ्यर्च्य ब्राह्मणान्कुमारीश्च यथाशक्ति
भोजयेत् ॥ नरकं भविष्योत्तरे ॥ उपवासप
रो भक्त्या नवम्यां पूजयेद्रमां ॥ ब्रह्माणीति
निवेनाम्ना सैव तत्र पापनाशिनी ॥ ज्येष्ठमासि
नवग्रहकन्यानकं स्वैवविधि ॥ आत्मनेय
गसीपतितत्र भुञ्जीत वाग्यतः ॥ कुमारीभोज
येद्वापि सशक्त्या ब्राह्मणीन्नरैः ॥ आषाढेन
वमीं हृदये स्म्यापि च गन्धस्नानं कृत्वा विनेय
गावणगन्नातां सैन्द्रीं नाम्नीं देवीं पूजयित्वा नके
कुर्यात् ॥ नरकं भविष्योत्तरे ॥ उपवासपरो
भक्त्या नवम्यां पत्रयोद्वयोः ॥ आषाढे मासि
पौजे इत्यः कुर्याच्च कन्याभोजनं ॥ पूजयेच्छुद्धया
दुर्गां मैन्द्रीं नाम्नीं स्वनामतः ॥ पुरा वणयाना
सुदृष्टेन तत्र पापनाशिनी ॥ श्रावणस्य च सप्त
ज्यः सर्वभूतहिते रता ॥ उपवासपरो विप्रेन।
वम्यां पक्षयोद्वयोः ॥ श्रावणे नवम्यां कुमा
री नाम्नीं दुर्गां संपूज्य सर्वान्कामानवाप्नोति
नरकं भविष्योत्तरे ॥ कौमारी मितिवेनाम्ना।
चेरिका पूजयेन्नरधीः ॥ कन्यां चैव मन्येद्धीमा।
नबालोंगवे पापनाशिनी ॥ करवीरसमुद्भवे
स्नगन्धैश्च गुरुचेहने ॥ धूपेन च तथा दीपेन।
मासे के स्थापिपूज्यते ॥ कुमारीं पूजयेदद्भ्यो
स्त्रियो विप्राश्च शान्तितः ॥ भुञ्जीत वाग्यतः
पश्चाद्विल्वपत्रकृताशनः ॥ एवं यः पूजये।
द्देवीं श्रद्धया परया स्थितः ॥ सर्वान्तपरम
स्थानं यत्र देवो गुरुः स्थितः ॥ अथ भाद्रपद
शुक्लाष्टमी ॥ नरदानाम्नीं दुर्गां पूजयित्वा वि
मलोकमवाप्नोति ॥ भविष्योत्तरेपि ॥ मासि

...वेन कः॥ ... विति ... कः॥

भाद्रपदे या स्यान्नवमी बकुलेति गा॥ सा तेन स
महापुण्या कीर्तिता पापनाशिनी॥ तस्यां यः
पूजयेद्गौरीं विधिवत्कुलनन्दन॥ सोश्वमेध।
फलं प्राप्य विष्णुलोके च गच्छति॥ अत्रैव कृ
ष्णपक्षनवम्यां देवीं भक्त्या प्रयत्नतः॥ नक्तेन दे
वीपुराणे॥ कन्यायां कृष्णपक्षे तु पूजयित्वा
ऽष्टमीदिवा॥ नवम्यां बोधयेद्देवीं गीतवादित्र
निस्वनैरिति॥ अथाश्विननवमी मन्वादि न
वमी युगादिः॥ यदुक्तं॥ नवम्यां जे युगादय इत्यु
क्तं कं माघ शुक्ले कृष्णे नवमीमिति॥ अथ
कार्तिक शुक्लनवमी॥ युगादिः॥ यदुक्तं नव
म्यां च युगादय इति॥ अथ मार्गशीर्ष शुक्लन
वमी नन्दिनी उच्यते॥ तस्यां यक्ति समत्रापोषिता
देवीं सम्पूज्य सोश्वमेधफलमवाप्नोति॥ न
न्दके भविष्योत्तरे॥ मासि मार्गशिरे वीर शु।
क्लपक्षे तु या भवेत्॥ सा नन्दिनी महापुण्या
नवमी परिकीर्तिता॥ यस्तस्यां पूजयेद्देवीं त्रि
रात्रोपोषितो नरः॥ सोश्वमेधमवाप्नोति वि
ष्णुलोके महीयते इति॥ अथ माघ शुक्ल नव
मी नन्दा प्रोक्ता तस्यां स्नानदानादिकृतमक्ष।
यं भवति॥ नन्दके भविष्योत्तरे॥ माघमासे तु
या शुक्ला महानन्दकरी स्मृता॥ तस्यां स्नानं त
था दानं जपो होमस्तथोषणं॥ सर्वं तदक्षयं प्रोक्त
यदस्यां क्रियते नरैरिति॥ महानन्दनवमेषु ति
थिषु नन्दे नमस्वती पूज्या॥ यदुक्तं सरस्वती
नवम्यां वेति॥ अथ सिद्धविरुद्धादि कलाभ्य
ते॥॥ नवमी शनिवारेण सोमवारेण चासिद्धा
यदुक्तं॥ शनौ चन्द्रे तु नवमीति॥ तथा॥ सोम।
ने नवमी पुष्य श्रवणा रोहिणी मृगः॥ पञ्च।
निसेवरान्तसि सिद्धि सानि सकर्म सु॥ पञ्चाङ्ग

175

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धर्वाराणां विकल्पः ॥ रत्नायां नवमीत्याप्तु
क्रमेव ॥ नवम्यां प्राप्तुं पूर्वं पधनाप्तुं च कर्मे ।
कार्यं ॥ चतुर्दशी पूर्णा चतुर्थ्यां नवमी चाष्टमी
हरे मिलेत् ॥ तत्राष्टमी लक्षणं नवमीं योगे ॥ त
ते ॥ सप्तम्यां निहृनवमी वेद्याहि ॥ तत्र हेन
काष्टमी विवर्जयेत् ॥ नहुकेव्या मेव ॥ पृति ।
पत्यं वहेतु नवम्यां हरिवासरे ॥ रत्ना नाक्षा
हसंयोगो रहस्याः समस्कंदलोपितं ॥ तत्राय
पूर्वतीवियोगिनी सा सर्वेकोत्सवे रिक्षिया
ज्ञानकार्यो ॥ शुक्लकृष्णे कार्ये नवमी शुक्ला
मी चाष्टमी भवति ॥ उक्तं ॥ परायपं हीनि
त्यादि ॥ नवम्यां तत्रीनभद्र येन तु उक्तमेव ।
इति श्रीनिर्णयामृते नवमीनिर्णयः ॥ १० ॥ अ
थ दशमीनिर्णयः ॥ दशमी नित्य क पूर्वा
साहेतु नवमी युते नवया ग्राह्या ॥ यदुक्तं पैठीन
सिना ॥ पंचमी सप्तमी चैव दशमी च त्रयोद
शी ॥ प्रतिपन्नवमी विद्धा कर्तव्या फलकांक्षि
भिः ॥ आपस्तंबेनोक्तं ॥ अष्टमी नवमी विद्धा
कर्तव्या फलकांक्षिभिः ॥ दशमी च प्रकर्तव्या
ध्या सदुर्गा द्विजसत्तमैरिति ॥ यत्तु वचनं ॥ स
पूर्णा दशमी कार्या पूर्वया परया यथवा ॥ पृ ।
ज्ञानं हि विनायस्मात्स्यता मासं देवतो वी
तिनक्षत्र विद्धायां ग्रहलाभे उदयकालव्याप
नी ग्राह्येत्येव परमतो दशमी नवमीयुतेव क
र्या ॥ अस्याग्रहलाभे उदयकालव्यापिनी ॥ अथ
वापकारणीभूतं भागवेनं क्रियमाणमेकभ
क्तादिपरविद्धायां कार्यमिति सिद्धांतः ॥ अ
यच्चैत्रशुक्लदशम्यां धर्मराजपूजा कार्या ॥ यथो
क्तं देवीपुराणे चैत्रमासि सितेपक्षे दशम्यां धर्म
राजे दशम्यां तत्पूजयेदिनाहनिमाधिकेः ॥ विशाता ।

[illegible] मेव च ॥ [illegible] विति [illegible]
[illegible] यातिकर [illegible] पेत ॥ आमयाने [illegible]
शेषः ॥ अथ ज्येष्ठशुक्लदशमी दशहरीत्युच्य
ते ॥ यथा स्कंदपुराणे ॥ ज्येष्ठस्य शुक्लदशमी सं
वत्सरमुखा स्मृता ॥ तस्यां स्नानं प्रकुर्वीत दानं
चैव विशेषतः ॥ यां कांचित्सरितं प्राप्य दद्या
द्दर्भतिलोदकं ॥ मुच्यते दशभिः पापैः स म
हापातकोपमैरिति ॥ अथ ब्रह्मपुराणे विष्णु
धर्मोक्तः ॥ ज्येष्ठमासि सिते पक्षे दशमी हस्तसं
युता ॥ हरते दश पापानि तस्माद्दशहरा स्मृ
तेति ॥ भविष्योत्तरे विष्णुधर्मोक्तः ॥ ज्येष्ठशुक्लद
शम्यां हि भवेद्भौमदिनं यदि ॥ ज्ञेया हस्तर्क्षसंयु
क्ता सर्वपापहरा तिथिः ॥ वराहपुराणे ॥ दशमी
ज्येष्ठमासस्य शुक्लपक्षे तु जाह्नवी ॥ अवतीर्णा
यतः स्वर्गाद्धस्तर्क्षे च वसौ हरा ॥ हरते दश पापा
नि तस्माद्दशहरा स्मृतेति ॥ स्कंदपुराणे दशपा
पहरायां तु दशम्यां योगमाह ॥ यथा ॥ ज्येष्ठे मा
सि सिते पक्षे दशम्यां बुधहस्तयोः ॥ गरानंद
व्यतीपाते कन्याचंद्रे वृषे रवाविति ॥ अत्र वरा
हपुराणोक्तजेवभयोगः ॥ स्कंदपुराणे बुधवा
रयोगस्ति विरोधः ॥ स च कल्पभेदव्यवस्थया प
रिहरणीयो यथा अवतीर्णा स विहरेति ॥ अ
स्यां दशम्यां गंगा कस्मिंश्चित्कल्पे भौमवार
युक्तायां दशम्यां ॥ कस्मिंश्चिद्बुधवारयुक्ता
यामित्यविरोधः ॥ दशपापानि च मनुना प्रो
क्तानि ॥ परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसानिष्टचिंत
नं ॥ वितथाभिनिवेशश्च मानसं त्रिविधं स्मृतं
पारुष्यमनृतं चैव पैशुन्यं चापि सर्वशः ॥ अ
संबद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधं ॥ अद
त्तानामुपादानं हिंसा चैवाविधानतः ॥ पर
दारोपसेवा च कायिकं त्रिविधं स्मृतं ॥ इति ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

...दशम्यां ... कार्याणि दश

हरानिर्णयः ॥ अथ ज्येष्ठदशम्यां गंगाजले स्थितो र

णावचारे स्कंदपुराणोक्तदशहरास्तोत्रपाठके

र्चकेस्नानेकर्त्तव्ये ॥ उक्तंच स्कांदे ॥ ज्येष्ठस्य दश

म्यां सेतुबंधे गंगाजले स्थितः ॥ यः पठेद्दशहास।

कृत्वस्तु दरिद्रो वापि वाक्षमः ॥ सोपि तत्फल

माप्नोति गंगां संपूज्य यत्नतः इति ॥ गंगायास्त्र

भिधाने तीर्थांतरेष्वप्येवं विधिना स्नानंकु

र्यं ॥ स्नानकाले न कर्तव्या तीर्थे तीर्थांतरस्मृ।

तिरिति निषेधो गंगाव्यतिरिक्ततीर्थविषयः

यतोक्तं ॥ स्नानकालेन्यतीर्थेषु जप्यते जाह्नवी

जनैः ॥ विना विष्णुपदीं नान्यत्समर्थमघशोध

ने इति ॥ अत्र सर्वत्र विधेयोक्तिरियं स्यात् ॥ हस्ते स

गंगे यमुने सरस्वतीत्यादि ॥ अत्र सर्वत्र विधौ

अतस्य गंगायामुना मरस्वती श्रानस्नानं सर्वतो

तीर्थांतरेष्वपि न दुष्यतीति ॥ अथाश्विनशुक्ल

दशम्यां नवमीयुक्तायां श्रवणयुक्तायां वा

अपराजितापूजा प्रस्थानं चाक्तं योजन ॥ यदुक्तं

दशम्यां तु नरैः सम्यक्पूजनीयापराजिता ॥ क्षे

मार्थं विजयार्थं च पूर्वोक्तविधिना नरैः ॥ नवमी

शेषयुक्तायां दशम्यामपराजिता ॥ एकाद

श्यां न कर्त्तव्या पूजने चापराजिता ॥ रत्नतिवि

जये देवी पूजिता जयवर्धिनीति ॥ तथाश्विने

शुक्ले दशम्यां पूजयेदपराजितां ॥ स्कंदपुरा

णेपि ॥ दशम्यां यः सदा कालं प्रस्थानं कुरुते न

रः ॥ तस्य संवत्सरे राज्ये न क्वापि विजयो भवेत्

इत्येवचने दशम्यामेव प्रस्थानं कार्यं ॥ तत्काल

स्यादिना दशमी मूलेऽपि कार्या दशम्या कार्यमिति

नियमार्थं नवमीयुक्ते न श्रवणे समभवेदिति।

तत्र ॥ श्रवणयुक्तायामेव दशम्यां प्रस्थानम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

...नेनकः ॥ ... गिति ... केकगोके
...राजेनाशूको... ॥ श्रवणे ...
कार्यार्थः प्रस्थितो यत्नः ॥ येलेन येत्रुः सीमा
नेनेनेस्यतेनतोनगाहेनितथा श्रावणो श्राव
च परार्जितेति ॥ अवर्णाभावेन केवले दृष्ट
म्यामेव कार्यं ॥ तद्वेलेहेनेतिथः प्राप्तस्य
तिथिः प्राप्तेतिथिरेव कारणेतिथिः प्रमा।
णेतिथिरेव साधनमिति विजयी दृष्टामीनि
णयः ॥ पत्तनानास्मसर्वोस्वापि दृष्टामो धृतिथि
पवेनान्तकः ॥ मृजः ॥ पत्रे को ॥ दृष्टाम्यामन्तकः
स्यामीति यथा सिद्धविरुद्धादिके लिख्यते।
दृष्टामीगुरुव्यो गणेसिद्धायथा ॥ गुरौ दृष्टाम्या
ये च मीविति ॥ दृष्टाम्याभीमवासरेणकक
र्कयोगः ॥ दृष्टाम्यां ये च मीवे नेगलादिके का।
र्ये ॥ तद्रूकमेव ॥ सिंहकन्या धिक धनः स्थि।
ते कर्कटे दृष्टाम्पशुभा भवतीत्युक्तमेव ॥ सिं
हे वृश्चिक स्यन्तरे दृष्टामी दृष्टा भवति ॥ दृष्टा
म्यां तत्र यां दृश्यो वर्णाग्रभ्यगग्राननेनकु।
गुः ॥ उक्तं च ॥ त्रयोर दृष्टान्तनीयायोर दृष्टाम्या।
मित्यादि ॥ नालोप्राक्संवोपिनाद्यन्त ॥ उक्ते
व दृष्टी धिक पालाश्राणीति ॥ दृष्टाम्याशुनर दि
गानेनकु योन ॥ रति दृष्टी निर्णीयास्तेर दृष्टामी
निर्णयः ॥ प्रथेकादृशी निर्णीयते ॥ एकाद
शीतिथि रूपवासादिषु रुद्रेणहार दृष्टीशुक्ले
ति शुभमवाकाप्राभ्याम्पान्तहार दृष्टीशुक्लेवप्र
ला ॥ न यापि हरिद्राशाम्भा प्रपंचोदृशीयि।
ष्यते ॥ नन्वेकादृशी ग्रन्थिषयवे नित्यत्व।
विधायक वाक्यानिश्रूयेन ॥ नत्रानित्यनय
याग रुद्र पुराणे ॥ उपोष्यैकादशीनिस्प्य।
नयोरुभयोरपि ॥ न यासनन्क मागोपि ॥ पक्
दृशीसदोपोष्या पक्षयोरुभयोरपि

...पि ॥ ... नत्र मा केवला
यावदायुः स्वस्तिमिति ॥ कालोपि ॥ प्रकार
पूर्वसप्तवेसप्तकदाचिदतिक्रमेदिति ॥ प्रकार
षष्ठान्न भुंजीत कदाचिदपि मानवइति ॥ नत्या
परामायदमापञ्चोरर्थेवासप्तपरिस्थिते ॥ हुत।
मेस्तनकेवापि नत्याज्यं दारपरिग्रहेतमिति।
प्रकारोत्प्रत्यवायोपि मनन्तकमारेणार्द्धभिनः
नकैरोहियोमठ प्रकारपूर्णाम्भयोघार ॥ मव
मेनरकेयाति रौरवंतमसाहते ॥ नत्या ॥ प्रकार
पूर्णाभिनिष्ठेहयो भुंक्ते मठचेतनः ॥ तनिष्ठा
ममसोभुंक्ते किल्विषंस्यादिदिहमस्मिनिति।
मद्गुणानाक्रमनिष्ठेहपापेदीनरकेद्रजेत ॥ प्रक
हष्पन्नभोजीचपितरभिःमहमजोति ॥ नारदी
येपि ॥ यानिकानिचपापानिब्रह्महत्यादिका
निकानिच ॥ अन्नमाश्रित्यतिष्ठंतिसंप्राप्तेहरि
वासरेइति ॥ कात्यायनोपि ॥ मातृहापितृहा चैव
भ्रातृहागुरुहातथा ॥ प्रकारषष्ठान्नयोभुंक्ते
पक्षयोरुभयोरपि ॥ नत्या वरस्मातरगमने
वेरगोमांसमक्षणे ॥ वरंहत्यासुरापाने मेकार
पंचान्नभोजनमिति ॥ उपक्रमखंडविधायकवा
क्यानियथाविष्णुरहस्येपि ॥ यथोक्तेहिस्म।
सातुश्च शुभांसेपरमात्मनः ॥ प्रकारषष्ठान
भुंजीनपक्षयोरुभयोरपिइति ॥ कात्यायनोपि ॥ य
दीच्छेद्विष्णुलोकंगान्तुंकिवान्यंतदुर्लभं ॥
प्रकारपणाश्रुपवसेन्पक्षयोरुभयोरपिइति
इत्यादिकानिकाम्यविधायकानि ॥ एवव
मति ॥ इदंमैकारषीव्रतेनित्यवकाम्यव्रव
णा लिंगानित्य ॥ किंवाकाम्यविधायकवा
क्यश्रवणात्काम्यमिति ॥ अत्रकश्चिदाह ॥
नित्यकाम्यमिति नत्रपक्षिमरंयदेवनित्य

नरेवकाम्यानामनिकेमधीरयमेमोक्षसा
त्रोपपद्यते॥ नित्यत्वेनामफलानपेक्षि
तेकाम्येचफलापेक्षितेन। नह्येकस्यफ।
लापेक्षितेनतदपेक्षितेचसंभवतिभाव।
भावयोःसमानाधिकरण्याभावात्॥ न
न्यच॥ पूर्वाख्यवपवसेत्कामीनिष्कामस्तु
नरोमरेति॥ इत्यत्रवचनात्॥ एकस्यतत्वेरि
तद्द्वयोर्विधानेकदाचिन्नोपपद्यते॥ तथा
एकादश्यांव्रतेगानियमेपिजन्माद्वादशकृद
येनित्येकाम्येसकृच्चनद्वयमित्याहमेदः
श्रेष्ठिनः॥ अतस्त्वनिष्कामोनित्यविधि।
नानित्येकादश्यांव्रतंकुर्यात्॥ सकाम।
स्तुकाम्यविधिनाकाम्यैकादश्यांव्रतंकु
र्यात्॥ अथैकादश्यांव्रतेधिकारिणः प्रद
र्शयते॥ यदाहकात्यायनः॥ अष्टवर्षाधि
कोमर्त्योह्यपूर्णाशीतिवत्सरः॥ एकाद।
श्यामुपवसेन्नित्यंपक्षयोरुभयोरपित्येवप
लाहैथैकादश्यांव्रतंसर्वेषामाश्रमव
स्यायाविशेषः॥ कालहेमाद्रिः॥ यथा
विधवायोवनस्थस्यापितेचैकादश्यांद्वये
उपवासोगृहस्थस्यापश्चात्कामामेवपुत्रिणः
भुंजेत्त्रिषुयःकृष्णायांमितस्यनतोव।
तेइति॥ अतवविधवावनस्थयतिसमान
धर्मेवगाहस्थ्योपगृहिणोप्रोक्तंयथा॥ शुनःप्रभ।
तेसमयेचहिकैकादश्यांभवेत्॥ तत्रोप।
वासोविहितोवनस्थस्यायतेस्तथा॥ वि।
धवायाःचतथैवपारेमोद्वादशीनचेरि
ति॥ सकामःपुत्रवान्गृहस्थस्तुशुक्लामेवो
पवसेत्॥ कृष्णायामशनेनिहतिमेवकु।
र्यात्॥ तत्रमाकूर्मपुराणे॥ एकादश्यांनभु

181

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

...तानपत्यो हि मेयावापि ॥ तेनस्पद्यतेच
मेवं पुत्रकामेव समाचरेदिति ॥ कौर्मे एका
दश्यां न भुञ्जीत पक्षयोरुभयोरपि ॥ वानप्र
स्थो यतिश्चैव पुत्रकामेव समाचरेत् ॥ कर्मैका
दश्यां पुत्रवान्गृही उपवासनिषेधमाहस्थान
निहितमात्रमेवकुर्यान्नोपवासमितिनिग
मान्ते ॥ कर्मैकादश्यां पुत्रिणा उपवासनि
षेधः ॥ कूर्मपुराणे यथा ॥ संक्रान्तौ कृष्णा
ष्टम्यां रविशुक्रदिनेतथा ॥ एकादश्यां न कु
र्वीत उपवासं च पारणमिति ॥ अत्र पुत्रवा
न्पुत्रस्यनेति ॥ कात्यायनोपि ॥ एकादश्यां
शुक्लासा रविसंक्रमणे तथा ॥ चन्द्रसूर्यो
परागेच नकुर्यात्पुत्रवान्नरः ॥ अत्र पुत्रवा
कामस्यमित्यर्थः ॥ गोतमोपि ॥ आदित्यह
नि संक्रान्तौ असितैकादशीषु च ॥ दानीया
नेकृतेश्राद्धे पुत्रजीनोपवसेदिति ॥ नच
पुवचनेपुत्रस्याएकादश्युपावनेकृष्णायां
संक्रमेग्रहणेपिवा ॥ उपवासं न कुर्वीत गृ
हीपुत्रधनक्षयादित्यादिषु वाक्येषु सं
क्रान्तिरविवारशुक्लकृष्णैकादश्युपा
सम्पुवासनिषेधः प्रतिपादितेन इति चे
न्न ॥ संक्रान्त्यादिनिषेधपक्षसंक्रान्त्यादिवि
हितोपवासनिषेधविषयः ॥ ननुनन्वैके
कादश्युपवासः ॥ नउक्तेजैमिनिना ॥ न
त्रिमित्तोपवासस्य निषेधोयं श्रद्धाहतः ॥
नान्यस्यागतत्वात् ग्राह्योयं स्मार्त्तन्यायपो ॥
षणमिति ॥ नत्रिमित्तस्य संक्रान्त्यादिनि
मित्तस्योपवासस्य निषेधात ॥ नन्वनेन
कृतेः संक्रान्त्यादिसंयोगाकृत उपवास ॥
निषेधोग्राह्यः ॥ कामसंक्रान्त्याद्युपवास ॥

नेषु ॥ ... विति च ये ... कृ ...
निषेधो भिन्नैकादश्युपवासविषयो न
भवतीत्यर्थः ॥ अत एव कृष्णपक्षैकादश्यां
पुत्रवान् गृही नित्योपवासं न कुर्वीत ॥ का
म्योपवासेन विशेषाभावात्त्वन ॥ न त्वेष
वा केवलं कृष्णैकादश्यामुपवासनिषेधः
न तु भोजननिवृत्तिः फलाकांक्षया उच्यते
कृष्णैकादश्यामशनमात्रनिवृत्तिरिति
सत्यं ॥ कूर्मपुराणादिवचनात् ॥ यथा
न शौचेन पिबेत्तोयं न खादेत्क्रमुकं करौ
एकादश्यां न भुंजीत पक्षयोरुभयोरपि
विस्पष्टधर्मो नरे ॥ स च सन्न्यासगोचरश्च सती
थी गुरुतल्पगः ॥ एकादश्यां तयोर्भेदे पा
तयोः कृष्णपक्षयोरपीत्यादिवाक्यैर्भोजननि
वृत्तिः ॥ पक्षद्वयैकादश्योः प्रतिपादिता
तथा संक्रान्तौ पक्षद्वये कृष्णपक्षे चैत्या
दिवाक्यैः कृष्णपक्षे उपवासनिषेधः श्रु
तौ मेव सदा गृहस्थेन्यादिवाक्यैः शुक्लैका
दश्यामुपवासनिषेधाच्च ॥ सकामैरपि गृहिभिः
शुक्लैकादश्यामुपवासस्तु न कार्यः ॥ कृष्णै
कादश्यामशननिवृत्तिमात्रमिति सिद्धं ।
शयनीबोधिनीमध्ये गृहस्थमात्रेण कृष्णै
कादश्यामप्युपवासस्तु न कार्यः ॥ न च के शा
यनीबोधिनीमध्ये या कृष्णैकादशी भवे
त् ॥ सैवोपोष्या गृहस्थेन ॥ नान्या कृष्णा क
दाचनेति ॥ श्रुतौ नोपवसेद्गृहीति पुत्रवतो
गृहस्थस्य कृष्णैकादश्यामुपवासनिषे
धश्रवणात् ॥ शयनीबोधिनीमध्ये किंचिद्द्र
व्यं प्रकल्प्यैवोपवासं कुर्वीत ॥ तदेकम
नेन महीयते ॥ उपवासनिषेधे तु किंचिद्भक्ष्यं
प्रकल्पयेदिति ॥ भक्ष्यं च विज्ञो विषयेद

183

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्नोति॥ अविज्ञानामलाभतः पयोदधिफला
नि च॥ मत्स्ये वाल्पमश्नीयादुपवासमसमर्थो
भवेद्यदि॥ वायुपुराणेनैव विशेष उक्तः
नक्तं हविष्यान्नमनोदनं वा फलं तिलाः क्षी
रमथाम्बु वाज्यं॥ यत्पञ्चगव्यं यदि वापि वा
युः प्रशस्तमत्रोत्तरमुत्तरं चेति॥ यानि पुनः
यस्योत्तरोत्तराणि वाप्य येन परिकीर्तिते ।
न्तेष्वपूर्वमवाप्नोति हारप्रणोक्तमयोरा
पि इति॥ तथा॥ सर्वे सोमग्रहे प्राप्ते पर्वे चैवा
पुनिभिः स्मृते॥ तथा सिनीवालीषु प्रेष्ये हार
प्यो विलम्बद्वादश्येदृशीति॥ स्कन्दपुराणे नारदे
यपुराणादिवाक्यानि पत्नेहयेयुपवास
विधायकानि नानि वानप्रस्थयतिविधा
नि तैर्यानि कारविशेषाभिधायानि॥ अन्य
था स्वकामेव महापक्षीत्यादिवाक्यैर्विरो
धः स्यात्। अथ नित्यैकादश्युपवासे निरो
धे गृहस्थस्य काम्येन कामनानुसारेण नि
षेधः॥ सानि चोभयैकादश्युपवासे पुत्रवत
भैकादश्युपवासे चाभिज्ञानि फलानि॥ य
था कूर्मपुराणे॥ यदीच्छेद्विष्णुसायुज्यं श्रियं
संततिमात्मनः॥ एकादश्यामुपवसेन्पक्ष
योरुभयोरपि इति॥ गोविन्दोपि॥ एकादश ।
श्यां सिते पक्षे यश्च कुर्यादुपोषणम्॥ स विष्णु
लोकं व्रजति कृष्णपक्षे विमुच्यते इत्यादिवा
क्यैः फलविशेषाभिधानान्नफलाय च ।
या उभयैकादश्युपोष्य तैरेकादश्यां काम्यो
पवासः कर्योरित्यभिनिविसहेण। अथ उप
वासस्वरूपनिरूपणे॥ तत्र कौर्मे विष्णुधर्मोत्त
रे॥ उपावृत्तस्य पापेभ्यो यस्तु वासो गुणैः स
ह॥ उपवासः स विज्ञेयः सर्वभोगविवर्जितः

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इति ॥ पापेभ्यो निवृत्तस्य युक्तं ॥ कानन्ता...
पापानीत्यत्र समेतराम् ॥ विहितस्याननु
ष्ठानमिन्द्रियाणामनिग्रहः ॥ निषिद्धसेवनं
जैस्मवर्जनीयं प्रयत्नतः ॥ हारीतोपि ॥ प
तितपाखण्डिनास्तिकादिसंभाषणमनृ
ताश्लीलादिकमुपवासदिने वर्जयेदिति।
विष्णुरहस्येपि ॥ न स्नात्वा ह्राडिभिः पापैः
गलापस्पर्शनेन स्वेन ॥ विप्रोषितः क्रिया
कालेयज्ञादौ चापि दीक्षितः ॥ कर्मसुत्रा।
णेपि ॥ वह्निघ्राणान्यजानन्नीपतितं चरम
ख्यलां ॥ नस्पृशेदभिभाषेत नेक्षेत नग्न।
वासरे इति ॥ काकाघ्राणादिदर्शनस्पर्शनं।
विषयेप्राप्तिचिन्तनमपि विष्णुपुराणोक्तं
शब्दा ॥ स्पर्शनेचनरः स्नानाच्छुद्धिमाप्नुयात्
दर्शनात ॥ समाभात तो शुचिपदं चिंतये
द्युतेवधः ॥ नेषामालोकनेस्य यं त्रुपे
तमतिमात्रः इति ॥ शुचिपदं शुद्धपदं ॥
विष्णुधर्मोत्तरेपि ॥ असंभाष्यानसंभाष्य
तिलस्पर्शनसिकादले ॥ आमलकफलैः पलवा
दिपापलो प्रापुनशुद्ध्यतीति ॥ गुणैः सह।
वास इति चोक्तं ॥ तत्र गुणाश्च विष्णुधर्मोत्त
रे चोक्ताः ॥ यथा ॥ तत्रषः पूजनं दानेन
।स्वाध्याय श्रवणादिके ॥ तद्दर्शने च तन्नाम
कीर्तने श्रवणादयः ॥ उपवासकृतामेव
ते गुणाः प्रोक्ता मनीषिभिरिति ॥ तच्चैव
नात्र प्रक्रान्तत्वाद्विस्तरेणाभिधीयते ॥ अ
थ उपवासकृतां नियमा उच्यन्ते ॥ उपवा
सस्य नीरंतधावने हिंसामैथुनं ते हते चौर्यम
सकृज्जलपाने सकृत्ताम्बूलभक्षणात् स्त्रीसं
योगाद्दिवास्वापे वर्जयेन्मांसं च ॥ उक्तं च

185

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

द्रुवासेहन॥ उपवासेन तथा श्राद्धे नावारोहणे
धावने॥ दंतानां काष्ठसंयोगे हंति सप्तकु
लं नरः॥ उपवासादिषु दंतकाष्ठं निषेधयेत्
नकलो व्यासेनोक्तः॥ अलाभे दंतकाष्ठा
नां निषिद्धदिनेषु यावती॥ अपां द्वादशगं
डूषैः पत्रैर्वा दंतधावनमिति॥ दंतधावने
प्रायश्चित्तं स्मृतिसंग्रहे उक्तं॥ लेतहि सक
पोः सन्ध्यां कृत्वा लियचोहि सने॥ प्रायश्चि
त्तं वती ऊयांज पेत्रामसहस्रकमिति॥ ना
मसहस्रकं विष्णुनामसहस्रं॥ मिथ्यावाद
दिवास्वापास कृत्वालपनेन प्रायश्चित्तं।
कात्यायनेनोक्तं॥ मिथ्यावादे दिवास्वप्ने
बहुशो भाषणे निषेधं वने॥ अष्टाद्यां चतुर्दशी जन्मा
ष्टमं सहोम रंशु विविनि॥ अष्टम्यां तु चो न॥
मोनारायणायेति॥ नाव लव वंशो हीसं
भोगं मांसं निषेवणं॥ प्रायश्चित्तं पैठीनसि
नोक्तं यथा॥ नाबूलं च वंशो हीसं भोगं मा
सं निषेवणं॥ व्रतलोपे नरः ऊर्ध्वोद्भितांव
उजिवर्धने॥ अष्टमामान्यन हीसं भोगः
स्मृके पि स्वदारेषु ऋतुकालगमनादि व
व्रतलोपो नास्ति॥ तदुक्तं कात्यायनेन॥ र
नः से वाल्मके भोगः मृते नाउदा यस्तदा
ति॥ रेनः सेकात्मके भूत्न कालेगर्भाधान
निमित्तं न ज्ञात्मके भोगं वर्जयेन्नाउद्रस
योगे वृतस्य हस्यर्थः॥ ऋतुकालोपिष्ठो
दयानि पृष्णास्तरति क्रमेदोष अवणात्॥
अन्यानि पृष्णास्तन हिवसे नाकतेपिगर्भाधा
ने ष्णोडशानिपृष्णापयेन मन्वत्रापिकं तेषा
कत्वात्रानिकमे दोषः॥ अतस्य षोडशानि
पृष्णात्मक पव काले रेतः सेके न दोषः॥ व

रास्याता[illegible]
रपि ब्रह्मचर्यभंगो भवति॥ यथा॥ स्त्रीणां
नप्रेक्षणात्स्पर्शात्ताभिः संकथनादिभिः
निध्यायते ब्रह्मचर्यं न दारेष्वृतुसंक्रमादि
ति॥ अत्र प्रेक्षणादिकं सरागमेव॥ अतश्च
मात्रादिदर्शनेन दोषः॥ ऋतुसंक्रमादि
ति॥ ऋतुरपि षोडशनिशावाचीनः॥ सा
वकाशप्राप्यवर्हेय॥ अन्यथा कात्यायनव।
चनेन विरोधः स्यात्॥ अतश्च स्वदारगाणो।
स्पर्शनादिभिरपि ब्रह्मचर्यभंगो नास्ती।
त्यर्थः॥ मांसं विष्ठयेव्यासेन दर्शितः॥ व
र्जयेन्मारणे मांसं वनोहि त्याषथं मदेति
ऽौषधात्मकमपि मांसं वनाहे वर्जयेदित्य
र्थः॥ इत्युक्तनियमसहितः प्रातः स्नाना
नंतरमुपवाससंकल्पं कृतोपवासं।
कुर्वीत॥ तत्र नित्यमनसैव मंत्रेण संक।
ल्पयेत॥ मंत्रश्च॥ पकारपूर्णा निराहारो
भूत्वाहमपरेऽहनि॥ भोक्ष्यामि पुंडरीका।
क्ष शरणं मे भवाच्युतेति॥ काम्योपवासे
जलपूर्णं ताम्रपात्रं हस्तेन गृहीत्वा उदङ्
मुखः मन्त्रवाक्यमंत्रसंकल्पमुच्चरेत॥ त
त्क्रमेण वलेन॥ गृहीतोदुंभरपात्रवारिपू
र्णो मुदङ्मुखः॥ उपवासं प्रगृह्णीयाद्य
था संकल्पयेद्बुधः॥ अत्र यथासंकल्प
यदित्यनेन॥ संकल्पानां बाहुल्यं द्योत्य·
ते॥ अतश्च काम्यादिपराभावेऽपि अयं का
म्योपवासविधिरिति ज्ञायते॥ नित्यसंक
ल्पमेकाभावेऽपि यथासंकल्पयेदिति स
गतं स्यात्॥ अथ नित्योपवासनियमे नि
त्यकाम्यभेदेन विशेषांतरमुच्यते॥ नित्यो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]...यत्रानमासं
नवर्जयेत्॥ दशमीद्वादशीपूर्वानैकभक्तेनि
यमः॥ तदुक्तंकात्यायनेन॥ नित्योपवासे
योविशः सायंप्रातर्भुजिक्रिया॥ संत्यजे
न्नतिमान्मर्त्यः संप्राप्तेह्युपवासेरुते॥ वि
प्रइतिसर्वाणिपलहारणंकाम्योपवासेद।
शम्यांद्वादशपूर्वेचैकभक्तंकार्यं॥ एकादश्यां
उपवासःकार्यः॥ तदुक्तंदेवलेन॥ सायंमा
द्यन्तयोरह्नोः सायंप्रातश्चमध्यमे॥ उपवा
सफलप्रेप्सुर्जह्याद्भक्तचतुष्टयमिति॥ यमो
पवासंकुर्वीतनैकभक्तचतुष्टयमिति॥ अ
त्रफलप्रेप्सुविनानैवास्यकाम्यविषयत्वं
ज्ञायते॥ काम्यत्वविशेषणंतुकात्याय
नेनोक्तं॥ प्रह्लादेनसमेवमित्रिजमेनाभिम
त्रितं॥ उपवासफलप्रेप्सुःपिबेन्नाऽऽगतंज
लमिति॥ काम्योपवासेदशम्यादिदिनत्र
येकांस्यादिवर्जयेत्॥ तदुक्तंमत्स्यपुराणे
कांस्यंमांसंमसूरांक्षौद्रंतैलंवितथभाषणं
व्यायामंचप्रवासंचदिवास्वापंचमैथुनं॥
शिलापिष्टंमसूरंचद्वादश्यांपरिवर्जयेत्
विष्णुधर्मोत्तरे॥ कांस्यंमांसंमसूरंचचणकमो
ऽनृतंमैथुने॥ घृतमधादिपानेचफलप्रेप्सु
विवर्जयेदिति॥ अत्रमांसमसूरयोर्ग्रहणमे
वप्राप्तिस्तेषामेवनिषेधः॥ स्वेत्रपानमसू
रकृत्रिषु॥ स्कंदपुराणे॥ कांस्यंमांसंमसू
रंचचणकंकोरदूषकं॥ शाकंमधुपरान्ना
णिचवर्जयेदुपवासिनाफलमिति॥ शाकंतुपो
टकी॥ असनारंभस्तुवहिर्गतस्त्रोघ्रेनप्राय
श्चित्तेकृत्वाकार्यं॥ तत्रायंमंत्रः॥ शारीर
मनःकरणोपघातेनवाचश्चविष्णुभगवा

188

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]॥ [illegible] सम[illegible]याद
इति सविविहृ॥ अतः शुद्धविद्धभि श्रुद्धिं शुद्धा
धर्मेमयोश्रुतः॥ सकरोलभमेतस्मिं शुद्धवि
द्धास्मि सर्वे रेति॥ अनेन मंत्रेण शुद्धिकृतो क
नियमो येन उपवासं कुर्यात॥ इदानीमुप
वासस्य ह्यात्मसिद्धार्थं शुद्धविद्धाभेदेनाहा
रपूर्णभेदा उच्यते॥ तत्र शुद्धैकादरपूर्णी समता।
न्यूनताधिकयोगात्त्रिधा॥ विद्धापि द्वादर।
पूर्णसाम्यन्यूनताधिकभेदात्त्रिविधा भव।
ति॥ एवं शुद्धा सा नवभेदा यथा॥ शुद्धसमा।
द्वादरपूर्णी समा॥१॥ शुद्धसमा द्वादरपूर्णी समान्यू।
ना॥२॥ शुद्धसमा द्वादरपूर्णाधिका॥३॥ शुद्धन्यू
ना द्वादरपूर्णी समा॥४॥ शुद्धन्यूना द्वादरपूर्णीन्यू
ना॥५॥ शुद्धन्यूना द्वादरपूर्णाधिका॥६॥ शुद्धा
धिका द्वादरपूर्णी समा॥७॥ शुद्धाधिका द्वादर।
पूर्णीन्यूना॥८॥ शुद्धाधिका द्वादरपूर्णाधिका॥९॥
एवं विधापि समन्यूनाधिकयोगात्प्रत्येकं।
त्रिधा॥ एवं विद्धा या अपि नवभेदा यथा॥ वि
द्धसमा द्वादरपूर्णी समा॥१॥ विद्धसमा द्वादरपूर्णी।
न्यूना॥२॥ विद्धसमा द्वादरपूर्णाधिका॥३॥ विद्धन्यू
ना द्वादरपूर्णी समा॥४॥ विद्धन्यूना द्वादरपूर्णीन्यूना
॥५॥ विद्धन्यूना द्वादरपूर्णाधिका॥६॥ विद्धाधि
का द्वादरपूर्णी समा॥७॥ विद्धाधिका द्वादरपूर्णी।
न्यूना॥८॥ विद्धाधिका द्वादरपूर्णाधिका॥९॥ ए
वं मिलित्वा द्वादरपूर्णाभेदा भवन्ति चैवं पूर्वभेदैः
सह॥ अत्र सर्वेष्वपि भेदेषु पिकादरपूर्णी द्वादर।
पूर्णैः समं केनचिद्विधिना दिकालमवाव॥ ततोऽत्र
न वेल्पनवे॥ अधिके वाधिक तत्रैव॥ अत्र च शु
द्धसमा द्वादरपूर्णी समा हि भेदे शुद्धैव ग्राह्यति
थिः पूर्वैवोपोष्या॥ तत्र कैश्चिदेवत्युक्तं॥ शु।

...नाधिकामेता
नवद्दे यदा समभिमास्मासनानादिकामेता
पवकादशी सुपवसेन चाघुद्देवसर्वाभिति॥ सु
ह्यपकादशी यदा समा॥ अन्यदा द्वादशी स
माहीणा अधिका चतुर्दशी घुडाय यदा हीना
उगाचतुनक्षत्रावि देति॥ घुडकामा मेह
ययैवैकादशी सुपवसेत॥ नघुडावैसर्वा
द्वादशी मित्यर्थः॥ यत्तु स्कंदपुराणवचने॥
एककलिमाच संपूर्णा यदिह्देहि पराविधिः
पूर्वैकादशी नाभिदपूर्णमावाप्यसता
ना॥ द्वादशी नैकलाकाष्ठा यदि स्यादपरे
हनि॥ द्वादशी द्वादशी हनि पूर्वस्यां यातरामा
नमित्यस्यार्थः॥ तिथिवृद्धि परेवैकादशी
परदिने एककलिमाचाक्ति। अपरेद्युर्नि नाति
नत्रेभयत्रापि त्रयोदश्यां द्वादशी संभवा
घुडे द्वादशी सुपवसेदिति॥ स्कंदोक्त
मया द्वादश्यपिकमुक्ता यावदित्यपेसार्थके
नतु घुडसमगु घुडहीनाविषया॥ अन्योस्या
नघुडावैसर्वाभितिवचनविरोधः स्यात्।
द्वादशी सामग्रुक्ताम घुडाधिका द्वादशीस
नियुक्ताविंधाधिका च घुक्ता गृहस्थैः कृपाप्
द्या॥ अतएव तिथिविरिति व्यवस्थानं॥ यत्कं
मार्कंडेयपुराणे॥ संपूर्णैकादशी यत्र।
प्रभाते पुनरेव सा॥ पूर्वामुपवसेत्कामी निष्का
मस्तूत्तरां सदेति॥ अत्र कामपदेन गृहस्थः
निष्कामपदेन यतिः कथ्यते॥ यायणगृहिणो
सकामत्वं॥ यतीनां निष्कामत्वं॥ एकादशी
प्रवृद्धा चेच्छुक्ले कृष्णे विशेषतः॥ तत्रोत्तरा
यतिः कुर्यात्पूर्वामुपवसेद्गृहीति॥ स्कंदपु
राणेपि॥ संपूर्णैकादशी यत्र प्रभाते पुनरे
व सा॥ त्रयोदश्यापघुडः कालेअशोष्यानते।

१९०

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]
त्यैवेति॥ छत्रापिहेतिथीरस्पति॥ भेदनो
पवासवावस्थाते य॥ शुद्धाधिका द्वादशा
धिकान्सर्वैरेवोपोष्या॥ तदुक्तं नारदेन॥ सं
पूर्णैकादशी यत्र प्रभाते पुनरेव सा॥ तत्रोपो
ष्या द्वितीयोत्तरपुत्रपौत्रविवर्धनीति॥ गरुड
पुराणे॥ संपूर्णैकादशी यत्र प्रभाते पुनरेव
सा॥ तत्रोपोष्या परा पुण्या परतो द्वादशी य
तेति॥ स्कन्देपि॥ संपूर्णैकादशी यत्र प्र।
भाते पुनरेव सा॥ वैष्णवी च त्रयोदश्यां घटि।
कैका च दृश्यते॥ गृहस्थोपि परां कुर्यात्पूर्वां
कोपवसेत्तरेति॥ अथ विद्धाभेदा निर्णीयते
तत्र द्वादशी यत्र सामान्यतः का विद्धसमा द्वाद
शी न्यूना निशुद्धका च विद्धसमा पूर्वोत्तरहस्योक्त
पोष्या परा या तिथिरिति व्यवस्था॥ तदुक्तं
पुराणसमुच्चये॥ दशमीमिश्रिता पूर्वा द्वाद
शी च विलक्षणा ते॥ एकादशी तथा श्रवणे उप
वासः कथं भवेदिति प्रश्ने॥ शुद्धैव द्वादशी रा
त्रपोष्या मोहलकोतिथिभिः॥ सकामैर्गृहि
भिः पूर्वो विद्धापोतिथिर्विनिश्चयः॥ विद्धस।
मा द्वादशी पूर्णहिका॥ तस्यानद्वादशी मेका
दशी संभवात्तस्यैव क्षीपरगैवोपवासः॥ तथा
स्मृते॥ कलार्धेनापि विद्धा स्याद्दशम्या मेका
दशी यदा॥ तदा ह्येकादशी मुक्त्वा द्वादशी
समुपोष्येति॥ विद्धहीना द्वादशी समा
विद्धहीना द्वादशी पूर्णाधिका च सैव रपिष्टवैवो
पोष्या॥ तदुक्तं स्कन्दे॥ एकादशी न ल
भ्येत सकला द्वादशी भवेत॥ उपोष्या द्वादशी।
मी विद्धा कहालकोविद्धीन॥ ऋष्यशृंगोपि
सर्वैरेकादशी कार्या दशमीमिश्रिता नवैः 191

102

[illegible]
नमिति ॥ विदशाधिपकाद्वादशगामस्मादिदशाधि
काद्वादशगाधिकारस्यैर्यपिपैरुपिवेषके ।
घ्यानद्वरूकेविस्तयमीन्वे ॥ एकादशगा हरमो
दैवद्वितीयाचवत्वरेखा ॥ अष्टमाद्वययानवतो ।
याचकृष्णस्तुः पराद्धितादृशि ॥ अत्र द्वादश
गादिकवधाविरसमा ॥ ग्राविदशाधिका
याद्वादिनीयदिने एकादशगौ संज्ञावानयर
श्रेवोपवासः ॥ रागामीविडस्य निषिद्धता ।
न ॥ नदाहूनारहः ॥ नोपोद्घातरागामीविदशा
सेतेवकादशगौतिथिः ॥ नाडुपाद्यनरोज
स्यात्यायंवषपानोडुवमिति ॥ तथा च ॥ रागा
मध्ययानाय दतिथिरेकादशगौ अवेत ॥ नद्या ।
पत्यविनाशः स्यात्यैरन्यनवकेन जेहिति ॥ र
गामीपोषसंपुक्तागोधायांमस्पोषितना ॥ त
स्याः षु उपाननहूनस्मातोपविवर्जयेत ॥ प
वविदशीनाद्वयपिरगामीवयनिषेधो ।
नाशंकनीयः ॥ नद्वयोरगाणा पारणांपर्या
से ॥ द्वादशगा समवाय ॥ तदकेऽरामेष्टगेन ।
पारणाहे नलभ्यते द्वादशगीयदिद्वचेति
तदानीं रागामीविदशा युगोद्यकादशगौति ।
थिरिति ॥ हारीतोपि ॥ द्वयोरगापायदान ।
स्याद्वादशगौ चेट्टिकाद्वयं ॥ रागामेकादशगौ
मिश्रासैवोपोष्यासदातिथिरिति ॥ अत्रा ।
पिंचटिकाद्वयमिति पारणपर्याप्तकोपल
क्षणं ॥ वायुपुराणे ॥ एकादशगौयदाविदशाद्वा
दशगौ चेत्त्र्यंयाता ॥ रागामीमिश्रितायद्ध
पोष्यामनेसततमिति ॥ विदशनिषेधवाक्या
निसर्वाण्यपिद्वादशगाधिकावलंगाविद
समायां विदशाधिकायां चदृष्टानप्यानि ॥ न

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नु द्वादश्यां सम्पन्नत्वो द्वादशी ह्यनिरु।
ध्याच विद्धैकादश्यां त्रयोदश्यां पारणायो
ग्य द्वादशी सम्भवात्॥ विद्धायामेवोपवा
सः॥ एवं मते॥ द्वादश्यधिकवत्त्वाविद्धै
कादश्यां त्रयोदश्यां पारणायोग्य द्वादशी स
म्भवात्॥ शुद्धद्वादश्यामेवोपवासो ह्वि।
तिचेन्मतं॥ न स्याद्विकल्पेनोपवासयो
ग्यतात्र स्वीकारः॥ यथा॥ किमत्रयौदार
कीर्णो नाद्वादश्यां भोगे॥ उपवासः॥ किन्तु
एकत्वात्तत्र स्मिन् द्वादश्यां भोगे॥ नाद्यः॥ नम
कारपौ ग्रन्थासञ्चेवोपप कारप्रमुग्रन्था
सम्बन्धान॥ अन्त्यस्तु विद्धाधिकायवाद्यका
निरुक्त विधयान्येवेन्मनवस्त्वर्थः॥ विद्धा
धिकाद्वादश्यां नानारक्षस्यः पूर्वोक्त्वो
क्या॥ यतिभिरुक्तेनिविष्या॥ नहेमा॥ ए
कादश्यां द्वादश्यां च रात्रिशेषे त्रयोदश्यां
विनिधिस्म्यगहोरात्रेनोपोष्यं तन्मनाधि
भिरिति॥ नयाच॥ एकादश्यां द्वादश्यां च
रात्रिशेषे त्रयोदश्यां॥ उपवासेन ऊर्ध्वं तत्
त्रयोत्रसमन्वितः॥ इति॥ महिमाक्तत्रोपवा
समानि विधानात्॥ उपवासस्यानियतोवेना
वप्युपवप्युपकर्मान्यवत्रवोपवासोवसी।
यते॥ यथा॥ द्वादश्यां संगता यत्र भवेन्त्या।
कादशी कला॥ दिनक्षये पि साध्य्यापान
ह्यपमापुनातु कविरिति॥ नयाच॥ दिवस
एकादश्यां यत्र न त्रयोदशी विहितो हरिः॥ ए
ण्यवत्क्रतुपात ग्रोक्त त्रयोदश्यां न पारणं।
मिति॥ नयाच॥ कलान्येकादश्यां यत्र द्वा
दश्यपन्नगतांभवेत्॥ दिनक्षये पि साधु एण
यतीनाशुभमानिधियिविति॥ यत्ननन्नमंह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नात्रवाच्येयतिपदंगृहस्थस्याप्युपलक्ष
णार्थेनेरक्षणस्यार्थे॥तथामति॥श्रामामात्रे
नपुत्रवतोगृहस्थस्योपवासनिषेधात्तपण।
निरित्युक्तं॥नत्राणामवलयत्रपातेनेतिग
मातेः॥यतः॥सर्वेषांपापानांतुजातीयो
पलक्षकत्वादेपणवयतिपदस्याविज्ञोती
गृहस्थोपलक्षकत्वेप्रसिद्धेविरोधः॥।
किंच॥नित्यमयत्राश्रमाणावजेयेदित्या
देवावकतोत्रयाममध्येवोमतः।श्रामस्या
पिमधुपानादिकंनिषेधयेनेति॥एवमन्यत्रापि
पुत्रवतोगृहस्थस्यवालयानवाप्राप्तौ॥
कामतः।श्रामस्योपवासोनिषिध्यतेइति।
निषेधोपवासपरत्वेन॥किंच॥तेनवसुसंज्ञे।र
कादशीन्याहिविधानेषुसमधवस्यपति
दर्शोयिनासपत्नोवितरायचेष्टासर्वविडं
तिनसेववसंप्रतिनेदीपिता॥नेचसपति
त्रीकालिखितेन॥संपूर्णेकादशीयानभ
वतिपरतः।सासमावासमावान्यनायो
नास्तिनान्यत्रजातिहरिदिनेद्वादशीया
नभवतिसापिचोध्य॥सर्वेकृतेः।पुरलाद
पवसनमथद्वादशीनोध्येमति
द्वितीयाशुपवसनजनाः।पूर्वमन्येतम
वे॥येयेषांपूर्वविद्धाभवतिचपरतः।सा
समावासमावासर्वेकृतंद्वितीयामथ
हरिदिवसः।पूर्वविद्धोपियायात॥द्वार
पुपूर्णोत्रिसस्पृष्टभवतिपरेमोत्तिणः
पूर्वमन्येयदाविद्धानचोध्यंकुर्यात्परस्ता
त्परेभवेतत्रसर्वेषुरलान॥पूर्वविद्धा।
पुवासानपरतोद्वादशीवापिचोध्यंकु।
र्यात्तत्रैणपरिग्रहान्नानिजननिकट॥सर्वम

नोपि सर्वे विद्धा त्यनेन पूर्वा स्याद्दिति नन्वत्र
च द्वादश्यां त्रिविधो ऽपि समे वः सर्वेन दानी मपि
वा सत्वेन नः श्रीन येके पावस्येति ॥ अनन्त
भागवतेन तु तानं तु सारेणान्येन समुदाहृत्याख्या ।
नेष्टा तीयते ॥ स्मार्त सेतेन तु विज्ञाने त्रु शेषे त्रै च
रोहस्य तिवद स्मार्ताभ्यास्त्व लक्षणं चेन ॥ अ
त्र प्रकृत मनु संधीयते ॥ नन्वेकादशी
यदा विद्धा द्वादशी च त्रयोदशी ना ॥ दीक्षा ।
सा द्वादशी है तावनकं तत्रैव धीयते ॥ तथा
एकादशी यदा विद्धा द्वादशी च त्रयोदशी
शिरीनन्तरं विशेषोयन्त्र त्रुणानिरर्थकं ॥ स
नेका स्यैकभक्तानां च द्वादशी च यथा वा चेके ।
मिति द्वादशी च एवं कादि के विहितं ॥ न
क्त धूपहयति ॥ विषयेनेन व्रव स्थितं चे
त्स्यते ॥ एकादशी व्रतस्यानित्यत्वा द्व वस्या
मिद्धि ॥ तदुक्तं ॥ अविद्धान्यानि सिद्धा चेमल
मेनत्र त्यातिथिः ॥ कटक्तैः पंचभि विद्धाग्रा
ह्या एकादशी तिथि ॥ इति पंचमुहूर्त वि ।
द्धायाश्च त्रिबु क्षणात ॥ न तै कभक्ता दिवि
षयत्व त्र्यार्क्क विषयः ॥ नक्ता दि विषयत्वं । 195
वा स्कन्दस्त्वं विरोधः ॥ न त्र यतीनां तु तत्र क
र पूर्णा सुप वा सस्त्वत्र क्तं न सा त्र योदशपणापा
रणं स्यात ॥ नवल निषिद्धयथा ॥ कलाका ।
छा सुहूर्ते वा यदि स्यात्तु परेहनि ॥ द्वादशी
द्वादश्यां हे नित्र योदशपूर्णा तेस्याः उण ॥ तथा
च ॥ एकादशपूर्ण मुपोष्य व द्वादशपूर्णापारणं
त्रयोदश्यां न तत्र क्रयीत द्वादशी द्वादशी
न्ययानेः हन्यादि मत्स्य पुराणादिवाक्यैः
योदशपूर्णापारणं निषेधात्क थमुत्तरं पा ।
दोस्पष्टंचेचतस्येन्त्र ॥ त्रयोदश्यां पारणं विधा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शुक्ला कावला हि निषिद्धम: ॥ नन्वेकैव यद्युप
षणं ॥ कलाप्येकादशी यत्र परतो द्वादशी
न चेत् ॥ पुण्यं क्रतुशतस्योक्तं त्रयोदश्यां तु
पारणमिति ॥ स्कंदपुराणेपि ॥ एकादशीमुपो
न विद्धायां नैव कार्या सार्वं नादिके ॥ द्वादश्यां
मेव न क्रियां न त्रयोदश्यां तु पारणे ॥ पाद्मे च
ज्ञात्वैकेषां पाप्मतुष्टिं च वरं फलमिति ॥ त
द्विशेषो न भविष्यतीति चेत् त्रयोदश्यां पा
रणविधिर्निष्कामविषयः ॥ त्रयोदश्यां पा
रणनिषेधस्तु सकामविषयः ॥ नन्वेकेनैक
दशुद्धाने ॥ पारणं च त्रयोदश्यां निष्कामस्य
विशुद्धिरिदमिति ॥ नारदपुराणेपि ॥ पारण
न त्रयोदश्यां न कर्तव्यं फलार्थिभिरिति
नन्वेवं सर्वस्य नास्यैकादश्युपोष्य पार
णं कथं स्यादिति ॥ यत्र द्वादशी स्वल्पा वि
शेषिकायां तु क्षियमाणे तत्रैवोपवास
स्तत्कथं तु पारणमिति चेत् स्वल्पा ॥ तत्र तु
न वैकल्पं विधाय वा कावलात्रयोदश्यां
पारणमुपपत्तिरिति न किंचिदनिष्टं ॥ यद्वा त्र
योदश्यां पारणनिषेधवाक्यानि पारणप
र्यंतं द्वादशीसंभवे नातिक्रमस्त्रयोद
श्यां पारणेन कार्यमित्येवं परत्वेन व्याख्ये
यानि न तु तिक्रमे दोषश्रवणात् ॥ यथा
ऽहि किंचित्त्रयोदश्यां द्वादशीलंघनात्
न दोष इति ॥ नन्वयं पि द्वादशीवेदिकामा
त्राणां भवति ॥ न हन्यायाद्वादश्यां प्रात
मध्याह्निककर्मानुष्ठानासंभवात् कथं
द्वादश्यां पारणमुपपत्तिरिति चेत् ॥ मध्या
ह्निककर्मापि प्रातरेवापकृष्य कर्तव्यं पार
णकार्ये ॥ नन्वेकेषां गृह्य परमार्थं ॥ द्वादश्यां तु

196

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यदाल्पास्यादपकर्षेभुंजिमवेन॥ विधेर्मे
ध्यान्हिकस्यापितत्रस्यादपकर्षणमिति॥
एकदपुत्राणिपि॥ यदाभवेदतीवाल्पाहार
प्रीयाद्परिणेदिने॥ इषःकालेद्वयंकुर्यात्प्रात
र्मध्यान्हिकेऽपरेदिने॥ यदा॥ घल्पायाहार।
ग्रंपसृष्टिःपारणेकृत्वानित्यकर्मानुष्ठान
नंतरंभोजनंकुर्यान॥ तदुक्तंकात्यायनेन
विध्याधिकमवेन्नित्यंपारणेनिमित्ततः।
अहिन्नपारणेनात्र्वने ` ` कात्येभुंजिमवे
दिति॥ दैवलोपि॥ संकटेविषमेप्राप्तेहार।
पूर्णपारयेत्कथं॥ अहिन्नपारणंकृत्वापुन
र्भुक्तंनदोषभाक॥ पारणेनमव्रतैकभुच
वासरद्वयेनिवृत्यकुर्यान॥ तदाहकात्याय
नः॥ मतद्वयनिवृत्यर्थेनिवेदयेद्धवोधण।
मिति॥ तद्धपारणकृत्वायदितयेचिवाक्य
पोदकमिन्तुपोदकंपाकविपोषः॥ मंत्र।
त्र॥ अज्ञानातिमिरांधस्यव्रतेनानेनकेशव
व॥ प्रसीदसुमुखोनाथज्ञानदृष्टिप्रदोभ
वेति॥ हरकृतकहुपालस्मगततीनाथ।
निमेव॥ समासावाणिवमग्रानांप्रसीदमधुसू
दनेतिच॥ तदरूपाःश्राद्धाःपंचदशाना
ह्निकाहरिवासरसंज्ञासाप्रतिक्रमपा
रणंकुर्यान॥ तदुक्तंविष्णुधर्मोत्तरे॥ तद्द्वार।
पूर्णाःप्रथमःपादोहरिवासरसंज्ञकः॥ त
मतिक्रम्यकुर्वीतपारणंविष्णुतत्परः इति
उपवासेत्वशक्तोहहउपवासानुकल्पमे
कभक्तादिकंकार्यंतदाहपुराणमेवोपवास
व्रतेसमाप्तये॥ तदाहकात्यायनः॥ उ
पवासेत्वशक्तानामशीतेस्तुधेजिविनां॥
एकभक्तादिकंकार्यंमहदोपायनोऽब्र।

197

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विविति॥ कृमेगुवाले॥ एकभक्तेन नक्तेन न
थैवायाचितेन च॥ नातिक्रमेद्द्वादशीं तु उ
पवासेष्वनीनशेति॥ मार्कण्डेयेपि॥ एकभ
क्तेन नक्तेन तथैवायाचितेन च॥ उपवासेन
दानेन न निर्द्वादशिको भवेदिति॥ वायुपु
राणे॥ अथवाथवाशक्तो भोक्तान्नं दद्यात्ति
शकितः॥ उपवासफलं तस्य सम्यगश्रमम।
विष्यति॥ अत्र भोजनं ह्रोधोपितन्त्वणि रवा।
न भुणति॥ एकभक्ता हि वृत्ते को उपवासा।
दिषु भार्यादीना विनियोजयेयत्॥ नरकैकादशी
पुराणे॥ असामर्थ्ये शरीरस्य व्रते च समुप
स्थिते॥ कारयेद्धर्मपत्नीं वा पुत्रं वा विनया
न्वितं॥ भ्रातरं भगिनीं शिष्यवान्त्रणमिदे वि
णोविभिः॥ रवाणमूलं तेना पिपिरमान्त
गुवातिकेथ्रापाथणरदत्पोरमुपवासफ
लं लभ्य॥ यथाहकात्यायनः॥ पितृमातृ
पतिभ्रातृगुर्वर्थं च विशेषतः॥ उपवासंप्र
कुर्वाणः पुण्यं शतगुणं लभेत॥ हरिवंशे
नाबराते न्यासं श्रुश्रूषोविहितानि हि मेति॥ न
थाच॥ नारी च पतिशुश्रूषयैकादशप्रपाम्
पोषिता॥ पुण्यं शतगुणं यात्याहीति वैष्या
यनो ब्रवीत॥ उपवासफलं तस्याः पतिः (
प्राप्नोति सम्प्राय इति॥ तथा॥ रत्नपत्ये तथात्रि
याणैवैपाकादशपणमुपोषितः॥ पुरोधः
त्रिणा सार्धं फलमाप्नोत्यसम्प्राय॥ उ
पवासफलं ताभ्यां सममेव समाप्यते॥ त
त्रिणि तिथ्याद्रमः प्राहुः॥ पितामहादी
हिषण्वैकादशपणा उपोषणं॥ कुर्तेनात्ननं फ
लं विप्रः समग्रं समवाप्नुयात्॥ कलौ दशमा
लो पुण्यमाप्नोति वन सम्प्रायः इति॥ एका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रपीत्रतेस्नकेदानाचैनरहितेक्रियो
ते॥ नक्तमंववाहपुराणे॥ स्नानकेतन्मः
स्नानाप्रणामममनसाहोते॥ एकादपुष
नभुंजीतत्रतेमेवनलभ्यते॥ नक्ताद्वर्षम
कल्पितव्रतचव्रतेस्मृनियतव्रते:॥ नक्तेते
यनेरे: पुरदानाचेनविवर्जितमिति॥ १
स्नानकेभोजनमेकादपुपाकनाहारपुष
स्नानाभुंजेत॥ नक्तकवराहपुराणे॥ स्नात
केहनिभुंजीतएकादपुपासदानर:॥ ५
हारपुषात्नसमश्रीयान्नान्नाविसप्रमा।
सा च॥ कूर्मपुराणेपि॥ काम्योपवासेप्र
क्रांतेत्वनवाम्नस्तेतके॥ काम्येनामवु।
नेकार्योहानाचैनविवर्जिते॥ स्नानकेवर्ज
नेदानादिकेनदेतेव्रतेक्रियोत॥ यदुक्तं।
मत्स्यपुराणे॥ हीनाधिकास्नानकालाशु
द्धाहीनाधिकापरा॥ नवधैकादपीविद्धा
सम्पूर्णनिर्णयेसंग्रह:॥ शुद्धेयदेकेगाणह
द्वेविकारूवोवावस्थिता॥ द्वयोर्द्वयो:स
ममीचशेषेकादपीपरेति॥ शुद्धेकाद।
पुपासूपवास:प्रोक्त:॥ सचचतुर्विध:॥ य
थोक्तंभविष्योत्तरे॥ सनाहूलसनाहूलस।
भोजनमभोजनं॥ साहारंचनिराहारंचव 199
विधमुपोषणं॥ तत्रसनाहलभभोजनं।
साहारंचेतिक्रियाभेद:॥ चतुर्थंकृतास्न
नादिपरानुगत:केवलोपवास:॥ चतु।
र्णामपिस्वरूपंतत्रैवोक्तं॥ यावत्कृताह्नि
कोनस्याद्यावन्नाचेयतेहरि॥ तावदभ्य
र्थितास्नलनदृश्यते॥ पूजायिनाच्चनंसर्वं
पूर्णाभुज्याभुनक्रिया:॥ भक्त्याभुक्तोपुन।
र्भुक्तेतस्माभोजनमुच्यते॥ प्राहकृत्वापि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नेनर्थेसंतर्पयेत्रातिथींबांधवान् ॥ सार्वव।
र्णिकमन्नाद्यमन्नीयवैस्मभोजने ॥ सप्तधा
न्नाद्यपितृन्ग्नेगोभ्योऽहयामस्यतन्नतः ॥ प्रथो
पवासनियमस्नानस्वाहास्वधाहुते ॥ पत्युत्र
यो भर्तारं पूर्वविशेषविधयार्थरूपकाव
विशेषयासुतेनयाः ॥ चन्द्रस्मसाधा
रणः ॥ अत्रयुक्ताविधामैरेननिर्णयउक्तः
नेत्रकौहसीसहाकौहसीविहारनत्र
सूर्यसिद्धान्तेयथा ॥ सर्वापत्ताप्तातिथ्यव
उदयात्उदयगताः ॥ शुक्लादिविनिषेधार्य
वोक्तनादिविषैतिथिः ॥ नारदोपयुक्ते
ष्वाहितोदयवेलायांतांत्रारभ्यवाहिनाहि
काः ॥ यातिथिःसानुप्रवृत्त्यातिथिम।
हेमयंविधिरिति ॥ अत्रसूर्योदयाद
मधुनःसूर्योदयपर्यन्तंस्थितानापुरा ॥ दि
वसंध्याबलेनवातिथिविधुकाविज्ञायन्ते
यः ॥ नत्वहोराद्योदयवेलायांदर्शमोक्षे
कारस्पृशीविद्धेति ॥ केचित्तु ॥ अत्रहोरादृ
कालस्य अनेनरःस्वानापुनार्थ
स्वाजनादेने ॥ दानेदस्नाविधानेनअनस्न
फलमश्नुतेइति ॥ स्त्रीणांतुपुनर्विशेष
विष्णोबोलियते ॥ नारीनामर्थेपिरस्तु।
नायज्ञत्रयवअनादिकारिणी ॥ नान्य।
या ॥ नेदाहकान्यागवः ॥ आर्यापतिस
तैनेवधनारीमाचरेरिति ॥ विस्लशपि ॥ प
त्योजीवतियानारीसपवासव्रतंचरे
त ॥ आयुःसाहरतेभर्तुर्नरकंचैवगच्छ
ति ॥ मनुरपि ॥ नास्तिस्त्रीणांपृथग्यज्ञो
नव्रतंनाप्युपोषणमिति ॥ मार्कण्डेया
पि ॥ नारीयाभर्त्रननुज्ञापित्राभ्रातासुते।

200

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नेवा॥ निष्फलेन भवेत्तस्य यात्रनादिकं।
माचरेत्॥ हीनां चैतेपि चातुर्याणावनादि।
केन दृष्टे॥ न याचमनः॥ सोद्यमप्रकरण।
पुष्पालंकारवस्त्राणि गंधस्रग्पानलेपनं
उपवासेन दुष्यंति दंतधावनमंजनमिति॥
रजस्वलाभिभर्तारं पुत्रं भगिनीं भ्रातरं
वा प्राप्यैच यो विनियोजयेत्॥ इतिहा
स्त्रीत्राणि तेचैव येन भुंजीत॥ न दाहप
दीन सिः॥ भार्याः पत्युर्वैतं कुर्यो द्रायोपा
षणप्रतिष्ठेते॥ श्रेष्ठामथ्यापति रनाभ्यो वृत
भंगो न ज्ञायते इति॥ स्कांदेपि॥ पुत्रं वापि
न यो यतं भगिनी भ्रातरं च वा॥ एषामभा
वे चैवान्यब्राह्मणं वा नियोजयेदिति॥ प्र
कारं पुष्पं न भुंजीत नारी हृष्टे रजस्यथ॥ स
द्यस्तेपि रजोसि न न्या स्पृहा दर्शीव्रतमिति
न स्या॥ प्राप्त दृष्टौ हानपसानारीणां यदुक्तो
भवेत्॥ न नश्यापि व्रतं तस्यास्याद्युपरोधः क
हा वेनेति॥ वाकेरन्नोस्त्रुर्जस्वलायाश्च
पि व्रतं न लुप्यते॥ न त्रुपन्यादिना पि व्रतं कार
यितव्यं॥ नैन स्नुते पि सस्यव्रतफलं भव
ति॥ अन्नायाशौचिनां केते नमित्विवचन
विरोधः स्यात्॥ शुचि विवचनस्यः पंचमेहं
नियथा॥ पंचमेहनि शुद्धास्याद्दैवे पित्र्ये
च कर्मणीति॥ अनस्तुरजस्वलानां दीप
स्यादिकं चैव नियोजयेत्॥ पकारपुष्पान
भुंजीत नारी हृष्टे रजस्यथेति॥ पलस्य चैव
चैवान्नाद्यमपि न भुंजीत॥ रजस्वलासति
हृत नादिकं कुर्यादिति सिद्धं॥ पकारपुष्पं
सा वन्मादिके स्याडे प्रोक्ते॥ पितृप्रोक्षमस्मा
द्योपवासेक्र यात॥ नेनश्राद्धकं गेवि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हृत्भोजनमेकादश्याम भोजनेचयदि
हितेतत्कृतेभवति॥ तत्राहकात्यायनः॥ उ
पवासेयदानित्येश्राद्धेनैमित्तिकेभवेत॥ उ
पवासंतदाकुर्यादाघ्रायपितृसेवितंमि
ति॥ तथाचस्मृत्यंतरेपि॥ श्राद्धेयमन्नमेव
प्राश्नीतव्यमिति॥ एकादश्याः स्मार्तमते
ननिर्णयउक्तः॥ अत्रविज्ञानेश्वरमतस्थो
काः॥ इदानींविस्तरपनिर्णयमतस्थौ
काउच्यतेयथा॥ शुद्धाविद्धातथाविद्धा
भेदमूलमसमाधिकैः॥ शुद्धासमखडस्मखे
वव्यावसयानेतरेद्वयोः॥ शुद्धेप्येधियती
नोचनंवमेचपरेहनि॥ ग्राह्याकिंचलस्तु
कैःसूर्योदयव्यापिनेतरेद्वयोः॥ अरुणोदयवि
द्धाःस्युःसमन्यूनाधिक्ययावद्धितेति॥ तथाग्र
थांतरेस्कंदपुराणेचोक्तंयथा॥ दशम्या
कैकसंयुक्तानाडिकाप्युदयोदयः॥ नतत्रग्रा
नयशालस्यात्सपिहितुपुण्यमनःस्कंदरन्ति
नक्काह्रसणोदयकालेनरपामीयदिहृष्य
ते॥ साविद्वैकादश्यीनउपापश्चलशुपोष
णमि॥ सोरपशेषुच॥ प्रागुदिन्याह्वयधेला
याःप्राकशहृतेहयात्मिका॥ एकादश्यो
नसमर्पणविज्ञान्यापरिकीर्तितानि॥ शून्या
दीनाहृणोदयवेधनिषेधकान्यपिवच
नानिवैस्लवविषयानिज्ञानव्यानि॥ तद्
के॥ गरुडपुराणे॥ दशमीपावसयमृत्येयोरु
णाहृणोदयः॥ नैवापोष्यंवैस्लवेस्तत्त
ज्ञेनेकादश्याव्रतमिति॥ वैस्लवस्तुरुपंचरा
त्रपुराणे॥ परामापरमापश्रोत्रहवैवामप्र
पस्थिते॥ नेकादश्यीत्यजेद्यस्तुतस्यदी
क्षास्तिवैस्लवी॥ समान्यासवश्वेनेष्विजा

[illegible]

चारादविमुक्तः॥ विख्यपिताखिलश्चारः
सहिवैसव उच्यते॥ अतस्त्वाहणोद्य वैयो
पिदीहितैः परमभागवतेनोपवासः का
र्यः॥ अनेन सा स्नानमनागुसादिनो सवेषा
मपुत्रकं निर्णियान्न सारणीवंपवामइति मि
ठेतः॥ इति एकादशी सामान्य निरूपणं॥ अ
थ चैत्रादेएकादश्यो रुक्तन्यविशेषो लिख्य
ते॥ तत्रके विष्णुपुराणे॥ एकादश्यां तु
तः स्त्रीमिदैवैधज्याच कृष्किपणी॥ पुष्या
देकारवकर्णाच धपत्रागलतनपीति इति॥ त
त्रैवापराह्णोनाह्मस्मजाकार्या॥ तत्रके न
त्रैव॥ तत्रांपराह्णे वह्नस्त्रीप्रानेव पूंधार
कः॥ अर्धे मोलस्वंवंसेस्तुपज्यारगैः सवि
धिते इति॥ तत्रैव रात्रौ वासुदेवः सलक्ष्मी
कः सोत्सवमाहोलनीय॥ तत्रके ब्रह्मपुरा
णे॥ चैत्रमासस्य शुक्लायामेकादश्यां वै
ष्णवः॥ आन्दोलयति देवेशं सलक्ष्मीकं स
होत्सवैः॥ इमं नेमा चैयितास्व रात्रौ जाग
रणं चरेदिति॥ अथ ज्येष्ठशुक्लैकादश्यां नि
र्जला प्रसिद्धा॥ तत्र निर्जलस्य पवांसे कुर्यो
त॥ तत्रके स्कंदपुराणे॥ ज्येष्ठे मासि नृपश्रे
ष्ठ या शुक्लैकादशी शुभा॥ निर्जलां समुपो
ष्यात्र जलकुंभान्सशर्करान्॥ प्रदाय वि
प्रमुख्येभ्यः सर्वपापविवर्जितः॥ विष्णुलो
कमवाप्नोत्येवमोदते न विलसंशयात् इति॥ अ
थ आषाढशुक्लैकादशी शायनी॥ तत्र भ
ग्वान्च ल्पमालाल हलणसवर्णी शिरनिमित
लक्ष्मीनारायणप्रतिमां शेषशय्यां वास्तमा
कल्पा सेसह अन्यरात्रौ जागरणं प्रकुर्यात्
तत्रके भविष्यपुराणे॥ एकादश्यां तु आषाढी

203

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

माषाढेमासवोहरिः ॥ तजेनगोयायनेप्रोतेय
हाकीमाणिवेसदा ॥ नदानन्यतिमाकन्यांस
वेलल्लणमेयुना ॥ लमानशेषपर्यंके पोलस
द्विस्वाहमिः ॥ नाप्रारकाटरजेतेल्लयाचि
त्रपरेषुवालस्मांचोत्स नारल्लेषु विनाल्लच
गणप्तुजा ॥ नानाविधोपकरणैः स्त्र्याच।
विधिस्त्वेके ॥ उपवासस्तु कर्तव्यो रात्रौ जा
गरणंतथा ॥ तस्मात्रात्रौ व्रतीनायो हरिः।
पंचामृतजयेद्धरिं ॥ अघोरपूजितंयान्नृत्यगीत
वाद्यंनिवेदयेत् ॥ प्रभातस्मस्मुत्थायि ॥ प्रा।
तःस्नात्वासितंपवैद्वादश्यांपूजयित्वा ॥ १
प्रापयेत्प्रतिमांविप्रोः प्रालचक्रधराय।
णम् ॥ पीतांबरधरंदेवंप्रणांर्यकेसुवासिते
शुभे ॥ शुक्लांबरसमाच्छन्नेमोपदानेशुचि
हिवे ॥ इतिश्रासपुराणज्ञोविप्रमकल्लपा
प्रमान ॥ ल्लाप्रयित्वादधितीरहूतंतौइ।
जलेस्त्वथा ॥ सुमालमपुष्पमेघ्रपर्वधेवेदो
ललेहूत ॥ सुनितांजमुमेः पुष्के मेवेना।
नेनपारव ॥ मयस्तु ॥ त्वमेवयिजेगन्नाथ।
जगतस्तस्मेमवेदिर ॥ विबुद्धेत्वयिबुद्धेतज
गत्सर्वंचराचरं मिति ॥ एवंसंपूज्यदेवस्य
चातुर्मास्यव्रतेकृयोत् ॥ तत्र्कर्मसहा।
भारते ॥ आषाढेतसितंपवैसेषुकारपूजा
शुपोषितः ॥ चातुर्मास्यव्रतेकुर्याद्यत्किं।
चिन्नियतोनरः इति ॥ सनत्कुमारोप्याह
एकादश्यांनपूर्णायां संक्रान्तौकर्क
टस्यच ॥ आषाढ्यांवानरोभोक्ताचातु।
र्मास्यव्रतारिकमिति ॥ ब्रह्मा।रेमेमेत्रस्यम
नत्कुमारोकः ॥ इदंव्रतमयादेवगृहीत
पुरतस्तव ॥ निर्विघ्नंसिद्धिमायातुप्रसन्ने।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

न्वेषु मः ॥ सर्व्वांगयाति तेनैके गंधकेन रावे ।

नयिके प्रावृ ॥ गृहीतेस्मिन्व्रते देव यथाशूलं
करोम्यहं ॥ नवेमवनसेष्यणां नस्यसाल
ञ्जनाद्देनेति ॥ अत्र विशेषो ब्रह्मदराणे नौ
क्तः ॥ न ष्णोवेच माथ्य च शुक्रगुवेन्नवा
लितेयेः ॥ विष्णुं विचिंतयेन्नैवचानमोस्याषि
धीन रतिशायने कार्य्यणि अथ भाद्रपद ।
शुक्लैकादश्यां पारणे कार्य्यणि अथ मित्र पूजो
त्सवादिकं कुर्य्यात ॥ देवस्य पार्श्वपरिवर्त
नेकुर्य्यात ॥ तदुक्तं भविष्योत्तरे ॥ आश्व माद्र
पदे मासि एकादश्यां सिते हरिः ॥ कटिरा
नेमहाविष्णोर्महापूजां प्रवर्त्तयेदिति ॥ क
टिरानेन पार्श्वपरिवर्त्तने मिति भाद्रपदैका
दश्यां ॥ अथाश्विनशुक्लैकादश्यां पारणे सुपं
सजागरणादिकं कार्य्यं परिहृत्य विल
प्रजागरणादिकं कुर्य्यात ॥ तदुक्तं ब्रह्मपुराणे ॥
आश्विने तिथि प्रक्रमे ॥ सोपवासस्तु कर्त्त
व्य एकादश्यां तत एकादश्यां प्रजागरः ॥
हाहू पणावासुदेवस्तु पूजनीयस्तु सर्वथा ।
यात्रोत्सवः प्रकर्त्तव्यो यथाशक्ति पूर्णानवेत्सवः
उपवासस्तु तत्र पूर्णा पौर्णमास्यां हरिं यजेत् ।
दिति ॥ अथ कार्त्तिकशुक्लैकादश्यां पारणे प्रब
नैदेव प्रजागरो नाम्नावा देहि मन्त्रैः प्रबोधये
द्यात्रोत्सवं च कुर्य्यात ॥ तदुक्तं ब्रह्मपुराणे
एकादश्यां तु शुक्लायां कार्त्तिके मासि के
शवं ॥ प्रसुप्तं बोधयेद्रात्रौ श्रद्धाभक्तिसम
न्वितः ॥ नृत्यैर्गीतैस्तथा वाद्यैर्ऋग्यजुःसाम
मंगलैः ॥ वीणापणवशंखैश्च पुराणश्रव ।
णेन च ॥ वासुदेवकथाभिश्च स्तोत्रैरन्यै
श्च वैष्णवैः ॥ पुष्पधूपस्तु नैवेद्यैर्दीपवर्ते ।
स्तथाभ्यनैः ॥ इक्षुभिः मद्धैरिवपवफलैः फ ।

205

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

केशपाशयुतैः॥ सहस्रैः शतेन रक्ताम्भोजे दत्ता
म्भोजं च सर्वपापैः॥ ऊं कमलं रक्ताम्भोजं च रक्त
मेवेत्युक्तं कोणैः॥ नमोनगाश्रीखलीनायेद्य
दघुणामहणोद्ये॥ प्राणेद्धं तेन दर्वेणमघ
नालाय येनतः॥ इमालीरावचेनतः पंच
गव्येन पाख्यवन्॥ ऊ हूतेनेमूद्व्रर्थ्येमह
गामलकानि च॥ मर्धपाद्यप्रियगुण्ठमा
नलगरमलचया॥ मर्वैद्वधाः सर्वगंधा
सर्वबीजानि कांचने॥ मंगलानियुथा।
कामरत्नानि च क्रश्मीरक॥ पर्वमरेणाध्ये
देवेषु यात्रायाचनेशुभे॥ ननलकलशा
दयायुयाप्रामाः सलिलकृताः॥ जातीफ
लादि मसुक्ताः मफलाद्यममकांचनः॥ ए
णात्कवेदपाहेनवीणावेणरवेन च॥ पव
मयाप्यगीविदेश्वनलिमसलेहते॥ म।
वांसमप्रजपत्थगृहमनोभिः सकृकर्मैः॥
भूपेदीपमेनोहेसुपायसेन चयूरिणा
शन्नरानेसुहोमेसुतत्पेवदकूद्रविताः
वासोभिर्भूषणानेर्वानाभिरत्नेमनोजवैः
वाद्यस्यणाप्रजनीयाद्य विसारीय्याघ्रम
नेयः॥ नत्रपिहाश्रनेयन्स्यानन्दो येद्वा।
न्नाणः सर्वेति॥ भविष्यन्तेपि॥ कार्तिके
शुक्लपक्षेतेनपुकारपफएयापत्त॥ मेत्र
णानेनराज्ञे इहयथुस्थापये हि जः॥ मेत्र
श्च॥ इहे विलसितिनैवदिकः॥ पौराणिक।
ल॥ अघोरहनशदिन्द्रजवेनसूर्येसोमा।
हि भिवैदितवेदितीय॥ वधान्यदेवेशान्
गत्रिवासमेत्रप्रभावेन सदैवेन्द्रदेव॥ यद्य
वइयचहाहूणौ देवपुत्रवाधापंचविनिमिता
वैयेवसर्वलोकानोहितायैगोद्धप्राय

206

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ना ॥ ३ निर्होमो निष्ठो गाविरक्तजनविर्जना
त्यते ॥ नियम्य मनसा तस्य मनस्स्थितेन वा स्थि
ते जगत्पति ॥ एवं मन्त्राण्यनेन मंत्रेण मंत्रे।
ण पुष्पांजलिं दद्यात ॥ चरणाम्पवित्रमि
ति वैदिकः ॥ पौराणिक कल्प ॥ गन्धमेवावि
य स्रुवनिर्मलनिर्मलादिपः ॥ पात्रवालि
च पुष्पाणि मुक्त्वाणा मम केशव ॥ समुत्थि
ते न ततो विशाधिक्रियाः सर्वा शुकल्पयेत् ॥
महाव्येवैष्णवाग्नौ ध्यामये त्वत्परनेस्थिते।
३ स्थिते देवदेवेश नैगरे पार्थिवा स्वयं ॥ रा
त्रौ जागरणं कुर्यादेकादश्यां सदालये ॥ प्र
भाते विमले जाते स्नात्वा भोजयित्वाहि जोत
मान् ॥ आचार्य्य नेभ्यस्तु तोदयात् दक्षिणा यथा
विदेवहि ॥ चातुर्मासे तु पक्षभोज्यादिके
वन्ते वार्षिकानामासायेन यानियमः कृ
तः ॥ कथ्येत्विवाहि जेभ्यस्तु दयाद्दक्षिणा।
मरहिताम् ॥ एवं विसर्जयेद्देवं तु नैनोवे
तीतेनन्वयेमिति ॥ व्रतसमापने मंत्र
मन्त्रकुर्यात्स्कः ॥ इदं व्रतं मया देव क
तेश्चीत्य तव प्रभो ॥ न्यूनं संपूर्णतां यातु त्व
त्प्रसादाज्जनार्दने ॥ निन्द्रीवेधिनी ॥ ॥ प्र
थमं गं पुष्पदीपं सुतले कारपति षुवत्तरा
हेतुयातो कवरं याति अनानुष्टानेन यथा
दैवासः मन्तु च समप्रत्पहः ॥ तथा मार्ग
शिरो मासि दंपूर्णमानि यतमवान् ॥ कार्त
देवार्चनं धीमान् त्रिकार्यं यथाविधिः ॥
शुचिवासः प्रसन्नात्मा हुत्वा मंत्रैः ससंस्कृ
ते ॥ भक्त्या पंचयेदेन वाचुनः पौचवेत्पा
रयोः ॥ कृत्वा होत्तलमात्रं नदीरहद।
समहूर्ते ॥ मन्तयेदनकाष्ठं चतनस्वाच।

स्मयत्नने॥ सहस्राकाशानि सर्वोत्मि वि
ध्यानाजनार्दने॥ पाञ्चजन्यगदापाणि
ने नवकिरीटिने॥ प्रसन्नवदने देवसर्वे
लक्षणवते॥ ध्यानात्पुनर्जन्मनेशुद्ध ।
मानेजनार्दने॥ ध्यानात्सर्वदापयेनसमकर
तोयेनमानवेः॥ एवम्भुधार्गेदाकोनेस्म
वालेमहात्मने॥ एकादशपणिनिराहारः॥
स्थित्वाहस्मपरेहनि॥ मोक्षपापित्रुद्वीका
लप्राप्नोमेभवात्मुने॥ एवमुक्तानन्तोरा
ग्नेदेवदेवस्यस्मनिधौ॥ जपन्नारायणाय
तिसुपेत्तत्रविधानतः॥ तेनःप्रमानेविम
लोनदीगत्वासमुद्रगा॥ हृनराचार्यनद ।
केवार्हेवामियनान्मनो॥ प्रानीसर्ति
कोशुडामेत्रणानेनमानवः॥ घायत्रणयो
वर्णावनोश्चनानोदेविसर्वदा॥ नेनसर्वे
नमपापयात्वन्मोचयसर्वने॥ प्रमाडे ।
दसनीर्थोणिवरेः सहस्राणिदेवने॥ तेन
सोमहलिकासहस्रमालभामिनयोटि
ने॥ वीयसर्वेसानिन्याःस्थित्वावरा
सर्वदा॥ तेनसोमहलिकामयुप्रतोऽकर
नमाचिर॥ एवंस्हनयानेन्येप्रमाया
त्मानमालभेन॥ निष्कलापोवसहया
ऊंडेमालिख्यवैजले॥ ननलक्ष्मिवरः
स्नात्वासमाहूनिगन्धवारितः॥ स्नात्वा
चमनकेशवन्पुनदैवहृदयेजनः॥ नत्रा
रायणमहायोगदेवनारायणंहरि॥ केश
वायनमः पादौकटिदामोदरायच॥ उ
रुयुग्मनृसिंहायउरःश्रीवत्सधारिणे ।
कण्ठेकौस्तुभनाथायवक्षःश्रीपतयेन
मः॥ त्रैलोक्यविजयायेनिवाहूसर्वदा ।

208

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नेचनमः ॥ स्थ्योगयाशिरो चक्रे शोकनाशे
निवासिने ॥ गंभीराय निवगराहामंभोजेशं
हमृते ये ॥ एवमभ्यर्च्य देवेशं देवं नाराय
णंप्रभुं ॥ शुचन्सन्सप्तनः ॐ भास्वतनः स्था
पयेद्बुधः ॥ जलमध्येत्समलंधात्सुस्थितचं
दनेलिपितान् ॥ वनपल्लवस्त्रीवाल्मित
मश्चाविभूषितान् ॥ स्योगानातामधातेत्व
निलशैलैः सकांचनैः ॥ वनानंदस्तेसमनुइ
न्नकलशाः परिकीर्तिताः ॥ तेषांमध्ये
शुभपीठं स्थापयेद्दृत्यगामिने ॥ तस्मिन्स्था
पयेत्तोयत्वेनाश्चवःयरवकेनया ॥ बलाम
सर्वेषांप्रांगाणांपालापिपात्रमिष्यते ॥ ना
यपूर्वचनस्तलातनस्मिन्नावेननोनामेत ॥
मोहरोमसन्पूर्णनकनाहदेवजनार्दनं ॥ वि
दवेदाचासेपुरुष्कल्पतिस्मृतिविश्रुतैः ॥ न
नानाविधैर्महृतैः फलैः पुष्पसुशोभित ॥
गन्धैः पुष्पैश्च वस्त्रैश्च पूजयेतयथाविधि ॥ र
मानलक्ष्मनानादेवरायथादेवनयोदताः ॥ म
न्त्रेणानेनहन्मामवाडहारकेपूजव ॥ प
वत्रुस्यात्तेन स्नात्रा जागारेनिशिकायेत
यथाविभवसारेण प्रमानेविमलेनया
चेनएगाब्राह्मणेनावचनंगेदापयेत्दत्त
ले ॥ सर्वेनवस्त्रेच दयाशकेरोगायचहरि
ले ॥ यजुः प्राख्याम्निनेदयान्यश्चिमच्छे
शुक्लम ॥ उत्तरंकामतेदयाहेमणवंवि
धिः सहनः ॥ ऋग्वेदः प्रीयतांपूर्वं सामवे
दस्तुदक्षिणो ॥ यजुर्वेदः पश्चिमतोऽप्य
थर्वनेरणाच ॥ अनेनक्रमयोगेन प्रीयता
मितिवाचयेत् ॥ सन्त्रपतंपचसौवर्णमा
चार्याय निवेदयेत् ॥ गांपयस्विनीं दद्या

२०९

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मग्रस्याविधिवन्नमान ॥ यस्मिन्मेरुरुद्दम
हमेत्रैवेवोपणात्येन ॥ विधानेनस्यैवहा
नात्स्वाकोतिसुणोलं ॥ अनिपघत्रत्रेष
क्रमोहाहिप्रतिपद्यते ॥ नजन्मकोटिन
रकेपपूपनेपुरुषाधमः ॥ विधानस्यपद
नायोगुरुरितिस्तुद्यानेबुधैः ॥ एवंदत्वाविधा
नेनहारपूणाविसमर्वयेन ॥ विप्राणामो
नेनदद्यायथाशक्त्यासादरैस्तिको ॥ धृमि
णायपरमान्नेननूतः पञ्चान्यदेवमः ॥ मु
नीनसहितानाविप्रेर्भोज्यवत् सप्तमैदिवः ॥
येनेनविधिनायत्नपरणोधन्नकुर्वतः ॥
नस्यपुण्यफलेराजन्पूणस्त्वंयेनावर्ष ॥ ए
हिवश्वसहस्राणि सहस्राणिभवन्तिहि ॥
ग्रामश्वसहस्राणि नल्पभवेद्यदिमर्त्यव्रत
नहानीमस्यपुंसःफलकथयितेमवे
न ॥ यदस्मिन्श्रावणेदेवेत्राहारपूर्णोकल्पवृ
क्ष ॥ पूर्णेनिवाससर्वपापैसर्वैरेवप्रमु
च्यते ॥ नियमार्णावतेषुमत्स्याहारपौष्वते
प्रथपौषमासमेकाहारपूणाष्टवेनियम
स्तानादिकंक्लालकर्मेशेषितदेवसम्य
न्याहारपूणमावाचार्येथस्याल ॥ कलपा
पात्राहिविधिस्तमार्गशीर्षेकाहारपूणम
कपकार्यः ॥ नतुकेवराहूपराणे ॥ नयेव
पौषमासेनधंगृनमाघिनसवैः ॥ नतेहा
मैमवेदेवः स्वयमेवजनार्दनः ॥ नस्यप
निष्यिरुहिष्णुरुष्ठावक्रुमेशपिताः ॥ प्रण
मामस्यापशुदाहारपूर्णोमृक्रपदातनः ॥ त
स्यापापवत्सकल्पनदत्तस्नानादिकाः क्रि
याः ॥ निर्वर्त्यगायत्र्याग्रामेकाहारपूर्ण
जनार्दने ॥ एवंकात्रेणनिशुद्धदेवदेव

गंगाकूपे ॥ मंत्रस्तु ॥ कर्मोयपादौ स्त्रमंत्र
स्तत्र जनार्दनायेति हृदः कटिं च ॥ सर्कंष
णायेत्युदरं च विश्वेः ग्रीवां भवायेति न ।
त्रेत्रके ॥ हृदयात् हृदये चेति भुजौ शिरस्तु ।
विष्णुलिने त्रोयशाघाम मंत्रः ॥ ततासम
त्रेताः पितृभ्योनानाविधैर्विधैः फ
लैश्च ॥ शर्मध्याने वकलशान् रत्नसम्याक्ष
मालैः सितकंठयाश्च ॥ नमस्तनामंत्रण
वेद्यकना संस्थापयात्रे हृतन्त्रसंपात्रे ॥ सू
तैनेट्येत्र सेटचोपरि संत्रिवेष्य पत्नाक्षाम ।
णायेव मसर्वं स्यात ॥ इति ॥ स्नानक्राम ।
णामेननार्हिविधिः ॥ एको कपवग्रासः ।
इति कामे संहारणीवने ॥ एवमाता शुक्लेका
दश्यां संवासंवत्सरं पिणांदेवसर्ववी ।
जैस्तुपूर्णां पूर्णांकलशपोपरिस्थापयेत् ॥ सौ
वर्णांदेपात्रे स्थापयित्वा सेतुरूपहारदपूण
श्च संनाययरस्थानं ॥ मत्रा विधिवत्सारोपूजी
यैकादश्यारकपव ॥ नत्रकेशवाहश्रागे ।
पवमानेनितेपवेहात्द्रपूणे सुरणीया तः
वत्रपुस्प श्रुणधायांश्रुतेपरमयानिर्के
तुकर्म ॥ वराहायेति पादौ तुमाधवायै
ति वैकटिं ॥ तेनन्हायेति जठरं विश्वरूप
स्यारोदरे ॥ सर्वज्ञायेति कंठं तु प्रजाना
पतये शिरः ॥ प्रद्युम्नायेति च भुजौ दिव्या
स्त्राय सुदर्शनं ॥ अमृतोद्भवाय पात्रं च ।
एवमभ्यर्च्य विधिवत् ॥ प्रतिमास्त्रु
पतः ॥ तत्र पात्रस्थानसौवर्णां वराहं कारये
द्बुधः ॥ देवस्याग्रेणोडरन्नं स्त्रीमंडलवन
इमोस्तु ॥ माधवमंत्रहृतंस्ववराहेन्द्रपमा
सितान् ॥ सर्ववीजं सुतेपात्रेरत्नगर्भस्तुतो

दरि॥ स्नापयेन्नरमेदेवं जानन्नयमव्ययं हृ
षि॥ दानार्चनेविधिः पूर्वोक्तपंचेतिवैशाः
ह्वादशीव्रतं॥ अथफाल्गुणेकारपपाश्र
वैशुक्लपोष्यसौवर्णंन्नरसिंहंसौवर्णादिः
पात्रस्थपूर्वणीकलशोपरिसंस्थाप्यपूज
यित्वाद्वादशपूर्णाब्राह्मणायनिवेदयेत्॥ श्रा
नःसर्वोविधिःपूर्वोक्तपंव॥ नडकेवपृह
श्रुराणे॥ तद्दत्फाल्गुणमासेनशुक्लपक्षे
नद्वादशी॥ उपोष्यप्रोक्तविधिनाहरिम
गाधयेद्भक्तधीः॥ नरसिंहाययापोनगोवि
दायेत्युरुस्तथा॥ कटिंविश्वभुजेपूज्यश्र
निरुद्धेत्युरस्तथा॥ कंठंचपाणिकंठायेति
गाकेयापयेवैशिरः॥ श्रस्तंधर्मनायेतिच
क्रतोयान्मनेतथा॥ शार्ङ्गिनेत्यनसंपूज्य
गंधपुष्पफलेस्तयेतिनरसिंहद्वादशीव्र
तं॥ हयमेवामर्दकी॥ तत्रामलकद्वादशी
स्थितेविलंसंपूज्यप्रहरोत्तिंजयोनरः॥ तदु
क्तंभविष्योत्तरे॥ फाल्गुणमासिशुक्लाये
मेकादशपुजनार्दनः॥ वसत्यामलके
द्वेलक्ष्याससहजगत्पतिः॥ ततःसम
भ्यर्च्यदेवंपापानमजयोन्नरहिताण॥ उपो
ष्याविधिवत्कन्यंविल्लोकेमहीयते॥ इ
त्यामर्दकी॥ अथचैत्रशुक्लैकादशपपाम
ग्रोष्यसौवर्णवामनंसंपूज्यकवित्वाकादि
मयुक्तंद्वादश्यांपंचात्राह्मणायहद्यात्॥ तदु
क्तंवराहपुराणे॥ एवमेवतुचैत्रेमासिचैत्र
संपूज्यद्वादशी॥ उपोष्यागदयेत्नास्वाह
वदेवंजगद्गुरुं॥ वामनायेतिपादौतनावि
सवेकटिमेवचपूजयेत्॥ वासुदेवेतिजठरं
रंःसंकर्षणकायच॥ कंठंविश्वभृतेपूज्य ९

ह्चर्याभिधानात्रयोदशीकर्मेव ग्राम्या

शिवरात्रे मोमद्रपिने ॥ बाह्यविसर्जिते पूज्य
स्वनाम्ना श्रीवत्सचक्रके ॥ प्रागुक्तपात्रे संस्था
प्यवामनं कांचनेनैव धः ॥ यथाशक्त्या हेम
ने हि त्रिमितयज्ञोपवीतिकं ॥ कुंडिकां स्था
प्यपार्श्वे तच्छत्रं तिर्यक्पादुके तथा ॥ अक्षमा
लां संस्थाप्य हस्तिकां च विशेषतः ॥ एते
रुपस्कारैः शुक्लं तु भाजनेस्थिरं हिजायतेन ॥ दापये
त्सोपयंतां विलक्ष्य स्वत्पीनत्वदीरयेत् ॥ मास
नाम्नां तु संपूर्णं प्राग्भोगविधानकं ॥ प्रीय
तामिति संवत्सविधिर्वे प्रकीर्तितं इति ॥ म
त्स्यपुराणोक्तप्रयत्नात् मेरुपीपीयतामित्या
दिप्रयोगः ॥ स्कंदे रुद्धश्रुत्यैतिवामनद्वादशी
पूजनं ॥ अथवैशाखशुक्लैकादश्यां पूर्वे
द्युर्मोक्तयाविधिंपरशुरामं संपूज्य द्वादश्यां प्रा
तःपारयेत् ॥ तदुक्तं वराहपुराणे ॥ वैशा
खस्याथ मेवं तु संकल्पविधिनानरः शुप
क्ष्य ॥ जामदग्न्यपादौ तुदरं संवत्सर
त्रिके ॥ शिरः सहस्रशीर्षाय पूर्वावेचक्रे स्वना
मनइति ॥ प्रतिमा स्वरूपेण ॥ जामदग्न्ये तिवि
ख्यातेनाम्ना स्वरूपविनाशिने ॥ रविणि पराशु
रसेन तस्य देवस्य कारयेत् ॥ वैशाखेनने वे
पात्रेण संस्थाप्य देवमिति ॥ जामदग्न्य
द्वादशी ॥ अथ ज्येष्ठशुक्लैकादश्यां पूर्वपत्नीसा
र्वाणीरामलक्ष्मणौ संपूज्य द्वादश्यां पारणं स
मापयेत् ॥ विधिस्तु पूर्वोक्तं एवमंत्रेषु
विशेषः ॥ यदुक्तं वराहपुराणे ॥ ज्येष्ठमासे
प्येवमेव संकल्पविधिवन्नरः ॥ अर्चयेत्पर
मेश्वरं पुष्पैर्नानाविधैः शुभैः ॥ नमोरामा
भिरामायपादौ संपूजयेत् ॥ त्रिविक्र
मायेतिकटिं धृतविश्वायचोदरं ॥ संवौ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]

यथाविधिवासुदेवनामानमभ्यर्च्यमार्गके ॥ मनुष्य
पिरमभ्यर्च्यपिंडलस्यमहात्मने: ॥ प्राप्नुय
स्मृयगाश्चैत्रौसौवर्णीरामलक्ष्मणौ ॥ अर्चये:
नाविधानेनप्रभातेवासलिलाशयेनौ ॥ हलनद्यौ
मनुसः कामसौस्रलासुरूषेणनरइति नामस्रा
दशी ॥ अथाषाढशुक्लद्वादश्यांपूजायोग्यस
वैष्णविधिनाचर्नंदेवासुदेवस्यप्रद्युम्नस्यद्वा
दशपर्णसालग्रामायर्घ्यात ॥ विधिपूर्वकप्रव
मंत्रेणविशेषः ॥ वासुदेवायपादौन्तकटिं
संकर्षणायच ॥ प्रद्युम्नायेतिजठरंमनिरु
द्धायवैशिरः ॥ चक्रपाणयइतिभुजौकं
भुपतयेनमः ॥ स्वनामाश्चावयवेकेशवका।
षायेतिवैशिरः ॥ कांचनेवासुदेवनचान
सुदस्तुनाननं ॥ नमस्कृत्यविधानेनगणपय
मोटिभिः क्रमात् ॥ प्रातःस्नात्वाप्रमोदयेत्था
देवताविनिसृजते ॥ वासुदेवसंकर्षणप्र
द्युम्नानिरुद्धपुजनवर्जंइतिवासुदेवद्वाद
शी ॥ अथश्रावणद्वादशीपौष्णलेकृष्णपूर्ण
दामोदरनामानंदेवसमभ्यर्च्यपूर्वोक्तविधि
नाद्वादशपर्णसालग्रामायर्घ्यान ॥ मंत्रेणवि
शेषः ॥ पद्मनाभायहृत्कृष्णाये ॥ दामोदराय
पादौनाभिंरूपसीकेशवायवैकटिं ॥ सनातना
येत्युदरंउरः श्रीवत्सधारिणे ॥ चक्रपाण
येइतिभुजौकंठंचहरयेनमः ॥ मुंजकेशा
येतिशिरोमंत्रायेतिललाटकं ॥ स्वनाम्ना
चावयवेकेशवपूजयेत्प्रमेश्वरं ॥ कांचनेदे
वदेवचेदामोदरसनामकं ॥ प्राशनेवाह्म
णेदद्यादेवदेवगणपारगोइतिदामोदरद्वा
दशी ॥ एवंभाद्रपदशुक्लेकादशपूर्णसौवा
र्णीकांकिंप्रपिनदेवपूर्वोक्तविधिनासम

214

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हवर्याभिधानात्रयोदश्यांकेशवप्राग्रा

भाद्रेद्वादश्यांब्राह्मणायदद्यात्॥मेरुलवणं
हृष्याणि॥नमोस्तुकार्तिकेयपार्श्वेहृषीकेशप्रा
यचकीर्त्ति॥त्रैलोक्यप्रथमसनाथेतिजगाम्यतेन
योदद्यं॥प्रीतिकंठायकंठेचावद्धपाणिचवे
भुजौ॥चतमुंजायेतिहस्तौविश्वरूपेतेनथां
प्रिये॥एवमभ्यर्च्यमेधावीप्रातरुत्थायव्रती
ततः॥विन्यसेत्किंतेदेवंसौवर्णानंचकार
येत्॥कृत्वाप्रभातेविप्रायप्रदद्यात्काम्यवि
तमस्तुइतिकार्त्तिकेद्वादश्यां॥एवमाश्विनशुक्ले
कादश्यांपायसेनाभुक्त्वावैसंपूज्यद्वादश्यां
ब्राह्मणायदद्यात्॥विधिरेषप्रोक्तएव॥म
त्रेणविप्रेभ्योयथावाञ्छयात्॥नदद्यात्सु
गुरुमासिद्वादश्यांशुक्लपक्षतः॥संकल्प
मार्चयेहृषीकेशमनामेसनातने॥पद्मनाभं
प्रपासेनकारयेत्पद्मयोनये॥उद्गमवदे
वायशुक्लवासायवैनमः॥श्रद्धायायतेपा
पानांप्रायश्चित्तानिसंजयेत्॥प्रथमायपि
रःशुद्ध्यप्रायश्चित्तदंप्रायेनमेत॥नमस्तेऽव
केशवपद्मनाभंतुविन्यसेत्॥एवमेवतुसं
पूज्यगंधपुष्पादिभिःक्रमात्॥प्रभातायां
पातःयांब्राह्मणायनिवेदयेत्॥इतिपद्मना
भद्वादश्यां॥कार्त्तिकशुक्लेकादश्यांसौवर्णं
योगीश्वरयोगनिद्रास्थितंसंपूज्यद्वादश्यां
ब्राह्मणायदद्यात्॥तदेवंगवेद्युते॥स्मृत
राजन्मयाबाहोद्वादश्यांमासिकार्त्तिके॥उ
पोष्याद्वादश्यांयेनयज्ञानांप्राप्यतेफ
लं॥प्राशियानेनसंकल्पस्नानेनद्वेकार
येत्॥विभवेनाथयइहदेवनारायणमक
ल्मषं॥नमःसहस्रशीर्षायसशिरःसंपूज
येत्देवः॥पुरुषायेतिचयत्नात्केशवविष्णा।

रूपिणे ॥ ज्ञानाख्याय तिथायांतिश्री वत्साय
तथा स्तुराः ॥ जगद्व यिसेवे श्रुजानु द्ववे दिवाय
नेये ॥ करिस हृस्व पादाय पादे देव मामजा
येन ॥ प्रत्न लोमन देव प्रो पूज यित्वा विचक्ष
णः ॥ नमो दामोदराय ति सर्वांगे पूजयेद् गे ॥
एवं संपूज्य विधिना तस्याग्रे चन्द्र रोव सान ॥
स्थापयेद्दवना भोक्त मिन चेदन वर्ध्य मान ॥
स्वरूपं मवद्भ स्त्रीवान्नि नवक्त्रा व्रतुन्दिना
न ॥ स्थगिता नाक्ता वपोचैकृतिनवग्रैः सका
चैनैः ॥ चत्वारः सागरस्तत्र कल्पितावा ज्ञमत
म ॥ तन्मध्ये शागविधानेन सोव वंश स्थापयेद्
गि ॥ पोडपारेन त्याचक्रे दविस्थ वक्र सिद्ध
ते ॥ योगेश्वरे योगनिद्रा सहितं पीतवाससं
उपाध्येव नसपूज्य जागरेनवकारयेत ॥ कृ
योच्चैवेसवे यानो गजे श्रोगेश्वरं हरिं ॥ एवं
कृत्वा प्रभाते तु वामणाय निवेदयेत ॥ श्रुति
योगीश्वरे कारूपी व्रते ॥ इति पंचमी व्रतानि
समाप्तानि ॥ अथ सिद्ध विकल्पादिकं लिख्य
ते ॥ पकार रूपी शुक्रवारे सिद्धा ॥ नष्टकौ ॥ प्र
शुक्रे णत्राति पन्नष्टी पकार रूपी न्याद ॥ सो
मवारेणा विरुद्धा ॥ नष्टकै ॥ वरे चित्रातनाबा
[illegible] विशाखाविका ॥ पकाररूपी
त्रयोदशपौ न ह योगाः प्रकीर्तिता ॥ पकार
रूपेण तत्र नाहि कर्म कार्य ॥ नरस्व न नत्वेन त्या
सुक्त मेव ॥ पकाररूपा प्राणहर्ता नाव
देतं ॥ हस्त्येकमेवनवचमेतिलानीति ॥ पौ
षशुक्ले पकाररूपी मन्वादि ॥ यथोक्तं ॥ पका
रूपी चपोषके ॥ सर्वास्वकार रूपीस्थिति
थि तैनपिवः प्रज्ञः ॥ नष्टकौ ॥ पकाररूपी
शिवमेति ॥ धनुरस्येकार्करो हे पकाररूपा

216

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हृचर्यो भिप्र...द्वादशीकैव ग्राह्या

शुभा ॥ उक्तं च ॥ परः परेषामित्यादि ॥ एक
पण माघे यथा हि विषयोगिनी समष्टा ख्या
तानकार्यं ॥ इत्येकादशीनिर्णयः ॥ समाप्तः ॥ ॥
अथ द्वादशीनिर्णीयते ॥ द्वादशीतिथि
रुपवासादिषु एकादशीयुक्तैव ग्राह्या ॥ तदु
क्तं निगमे ॥ कृष्णद्वादशीयुक्तेति ॥ क्रमेणु
गोरे ॥ त्रयोदशीविद्धा निषिद्धः यथा ॥ नाग
विद्धा तथा षष्ठी शिवविद्धो दिवाकरः ॥ का
मविद्धो भवेद्विष्णुर्न ग्राह्यास्तेवमासरा इति
विष्णुद्वादशी ॥ कामत्रयोदशी ॥ वर्षद्वाद
शीकृत्येषु धर्मग्रन्थेषु वोक्तं ॥ विष्णुधर्मोत्त
रोक्ते ॥ आश्वयुजश्रावणद्वादशी ॥ श्रवणनक्ष
त्रयुक्ता श्रवणद्वादशी ॥ सा यदि एकादश्यामे
व स्यात्तदा विष्णुशृंखलाख्यो योगः स्यात् ॥ त
त्रैकादश्युपवासेनैकादशीव्रतद्वादशीव्र
तद्वयमपि कृतं भवति ॥ तदुक्तं मत्स्यपुरा
णे ॥ द्वादशी श्रवणस्पृष्टा च स्पृशेदेकादशीं य
दि ॥ स एव वैष्णवो योगो विष्णुशृंखलसंज्ञ
कः ॥ तस्मिन्नुपोष्य विधिवन्नरः संक्षीणक
ल्मषः ॥ प्राप्नोत्यनुत्तमां सिद्धिं पुनरावृत्तिदु
र्लभामिति ॥ यदा च द्वादशी श्रवणयु
क्ता यामेकादश्यां द्वादश्यां श्रवणं वर्धते
द्वादशी न्यूना भवति ॥ तदा तिथिष्ठतो नापेक्ष
णीय ॥ तदुक्तं ॥ तिथिनक्षत्रसंयोगमुपवा
सो यदा भवेत् ॥ तावदेव न भोक्तव्यं यावन्नै
कस्य संक्षयः ॥ विशेषेण महीपाल श्रवणं
वर्धते यदि ॥ तिथिक्षयेन भोक्तव्यं द्वादशीं न
वलंघयेदिति ॥ यदा चैकादशी सम्पूर्णा द्वा
दशी च श्रवणयुक्ता भवति ॥ तदैकाद
श्यामुपोष्य द्वादश्यां च इच्छया उपवासः का

217

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यः ॥ ननु पारणे चोपवासपरिसमाप्तिः ॥ तद
भावे सर्वव्रतानां समाप्तेर्व्रतानां नैकं न समग्रं फलं य
था ॥ अत्र समाप्ते व्रते न सर्वे नैव कर्तव्याद्वैतानतंगमि
ति ॥ अतन श्रवणद्वादश्युपवासः कथं स्या
दिति चेन्मतं ॥ उभयोर्व्रतयोरेकादशीवत्तत्वा
न्नैराश्यः ॥ तदुक्तं ॥ एकादश्युपोष्यैव द्वाद
शीं समुपोषयेत् ॥ न चात्र विधिलोपः स्यादु
भयोर्दैवतं नरहरिरिति ॥ यत्तूपवासद्वयकार
णे समर्थस्तेनैकादश्युपोषणं श्रवणद्वाद
श्यामेवोपवासः कार्यः ॥ तस्मात्फलमुभयोः
गवेन प्राप्नोत्येतत् ॥ एकादश्युपवासफल
प्रापकत्वाच्च ॥ यदुक्तं ॥ उपोष्य द्वादशीं पुण्यां
विष्णुऋक्षेण संयुतां ॥ एकादश्युद्भवं पुण्यं न
रः प्राप्नोत्यसंशयमिति ॥ तथा ॥ एवमेका
दशीं भुक्त्वा द्वादशीं समुपोषयेत् ॥ पूर्ववा
सजं पुण्यं सर्वं प्राप्नोत्यसंशयमिति ॥ त
था ॥ एवमेकादशीं भुक्त्वा द्वादश्यां समुपो
षयेत् ॥ यदा द्वितीये दिने श्रवणं न तत्रैवर्क्ष
ते तदा ऋक्षं तदेव पारणीयं ॥ ऋक्षान्ते पार
णा कुर्याद्विना श्रवणरोहिणीमिति वचनात्
यदा त्वेकादश्यामेव श्रवणं तत्रैव स्यात्
द्वादश्युपोष्या ॥ तदेकादश्यामेव श्रवणद्वादशी
व्रतं कार्यं ॥ तदुक्तं ॥ या काचित्तिथयः प्रो
क्ताः पुण्या नक्षत्रयोगतः ॥ तास्वेव तद्व्रतं
कार्यं श्रवणद्वादशीं विनेति ॥ भविष्योत्त
रेपि ॥ एकादशी यदा न स्याच्छ्रवणेन सम
न्विता ॥ विजया नाम सा प्रोक्ता भक्तानां
विजयप्रदा ॥ एतावानेव विशेषः ॥ श्रव
णैकादश्युपवासे वामनावतारः पूज्यः ॥ श्रव
णद्वादश्युपवासे जनार्दन इति ॥ विधिस्तु कथ

218

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ह्वयोमिधानात्रयोदशीकर्मेव ग्राह्या

व॥ अत्र स्त्रीशूद्राणां नादिकेमनंतफलं भवति
नतु कं विलग्नमांतरे॥ न भक्ष्यं शुक्लद्वादश्यं
न त्वे व श्रवणयुते॥ तस्यां तीर्थेषु यत्स्नानेन
दानेन फलमश्नुते॥ देवतां भोजनं विप्र
भोजनं श्राद्धमेवच॥ तत्पारेकास्मृहस्य
नपस्य फलमश्नुते॥ दानं च महद्रत्नगास
हस्तगुणितं भवेदिति॥ भविष्यत्तरोपि विष्णु
धर्मोत्तरे॥ वपश्रवणसंयुक्तासैवचेद्द्वाद
शी भवेत्॥ अत्यंत महती नाम तत्रदत्तमन
न्तकं॥ तस्यां द्वादशी श्रवणेयोनायदाभा
वतिभारत॥ संगमे सरितां स्नात्वा गंगास्ना
नफलं लभेत्॥ सोपवासः समाप्नोति न र
हिमः परमपदमिति श्रवणद्वादशी॥ अथ
माघकृष्णद्वादशी॥ तस्यां तिलदानादिकं
कार्यं॥ तिलैः स्नात्वा तिलैर्विष्णुमभ्यर्च्य ति
लैलेनदीपान्दत्वा तिलनैवेद्यं तिलहोमं ति
लदानं च कृत्वा तिलान्नं च भक्षयेत्॥ तदुक्तं
मत्स्यपुराणे॥ माघे हि कृष्णद्वादश्यां यमो
हि भगवान्पुरा॥ तिलानुत्पादयामास त
पः कृत्वा सुदारुणं॥ राजारश्वरयो भ्रमोत
यानानं च नारयेत्॥ तिलानां माधिपत्यं
नो विस्मृत्य च कृतः कोरैः॥ तस्मात्सपोषितः
स्नातस्तिलैः समभ्यर्च्य हरिं॥ तिलं तैलेन
दीपाश्च दातव्या विसमंदिरे॥ निवेदयेत्ति
लान्नेव होतव्याश्च तथा तिलाः॥ तिलस्रा
गोविप्रभोजे दद्याच्च तथा तिलानिति ति
लद्वादशी॥ अथ सिद्धिविनाजाधिवं लिख
ते॥ द्वादशी बुधवारेण सिद्धा भवति॥ तदु
क्तं॥ बुधवारे द्वादशी या च द्वादशीति॥ रवि
वारेणाकच योगो विरुद्धो भवति॥ तदु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के॥ सर्वे विश्वामशोषी द्वादशी च वचनं द
पी॥ महाव्रतगाथास्मृष्ट चवसंनोयाः श्रय
न्ततः इति॥ द्वादश्यां व्रतपो हि कार्य्ये कुम
कार्य॥ तच्चोक्तमेव॥ व्रतपो हि के द्वितीया
द्वादश्योरिति॥ अत्र बिल्वफलेन मन्त्रेण त
त्तव च मंतिलानीत्युक्तमेव॥ नवमी द्वाद
शीति कार्यं एकमक्तं तस्य द्वादशी पूर्णिमासा
शुभा भवति॥ परत स्नान हरिस्मृतं॥ स्वेदन
लाभकरस्य द्वादशी न स्याः भवति॥ नवक्षे
त्रलाभकरयोस्तु भवति स्याः॥ द्वादश्यां
योगिनीसाधुख्याने नरस्ये यान्ने नकायो
मवं यद्वादशीष्वतिथिर्योविशुः पूज्यदः
ति॥ इति सूर्येमेनमहं रविचिन्तेनिलोया
स्तेद्वादशीनिर्णयः॥ २॥ अथ त्रयोद
शीनिर्णीयते॥ तत्र शुक्लत्रयोदशी पूर्व
विद्वेवोपोष्यां॥ तदुक्तं ब्रह्मवैवर्त्ते॥ त्रयो
दशी प्रकर्तव्या द्वादशी सहिता मुने॥ अन
विद्धानकर्तव्या दश्यः पूर्णा कला चनेते
पेकीनसिस्याद्॥ पंचमी सप्तमी चैव द
शमी च त्रयोदशी॥ प्रतिपन्नवमी चैव क
र्तव्या सम्मुखी तिथिरिति॥ अनयोर्वा
क्ययोः शुक्लप्रतिपदमावास्या पर्यन्त
त्रयोदश्यां पूर्वा विद्धा या पर विद्धा नान्त॥
शुक्लपक्षत्रयोदशी विषयमिति पारिस्फु
ष्टप्रमाणेन गम्यते॥ यथा॥ बह्वृचामा
वमावस्या कृष्णपक्षे त्रयोदशी॥ पूर्वाप
रयुता॥ रूपाः पराश्चैव प्रमेयुताइति॥ य
था च॥ एकादश्यष्टमी षष्ठी द्वितीया च
चतुर्दशी॥ त्रयोदशीममावास्या उपोष्याः
स्युः परान्विता इति॥ अत्राप्यमावास्या सा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हृच्चर्याभिधानात्रयोदशीह्येषैवप्राख्या
इतित्रयोदशीसामान्यनिर्णयः ॥ विशेषव
स्तु ॥ चैत्रशुक्लत्रयोदश्यामनंगाहूत्रयोदशीसाच
पूर्वविद्धैवग्राह्या ॥ मदनमहोत्सवेन ॥ तस्या
मुभौमश्रुतस्त्यामाविद्धावटपत्रिका ॥ अन
ङ्गत्रयोदशीमुभाज्ञेयाग्राह्याः पूर्वसंयुताइ
ति ॥ अनङ्गत्रयोदशीपूजाकामदेवपूजा ॥ म
दिषोत्तमेचैत्रमासितिथिप्रक्रमेषुया ॥
त्रयोस्त्रानात्रयोदशपदमशोकेनगमा
लिखेत ॥ मिरदरहनीरेगतिप्रतिसम
न्विते ॥ कामदेवंवसन्तेचरम्याश्वकृतध्व
जम् ॥ मध्यान्हेपूजयेद्धाम्यामदेवोगोयेश्व
रोपकैः ॥ मन्त्रेणानेनकेनयनवनारीस
मन्विते ॥ मन्त्रस्तु ॥ मनोरमायकामायदे
वदेवप्रसन्नतेये ॥ अस्मदिवापिबेशाणा
नमः देवमकरायवे इति ॥ ततस्तस्याग्र
तेदेयामादकाहतपाचिताः नानाप्र
कारभक्ष्याश्वकामोमेप्रीयतामिति ॥ ख
पांलिकायेवनारीवस्त्रमाल्यविभूषितेः ॥
कामोयमितिसंचिन्त्यप्रहृष्टेनान्तरात्म
ना ॥ रात्रोजागरंकुर्यात्स्वगीतवाद्यत्र
भवेत् ॥ पूजयेद्दिजदाम्पत्यंवस्त्रालं
कारभूषणैः ॥ एवंयःकुरुतेपार्थवर्षेव
र्षेमहोत्सवे ॥ वसन्तसमयेप्राप्तेसपु
त्रःसदाभवेत् ॥ कर्मपुराणेतुविशेषउ
क्तः ॥ मधोःशुक्लत्रयोदश्यामदनंचेदना
ष्टकं ॥ कृत्वासमर्चयेत्तेनवीजयेद्व्यज
नेनच ॥ ततःसंधुक्षितःकामःपुत्रपौत्र
समृद्धिदःइत्यनंगत्रयोदशी ॥ अथवापद्व
दशगतासर्वासुत्रयोदशीषुकामःपू

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्यः॥ विलम्बोत्सवः कार्यः॥ तदुक्तं मत्स्य
पुराणे॥ त्रयोदश्यां पूर्वविद्धा सकामः पूज्यो य
वाद्यैः॥ यात्रोत्सवश्च विधिवत्कार्यते ब्रा
ह्मणैः सवैरिति॥ भाद्रपदकृष्णत्रयोदश्यां पित्रु
गाहिः॥ तदुक्तं॥ नभस्ये च त्रयोदश्यां प्रीतिः॥ से
वर्षे स्यात्तन्न लभ्यते देवमत्रा स्यमाजं
छायायां तु चरते॥ तदुक्तं॥ यद्दीद्दुः पितृदे
वानां हम स्थैवकरे स्थितः॥ त्रयोदश्यां गं
जच्छाया या श्राद्धे पुण्येरवाप्यते॥ तत्र हेन
मधुसंयुक्तेन पायसेन श्राद्धं कुर्यात्॥ त
थाचोपात्तं गाथाः॥ अपि स्यात्स कुले स्मा
कं यो नो दद्यात्त्रयोदशीं॥ पायसं मधुसं
पिंभ्या वर्षासु च मघासु चेति॥ कार्त्तिक
कृष्णत्रयोदश्यां प्रदोषे यमदीपदानं दद्या
त्॥ तदुक्तं स्कान्दपुराणे॥ कार्त्तिकस्यासि
ते पक्षे त्रयोदश्यां निशामुखे॥ यमदीपं
बहिर्दद्यादपमृत्युर्विनश्यति॥ दी
पदानमंत्रश्च॥ मृत्युना पाशदंडाभ्यां
कालेन श्यामया सह॥ त्रयोदश्यां दी
पदानात्सूर्यजः प्रीयतामिति॥ तत्र प्र
दोषे शिवं समभ्यर्च्य नक्तं व्रतं कुर्यात्॥ त
था च स्कन्दपुराणे॥ श्रीदेव्युवाच॥ देव
केन विधानेन प्रदोषव्रतमुत्तमं॥ विधा
तव्यं नरैः स्त्रीभिः संतानफलसिद्धये॥
श्रीईश्वर उवाच॥ यदा त्रयोदशी शुक्ला
मंदवारेण संयुता॥ आरब्धं व्रतमेतत्तु
संतानफलसिद्धये॥ ऋणनिर्मोचना
र्थं च भौमवारेण संयुता॥ आयुरारोग्य
सिद्ध्यर्थं भानुवारेण संयुता॥ सौभाग्य
स्त्रीसहस्रार्थं शुक्रवारेण संयुतेति॥ अ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रथकालोद्भवंकृत्वापुत्रास्तिकामहृद॰ ॥ न
वनेकोटिघोरेतिसंकल्पनेमन्त्रमुदीरयेत
एकवक्त्रंरपयेत्प्रतिपदेस्थितेरष्णौ ॥ प्र
दोषेशिवमभ्यर्च्यनकैमोत्स्वामिकरोति॰
ननकालोहितेमानोस्नातःस्वनियतो॰
वती ॥ प्रजाख्यानेसमागत्यप्रदोषेपू॰
जमभ्यर्चयेत ॥ पूजाचगुरुपदिष्टविधि
ना.गममन्त्रैर्वेदिकैर्वापिचाष्टस्नापना
दिषोडशोपचारैःपूर्ववद्विभवक्रमेण ॥॰
ततस्त्वभक्त्यादिनामभिः ॥ ॐभवायनमः ॥ रु
त्यादिप्रयोगकर्मणप्रतिनाशपिवाय
पुष्पांजलिमर्पयेत ॥ नामानि ॥ ॐभवाय
भवनाशायमहादेवायधीमते ॥ रुद्राय
नीलकंठायश्रीकंठायशशिमौलये ॥ उग्रा
योग्रघनाशायभीमायभयहारिणे ॥ ई
शानायनमस्तुभ्यंपशूनांपतयेनमः इति
पूजयितानेनमन्त्रेणप्रार्थयेत ॥ यथाम
वान्बसमलानांपशूनांपापमोचनः ॥ त
थात्वंतेनमेलघुःपुत्रदेहिमलतंणमि॰
ति ॥ मयायत्कंचनैवेद्यसाज्यंसफलपा॰
नकंर ॥ दत्त्वाथोपवासंचताष्टलक्ष्म
कादिकं ॥ समर्पयामहादेवसुष्टोदीपा
नांपरिमितान ॥ भक्त्यैनोभोमहेश्वरा
नैवेद्यपदंहिणान ॥ नमस्कारादिकं
कृत्वाजगद्गुरुंसमर्च्य ॥ वृषराजसम
भ्यर्च्यवृषमन्त्रेणमन्त्रवित ॥ मन्त्रः ॥ धर्म
त्वंवृषरूपेणजगदानंदकारक ॥ अष्टमू
र्तेरधिष्ठानमतःपाहिसनातनेति ॥ वृषा
यभक्तंचतणकपानीयंचनिवेदयेत ॥ वृष
स्यवर्णस्पर्शनाशाद्योमेध्यतःशिव ॥॰

विलोकसंहितेदेव्या पूजयेत्सार्थयेत्स्विव
प्रोगनामेत्रस्य ॥ अमावास्या हि स्त्रीविरुपप
पक्षस्य पूज्यत्वतः ॥ मत्पक्षीकमनस्तापा
नपुंसकमसर्वदेति ॥ इष्टिं कार्यानिती
र्थानि सागरस्नानियानि च ॥ अन्ध्रे इसमाक्षि
त्यादिहेतिप्रद्वीषे मोहमभस्यतः ॥ स्कान्दे
हयोनित्य स्पृष्टाम सर्वविलोकय च ॥ पुं
सं च कजहं चैव सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ १
निवेषु कमेजातेनतद्याहि लाग्सावनः
दक्षिणावा सर्वमस्पृतंतौ मानविस्मृज
येत ॥ यवसवत्सरेऽकुर्याद्वायोदशपामिदृष्ट
ते ॥ अथ वामेद्वाग्वेणशुक्लामेध त्रयोद
शी ॥ यत्रविपातिकवीतमाभोहफलमा
मुयात् इति शंनि त्रयोदशी शुक्लते ॥ त्रयोमि
उविकुड्डादि कलियाते ॥ त्रयोदशी मोम
वारेणसिद्धा ॥ यथा ॥ चन्द्रे विषोनतथा २
धप्रवीषाम्रविप्राधिका ॥ एकादशी
त्रयोदशीनक्षयोगाः प्रकीर्तिताः इति ॥ त्र
त्रयोदश्यं तनीया संग्रामबलोपयो
गीनिकमोणि कार्यात् ॥ नडके ॥ जयाय
विदधीतानि बलकार्याणि यत्नत इति
त्रयोदश्यां द्वितीयादि वर्णेमेलापकस्ना
नेकार्य ॥ नच ॥ आनर्जेन समरप्राप्नोतन
ये त्रयोदश्यथंसि न्याहि मसापकस्नान
निषेधः ॥ त्रयोदश्यां दक्षिणादिक्रियायो
गिनी साम्मुख्यायात्रानकार्या ॥ करा
मकेऽजं भस्थिते त्रयोदश्यां शुभकार्ये द्वव
र्ज्या ॥ त्रयोदश्यां बालो कालिनमृतयेत
इति निर्णयामृते त्रयोदशी निर्णयः ॥ २२
अथ चतुर्दशी निर्णीयते ॥ तत्र प्रलोचन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देयुक्तवासादिषु प्रोक्ता मात्रेन वर्ज्या सा ॥ न
ष्टके ॥ युग्मवाक्ये चतुर्दशपूर्णमासी प्रोक्तामेति ॥ बृ
हस्पतिरपि ॥ एकादशपूर्णैरष्टमी षष्ठी पौर्ण
मासी चतुर्दशी ॥ अमावस्या तृतीया चत
र्थी दोषाः परान्विताइति ॥ तथा ॥ शुक्लप
क्षेष्टमी चैव शुक्लपक्षे चतुर्दशी ॥ अत्र वि
द्धानकर्तव्याकर्तव्यापरसंयुतेति ॥ अत्र
विशेषः ॥ मध्ये श्रावणमासस्य शुक्ला ।
या चतुर्दशी ॥ सा रात्रिव्यापिनी ग्राह्या
परा पूर्वाह्नगामिनी ॥ कृष्णपक्षेष्टमी
चैव कृष्णपक्षे चतुर्दशी ॥ पूर्वविद्धानक
र्तव्या परविद्धानकर्हिचित ॥ चैत्रचतुर्द ।
श्यांकर्तव्याग्रहचैत्रेनाद्दिमिर्दमनकेन च
शिवपूजा कार्या ॥ तदुक्तं रेवापुराणे ॥ च
तुर्दश्यां कर्तव्यं दमनकमार्गचैत्रेनः ॥ व
ज्ञोहिममलिपूजा चकर्तव्या महतीपि वे
विनानघजनकं चवैस्थ प्रज्याश्वमानवः
महत्फलमवाप्नोतिग्रह्मश्वमेधफलादि
कमिति ॥ तथा ॥ मधुमासस्य संप्राप्ते शु
क्लपक्षे चतुर्दशी ॥ प्रोक्तादमनकेनपूजोति
सिद्धिहानमहोत्सवे ॥ अत्रैव लिंगपुरा ।
णेविशेषः ॥ मदनस्त्रयोदशपूर्णाताल
हेतानिलेनता ॥ हस्यानममात्रक्ष्का
ममत्रप्रवर्धितः ॥ नारीभिर्वीजितं स्त्र ।
वैत्रैलोक्यमोहमाहमाचेतन ॥ तत्रि
लापनकामेन चतुर्दशपूर्णामहाप्रभवे ॥ स
तीत्वयं मयाप्रोक्तेनायेश्वदनमालया
कर्तव्यितकर्दमेनेवस्नात्मानश्चापूलपनं
निवेदापितानेनगपीठासमवल्वेवममाज्ञया
पतनंदर्थतंतदाकार्यंकर्दमेनचक्रीडनं

225

प्रातः प्रदूमात्रेनकर्तव्योक्रीडनंनरैः ॥ प्रदा
क्षांगंततः कृत्वागंधमाल्यानुलेपनैः ॥ वस्त्र
तांबूलगीतादिरथ्यामध्येभ्रामयेचोत्सवेन ॥ चंद्रे
द्रोदयेतिथिश्चैव कृत्वानित्यंशिवाव्रतः ॥ स
र्वकामसमृद्धस्त्वच्छिवपुरेनरः ॥ स्वय
भूलिंगमेकतद्रूपानस्मिंदिनेनरः ॥ स्नान
नव्याप्नोतिवः समस्यापेनात्रसंशयः ॥
इतिचैत्रचतुर्दशी ॥ ॐ ज्येष्ठशुक्लाचतुर्द
शीसर्वस्मिन्दिनेपंचतपाः सायंहोमयं
त्रपदः शिवाव ॥ यात्समौचतुर्दश्याकृ
ष्णतमिदंस्मृतमिति ॥ भाद्रपदशुक्लचतु
र्दश्यामनंतव्रतंकुर्यात् ॥ साचोदयका
लव्यापिनीग्राह्या ॥ संयोग ॥ चतुर्दशीपूर्णा
चपूर्णिमेति ॥ शुक्लपक्षेचतुर्दशीनिव
भविष्योत्तरेपि ॥ तथाभाद्रपदस्यांतच
तुर्दश्यांद्विजोत्तम ॥ पौर्णमास्यांसमायो
गेव्रतमानंतकंचरेत् ॥ अत्रकेचिदाहुः
मध्याह्नेभोज्यवेलायांशुलीसंस्थितस्या
ट् ॥ इत्यपौष्णीलासाक्षीगांसमद्रेतुकथा
मसा ॥ चतुर्दश्यामर्चयंतेभगवंतंजना
र्दनं ॥ व्रतकल्पमध्याह्नस्तुजाभिहिता
प्रेनामध्याह्नव्यापिन्याचतुर्दश्यामन
न्तव्रतंकुर्यात् इतिनैतद्युक्तिमत् ॥ यतःद
र्शमितिहासमात्रंनतुविधिः ॥ विधिवाक्ये
नाव्रतंकुर्यात् ॥ कारानकतंस्वामिन्यादि
लिङ् ॥ लोट् ॥ तव्यप्रत्ययानामभावात् ॥ अ
न्यथा ॥ सापिपौलावतेचकेकरेवङ्गा
लेडारके ॥ पाथेयपाशविद्याएदस्वासु
क्तानष्टेवचैतितत्रोक्तत्वात् ॥ पौलया
पिमध्याह्नेव्रतंप्रारभ्यमिति ॥ व्रतप्रा॰

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भोपिमध्याह्नपूर्वप्रसङ्गेन ॥ सचनिर्णीतः ।
अतस्यप्रारंभकार्यत्वात् ॥ तदुक्तं ॥ प्रा
रंभमतिमान्कार्यो व्रतस्यनाह्निके ॥ ना
पराह्णे न मध्याह्ने पितृकालो हि तौ स्मृ
ताविति ॥ अन्ये त्वाहुः ॥ अनन्तव्रतस्यैकभक्त
व्रतत्वान्मध्याह्नव्यापिन्यामेव कार्यमिति
तदपिन ॥ अत्रैकभक्तयोर्हिस्यैकाभक्त
स्याविधानात् ॥ किंतपक्षप्रसंगेहतेनैव ।
गौणमानोपयत्नतः ॥ अर्धं विप्राय दातव्य
मर्धमात्मनि भोजनमिति ॥ अनन्तपूजाङ्ग
त्वेन भोजनमात्रविहितं ॥ अतश्चानन्तव्रत
स्यैवप्राधान्यात् ॥ नच पूर्वाह्णो वै देवाना
मिति दैविकत्वात्तस्य पूर्वाह्ण एव विधान
मिति ॥ अनन्तस्य स्वल्पायामपूर्वकालव्या
पिन्याचतुर्दश्यामपक्षस्यद्वितीयेमाभागे
पिपूजादिकंकार्यं ॥ उदयव्यापिन्याक्लिष्य
दैवकृत्ये सर्वेषां विधानात् ॥ तदुक्तं ॥ उप
वासस्त्वनादीनां दैविके कार्ये यदा भवेत् ॥ उ
भये सा तिथिर्ज्ञेया विपरीता तु पैतृके इति
ब्राह्मपाद्मे दैवकर्मणि कार्या चितानापुपस
ग्रहः ॥ तथा ॥ उदयन्नेव सविता यां तिथिं प्र
तिपद्यते ॥ सा तिथिः सकला ज्ञेया दानाध्य
यनकर्मसु इति ॥ सुमन्तुरपि ॥ उदिते दैवतं
भानौ पित्र्यं चास्तंगते रवौ ॥ द्विमुहूर्तंत्रिर
ह्नोवा सा तिथिर्हव्यकव्ययोरिति ॥ अस्या
र्थः ॥ यातिथिर्भानावुदितेहगोद्विमुहूर्तं
व्याप्नोति तस्या दैवतकार्ये ॥ उदयानन्तरं
द्विमुहूर्तव्यापिन्या दैवते दैवकार्यमित्यर्थः
यातिथिः रवावस्तमिते दिनस्यादिद्विमुहू
र्ते व्याप्नोति तस्या पित्र्यपितृकार्यं ॥ अत्रम

227

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ये मासि हि तिलैस्त्रिशुक्लैर्व्यापिन्यां पितृकार्ये ।
मितपक्षे ॥ अतस्तु पूर्णिमा मुख्या कार्या अपराह्नका
लव्यापिन्या चन्द्रे पूर्णामनेन नक्षत्रेन कार्यं सि
निसिद्धान्तः ॥ स्नानेन चन्द्रे पूर्णे ॥ कार्तिके
कृष्ण चन्द्रे पूर्णे स्यात चन्द्रे पूर्णे ॥ तत्रामरा
स्नानेन कृत्वा यमतर्पणं च ॥ ब्राह्मणभोजनं
तपोधनपूजनं दीपदानादिकं च कुर्या ।
दिति ॥ तदुक्तं भविष्योत्तरे ॥ कार्तिके कृष्ण
पक्षे तु चन्द्रे पूर्णा विधूदये ॥ अवश्यमेव
कर्तव्यं स्नानं नरकभीरुभिः ॥ तथा ॥ पूर्व
विद्धा चन्द्रे पूर्णा कार्तिके स्यामिते यदा ॥
प्रदोषव्याप्तसमये स्नानं कुर्याद्धि यत्नतः
ब्रह्मपुराणेपि ॥ तैले लक्ष्मी जले गंगा दीपा ।
वल्या चन्द्रे पूर्णे ॥ प्रातः स्नानं तु यः कुर्याद्य
मलोकं न पश्यति ॥ अपामार्गं तथा तुंबी प्र
पन्नाडमथापरं ॥ भ्रामयेत्स्नानमध्ये तु नर
कस्य क्षयाय वै ॥ तथा च ॥ अपामार्गं स
पत्राणि भ्रामयेत्स्वपितृपति ॥ ततस्नातस्तु प्रे ।
तकार्यं यमराजस्य नामभिः ॥ अपामार्ग ।
भ्राम्यमाणमंत्रः ॥ सीतालोष्ठसमायुक्त सकंट
कदलान्वित ॥ हर पापमपामार्ग भ्राम्यमा
णः पुनः पुनः ॥ यमनामानि च ॥ यमाय ध
र्मराजाय मृत्यवे चान्तकाय च ॥ वैवस्वताय
कालाय सर्वप्राणहराय च ॥ औदुम्बराय ।
नीलाय दध्नाय परमेष्ठिने ॥ वृकोदराय चि
त्राय चित्रगुप्ताय वै नमः ॥ तर्पणं नमस्कारो वा
पसव्येन वा कार्यं ॥ यतः स स्यादेव वपि ।
तृपतिश्च ॥ तदुक्तं स्कन्दपुराणे ॥ दक्षिणा
भिमुखो भूत्वा तिलैः सव्यैः समाहितः ॥ देव
तीर्थेन देवत्वात्तिलैः प्रेताधिपाय तु ॥ त

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

था ॥ यज्ञोपवीतिना कार्यं प्राचीनावीति
ना तथा ॥ द्विविधं च पितृत्वं च यमस्यास्ति ।
द्विरूपितेति ॥ ततः प्रदोषसमये दीपान्द
द्यान्मनोरमान् ॥ ब्रह्मविष्णुशिवादीनां भ
वनेषु मठेषु च ॥ प्राकारोद्यानवापीषु प्र
तोलीनिष्कुटीषु च ॥ मंदुरासु विचित्रासु
शालिषु शालासु चैव हि ॥ लिंगपुराणे ॥ ततः
कृष्णचतुर्दश्यां भोजयित्वा तपोधनान् ॥ शि
वान्विप्रान् यथापरां शिवलोके महीयते ॥
स्नानं दत्वा तथा तेभ्यो यमलोकं न पश्यति ।
तथा च ॥ माघस्य च सपुण्याकें न शुक्लातं च रि
मेन रः ॥ सद्यः प्रेतचतुर्दश्यां सर्वपापैः प्र
मुच्यते ॥ तथा ॥ नक्तं प्रेतचतुर्दश्यां यः कु
र्यात्शिवप्रीतये ॥ न तत्क्रतुशतेनापि प्र
प्राप्यते पुण्यमीदृशं ॥ कुमारीवेदकान्स
ज्यन तथा पूजितां तपोधनान् ॥ राजसूयफले
नेन प्राप्यते नात्र संशयः ॥ इयं भौमवार
युता चित्राख्या ॥ तदुक्तं पुष्करपुराणे ॥ का
र्तिके भौमवारेण चित्रा कृष्णचतुर्दशी ॥ त
स्यां भूतेशमभ्यर्च्य गच्छेत् शिवपुरं नरः ॥ का
र्तिक शुक्लचतुर्दशी पाषाणचतुर्दशी ॥ ह
रीपुराणे ॥ कार्तिके शुक्लपक्षे तु या पाषा
णचतुर्दशी ॥ तस्यामाराधयेद्गौरीं नक्तं
पाषाणभक्षकः ॥ पंचरूपेण सौभाग्यं सौभाग्य
रूपाणां प्राप्नुयान्नरः ॥ अथ मार्गचतुर्द
शीमारभ्य [illegible] ॥ तत्रानकोरयेत्स्नानं वा
यमसंपूज्य ॥ तत्र समभिर्नाममभिस्तिलाञ्ज
लीन् दत्वा तिलादिहोमं कृत्वा श्राद्धं कृत्वा ।
ब्राह्मणेभ्यः [illegible] भोजनं दत्वा स्वयमपि कृ
सरं भुक्त्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ब्रह्मपुराणे

229

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

माघकृष्णचतुर्दश्यां विशेषो देहात्मरोचयः
निवेशितास्तिलकाकाराः पूजनेभ्योऽवमहस्त्वशः
श्रनकांभ्युदितेकाले सन्ध्यातारोशाखेगुचः
गृजातत्रचसंपूज्योयमः अलयमास्करः ॥ स
दोगसीधसंपूतानयोविसोज्ञतत्रवे ॥ श्र
कृणोदयवेलायामारंतोपिनित्यशः ॥
निष्कृताविमनासर्वाः कस्यपापमुनीमहे
निमित्तपचतारेयेनत्रप्रोक्तेयतोश्रुति ॥ त
दासापिनिशाह्वेयातारोरात्रिः स्तुतकला
तत्रोपोष्यत्रयोदश्यांसप्रासेन्निशामुखे
स्नात्वाशुक्लपोजगन्नाथो हरिः शुक्लवस्त्राय
काः ॥ समानशुक्लतीर्थो निःशेषतनाः पितर
स्तथा ॥ नैवेद्यैर्विविधाकारैः कस्मैभुक्त
पूजिता ॥ वह्निपूज्यप्रसभगवान् हरिनीलकंठ
लनेडलैः ॥ नमः प्रणवसंयुक्ता नमूतिनिला
सजलाजलीन ॥ यमायसर्वचितगुप्तमता
भवसमय ॥ मृत्युवेसमदेयानितथा स
नतकायच ॥ वैवस्वतायसमानामाना
मकालायचैव हि ॥ सर्वदेयासर्वविधिवा
सयः प्राणहरायच ॥ क्रमेर भोजनीयाश्च
ब्राह्मणाकल्पतनतः ॥ श्राद्धदत्तापितरम
स्वविशुद्धः सर्वपातकैः ॥ ततोविभज्य
बंधुभिः कस्मैभोजयेन्नस्यधमिंत्यारटन्ती
चतुर्दशी ॥ ॥ अथ शिवरात्रिचतुर्दशीनि
र्णयः ॥ ॥ शिवरात्रिचतुर्दशी प्रदोषव्या
पिनी व ग्राह्यशाशापाख्या ॥ तदुक्तं ॥ प्रदोष
व्यापिनी ग्राह्या शिवरात्रिः शिवप्रियैः ॥
रात्रौजागरणं यस्मात्तस्मात्तां संमुपोषये
दिति ॥ अत्रप्रदोषश्चतत्रोऽत्मकं पूर्व
ग्रासा ॥ सा चाहिविधा ॥ शुद्धाविद्धा चेति

२३०

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शुद्धानेकविधेव॥ सूर्योदयमारभ्य पुनः सू
र्योदयव्यापिन्यात॥ विद्धा न ग्राह्या॥ या
पूर्वदिने प्रदोषव्यापिनी न द्वितीयदिने सा
प्रथमा॥१॥ या द्वितीयदिन एव प्रदोषव्या
पिनी न प्रथमदिने सा द्वितीया॥२॥ या उ
भयदिने प्रदोषमधिकं व्याप्नोति द्वितीये।
ह्यल्पं स्पृशति सा तृतीया॥३॥ या द्वि
तीये किं प्रदोषमधिकं व्याप्नोति पूर्वदि
ने स्वल्पं सा चतुर्थी॥४॥ योभयत्र पूर्णप्र
दोषं स्पृशति सा पंचमी॥५॥ या नोभयत्र
प्रदोषं स्पृशति सा षष्ठी॥६॥ एवं षड्विधा।
तत्र शुद्धायामविवादः॥ विद्धाभेदेषु तु पू
र्वदिन एव प्रदोषव्यापिनी प्रथमा॥ द्वि
तीयदिन एव प्रदोषव्यापिनी द्वितीया च
प्रदोषव्यापिन्येवोपोष्या॥ तदुक्तं शिवपु
राणे॥ प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या शिवरात्रिः
शिवप्रियैः॥ रात्रौ जागरणं यस्मात्तस्मात्तां स
मुपोषयेदिति॥ पूर्वदिनेधिकप्रदोषव्या
पिनी तृतीया न पूर्वेणैवोपोष्याधिकप्रदो
षव्यापित्वात॥ तदुक्तं॥ माघफाल्गुनयोर्म
ध्ये या स्याच्छिवचतुर्दशी॥ अनंगेन समायु
क्ता कर्तव्या सा सदा तिथिरिति॥ तथा च त्र
योदश्यपराह्ने सद्यश्चतुर्दशी हि च॥ भूत
विद्धा तदा तत्र शिवरात्रिव्रतं चरेदिति॥ न
नैव स्पृशति॥ भवयत्रयोदश्यपाश्नतव्याम
मूहालिप्या॥ शिवरात्रिव्रतं तत्र कुर्याज्जा
गरणं तथा॥ इत्यादिवचनैर्विरोधः स्यादिति
चेन्न॥ महानिशाव्यापिमात्रस्याः किं तु तद्व
तनौ जो व्यवहरति॥ एवं पद्मपुराणवाक्यानां तु
याच॥ श्रावणी दुर्गनवमी तथा दूर्वाष्टमी

231

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नेया॥ पूर्वविद्धानक्तव्यापिवरात्रिर्वेलोदि
नमिति॥ नन्वस्याचतुर्दश्याः पूर्वेद्युर्दिनायाप
रदिने चतुर्दश्याः किंचिन्मात्रे व्याप्तिनाश
त्रीति हेतोर्भवति॥ अतोरात्रौ तिथ्यन्ते पारणं।
प्रसज्येत॥ तस्यनिषेधं॥ तदुक्तं कालादर्शे।
सर्वेष्वेवोपवासेषु दिवा पारणमिष्यते॥ अ
न्यथा पुण्यहानिः स्यादृते धारणपारणामि
ति॥ तथाच॥ अन्यतिथ्यारात्रौ मोक्षाश्रोतेनपश
तेन सो दिवा॥ ना मे सेपारणं कुर्वन् स्नाम।
सो गतिमाप्नुयात् इति॥ अभावस्यापरा।
त्रिभोजनं निषेधं यथा॥ भूतोहमावदिवा।
भुक्त्वा रात्रौ भुक्त्वा चपर्वणि॥ एकादश्यां दि
वा रात्रौ भुक्त्वा चान्द्रायणं चरेदिति॥ अनन्त
परदिने दिवा तिथ्यन्ताभावे पारणस्याभावे
वैकल्पिकत्वं वैष्णवोपवासस्येति चेत्सत्यं॥ अत्र ति
थ्यन्ताभावेपि दिवैव पारणं कार्यं॥ तदुक्तं
माधवेन नक्तमयपर्यन्तव्यापिनी चेत्परेहनि।
दिवैव पारणं कुर्यात्पारणे नैव दोषभाक् इति
नैव व्यक्तमयपर्यन्तं दिवापारणं न संभवति॥ चतु
र्दश्याः यामत्रयाहर्ध्वमपि प्रदोषव्यापि शिवा
232 त्रयमपर्यन्तव्यापिन्यभावादिति चेन्न।
त्र॥ अत्र सान्तमयपर्यन्तेति वचने दिवा
तिथ्यन्ताभावप्रतिपादनपरं॥ नतु यामत्रया
र्ध्वं तिथिसत्त्वे निषेधपरं॥ एकस्यैव व
चनस्यार्थद्वयाभिधानानुपपत्तेर्विरल।
संतिप्रसंगेन॥ तिथिर्हि यामसन्तोर्वाच्चे
तिथ्यन्ते पारणं भवेत्॥ यामत्रयोर्ध्वगा।
मिन्याप्रातरेव हि पारणमित्यादि वाक्या
न्तरव्यस्मिन्नेवोपोष्या॥ तदुक्तं स्मृतिसंग्र।
हे॥ शिवः परो नित्यपतिरिचैत्रामाचाकिम्।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शिव इति ॥ उभयत्र प्रदोषव्यापिनी तु चे
न्नो पूर्वैवोपोष्या ॥ न तु कर्म ॥ माघासिते भूत
दिनं हि राजन्नुपैति योगं यदि पञ्चदश्या । ज
याप्रयुक्तां न तु जातु कुर्याच्छिवस्य रात्रिं
प्रियकृच्छिवस्य ॥ प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या शि
वरात्रिर्दर्शते ततः परा ॥ उपोष्या सा प्रयत्नेन प्र
दोषव्याप्तियस्य ॥ न त्या ॥ शिवरात्रिव्रते न स
न्तोऽकामविद्धां विवर्जयेदिति ॥ ननु ॥ पूर्वे
द्युर्नेव चतुर्दशी प्रातः सकला रात्रिव्यापित्वात
त्रैव कर्तव्योपवासः इति चेन्न सत्यं ॥ पूर्वेद्यु
रे उपोषितेऽपरेद्युः तिथ्यन्ते पारणाभाव
नप्रसङ्गसंभवात् ॥ अत्रापि सान्ध्यक्षमय
पदेन व्यापिनी तिथ्यार्धा स्वीचेन ॥ न ॥ अत्र
परेद्युर्निशीथसंपूर्णप्रदोषव्यापित्वेनोपवा
सस्य विधानात् ॥ नोभयत्र प्रदोषव्याप
नीति पूर्वैवोपोष्या ॥ न तु कश्चिद्विवद
ते ॥ स्पष्टमेतेन चतुर्दशीभिर्तन्विद्धा व्रतमाद
पूर्वा ॥ शिवरात्रिव्रतं तत्र कुर्याज्जागरणं तु
शैति ॥ तथा च ॥ अर्धरात्रे पूर्वयदा तेविडिरता
गुरुप्रमाणतः ॥ जागरे शिवरात्रिस्या
न्निशि पूर्वा चतुर्दश्यपूर्वेति ॥ अस्यार्थः ॥ अस्या
उभयोरपूर्वद्युरुपोषिता योऽहितीयदिने हि
वापारणा निश्चिन्तोल्लभ्यते सैवोपो
ष्येति ॥ तथा च ॥ कलाकाष्ठामितं कालमवशि
वरात्रिचतुर्दशी ॥ यतः पूर्वेद्युर्नाकापो
तिथ्यन्ते पारणं भवेत् ॥ तथा च ॥ जन्माष्ट
मी रोहिणी च शिवरात्रिस्तथैव च ॥ पूर्व
विद्धैव कर्तव्या तिथिभान्ते च पारणमि
ति ॥ भान्ते च पा ॥ अत्रापि तिथ्यन्ते पारणा
संभवेति तिथ्यन्ते कर्त्य पारणा कार्य ॥ अत्र सम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भवेत्तन्निर्णयेनाभावे दिवैव पारणं कार्यं ॥ अ
नस्तात्रयान्यन्यान्यपि वाक्यानि स्त्रवं विष्ठा
प्रतिपादकानि तानि परदिने स्वल्पमयोधर्मा
विचक्तनीयव्यानि विषयाणि ॥ दिवापार
णपर्यंतं निश्चयेन सद्भावपराणि च ॥ यानि
पुनः परविद्धाश्रापकानि वाक्यानि परदि
नेस्वल्पमयोधर्माविचक्तनीडोद्यानि विष
याणि दिवानिश्चयेताभावविषयाणि वेदि
तव्यानीति सिद्धांतः ॥ इति शिवरात्रिनि
र्णयः ॥ अथ सिद्धविरुद्धादिकं लिख्यते ॥ च
तुर्दशी पौर्णिमा वारेण सिद्धा ॥ शुक्ला चतुर्थी
नवमी चतुर्दशी पूर्वयौ हिंसामादि कर्मसेव
रविवारेण विरुद्धा ॥ सर्वे विष्णुशयनमारणे
हादश्यौ च चतुर्दशी सौम्यके ॥ चतुर्दशी पूर्णा च तु
वधादिकं कार्यं ॥ नत्तकं ॥ चतुर्दशी पूर्णा च तु
स्थापनवमी चाविमर्दनमिति ॥ अत्रहो
रेनु कार्यं ॥ सर्वत्र यात्रा च न कार्या ॥ विष्णो
र्वतो योगिनी साशुद्धेन कार्य वे यात्रा न
कार्या ॥ मीनस्थे सूर्ये कृष्णे चतुर्दशी पौर्णिमा
वाशुभा स्यात् ॥ दंतधावनवर्ज्यं पर्वत्वात् स
र्वे चतुर्दशी प्रतिपत्पत्नाह्निवः प्रजपः ॥
इति निर्णयामृते चतुर्दशीनिर्णयः ॥ ४ ॥ अ
थ पूर्णिमा निर्णीयते ॥ वटसावित्रीव्रतनि
का पूर्णिमाव्रतादिषु परानिर्वेतो वा पोर्णा
न्तु कं ॥ एकादशपूर्वव्यमी संपूर्णिमासी
चतुर्दशी ॥ अमावास्या तृतीया च तत् उपोष्या
परान्विताः ॥ चस्मैव व्रतेपि ॥ मतविज्ञानक
तेव्याद्रपीः पूर्णाकरा च न ॥ वर्जयित्वा शुक्लि
श्रुङ्गसावित्रीव्रतमुक्तमिति ॥ यतेन मा
वित्रीव्रते पूर्णिमा पूर्वविद्धैव ग्राह्येत इति भा

234

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्यते ॥ तदुक्तं ब्रह्मवैवर्ते ॥ प्रतिपत्पंचमीरे
वसावित्रीवटपूर्णिमा ॥ नवमीदशमीचै
वनोपोष्यापरसंयुता इति ॥ युग्मवाक्येपि
ब्रह्मवैवर्ते ॥ षष्ठ्येकादश्यमावस्यापूर्वविद्धा
तथाष्टमी ॥ पूर्णिमापरविद्धाच नोपो
ष्यातिथिपंचकमिति ॥ इदमपिसावित्रीव्र
तविषयं ॥ सावित्रीव्रतंच भाद्रपदपूर्णिमा
यांवक्ष्यते ॥ ज्येष्ठेच पूर्णिमायामिदं क्वा
चित्को ॥ तदुक्तं देवीपुराणे चैत्रविधिप्रक
मे ॥ पौर्णमास्यांतथाकार्यो सर्वकार्यस
इष्टो ॥ कृत्यायमस्मात्प्राप्यकार्यिकं लभेत
तत्फलमिति ॥ चित्रान्नं तत्र संपूज्य ग्रामस्था
नेषु चवटेष्वानं ॥ तदुक्तं विष्णुधर्मे ॥ चैत्री
चित्रायुता चेत्स्यात्तस्यां चित्रवस्त्रदानेन
सौभाग्यमाप्नोति ॥ इयमेव पूर्णिमा रविगुरु
वारयुक्ता महापुण्या ॥ तदुक्तं ब्रह्मपुराणे ॥ मेषे
चार्के गुरौ वाथ वारे षष्ठी तत्र चैत्रकी ॥ तत्राश्व
मेधिकं पुण्यस्नानेन लभते नरः ॥ दानमप्य
यतो याति पितृणां तर्पणेन याति ॥ अस्यामे
वादेवो दमनकेन पूज्यः संवत्सरपूजायाः फ
लप्राप्नोति ॥ तदुक्तं लिंगपुराणे ॥ चैत्रमासि
सितेपक्षे चतुर्दश्यां यथाविधि ॥ दमनेना
र्चयेद्देवं विष्णुमथात्मवेत्तापीति ॥ वायुपु
राणेपि ॥ संवत्सरकृतार्चायाः साफल्याया
शिवस्याकरान्तु ॥ दमनेनार्चयेद्देवं विष्णु
मलभ्यावापिवे ॥ इति चैत्रपूर्णिमा ॥ अथवै
शाखपौर्णमासी ॥ तस्यांकृष्णाजिनदानं
कार्यं ॥ तथायमः ॥ यमगाथायां ॥ यस्तुकृष्णाजिनं
दद्यात्सखुरं शृंगसंयुतं ॥ तिलैः प्रच्छाद्य वा
सोभिः सर्ववस्त्रैरलंकृतं ॥ वैशाख्यां पौर्णमास्यां

235

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मासं तु विष्णुलोकं स विशेषतः॥ समस्तद्व
फलेन समं शैलवनकाननं॥ सप्तद्वीपवती द
त्ता पृथिवी तेन संशयः॥ तथा च विष्णुः॥ कृ
ष्णाजिनं तिलान्दत्वा हिरण्यं मधुसर्पिषी द
त्वा नियत्तविप्राय संवत्सरेतदुष्कृतमिति
वैशाखपूर्णिमा॥ अथ ज्येष्ठी॥ ज्येष्ठमासि
पूर्णिमायां तिलक्षौमोपानहादिदानेन को
ते॥ नंदकं स्यादिनपुराणे॥ ज्येष्ठमासि ति
लं दत्वा पौर्णमास्यां विशेषतः॥ अश्व
मेधस्य यत्पुण्यं तत्प्राप्नोति न संशयः॥ वि
ष्णुः॥ ज्येष्ठी ज्येष्ठायुता चेत्स्यात्तस्यां छत्रो
पानहप्रदानेन नरो नराधिपत्यमाप्नो
तीति ज्येष्ठपूर्णिमा॥ अथाषाढपूर्णिमा।
तत्र चतुर्दश्यामुपोष्य हरिप्रसादकार्यो॥ त
दुक्तं भविष्यपुराणे॥ चतुर्दश्यामुपोष्याथ।
पूर्णिमायां यजेद्धरिमिति॥ अस्यां पूर्वाषा
ढयुक्तायामन्नदानं॥ तथा च विष्णुः॥ आ
षाढ्यामाषाढायुक्तायामन्नपानादिदा
नात्तदेवाक्षयमाप्नोति॥ इति आषाढपू
र्णिमा। अथ श्रावणी॥ श्रावणपूर्णिमा
यां श्रवणनक्षत्रयुक्तायां स्नानं जलक्री
डादिकं सामवेदस्य श्रवणं च कुर्यात्॥ तदु
क्तं ब्रह्मपुराणे॥ श्रावण्यां श्रवणे चैव ऋ
ग्वेद्यजुषां हरिः॥ तत्राप्सामवेदस्त।
सर्वकिल्बिषनाशनं॥ सिद्धं नदीषु वित
लायां प्रतिष्ठान तत्रैव वहि॥ अतोर्थं श्रा
वणे तत्र स्नाने सर्वार्थसिद्धिदं॥ कृत्वा स
प्रजयेद्धिमश्राविचक्राणादरा॥ श्रातना
नाथ्य सामानि यज्ञा विप्रास्तु सर्वेश॥ क्री
डितव्यं च भोक्तव्यं तत्रैव स्वजनैः सह॥ ज

236

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लक्षीराचकर्तव्यानारीभिर्मन्त्रभिः सहे।
ति॥ अथश्रावणाकर्मनिर्णीयते॥ तत्र यजुःश्रा
खायाम्निनः श्रावण्यांपौर्णमास्यामुदय
कालव्यापिन्यांकृत्यमस्यसंक्रांतिदोषादि
नास्तीत्याधीक्षायोग्रौधप्रादुर्भावेसमस्तपाक
मंकर्तव्यः॥ बह्वृचः श्रावणमासस्यश्रवणे।
नक्षत्रेचधनिष्ठानक्षत्रयुक्तेकर्तव्यः॥ साम
वेदिनः॥ श्रावणमासस्यहस्तनक्षत्रयुक्त
पंचम्यांकर्तव्यः॥ अग्रणांदिवाघराहित्यमा
श्रीविधिप्रादुर्भावेसमस्तसर्वेधानलपः॥ तदुक्तंया
श्वलायनेन॥ अथाध्यायानामुपाकर्मश्रावणं
श्रवणेनवा॥ हस्तेनौषधिभावेवापंचम्या
श्रावण्यास्येतिवेति॥ अध्यायानामितिशाखा।
भिप्रायेणबहुवचनं॥ निगमेपि॥ श्राव।
ण्यांश्रावणाकर्मयथाविधिसमाचरेत॥ उ
पाकर्मेनकर्तव्यंककर्कटस्थेदिवाकरे॥ ह
स्तेनवापंचम्यांश्रावण्यांश्रवणेनवेति।
नथाचगोभिलः॥ पावांपायज्ञमःकर्तव्यः
श्रावण्यांतैत्तिरीयकाः॥ बह्वृचः॥ श्रवण
नहस्तेसामवेदिनः॥ केवलेहस्तनक्षत्रे
वाविताप्रकेचवायवा॥ तथाचगार्ग्यः॥ पर्व।
ण्योषधिपाकेवाकर्कटेपिजहिकामतः॥ बह्वृ
चः श्रावणेकर्कटेसंक्रांतिवर्जितेमिति।
वनेदीक्षीयुक्तपर्वणानिषेधात॥ तदुक्तंका
लिकापुराणे॥ वर्तते पूर्णमस्तुत्प्रावृष्टसोम
युक्तेरमे॥ वेदाहीउपाकर्मयेनस्त्रीजन्क
नःप्रकृतीः॥ तत्रानावक्रीस्तेवाःपातालग
लवासिनेन॥ अत्राहत्यनाक्रतीतमेदेवलो
कःगुरुस्थयं॥ सत्रामवांक्रतीवलायवेणे
दयकेउनः॥ मतोभूनखुगीतस्मिनुपाकरण
मिधाने॥ अश्राववजेयेत्कालवेदाहरणंधा।

कथा ॥ यत ॥ श्रावणी दुर्गनवमी दूर्वा चैव हु
ताशनी ॥ पूर्वविद्धा न कर्तव्या शिवरात्रि
र्बलेर्दिनं ॥ एतस्यां श्रावण्यां विधीयमाना
हिरुपाकर्मपवित्रारोहणं विधीयते ॥ उपा
कर्मोत्सर्जनमाश्वलायनकशाखेया । गृह्येने
तिरीयकपरमन्येषामपियजुः शाखिना
मुपलक्षणं ॥ तेषां कालान्तरानभिधाना
त् ॥ व्यासोपि ॥ श्रवणेन तु यत्कर्म उत्तराषा
ढसमन्विते ॥ संवत्सरकृतोध्यायस्तत्क्षणा
देव नश्यति ॥ धनिष्ठासंयुतं कुर्याच्छ्रा
वणं कर्म यद्भवेत् ॥ तत्कर्म सफलं विद्या
दुपाकरणसंज्ञितमिति ॥ परिशिष्टेपि ॥ यदि
स्यात्प्रतिपद्युक्तस्तत्र कुर्यात्समन्वितं ॥ श्रा
वणं कर्म कुर्वीत ऋग्यजुःसामपाठका इ
ति ॥ तथा स्मृत्यन्तरे ॥ उपाकर्म च कुर्वीर
न्नामात्सामगो जुविदः ग्रहसंक्रान्त्यदुष्टे
मुहूर्ते श्रावणं पर्वसु ॥ संक्रान्तौ ग्रहणे वै
वम्मनैके कुर्वन्ति तथा ॥ ग्रहणोत्सवेन कुर्वी
त नारदस्य वचो यथा ॥ अथ चेद्ग्रहसंयुक्ते
पर्वणि स्यादुपक्रिया ॥ दुःखशोकामया
सत्वाराहुतेम्यहिजातय इति ॥ ग्रहसंक्रा
न्तिदोषेण मारयपदेपौर्णमास्या यजुःशा
खिनः ॥ वाजसनेयकानि त्रिकालो वा श्राव
णशुक्लपंचम्यामिति तदुक्तं स्मृतिमहार्ण
वे ॥ यदि स्याच्छ्रावणं कर्म ग्रहसंक्रान्तिदूषि
तं ॥ स्यादुपाकरणं शुक्लेपंचम्यां श्रावणस्य
तु ॥ संक्रान्तिग्रहणे वापि यदि पर्वणि जायते
तन्मासे हस्तयुक्तायां पंचम्यामतिदिष्टप
ते ॥ एतच्च वाजसनेयाभिप्रायमिति कोर्व
दाक्तः ॥ सर्वेषां शुक्लपंचम्यामेवेति तद्रु
क्ते ॥ तथा च स्मृतिमन्यादिवाक्यानामनर्थ

238

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कस्मात् ॥ वक्ष्य च स्तु श्रवणान्तरे ॥ संदेहो ।
गास्त्वाम्ना सहलनन्त श्रेकेषु: ॥ नपाचम
सह: ॥ आवणपौर्णमास्यो चेत्कुर्कांति ।
ग्रहनं भवेत ॥ उपाहृत्ति क्रुपंच मा कार्यो
वाजसनेयिभिः ॥ आवणपौष्णपंचत्यावा
स्तुपाकर्मियथाविधि ॥ सुमंत्रं दासप्पौ
येन सामानि प्रोष्ठपंचमानि ॥ अर्धःप
वमेमासे येषांते ऽपंचमाः ॥ उपाकर्म
प्रभृतिमार्यो स्तु तेषाम सामान्वाध्यायोहि ।
नेध्यायो यने ऽस्याये: ॥ छपिप्रोष्ठपद्रउप
हस्ववणाद स्तपंचमीनाउपसंग्रहः ॥ त
थाववह्रुचयद्विपि प्रोष्ठकार्तिका श्रवणो
हपक्षस्मिन्नामासेन भवति ॥ नदीभाद्रपद
मासि श्रावणेनन्तरहिस्मृते ॥ छन्दोगपमा ।
वः ॥ सङ्क्रांतिरोहिणीपलभकः ॥ गोविलो ।
क्ति ॥ प्रोष्ठपदे हस्तेनोपकरणमिति प्रोष्ठ
पदी प्रामृत्यर्थ: ॥ यत्तु बौधायनवचनं
आवणपौर्णमास्यामाषाढ्यां वोपाकृ ।
त्याकृत्सस्य पौयेन ॥ तत्रु पौष्ठपद्यामपि
सहोपाध्यायामाषाढ्यां वाकृतीन ॥ तद्योगत ।
न्थे ॥ यत्तु कैश्चिदुक्तं ॥ आषाढ्यां विधान
यद्ब: प्राविनामुपाकर्मवेदितव्यं ॥ व
हृचोमामापानां चकस्मिंश्चित्सश्रावा ।
वि श्रोषश्राषाढकं मासि वा पाकर्मविधिर
श्रोनादिति ॥ तत्रयुक्तिरसह ॥ तेषामपि कु
विख्याताविप्रोवेक्षिया गाहिंतोनति ।
थमाधानानाकमविरोधियदन्यायेनेवा
षाढेमासि श्रवणेर स्तेवाउपाकर्मप्राप्त ।
श्रन्यथानेषामनुत्पथाकरणेनाप्रत्यवायः
प्रसङ्गेन ॥ तदुक्तं स्मरणेनेवात् ॥ कस्मिंश्चि

239

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विले ... नापकृजयेमार्यो येछिव

हिनेग्रहसंक्रांतिवर्जिते कार्ये कर्मणि नते
षांनोत्कर्ष इति॥ तथाच कालेष्वप्युच्यते
उपाकर्मणोत्सर्गो यथाकाले समंतच॥
ऋषीष्टं मे मयाकृत्वा पूजयेत्तर्पयेत्ततः इति
षट्त्रिंशवेलायामपि॥ अथेदं पाकर्तिः पौर्ण
मास्यां पूर्वाह्णे पवच॥ अग्न्यागारमेयेतत्र
पितृन्त्रोहिप्रदेवता इति॥ बौधायनोपि
गौतमादीनृषीन्सप्तकृत्वा द्वैमयाम्बुनः
पूजयित्वा यथाशक्ति सजयेच्च स्वगृह्योदि
ति॥ अत्रगौतमादीनितिसप्तर्षीणामुक्तेऋषी
णाम्पूर्वलक्षणं॥ भविष्यानेपि॥ समाप्य श्रा
वण्यांसंपूर्णे पौर्णमास्यां दिनोदये॥ कृत्वानु
ष्ठीन मंत्रेण मौक्तिं स्नातिविधानतः॥ ततो
देवान्पितॄंश्चैव तर्पयेत्परमार्जनम्॥ उपाक
र्मादिवेदोक्तमृषीणांचैव तर्पणमिति॥ उ
पीतं बाल्यलवणः श्रावणे दृष्टपर्णकितः
इति ५ कालदृष्टेनउपाकर्मणोप्युत्कर्षो
भवति॥ तदुक्तं कात्यायनेन॥ उत्कर्षः का
लदृष्टोस्यादुपाकर्मणि कर्मण॥ अभिवृ
कादिदृष्टेनांनचोत्कर्षो गुणाविद्धिविति॥ न
उदपात्रमसंगतेनोत्कर्षसूत्रनस्वगुणादिष्टु
पाकर्मणीचेति कृष्णपक्षगवचनेनविशे
षयतिचेत्र॥ कृष्णपक्षगवचनस्य संक्रान्तेर्या
विषयत्वात्॥ अतएवधांकालस्तावपि
सिंहार्केपर्वणोपाकर्म यथाहर्गार्ग्यः॥ सिं
हिरवौनपूर्वं दैव पूर्वाह्नेविष्वरेदविः॥ कि
दोगाभिलिताः [illegible]
शुक्लपक्षेतहस्तेनचोपाकर्मोपरागाहोन
मिति॥ सिंहरवौहस्तेनपरागाहानकर्मपा
कर्मपृष्ठदेपूर्वाह्णेऽस्नानेनासितपर्वः

240

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

न्नुमर्वाक्सित्रमुहूर्तोसमिति तयोरपराह्णव्याप्तिव
त्तेयुग्मं ... पयदि दिनद्वयेपि तदुपाकर्म।
न कार्यं ... वेधयुक्तत्वाभावात्ः। यथा॥ अथो
रपराह्णे तो वेधं दिनान्ते नवकं यदं॥ भेदा
लेषु समसमत्वेषु ग्रहणे पूर्वाभिस्तथैवयोः॥ न
क्षत्रा हारपराह्णे तस्तोधं तो वेधं दिङ्युक्ते
स्मृतेः॥ एकापराह्णिकः सोपोचनक्षत्रतः
पूर्वकोत्तिनः॥ त्रिविड्युक्तेस्मिन् योगः प्रोक्त इत्यथ
पूर्वदिनद्वयमिति॥ दिनद्वये ग्रहणात् सर्वेऽ
तेपि च॥ श्रवणस्य चनद्रपराह्णमपि स्पृश्रवणादे।
वधह श्रिनद्वयेनुपाकर्मे न कार्यमिति वे
व॥ उपाकर्मणि वेधदोषाभावात्॥ नक्षा
नित्यनैमित्तिके जपहोमयज्ञक्रियासु
च॥ उपाकर्मणि चोत्सर्गे ग्रहवेधो न विद्
यते इत्युपाकर्म॥ अथोत्सर्जनमुच्यते
तत्र कात्यायनवचनं॥ पौषमासस्य रोहि
ण्यामष्टकायामथापि वा॥ जलान्ते छन्द
सां कुर्यादुत्सर्गं विधिवद्द्विजः इति मनुरपि
पुष्ये तु छन्दसां कुर्याद्बहिरुत्सर्जनं द्विजः
माघशुक्लस्य वा प्राप्ते पूर्वाह्णे प्रथमेऽहनि
अत्र माघशुक्ले मतिभाद्रपदपौर्णमास्या
मुपाकर्म विधेयं॥ तदा माघशुक्लप्रतिप
द्यर्धपञ्चमासः सम्भवात्॥ हारीतो
पि॥ अर्धपञ्चमान्मासानधीत्यार्धषष्ठान्।
वेति॥ पञ्चार्धषष्ठान्वा॥ अत्रार्धमासा
नित्यपक्षग्राह्या ... कृतोपाकर्मवि।
धेयः॥ तदा माघमासशुक्लपक्षस्य सार्ध
पञ्चमासत्वसम्भवात्॥ न ... वृत्तिः क
र्मणामिह हिताः कर्तुः प्रातरोत्सर्गिकी क्रि
या॥ अपराह्णे तदुपाकर्म ... ह ... लयो

हिनेग्रहसं[illegible]
हिज्ञः ॥ हस्तेनैवपराह्णेतुउपाकर्म ॥ ७ श्रोत्रा
नकुर्यात्संगकुर्यात्हिन्दुपासजेन ॥ छत्रेवोपा ।
कर्मानेनरपराह्णेरत्नाविधिकुर्यात् ॥ न
नुक्तेसहस्यंतरे ॥ मरात्रौनकृतेष्वाव
नीपाठ्यलेनयथा ॥ श्रावणेनपतिहैतिग्राम
हेतिचपाठ्यलेनेयथा ॥ श्रावणीकर्मरत्ना
वेपत्रयंनत्रुपाकर्म ।नस्याः ह्वयतपादाना
न ॥ यथानिगमे ॥ श्रावण्यांश्रावणीकर्मय
थाविधिसमाचरेत ॥ उपाकर्मेनकृतेयोक
केटस्येदिवाकरे हस्तेउपाकर्मसतिसंभवे ।
महायानकार्येनस्याः सर्वेकर्मस्तनिषिद्ध
त्वात ॥ हस्तावेपकर्मसंज्ञानपर्वकार्यं ॥ स
वगुणोलोकविधिनाकार्यः ॥ नउकर्मभवि
धानतो ॥ उपाकर्महिनेयोत्कर्मश्रीणाम ।
पितपणं ॥ ततोपराह्णसमयेरत्नापोट ।
लिकांशुभा ॥ कारयेहत्नेतः प्राकैः सिद्धा
र्थैहमभूषिता ॥ वृत्तेर्विविचित्रैः कार्पासैः
सौमैवामलवर्जितैः ॥ विविचत्रंग्रथिंग्रंथि ।
तांस्थापयेद्भाजनोपरि ॥ उपलिप्तग्रहे मा
ध्ये हैनचतुष्कन्यसेच्छुभंपीठं ॥ तस्योपवि
षोराजासामात्यपुरोहितैः सहसुहृत ॥ तत्र
उपरोधायस्वयतेरत्नाबंधनंमंत्रेण ॥ मंत्रश्च
येनबद्धोबलीराजादानवेन्द्रोमहाबलः ।
तेनत्वांप्रतिबध्नामिरक्षेमाचलमाचल ।
ति ॥ ब्राह्मणैः क्षत्रियैः वैश्यैः शूद्रैश्चान्यैश्च
मानवैः ॥ कर्तव्योरक्षिनाचारोद्विजान्संपू
ज्यशक्तितः ॥ अनेनविधिनायस्तुरत्नाबंध
समाचरेत ॥ ससर्वदोषनिर्मुक्तः सुखंसंव
त्सरंवसेदिति ॥ आषाढ्यांश्रावण्यांप्रौष्ठ
पद्यांवासंवत्सरैविनापवित्रारोपणंकार्यं ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नइकमलस्यगते ॥ श्रावणस्यमघया
द्रूम्यांचतुर्दश्यामुपोषितः ॥ पवित्रैरचे
येच्छंभुंश्रावणेवेतरान्क्तयानितिश्रा
वणपौर्णमासी ॥ अथभाद्रपदपौर्ण ।
मास्यांसावित्रीव्रतंकुर्यात् ॥ नचैत ।
द्यामितिनारीभर्त्तासहयुक्तैसावित्री
व्रतंकुर्यात् ॥ तथाचभविष्योत्तरे ॥ अ
यतोऽपिहवश्रेष्ठसावित्रीव्रतमाचरात्
कथयाममहापुण्यनारीणांभर्त्तारावेहइ
ये ॥ त्रयोदश्यांपूर्वभाद्रपदेदन्तधावनमा
चरेत् ॥ त्रिरात्रंनियमंकुर्यादुपवासस्य
भारत ॥ अशक्तस्त्रयोदश्यांपूर्णनक्तं
योजितेन्द्रियः ॥ अयाचितंचतुर्दश्यांपूर्ण
मुपवासेनपूर्णिमास्याम् ॥ सत्यादिविधि ।
नवटसावित्रीयमवस्यायावत्स्नाने ॥ अ
थैवलोकपालपूजांचकुर्यात् ॥ तइकं
अलपुजाने ॥ पूर्वभद्रपदायांपौर्ण ।
मास्यांपितामहः ॥ शाकाम्भियमयाना ।
भोगाद्रविनेशाशाकरात् ॥ लोकपालां
स्त्रदाथंत्रैलोक्यस्याभिषेचयेत् ॥ इ
धियाधारणंयायतनथानेनचभौमि
ने ॥ तस्मात्तेनलिविन्यअमहेपत्रेसक
र्णिकं ॥ कर्णिकायांलिखेत्तत्रसमानेन ।
कमलोद्भवं ॥ प्राच्यांदिशिचपत्रेषुवा ।
मवायांश्रुसान्धान् ॥ ततःक्रमेणत ।
नेवमृत्युंपापकलशोशुभान् ॥ पश्चान्म
पूजनीयालक्ष्मणाग्रेनरयःसुरा ॥ इ
तिभाद्रपदपौर्णमासी ॥ अथाश्विनीपू
र्णिमा ॥ नइकमलम्रगतो ॥ अश्वयुजपौ
र्णमास्यांनिर्जभौवालकाणवान्
ग्रयातिसेनयासार्धंकन्यायुद्धेस्तार्क

243

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

णः ॥ नस्मात्तत्रनेमामोस्वगेरस्य समीः।
पवनाः ॥ कोपितनयाः उपलेन भूषितवे
स्वमेदनैः ॥ वैषमानि भूषणयानि नाना
रोगैः विशेषनः ॥ सत्सानेरगुलिमेस्तुन
रमोहिसवालकैः ॥ दिवानत्तनमोक्षच
मानुषैस्तविवेकिभिः ॥ लोवद्वमखेवा
लेस्तुमोक्षयदुर्जितैः स्वैः ॥ प्रजगाम्बुस
फलैः पवैस्तदाहारोर्ध्वमितयः ॥ दारो
पीतैश्चरैः प्रस्वसंस्पर्शोहवाचारुनः ॥ प
वासूतहलोपीतैस्तंदुलैस्तुकनपिनः।
सर्वजितवयाः पूर्णैहः प्रयस्मापायमेनः।
च ॥ कृतः सम्भार्थैः कांतस्तुतयाविराख।
रोगुतः ॥ गोमयैः स्वभिः पुज्यांविगो।
मिस्रुकृतापशनः ॥ डोरश्वविद्धिवेकमोक्ष
जवादिविनायकः ॥ पूजयः सामेस्तुरेव
तोयपाविमलविलसैः ॥ ततः प्रस्थेन
कंभस्तुसमांशैक्षिलतदलैः ॥ स्वर्गोपिमि
लतोद्योपैः कामरलैस्तुपूरिमि ॥ काम
रतोमोहिषाचगुग्गुलैः ॥ ग्रहणाम्बोज
पिवाचमोक्षयमोसुवर्जितेनमितिः ॥ श्री
स्त्रामेवाश्विनीपुत्रकायादहनमणिहवता
पात्रेरथानः ॥ पदारुविलसः ॥ प्रस्थग्रस्याम
श्विनीगतेनचइमंसाहनमणिपात्रेस
वसहितैविप्रायदत्वा ॥ होमाग्निमेवतो।
ति ॥ इदं यमेवकोमहीप्रोक्तः ॥ अस्यापिदं
लक्ष्मीचप्रजायेत ॥ नरस्तेमहाभारते ॥ श्र
णिमास्त्रदाजेमासिकोमहीयतिकी।
र्तिता ॥ कोमहीयाप्रजायेलक्ष्मीमिरसमेराव
णस्थिकैः ॥ निशिजागरणंकृत्वाप्रानसलं।
त्सर्वमाचरेत् इतिश्रीआश्विनपूर्णिमा ॥ प्र
थकार्तिकपूर्णिमा ॥ नत्रदीगमागम

244

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तु रतं तु गतं फलं तामिति॥ कं स्वर्णगोलो॥ र

ने॥ नरकं वसु ग्राणो॥ पौर्णमास्यां नु से
यो भक्त्या दामोदरः सदा॥ न मंशुद्धो दृष्ये
मृत्या स्नानं मासः कार्तिकास्तथा॥ कार्ति
के यत्नस्थावर्णो वरुणशुद्धताय्यनः॥ धा
न्नैः मत्स्ये केशवो बधं पृथिविन्यनि प्रागमे
मात्येषी ये तथा पूर्ण भक्षेप्रकृत्स्वावचेत।
या॥ परमाप्नैस्तथा प्रोक्ते वक्ष्रिअत्य
नपीताः॥ पवर्दीपांस्तु सपूर्णदीपो दृध्यो
गृहाश्रहिः दीपकपांतेनथागतेस्वनञ्ज्ञो
मनोहरः॥ चतविपुणगुलः कार्यः सि
ककेदनवारिणा॥ गवाह्लीरेणसपूर्णः स
मतात्परिशनः॥ नवे हेममयो मत्स्ये
मुक्तानेत्रो मनोरमः॥ अलेमन्यो विधाने
ननमोस्तुरयेपदेन॥ ब्राह्मणायाय थयो
गायरस्यांतदीरसागरमिति॥ अत्रैव।
कामधेनुर्होत्सर्गः कार्यः॥ नरकं भवि।
ध्योत्तरे॥ कार्तिक्यांतृषोत्सर्गं विवाहः
पुण्यलक्षणः॥ कार्यः कलशं कलशम्बर
रेनोगान्नेतथा॥ प्रदेयाः पुण्यफलमिह
ला लाः संकल्प देवता इति॥ मत्स्यपु।
राणेपि॥ कार्तिक्यां यो वृषोत्सर्गं कुरुवान
कस्समाचरेत॥ पूर्वं परमवाप्नोतिषी
वद्वनमिदं स्मृतं॥ तत्रैव ब्रह्मपुराणे नी।
लहष्वतानश्रुतो॥ नथाच॥ नीलंच वृष
भं दद्याद्वैनं वस्त्रदेयकं॥ सर्वं सं स्पृ व
र्त्रम्यं सर्वं गौपसमन्वितं॥ सहवासं स्था
नाणाय महाकालान्तारतारणं॥ यावंतित
स्यरोमाणि पुत्रीदे संतिसंख्या॥ तावद्यु
गसहस्राणि स्वर्गवसतिनपदः॥ स्कन्दपु
राणतनो विशेषत्कमास्याकलेपनेः॥ भो

245

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मोक्षो गोरसमग्राय स्वमग्धं स्थंडिले ननं इति
स्कंदपुराणे न विशेष उक्तः ॥ नैप वाच ॥ ना
मिवदूतपुरायनः पूर्णो मेवा पवाय्यतः ॥ ना
वकाशे त्रिसंवत्सरे ग्रंथानि नियमान्स्व
नस्मामें कं समाचरेत्तवनेग्रन्तविरोधं ॥ ये
न कौमीन मर्विधिः प्राप्यते स्वमहत्फलं
स्कंद उवाच ॥ अस्य केनागारेनामग्रनाना
ग्रवस्थतमं ॥ यत्कैना समवासो तिर्जेनलो
कान्नयेत्तमान् . . . कार्त्तिके मासिस
र्मिमायागतेक्षुरं ॥ पैगावलाममात्रच्छंदः वा।
क्रोलोकान्नुक्रमणया ॥ परिभ्रमतिलोका
स्तौ न्वयपश्यक्रवरप्रद
नैनमामारायपतीस्युत ॥ नैनैकोद्भवा
रना मग्रनेलोकेषुविश्रुतं ॥ विधानेन।
स्वकामि श्रमास्त्रुका त्रमानसः ॥ पूर्णि
मायाश्चर्तमासिकोमसीपरिकीर्तिता ॥
नत्रांगायमसूल दमीभिर्देवेगावतास्यन
उपवासंप्रकुर्वीतदीपान्दद्याच्च भक्तितः
लक्ष्यंतरूर्ध्वमत्रतेमस्थं प्रतमेव वा ॥ ह
नेनदीपयेद्दीपान्तिलतैलेन वर्तिना ॥ सा
वैजागरणं कार्यं स्तनगीतनृत्यसंयं ॥ यथा
विभवतोदेयाः शरावोछेदीपकाः ॥ दे
व्यषुदेवायतनेषु वाराशेषु गृहेषु च ॥ नतः
प्रभाते संप्राप्ते तः संपूज्य वंशनक्षत्रे ॥ ब्रा
ह्मणान्भोजयेत्स्त्रीरहितश्चकेरपायसैः ॥
वासोभिर्दक्षिणाभिस्तन्ननस्तान्प्रजयेद्दि
जान् ॥ यथाशक्तिचदातव्याश्चदीपाः स्वर्णे
विनिर्मिताः ॥ एवं निर्वत्यविधिवः
. . . . प्रतस्यास्यविधानेनः
कस्यानेदीपसंख्यया ॥ अप्सरोभिः ॥ पो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लूहतिश्राककामति । कंदपुराणे ॥

कृतः स्वर्गलोके महीयते ॥ इह चायुष्य
मारोग्यं पुत्रपौत्रसमन्वितं ॥ लभते च न
माहात्म्यात्कलौ दृष्टं गणेश्वरेति ॥ स्कंद
पुराणे नागरखंडे ॥ कृत्तिकादिन नक्ष
ये ये नक्षत्रगणास्तामहं वच्मि कं यथा ।
श्राधे यत्न यदस्वदं कार्त्तिकेना भवतिस
चित ॥ मघनी सा तिथिर्ज्ञेया स्नानदाने
षु चोत्तमा ॥ यदा यस्य पंचदश पूर्णमस्य
नक्षत्रतिथ्योर्भवेत् ॥ तिथिः सा च महा
पुण्या मुनिभिः परिकीर्तिता ॥ प्राजाप
त्यं यदा ऋक्षं पतिर्यो न स्यान राधिप ॥ सा
महाकार्त्तिकी प्रोक्ता देवानामपि दुर्ल
भा ॥ तथा ॥ महापुण्या कार्त्तिकी स्याज्जी
वेंदोः कृत्तिकास्थयोर्यदि ॥ तथा ॥ वि
षुवा वास्य यदा भानुः कृत्तिकास्थश्च चंद्र
माः ॥ स योगः पद्मको नाम पुष्करेष्वति
दुर्लभः ॥ इयं मन्वादिरपि ॥ तदुक्तं ॥ आश्व
छोकार्त्तिकी न हहि ति कार्त्तिकी पूर्णि
मा ॥ अथ माघे पौषे पौर्णमास्यां च द्र
प्रजा ॥ तदुक्तं अलपुराणे ॥ माघपौषादि
थिप्रक्रमे ॥ वामनेन त्रिय हिसोमस्तदेवध 247
वनत्रयं ॥ अत्र नक्षत्रान्तरे च स्त्रुतेना
मिश्च येन ॥ पौर्णमास्यां तस्यां तत्रुज
यतः सर्वदा ॥ श्लोकैः पुष्पैः धूपयसाश्रु
द्यापरयामृता ॥ नेत्रे दीपवलिर्मिश्रै
मेघ्रो हाण न पोले: ॥ गोभ्यश्च लवणं दद्या
न स्मिन्नहनि सर्वदा ॥ यस्मान्न लवणं चेद्रा
द्रत्प्राहि निस्तरे ॥ मानसा साचरहिता
मयस्याधुरुलोगना: ॥ कांतेरूपं भवेल्ली
णं पुर्लोचेरोः प्रजना हितिः ॥ अस्या मेव म
गस्तिनेन दवेयकायायास्त्र वर्णोहीणां तल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुलानां विलसेनो कंपतो ॥ माघ पूर्णिमायां शुक्ल
पूर्णीयां स्नात्वा शिवसायुज्यका याह्नि तिनलव
णस्य सर्वाणि नामप्रयं वे इंद येत्रा लला
ग्रटयात ॥ अनेन कर्मणा तु पसौभाग्यला
भोजयेत ॥ इति माघी पूर्णिमा ॥ अथ
पौषी ॥ न स्नात्वा पुष्यनक्षत्रयुक्तायाम लक्ष्मी
नाशनादिकं कार्यं ॥ न ऽभ्यं चलक्ष्मणा ॥ इ
दं यात्तु गालस्यात्यक्त मासीत तो रविः
पुरदेव सोमसुत यात पुष्य हस्त स्वाती ॥
पंचैते पुष्ययोगेन पौषमासे स्नान पौवला
न ॥ अलेक्तेन पुनः शुक्रः सौभाग्यत्स्यवल
तीभिः ॥ न स्नात्रैः पुष्ययोगे पुत्र सौभाग्य
सिद्धये ॥ गोरसं घंवकल्केन समालभ्य ।
सर्वाणि ॥ कृत स्नाने ततः कार्य मलक्ष्मी
नाशनं परं ॥ ऽहतं देव वचनं ततः सर्वौषधि
युतैः जलैः ॥ स्नापयित्वा नवं वस्त्र युग्मं ना
कारं ततः ॥ इह चे मेगाल पानं प्रपवस्तुः
माल्य प्रोक्षितं ॥ ततो नारायणः पूज्यः व
रः पुष्य हस्त स्वाती ॥ संपूज्य पुष्य पुष्ये पृष्ठे
वेशेषु पृथकं पृथक् ॥ प्रयातो वैदिके म
त्रैः कृत्वा मिस्र वर्णेषु मं ॥ धनेविंशत्यु मत ।
थेनवे वे सुश्रुणामि नान ॥ ततः आहिक
रहस्य भोक्त वे हुत न पायुसे ॥ पुष्य योगत
कर्ने वा ज्ञाता ज्ञाना नेत सर्वे इति पौष पौर्ण
मासी ॥ अथ माघ पूर्णिमा ॥ अस्यां मघा
युक्तायां तिलैः श्राद्ध तिलपात्र प्रदानेन कु
र्यात ॥ तत्र विशेषः ॥ माघी मघायुक्ता चेत्स्या
त ॥ तत्र स्नान तिलैः श्राद्धं कृत्वा पुनो भवेद्विति
भविष्योत्तरे पि ॥ माघ्यां मघासु तत्तिलैः ।
स्नानं सम्यक् देवता: ॥ तिलपात्राणि देया ।
नि तिलाः सफल लोटने ॥ कार्यः सदान ।

लुह्लिपयकलामिति ॥ कंसपुराणोप २

मेवतिलदानेनप्राप्यते ॥ कंबलाजिन
रत्नानिमोरकोग्रहसिध्यते ॥ उपानहान
मेवकापितेसर्वकामदं ॥ तत्रवानतत्रवा
स्त्रानेदानेविलासमानुतेइति ॥ भविष्यो
त्तरेपि ॥ पौर्णमास्यांतयोमासेप्रजयेद्वि
धिवच्छिवं ॥ सोश्वमेधमवाप्नोतिशिव
लोकेमहीयतेइतिमाघपूर्णिमा ॥ अथ
फाल्गुनपूर्णिमायांहोलिकानिर्णीयते
मासायाह्नव्यापिनीग्राह्यापूर्वविद्धानं
तु ॥ सायाह्नेहोलिकाकुर्यात्पूर्वाह्णे
क्रीडनंगवां ॥ दीपंदद्यात्प्रदोषेतुएषध
र्मः सनातनः इति ॥ तथा ॥ श्रावणीदुर्गा
नवमीदूर्वाचैवहुताशनी ॥ पूर्वविद्धैव
कर्त्तव्याशिवरात्रिर्बलेर्दिनमिति ॥ तत्र
भद्रायांहोलिकांनदीपयेत् ॥ तदुक्तं
भद्रायांदीपिताहोलीराष्ट्रभंगंकरोतिवै
नगरस्यचनैवेष्टातस्मात्तांपरिवर्जयेदि
ति ॥ तथाचस्मर्यते ॥ भद्रायांद्वेनकर्त्तव्ये
श्रावणीफाल्गुनीतथा ॥ श्रावणीनृपतिं
हंतिग्रामंदहतिफाल्गुनी ॥ तथाच ॥ दिन
द्वयेपितिथिस्यात्फाल्गुनीपूर्णिमायदि
रात्रौभद्रावसानेतुहोलिकांतत्रदीपये
दिति ॥ परदिनेत्रिनाड्यान्यूनत्वेपिपूर्णिमा
याविद्यमानायांपूर्वविद्धायामेवरात्रौ ॥
भद्रावसानेहोलिकादीपनमित्यर्थः ।
यदापुनः ॥ परदिनेसार्धयामत्रयव्यापि
नीपूर्णिमाप्रतिपच्चवर्द्धमानेति ॥ त
दानैवहोलिकाकार्या ॥ तदुक्तंभविष्यो
त्तरे ॥ सार्धयामत्रयंयास्याद्वितीयेदिवसे
यदि ॥ प्रतिपद्वर्धमानातुतदासाहोलि

249

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection.

कास्सतेति ॥ एतद्वचनं ॥ वृक्षो गृहि परित्य
तेहृति ॥ अहो होलिकायां वृक्षि प्रतिप
देवजं ये हित्यर्थः ॥ एतत्समये कालमहा
ग्रहितप्रीतिमासंभवो ॥ नाम निक्रमप्रति
परिनकर्तव्यमित्येतत्र ॥ अन्यथा भविष्य
तरोगानस्य विरोधास्यात ॥ अथात्र कते
प्रमुच्यते ॥ तत्र भविष्योत्तरे राजानं प्रति
पैत्रवाक्यं ॥ अस्माकं गृहे कापि ढुंढाना
मेति राक्षसी ॥ दिवारात्रौ समभ्यास्य बाला
नीडयते बलात ॥ रक्षायाः कृत्केनापि भैष
ज्येनामन्त्रिणापि ॥ मंत्रैः पुरुषाचार्यैः सा
नियंतुं न शक्यते ॥ एतच्छ्रुत्वेवं समाख्याने
ढुंढायाश्चरितं स्वपितोरचः श्रुत्वा ।
राज्ञा पृष्टोथ नारदः ॥ श्रीनारद उवाच ।
मास्तकथयिष्यामि येनापायेन रक्षा ।
नै ॥ अद्य पंचदशी शुक्ला फाल्गुनस्य न
राधिप ॥ शीतकालो विनिष्क्रान्तः प्रातः ।
ग्रीष्मो भविष्यति ॥ अभयं चापि लोकानां
दीयतां पुरुषोत्तम ॥ यथायथं पीकिताला लो
काः स्मितिवस्संति च ॥ नीरुजाः काष्ठ
ज्ञानि गृहीत्वा समरोत्सकाः ॥ योधा इवावि
निर्यांतु शिशवः संप्रहर्षिताः ॥ संचयं
शुष्ककाष्ठानामुपलानां च कारयेत ॥ त
त्राग्निं विधिवद्धुत्वा रक्षोघ्नैर्मंत्रविस्तरैः ॥
ततः किलकिलाशब्दैस्तालशब्दैर्मनोर
मैः ॥ तमग्निं त्रिपरिक्रम्य गायंतु च हस
न्तु च ॥ जल्पन्तु स्वेच्छया लोकाः निःशंका य
स्य यन्मते ॥ तेन शब्देन सा पापा होमेन च
निराकृता ॥ अदृष्टघाता डिंभानां राक्षसी
क्षयमेष्यति ॥ ततः प्रभृति लोकेस्मिन् होः

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तृतीयामाकृतामति ॥ कृष्णपक्षेणि ॥

लिकाख्यातिमागता ॥ सर्वदुष्टापहो ह्य
सः सर्वरोगोपशांतिदः ॥ क्रियते स्मादि
जैः पार्थ तेन सा होलिका स्मृता ॥ सर्व
सारा तिथिश्चैव पौर्णमासी युधिष्ठिर ॥ त
स्यां फाल्गुनि त्यक्षापरमानेहरायिनी ॥ अ
स्या निशागमे पार्थ संरक्ष्याः शिशवो गृ
हे ॥ गोमयेनोपलिप्तेन सचतुष्के गृहांग
णे ॥ आकारयेच्छिशुप्रायांश्च खड्गव्यग्रकरा
न्नरान् ॥ ते काष्ठखंडैः संस्पृश्य गीतैर्हा
स्यकारैः शिशून् ॥ रक्षंति तेषां दानं च गुडं
पक्वान्नमेव च ॥ एवं दुष्टतिथ्यां स्यात्तः स
दोषः प्रशमं व्रजेत् ॥ बालानां रक्षणं का
र्यं तस्मात्तस्मिन्निशागमे इति होलिका
निर्णयः ॥ फाल्गुनमन्वादितिथि ॥ अथ
चैत्रादि पूर्णिमा चित्रादियुक्तेषु चैत्र्य ।
दि स्यात्तासां नामानि चैत्र्याद्याः प्रोक्ताः ॥
नन्दाहूताश्च ॥ मासमध्ये यदा ऋक्षे चेदः
स पूर्णिमेदलः ॥ गुरुणा याति मेषोपमा ।
तिथिर्भरणी स्मृतेति ॥ मेषे पूर्णिमेदलस्य
नेन पूर्णिमा या पञ्चयोगाभिधीयते ॥ श्री
कण्ठीनाथ ॥ एकराशिगतौ स्यातां य
दा गुरुनिशाकरौ ॥ सा पौर्णमासी महती
सर्वपापहरा स्मृतेति ॥ ज्येष्ठपूर्णिमायां
गायत्र्याविपूजाउक्तः ॥ पैङ्गीयकः श्रावणी
चैव प्राजापत्यो रविस्तथा ॥ पूर्णिमा ज्येष्ठ
मासस्य महाज्येष्ठी प्रकीर्तिता इति ॥ तथा च
ब्रह्मवामिश्रुते भानौ जीव चेन्तत्र तथा इमे
पूर्णिमा सगुरोर्वा रेमहाज्येष्ठी प्रकीर्ति
ता इति ॥ माघपूर्णिमायां तेनैव विशेष
उक्तः ॥ मेषराशौ यदा सौरिः सिंहे चेद्गृह

बृहस्पती॥ भास्करः शुक्रके दैव महामा।
घोतिसप्तरनेति॥ एतामहाचैत्रादयः सा
लिग्रामादितीर्थेषु स्नानादानादिषु पु।
ण्यतमाः॥ यदाहगार्ग्यः॥ महामाघेप्रय
गतेनेमिषेकाशुग्गीनथा॥ सालिग्रामेम
हाचैत्रीकृताः स्नुःपुण्यदेनवः॥ गंगाद्वा
रेचैवगावीस्येहेनपुष्करेतनमे॥ श्रावणे
वैकुनावलोकेदारेश्रावणेनथा॥ वदर्यी
यांचैवप्रोष्ठपदीकुरुक्षेत्रमहाश्विनी॥ पु
ष्करेकार्तिकेकान्यकुब्जेचैवमार्गशीर्षिक
प्रयोध्यायांमहापौषीकुर्वन्तांस्नानस्यफल
प्रदाइति॥ सालिग्रामादिक्षेत्रविशेषस्या
नेषुपिमहाचैत्र्यांस्नानेनफलदाभव
ति॥ तदाहगार्ग्यः॥ आसप्तकिसपनेत्रा
इंपचदानेयथाविधि॥ उपवासादिके।
यच्चान्यं तेनफलेस्तनमिति॥ अथविरु
विफलादिकेलिरुयते॥ पूर्णिमाग्रहवारे
णमिष्टा॥ गुरोरहंशमीपंचम्योपंचदपूर्णति
अत्रपंचमीवहिवारयात्रादिकेकार्या॥ अ
त्रैवतिथिपत्रावेदः स्कन्दः नरके॥ पर्वे।
तोरविति॥ क्रूरग्रहैर्युतर्याहि रिपाश्च
नक्षत्रे पूर्णिमाशुभानभवति॥ योगिनी
मातृस्थोऽहेषुनान्यायात्रानकार्या॥ इतिद
र्शिमानिर्णयः॥ अथवतादिष्यमावस्या
निर्णीयते॥ तत्रोपवासादिष्वमावस्यात्र
तिपद्यैवग्राह्या॥ तदुक्तं पद्ममवाके॥ प्र
तिपद्यमावस्येति॥ तदुक्ते॥ घ्रमावस्या।
नतीयाचतोउपोष्यापरान्विनाइति॥ निग
मेपि॥ घटघटघमामावस्येति॥ चतुर्दशीनि
घटस्तुनिगमे॥ भूतविद्धावमावस्याप्र।

252

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लं हितं गुणाकृतमानि ॥ स्कंदपुराणोक्त
नविधानममावस्यामाश्रित्यनिर्णयोवे
दिति ॥ कृष्णाष्टमीहस्तेनत्याज्या सावित्री ।
वटपैतृकी ॥ ज्येष्ठकृष्णत्रयोदश्यां आरंभो नो
पोष्यापरसंयुता इति ॥ अतस्तु वटसा
वित्रीव्रतंतिथिके ज्येष्ठामावास्यापरायणैव ।
ग्राह्येति सिद्धान्तः ॥ ज्येष्ठमास्याममावास्यां
यां वटसावित्रीव्रतं कार्यं ॥ तत्रायं वि ।
धिः ॥ ज्येष्ठकृष्णत्रयोदश्यां मां ।
भवि त्रिरात्रोपोषिता नारी ॥ अशक्तौ तु त्र
योदश्यां नक्तं चतुर्दश्यामयाचितं ॥ अ
मावास्यायामुपवासं कृत्वा कस्मिंश्चित्
ज्येष्ठमासे बाले कं यवं यद्दि धान्यं चादा
य तत्स्योपरि वस्त्रयुग्मेन वेष्टितां वंशपा
त्रे स्थापिता निर्मितां सौवर्णीं मृन्मयीं सा
वित्रीं प्रतिमां संस्थाप्य वटमूले पूजयेत्
नानाफलानामर्घ्यं दद्यात् ॥ तदुक्तं भविष्यो
त्तरे ॥ ज्येष्ठमास्यां च तथा ज्येष्ठे वटमूले महा
सती ॥ त्रिरात्रोपोषिता नारी विधिना ने
न सुव्रतेन ॥ अशक्तौ तु त्रयोदश्यां नक्तं
कुर्याज्जितेन्द्रियः ॥ अयाचितं चतुर्दश्याम
मावास्यां समुपोषयेत् ॥ हरिद्रां बालुकं
पात्रे प्रस्थमात्रं तु गृह्य वैः ॥ ततो वंशमय
ये पात्रे वस्त्रयुग्मेन वेष्टितं ॥ सावित्री प्र
तिमां कृत्वा सर्वावयवशोभिनीं ॥ सौव
र्णीं मृन्मयीं वापि स्वशक्त्या विनिर्मि
तां ॥ सार्धं सत्यवता साध्वीं फलैर्नैवेद्यप्र
यकैः ॥ वटवृक्षे भिनवत्वाकाष्ठमारंगु
पिहिन् ॥ वितृत्यैः समधानेस्त्ववरूपा मं
प्रकाल्पितैः ॥ तामनुकं स्मरे स्वस्त्र पैः क

253

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मकेसरेः॥ सावित्र्याख्यानकृतेव्रा
वेयेरोहृजातमसः॥ तत्रोजागारणकन्या
वृतगीतश्रवःसरे॥ ततःप्रभातेविधिना
पूर्वोक्तेननरोपिय॥ तांदद्याच्चैवविप्रा
यप्रतिमांवस्त्रभाजनं॥ दानमंत्रश्च।
सावित्रीयंमयादत्तासहिरण्यामहासु
नी॥ ब्राह्मणःप्रीणनार्थायब्राह्मणप्र
तिगृह्यतां॥ एवंदत्वाहिदेवायसावित्री
नांगृहीहरि॥ नैवेद्यंहिवनंनत्वंर्वेष्ठाः
ललासहदूरनयेत॥ स्वयंदत्पापदेगवे
रुवैपमपुनरावियोतं॥ नउपुकाम्हवि
धानेब्राह्मणेर्दीपवैःसह॥ विसर्जये
ततोविप्रान्सावित्रींप्रियतामिति॥ अने
नानेनराजेंद्रवेधव्यंनाप्नुयात्क्वचित्
अथकार्तिकामावस्यायांलक्ष्मीव्रत
म्॥ तत्रेवं॥ तत्संकल्पंलक्ष्मीप्रज्ञादिकंनवव।
त्यधारणंचकुर्यात्॥ नऊकंश्रुल्लपुरा
णे॥ अमावस्यायांदेवाःसुकार्तिकेमा।
सिकेशवात्॥ अभयंप्राप्यलक्ष्मीर्व।
संवृत्तारसातले॥ लक्ष्मीदेत्यभया
त्मुक्ताःस्तुसुखंसुप्तासुरोदरे॥ अतोत्रवि
धिवत्कार्योमनुजैःसावलसंमिका॥ दि
वातत्रनभोक्तव्यंऋतेबालातुरेजनं॥ प्र
दोषसमयेलक्ष्मींवोधयित्वायथाक्र
मं॥ दीपदानानियात्रायांकार्याःप्राक्सादि
वेषुदेवगृहेषुच॥ दीपमालापरिक्षिप्रेप्रदोषे
तदनंतरं॥ ब्राह्मणान्भोजयित्वादौविभ
ज्यचबुभुक्षितान्॥ अलंकृतेनभोक्तव्यो
नववस्त्रोपशोभिना॥ स्निग्धैश्चबंधुभिःसार्धं।
दयैःस्वबंधवैर्वर्निपैश्चतैःसहति॥ अत्रैववा

ज्ञाकौमहीमहोत्सवेकृयात ॥ तदुक्तं ॥
तोपराह्णसमयेहोमयोत्पद्वानृपः ॥ स
र्वराजवलेलोकेयुक्तंवेहनामिति ॥ लो
केख्यापितयाहेदेहपापवलितानि
हृतावेदनमालाभिस्तुचितेचगृहेगृहे ॥
हृतपानवतेयुक्तेनरनारीमनोरमे ॥ नतवा
द्दित्रमेघहेमेघकमलिनदीपके ॥ दीपमा
लाकुलेरम्येविधूलाधानसंचये ॥ प्रदो
षदोषरहितेशलेदोषागमेशुभे ॥ वधू
विलासिनीमार्थेमत्तेगेगलकारिणि ॥ गृ
हाङ्केवस्त्रजातेपादप्रमंगप्रदायिनी ॥ त
नोर्थेतावसमयेस्वयंराजाप्रवृत्तेत ॥ प्र
दलोकयितरम्यपद्यामेवशनैःशनैः ।
ततःप्रभातसमयेनारीभिरलक्ष्मीहृदाव
कास्यते ॥ तदुक्तं ॥ एवंगतेनिशीथेतुजने
निद्रार्धलोचने ॥ तावन्नगरनारीभिःशूर्प
डिंडिमवादनैः ॥ निष्काश्यतेप्रहृष्टाभिर।
लक्ष्मीःस्वगृहांगनात् इतिकौमदीमहोत्स
वः ॥ मार्गमासस्यायामाविधीसहितेन्वा
सिणोसहितगणेसरवंसोवेगौआप्रमाणयार।
यात ॥ मार्गमासस्यायाशुक्लाभिषतदु
क्तायाश्राद्धेपित्रणांमहातृप्तिर्भवति ॥
तदुक्तंविष्णुधर्मेमार्गासितेपंचदश्यांका।
र्तिकेचपितृयोगयदिदवार्क्षणोन ॥ इदंह्यत्र।
कालःसुपरःपितृणामनल्पपुण्यैर्नृपल
भ्यतेसाविति ॥ तदुक्तं ॥ तत्रैववचोद्धाडपरा
शुक्लायामाश्रादहिनामसरस्वगणपर्येनन।
प्रीर्भवति ॥ तदुक्तं ॥ तत्रैववचोड़ाउपदानतु
पंचकालेनह्यायात्क्रियतेपितरमुःश्राद्धेपण
तासिमवाप्नोतियुगान्ससहस्रपितरस्तेतसौ

255

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कास्वयमवयानिष्ठाञ्जुत्ताश्वर्णाशुतेनेनमितामि
वेति ॥ नत्स्वत्समहाभारते नमाद्यामावस्याश्र
क्रमे ॥ कालेयन्विष्ठायरिनामनत्सिन्मृते
द्विभूपालनत्तापितभ्यः ॥ नतेजलात्रेव
ददानित्त्रिवर्णाशुतेनेनकुलेनमेवुधे
रिति ॥ माघयोष्ठयोरमावस्यागविकार
श्रवणेनतत्रव्यातीयातेर्पुण्काचेततदायो
रयकाद्यः कोटिगुणगतफल्यपेयोगः ॥ तद्द्र
के महाभारते ॥ अमार्कवारश्रवणोर्थयुक्ता
वेत्योषमाघयोः ॥ अर्धोदयः सविद्येयः को
टिसूर्यग्रहोपमः ॥ दिवेवयोगः पात्नोर्थ ।
ननरात्रौकदाचनेति ॥ स्कंदपुराणेपि ॥ अ ।
र्धोदयोद्विसप्तामेसर्वगंगासमंजलं ॥ शुद्ध ।
तात्मानोद्विजाः सर्वेभवेयुर्ब्रह्मसंनिभाः ॥
यत्किंचित्क्रियतेदानंतद्दानंमेरुसंनिभं ॥ न
थात्रैवामत्रदानादौविष्णावक्ष्मः ॥ चेन्न ।
क्षिहिपतलहश्नुस्समतत्रतत्रकारयेत ॥ चंद्रा
दिशात्मलेवापिपंचविंशातिमेववा ॥ निय
यपायसेनत्रयपायमहिटलेत्रमे ॥ अमतेस्या
पयेनतत्रलविनम्प्रिवात्मके ॥ नेषाधीति
करापीयश्चेतमाल्पेः ससृष्टोभनेः ॥ वस्त्रा ।
दिभिरलंकृत्वाब्राह्मणानिवेदयेत ॥ दा
नमेतत्रसु ॥ सर्वपापमयामेतत्रयस्मादेवत्र
यीमये ॥ अवयोस्तावकंयस्मात्तस्माद्वा
256
हिमांत्तमेकि ॥ समुद्रमेखलादत्वा पृथ्वीय
लभतेफलं ॥ तत्फलंलभतेमर्त्यः कृत्वाद्वा
नममत्रकंमित्यधोदयविधिः । अथमहो
दयः ॥ माघश्रगेकैविकयुक्तायादिक्तु ।
हूभवेत ॥ तदामहोदयोनामदेवानामपिदुर्लभ
द्भलेभः ॥ यात्काचिद्माघमास्यात्ररायोविष्ण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ऽमावास्यातिथियुक्ता आर्द्रेनाडिकाषष्टिकीर्त
त्रिपितॄणामहरति ॥ नहकं विलम्बता।
ते ॥ अमावास्या यदा पुष्ये रौद्रेऽर्क्षे वा पु
नर्वसौ ॥ द्वादशाहेन दानं मिश्रयाति पि
तॄन्पितॄविताइति ॥ सोमवारयुतामावास्या
सूर्यग्रहणसमा भवति ॥ तत्र श्राद्धादि
के कृते मनन्तफलं भवति ॥ तदुक्तं पो।
केन ॥ अमावास्यां तु सोमेन सप्तमी भानु
ना सह ॥ चतुर्थी भूमिपुत्रेण सोमपुत्रेण
वाष्टमी ॥ चतस्रस्तिथयस्त्वेताः सूर्यग्रह
णसन्निभाः ॥ स्नानं दानं तथा श्राद्धं सर्वं त
त्राक्षयं भवेदिति ॥ फाल्गुणामावास्यायां
तु लिंगपुराणे फाल्गुणे तिथिप्रक्रमे वि
शेष उक्तः ॥ अमावास्यां तु पूर्वस्य भाद्रे
त्रिशालात्मनस्तथा ॥ समोष्टकैः पोडका
भिः पुण्या स्वात्मा स्रवाधव इति ॥ इति त्र
योदशमावास्यानिर्णय ॥ अथ यामाद्य
र्धानेमिश्रदर्शपूर्णिमामावास्यायोर्निर्ण।
यः ॥ तस्य च पर्वप्रतिपत्सन्धिनिबन्धना।
त्वात्तदिष्टमध्याह्ने ॥ मध्याह्नात्सर्वपर्व
नः संगवसायाह्नयोरन्तरेसन्धिविस्र
मावाम्नमध्याह्नेति स्वरूपपरिज्ञाना।
र्थः ॥ मध्याह्नः पञ्चविभागउच्यते ॥ सच।
व्यासेनोक्तः ॥ मुहूर्त्तत्रितयं प्रातः ॥
कालः ॥ तस्मात्तरंमुहूर्त्तत्रयं संगवस्ततः
परंमुहूर्त्तत्रयं मध्याह्नः ॥ ततः परंमुहूर्त्त।
त्रयमपराह्नः ॥ ततः परंमुहूर्त्तत्रयं सा
याह्नः इति विष्णुद्वादशात्मकस्याह्नः प
ञ्चधैरिकाभिरेकैकस्मिन्कालेसतिपञ्च
धा विभागो भवति ॥ परात्रागोप्यात्र ३२

याहारितोयावद्विमुहूर्तेगतोरविः॥प्रा
तःकालःसविज्ञेयोदिनभागःसपंचमः
तस्मात्प्रातस्तनात्कालात्त्रिमुहूर्तस्तुसं
विधः॥अपराह्णात्त्रिमुहूर्तःकालःसार्ध
ह्नउच्यतेइति॥नन्वविषुवेषुमुहूर्ताःपंचद
शमुहूर्तात्मकेवसंभवतीतिचेन्नत्वेत
त्रिमुहूर्तेमित्यहःपंचमभागस्योपल
क्षणं॥अतोद्वेधाहरिनोदेनामध्य।
पंचधाविभागः॥प्रातरादिकालस्योपल
क्षणं॥त्रिमुहूर्तोदिकालेवकालानीत्येव॥
ह्यस्यैवत्रिमुहूर्तेत्वमानमितिस्वरूपं॥के
चित्पंचदशधापाहोविभागमाहुः॥नर
केव्यासेन॥तोरस्वद्वयस्थमेवस्वनयाचा
रमटःस्मृतः॥सावित्रस्तुअयनस्तुगंध
वः॥क्षणपलश्या॥गोहिनेणस्तुविरिंच।
स्तुविज्ञेयोनैरनलश्या॥मलेद्रोवाहल
स्तुवभागःपंचदशःस्मृतःइति॥अत्राचि
दिनमानस्यपंचदशांशोमुहूर्तोवि
वक्षितः॥नत्रकेरत्नमालायां॥दिनस्यच
पंचदशांशोहिभागोगांधर्वलक्षणान्हिमुहूर्
तेमानं॥कश्चिद्विभागउक्तः॥त्रिधा॥यदा
हशातातपः॥पूर्वाह्णोमध्याह्नोपराह्णः।
इत्युक्तं॥पूर्वाह्णोदेवानांमध्याह्नोम
नुष्याणांअपराह्णःपितॄणामिति॥द्वे
धापराह्णविहितापिविभागउक्तः॥प्रायेणे।
नाह्निश्चाह्णोस्यपंचाह्नतत्तनपरोमति
प्रसंगतःकालविभागउक्तः॥प्रकृतम
नुसरणेनसर्वप्रतिपदोक्तभवेत॥नरक
यामिश्रितप्रवरनक्षत्रोपदेशनीति॥पर्व
प्रतिपदोःसंधिर्वाआवनेनायदि॥त

258

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्मिन्नहनियच्छेषंपूर्वंयःस्यादुपक्रमइ
ति॥आवर्त्तनेमध्याह्नः॥लौगाक्षिरपिपू
र्वाह्णेचाथमध्याह्नेयदिपर्वसमाप्यते
उपोष्यतत्रपूर्वेद्युःपरेद्युर्यागइष्यते॥गो
भिलोपि॥आवर्त्तनात्परःसंधिर्यदित।
स्मिन्नुपक्रमः॥पूर्वेद्युरितिनित्यत्वपर्वद
र्शनिर्णयः॥अत्रपर्वद्वयविनिर्णयइ।
त्युक्त्वादर्शपौर्णमासमावास्ययोःसा
धारणोनिर्णयः॥विशेषस्तूच्यते॥तत्र
पूर्णिमाप्रतिपत्संधिःसंगवादूर्द्ध्वंमध्य
ह्नात्पूर्वंयदाभवतितदातत्रैवान्वाधा
नयागौनकुर्यात्॥तदाहकात्यायनः
पूर्वमावर्त्तनात्तुचेत्॥सापौर्णमासीवि
ज्ञेयासद्यःकालविधौतिथिरिति॥न
त्वेवमेतत्पूर्वेद्युरन्वाधानयागौचकुर्या
त्॥तदाहकात्यायनः॥मध्येयच्छ्यामि
तिविशेषःस्यादितिचेत्॥संगवात्पूर्वं।
मपिसंधेरावर्त्तनादर्वाचीनत्वात्॥तदि
द्वयंगोभिलवाक्यंकात्यायनवाक्य
स्यतुसंगवोर्द्ध्वंभागमध्याह्नावार्वाचीन।
संधिविषयः॥यद्वागोभिलोपिवचन
पर्वद्वयसामान्यवचनमितिविशेषव
चनेनसामान्यबाधइत्यविरोधः॥अमा
वास्यायान्तुविशेषः॥यदिप्रतिपदिहि
तीयात्रिमुहूर्त्तात्मकपराह्णंव्याप्नोति
तत्रचन्द्रदर्शनस्यासंभाव्यत्वाच्चतुर्दश्या
मन्वाधानममावास्यायांयागःकार्यं
नतुकेचिदहस्छलातपेन॥द्वितीयात्रिमु
हूर्त्ताव्याप्तिपक्षायापराह्णिकी॥अ।
न्वाधानंचचतुर्दश्यांपरतःसोमदर्शनात्।

259

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिति॥ सोमदर्शनदिने यागनिषेधोऽह
इत्यभिहितो नोक्तः॥ इदानीं कुमारिलविशिष्ट
रत्नाड विनि विदेः॥ यदेतु आपराह्णेन तस्मि
पश्चात्प्रतिदिने उदेति॥ तेन पर्वपूत्र।
तिपदोः साम्यसंधिः स्वर्वाणी भवतिस्थ
तिपदि द्विहृतिर्गामिन्याकालीणा योवाक।
ष्ठं संधिज्ञानमिति चेत्सत्यं॥ प्रतिपद्ध।
द्वितीयादिका हि या विभज्य संधिः कल्प
नीयः॥ न राहुलोगाहि॥ तिथेः परस्या
श्चटिकास्युर्याः स्युस्तुना लिप्येवाभ्यधि
कास्तु नासौ॥ प्रथमे विघोल्यं वचनस्य प्रयो
गाङ्कं संयुक्ते प्रथमे दिने स्यादिति सा
न्यायनोपि॥ परेहुश्चैष्टिकानुना लभ्ये
वाभ्यधिकास्युर्याः द्विमान्तरार्थं पूर्ववस्मि
न्नाम पूर्वी प्रकल्पयेदिति॥ अथ याग
कालउच्यते॥ तत्र पर्वणो चतुर्थो भागः
प्रतिपदश्चाद्यस्त्रयो भागा यागकालः।
तदाह याज्ञवल्क्यः॥ पंचदश्याः पर्वणः पा
दः पर्वादेः प्रथमस्त्रयः॥ कालः पर्वणो
यागे स्यादन्यथा तन्न विद्यते इति॥ ब्रह्म।
ज्ञानान्तरेषोपि॥ पर्वणो यस्तु र्थांशः प्रा
ग्यः प्रतिपदस्त्रयः॥ यागकालः स विज्ञे।
यः प्रातरुक्तो मनीषिभिरिति॥ पर्वप्रति
पत्संधेर्वपराह्णो सति परदिने चतुर्थांशे
प्रतिपद्भागे यागः कार्यः॥ तदाह स्मृतानात
पः॥ संधिर्यदि पराह्णे स्याद्यागः प्रातः।
परेहनि॥ कुर्वाणः प्रतिपद्भागे चतुर्थांशे
नरः ध्यतीति॥ यज्ञवचनं॥ नयत्केव वच
र्थांश्यो यागो यो: प्रतिपदः केचित॥ तद्दाप्रि
न हि लभ्यते श्रुतिरिति भासमानानीति॥३।

दमायांपात्रेयागकालेसंभवत्यालस्य
न॥ अथान्यायः॥ पिचदर्पूर्णाचतदेपूर्णं
मध्याह्नस्पाराहस्नतेके॥ पत्तसोपिमुक्ता
वस्त्राडिकेपरिग्रहस्य॥ गौतमोपि॥ पद
हयेचतर्दशपूर्णा॥ हमोहितेयतस्या॥ पद
वपिपत्नानेप्रलक्षणायोयतेहिजेरिति।
ब्रह्मवेदः मन्त्रोपि॥ अमायांचतर्दशपूर्णा।
वोतमामाष्टकालव॥ अमावस्याउदेद
निपिख्येरितिचतर्दशी॥ अलहंपष्टमी
भूतानसंख्याताप्रीवर्जयेदिति॥ बौधायने
पि॥ मध्याह्नव्याप्तानुवृत्तेयामध्येमध्यम
यामयोः॥ तस्यास्तानेऊर्ध्वेनखाध्याये।
पितनयणं॥ यामयोमध्यमितिहते।
ग्रयामस्ययतवार्टिकाहयतनीयया
मस्ययतद्वहिकाहयमितिचतलोच
टिकामध्याह्नव्याप्ता॥ तदुक्तंनैव॥ प्रातः
संध्याविनाडोस्यात्सायंसंध्याचताह।
घी॥ मध्याह्नव्याप्तानुवृत्तेयाचतस्रोघ।
तस्रोघटिकाल्याइति॥ इदंमन्वादिप
वतदेपूर्णाचसमस्यावतस्यांमध्यरात्र।
न॥ भवाराययनेऊर्यांघटीकेवतस्य।
धानामिति॥ अश्वैवगौणाविषोबउक्तं
गत्रोयामहयाप्वोसमपीचवयोदपौ
पूर्वोबः समविजेयोवेदाध्ययनगोहित
इति॥ भीष्मोपि॥ चातमोस्यहितीया।
समन्वादिषुयुगादिषु॥ विष्णुवाचनयो
रेहपायनेवायनेनया॥ पद्माधिकत्र
योदशपानस्यापवोक्तेरनिथ्यो॥ दशप्रीवि
ष्णुरिसैनेचस्यादनध्यायः स्मृतावपि।
शुकृष्णः॥ पदातिथिवृद्धयायिकाउयो।

261

कृ दृष्टो साचंतस्याममनधीते॥ पर्वहितेनोधा
हित्रयोरध्ययनेनानामेकारप्रासाध्याय
नामेवविधानात॥ किंच॥ यस्माद्वयोर
ध्यायस्यानिषिद्धतरेषीहिवैषरपूर्णा।
यूयदितिसाचानध्यायदिनमित्यर्थः॥ श्रु
तिः श्रवणद्वादशीचांतमास्यहितेनोधाव
नगोलोनः॥ आषाढ्यांतेनयस्येचंयाहितेनो
यांहिनक्लये॥ चांतमास्यहितेनोयासां:आ
श्रेतिमहर्षयः इति॥ नयाच॥ सर्वेचोधम
नध्यायमहुः संक्रमेणेनिषिद्धिद्विवाश्वेत
गंगानिमित्तिवेदवेदोविद्धेति॥ मवर्षो
जननांहृपारात्रेत्पाद्वेचममपरिधिने॥ स्त
धीयेतहिजोनित्यंनवैवाकालिकेष्वपि।
महागुरोहादशपाहेवेदस्याध्ययनेनतो।
दिति॥ याज्ञवल्क्योपि॥ अरस्येनेष्ठनध्या
यः पित्र्यान्हिमकवपुष्ट॥ उपाकर्माणिचो
त्सर्गे स्वपुत्रावाश्रोत्रिये हृतेःति॥ मध्याग
स्तितनिर्घातभूकम्पोल्कानिपातनेःस
माप्यवेदं हिनिपामारण्यकमधीत्यचे।
ति॥ नयाः॥ पंचम्यांकनकुलव्याहिमा।
सारमेषके॥ एतेननेवनेरात्रेप्रास्यद
नेनयोश्चंपरइति॥ प्राकपानदतिं॥ प्राक
ध्वजोहासननहिने॥ उक्तायहिनेच॥ अन्ना
संविशेषः॥ पित्र्याचारतोवंगनम्या॥ अन
ध्यायदिनेष्वध्ययनेप्रत्यवायःस्मृतिचं
द्रिकायामुक्तः॥ अनध्यायेष्वध्ययनेप्रज्ञा
मायुःप्रजांश्रियं॥ ब्रह्मवीजेऽहवतेजोनि
हंतनियमःक्षयमिति॥ अन्यच्चविशेषः
स्मृत्यर्थसारेप्रोक्तः॥ चतुर्दश्यष्टमीपर्व
प्रतिपत्सुचसर्वदा॥ इमेध्यनाध्ययनं

262

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वेनरागमनेषु च ॥ तथा विस्मृतपीलानां
वृद्धवेदस्य पाठिनामिति ॥ अन्यस्मृतिप्रोक्तो
पराकेप्रोक्तः ॥ चतुर्दश्यष्टमीपर्व प्रति
पद्मिनीषु च ॥ वेदांगन्यायमीमांसाया ।
मेशास्त्राणि चाध्ययेन ॥ इति ॥ तथा स्मृति
वैदिकायां ॥ उदये सम्यपौर्वाह्णिके
यगामिन्यन ॥ निरिति न तद्दोषात्रमनध्या
यविदो विदुः ॥ यत्तवचने ॥ नाध्वदेशवन
ध्यायोनैमित्तिके तिनो तेद ॥ उपवासव्रता
दीनां तिथिमाद्युत्तवैवृतेरिति ॥ इदं चदे ।
शांतरेनो व्यवस्थापनीयं ॥ कचिदेशेया
वृद्धवानन्यायतिथिनाडिकालावेद्य
न्यायं कुर्वीतेति । इति निर्णयामृतेन
याय तिथिनिर्णयः ॥ इति तिथ्यकनाति
र्णयः समाप्तः ॥ अथ सकलमासकृत्यानि
लीयन्ते ॥ तत्र कर्मलमासप्रकरणे ॥ वर्जयिता
मघोद्यमलहस्य लोगहीनैः वर्यंचयाह
स्नाणि स्नानानि सर्वंत्यजनानिच ॥ मास
न्यविप्रसिद्धनेगोदीमेपेयनामिति ॥ पत
श्रोद्धनेनामृभवानी लोकदायकमि
ति ॥ भविष्योत्तरेपि ॥ चैत्रे विरातेनस्ना ।
नं भग्रपोत्स्नातानारदातियः ॥ प्रजापंचम
मानिन्योदविनायकरूटैमिते ॥ नगायते
पुनःसोजीवलोकेकदाचनेति ॥ वामन
पुराणे ॥ चैत्रमासि विचित्राणि प्राय ।
नान्नपानानिच । विसोगीत्यर्थमेतां ।
नि देयानि हि जपुंगवे इति चैत्रमासकृ
त्यं ॥ अथ वैशाखकृत्यं ॥ तत्र स्कंदे भा
रते ॥ निस्तरेदेकभक्तेन वैशाखं यो जिते
न्द्रियः ॥ प्रातःस्नायी नरः स्त्री वा ज्ञातीनां

263

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ष्ठेहनो भवेत् ॥ वामनपुराणेपि ॥ गोधा
माल्यानि चैव तथैवाजाविकस्य भोनि च ।
इयानि हि तेषु लोभेऽपो मांसं पवनं नहरे ।
श्रेष्ठोऽहं कृत्वा ॥ भविष्योत्तरे ॥ विष्णुनेक
ग्रजेकुमारो यो हि मासि सिते द्वादशके ॥ गुडधेनुसमन्वि
तं पात्रे नानावंशविभूषिते ॥ ग्रहकोटिफ
लमाप्नोति लोके महीयते ॥ कर्मजो वृत्ता
वामनपुराणे ॥ इक्षुभोज्ये पुत्रनाललवृते
सचेदूंन ॥ त्रिविक्रमप्रीत्यर्थं देहेदानहा
मन्वहं ॥ अथाषाढकृत्यं ॥ नरसिंहे महाभा
रते ॥ आषाढमेकं भक्तेन नयेन्मासं समर्त ।
द्रितः ॥ बहुधान्यो बहुधनो बहुपुत्रश्च जा
यते ॥ वामनपुराणे ॥ उपानद्युगलं नवल
वणामलकानि च ॥ आषाढे वामनप्रीत्ये
दातव्यानि च भक्तितः ॥ इति ॥ अथ श्रावण
कृत्यं ॥ महाभारते ॥ श्रावणं नियतो मा
समेकं भक्तेन यः क्षिपेत् ॥ यत्र तत्राभिषे
केन स फलं ज्ञातिवर्धनं ॥ वामनपुरा
णे ॥ घृतेनवनीतं भाजस्थं हीनयेन्फलानि
च ॥ श्रावणे श्रीधरप्रीत्यै दातव्यानि विप
श्चितेति ॥ अथ भाद्रपदकृत्यं ॥ नरसिंहे म
हाभारते ॥ यः प्रोष्ठपदं वै मासमेकाहा
रो भवेन्नरः ॥ धनाढ्यः स्फीतमचलमैश्व
र्यं प्रतिपद्यते ॥ वामनेऽपि ॥ मासि भाद्रपदे
दद्यात्पायसं मधुसर्पिषी ॥ हृषीकेशप्री
णनार्थं लवणं सगुडोदनं ॥ अथाश्विनकृ
त्यं ॥ नरसिंहे यमः ॥ हेतमाश्वयुजे मासि नि
त्यं दद्याद्धि जानाने ॥ प्रीणितावश्विनौ देवौ
रूपभाग्यं विजायते ॥ वामनेऽपि ॥ तिलांस्तु रे
गोरसमोदयितान्नं वृषादिकं ॥ प्रीत्यर्थं

264

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पद्मनाभस्य देयमाश्वयुजे नरैः ॥ वृषाधे
नः ॥ अथ कार्तिककृत्यं ॥ नारदविष्णुः ॥
कार्तिके सकले मासे नित्यस्नायी जितेन्द्रि
यः ॥ जपन्हविष्यभुक्शान्तः सर्वपापैः प्रमु
च्यते ॥ वामने ॥ तैलं कनकेदरीपात्रमलि
मुक्ताफलादिकं ॥ रामो हरस्य प्रीत्यर्थं
प्रदद्यात्कार्तिके नरः ॥ अथ मार्गशीर्षकृ
त्यं ॥ महाभारते ॥ मार्गशीर्षं यो मासमेक
भक्तेन वै क्षिपेत् ॥ भोजयेच्च द्विजान्शक्त्या
स मुच्यते व्याधिकिल्बिषैः ॥ कृष्णमार्गीवह्र
यनो वत्सभाग्ययुक्तं जायते ॥ वामने पि ॥ क्षे
त्रसंयुतं मासि पूपकलादि वस्त्रादिकं ॥ व
नं च केशवप्रीत्यै मार्गशीर्षे प्रदापयेत् ॥
अथ पौषकृत्यं ॥ महाभारते ॥ पौषमासं च
कौन्तेय एकभक्तेन यः क्षिपेत् ॥ सुभगो
रूपवान्यश्च यशोभागी च जायते ॥ वामने
प्रासादनगतानो निरहसपावर्णानि च
नारायणस्य तस्य हृष्यर्थं पौषे दद्यान्नियन्तनः
इति ॥ अथ माघकृत्यं ॥ विष्णुः ॥ माघे मा
सि अन्त्यहस्मीपेते लेरुत्वा सहैने रूपरं प्रा
त्रेण कात्मोजयित्वा द्विरामात्सिभवति इतिम
विष्णोत्तरे पि ॥ पौषे मासम समाप्यवाप्र
प्य स्नानमाचरेत् ॥ विष्णु हिनानि तुष्टा
नि मकरस्थे दिवाकरे इति ॥ तथा च ॥ अ
पाहतनपारोरसत्सयः कृष्णस्नानमाचरेत्
पदे पदे श्वमेधस्य फलमाप्नोति मानवः
एवं स्नानमपावसाने भोजयेयमवाविते
भोजयेद्द्विजान्दंपत्यं भूषयेच्च विभूषणैरि
ति ॥ वामनेपि ॥ माघे मासि तिलाशक्त्या
किलधेनुश्च दानतः ॥ रूपैधनादय संजायते

265

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

माधवप्रीणनाय च ॥ अथ फाल्गुणकृत्यं ।
स्कंदपुराणे ॥ फाल्गुणे चैव द्वयोगावो व्रह
कृष्णाजिनानि च ॥ गोविंदप्रीणनार्थो
य लानवं प्रकृषवंषैः ॥ वामने ॥ एकभ
क्तेन कुर्वीत फाल्गुणमासि नित्यशः ॥ ही
ष्टसौभाग्यमाप्नोति नारी वा पुरुषोपि वा ॥ ।
इति मासकृत्यं ॥ अथ यागकृत्यविधिः ॥ मत्स्य
पुराणे ॥ अन्नाघममयेविहान्कृयोत्तमो
दयेसति ॥ स्नानं शुक्लतिलैस्तद्वत्कृष्णमा
ल्यावरोपहो ॥ स्थापयेद्व्रणकुंभं माल्य
वस्त्रविभूषितं ॥ पंचरत्नसमोपेतं हेमनवा
रुणसंयुतं ॥ नानाभक्ष्यफलैर्युक्तं नाम
पात्रसमन्वितं ॥ अगुरुमात्रपुरुषं तत्रो
वसौवर्णमन्त्रा यतवा हृदके ॥ वनमेव
कमप्रविनियायथान्यानि समागकरम
पृतानि ॥ सद्भांस्यपात्रावनेन पुष्किपुके
मत्रणपृष्ठहिनं पुनवाय ॥ डक्षिप्रमल
वो रवरीचवाद्रुमनन्यचेतायमोहिन्
गुवस्थः ॥ सूताचदत्वाययदिपूकिराक्षि
गण्यः हरेहमम सर्वोसवदा ॥ येनवह्र ।
वीरवनीपूणमस्यवत्कृयाभरणोहि
ताय ॥ आसमरात्राद्वुहत्येवमम्पसातव्व
मतस्सकलेन रूणा ॥ दशाहनः सप्तदशा
शवोत्तुरनोधं मध्येवृद्धस्मिकेचित ॥ प्र
जामंत्रः ॥ आगच्छ शतिपूराहूलेनजोगा ।
गोमराश्रुने ॥ इमामयाहृतनापूजारहगी
पुसुनिपृगावनि ॥ अधोमत्रः ॥ काशापुण
पतीकाषावदिसारहतनसत्रिमे ॥ मित्राव
रुणयोपुत्रकुंभयोनेनमोस्तुते ॥ विपह
डिलयकरमेघनोयवेचापह ॥ रत्नवह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मद्येवपालकाचारतनमोल्लते॥ चनोप
भवितोयेनसगुडोयेनप्राक्षितः॥ लो
पाण्डुरापलिः श्रीमान्योसौनसेनमोन
मः॥ मनोनोप्रवरोगत्योलोपापडुराम
मवितः॥ लंकाहारेमगुदिनोपृकगव
छोमयापितमिति॥ प्रनेनविधिनाय।
क्षुमानश्चोनिवेदयेत॥ रसेसोत्योम।
वाप्रोतिसमाचोन्नः प्रयच्छति॥ श्रीहो
कानसमवाप्रोतिरूपारोग्यसमन्वितः॥।
मप्रवलोकानामोतिसंप्राचोन्यात्रय।
च्छति॥ रम्यंगत्याचोविधिः। अथचात
मस्वरनालिभोवघ्योते॥ श्रीहस्मः व
नेगवाविकान्मासंरेवस्योन्यापनेवि
धिः॥ स्त्रीवानरोवामडफोयमोथुह
रुद्धवनः॥ प्रहरोयात्रियमानेतारेत
यावनपूर्वकं॥ तेषांफलानिवक्ष्यामि
नत्कनूनाशुयकाथक॥ मजसरोभ।
वेडानगुरुघ्रोगुरवंजनात॥ तेलस्पव।
नेनात्याथंसहरोगः प्रजायते॥ मधुक
तैलन्यायेनसौभाग्यमतैलभेत॥ कर
तैलपृष्टिन्यागाढोकनाप्राप्तवाप्रयात
पुष्पादिभोगात्यागेनसर्वेविद्यायरोभ।
वेत॥ योगाभ्यासीभवेयत्नसखलप
मामृयात॥ कर्टलनिफलवर्णताक
क्षायजात्रसान॥ योवजेयेमवेदुर्ध्वदो
गंधनामयात्न चित॥ ताद्वलवजेना
डोगोरुफकेटगुजायते॥ हुतत्पाया
श्रुलावणसर्वेस्त्रियवघ्रभवेत॥ पवि
त्याजेनमतिमान्वहुपुत्रजायते॥ श्रा
कपत्राप्यानाडोगानयकाप्रोमतोभवे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ते॥ फलतोमेधयज्ञस्य गापितो ऽभ्यंगात्सु
पार्थिव:॥ शैलिमान्दीमिकिरणेगतोऽह
व्यापनिर्मभवेत॥ रोपयित्वा हि नियमात्स्व
र्गलोके भवेन्नर:॥ भूमौ प्रस्तरपायीच
विमोरन्नचरो भवेत॥ सदाभुनि: सदाय
गी मधुमांसस्य वर्जनात॥ एकान्नरोपव
से न ब्रह्मलोके महीयते॥ धारणान्माव
रोष्ठा वगगस्नानेन हि दिने॥ मौनव्रतो
भवेद्यस्तु तस्याज्ञा सर्वलिता भवेत॥ भू
मौ भुक्ते महायज्ञस्य हि पित्र्या: पतिर्भवे
त॥ नमो नारायणायेति तु ध्यानपानजं
फलं॥ पादाभ्यंगेन नाहिंसो लभते दान
जं फलं॥ विप्रपादाम्बुजस्पर्शी कृतकृ
त्यो भवेन्नर:॥ विप्रदेवगुरुकथायुपले
पनमार्जने॥ कल्पस्थायी नाकलोके
भवतीति न संशय:॥ प्रदक्षिणप्रातेन्य
लकरोति क्रतिपातक:॥ संसग्रमोवि
मानेन स च विष्णुपदं व्रजेत॥ कन्याश्च
तणके हिवा स्नानमाघस्य मव्रजेत॥ नी
यौ तु नारी स्नानात्तु निर्मले दक्षमासया
त॥ पञ्चगव्यपानान्नस्त्री
लं लभेत॥ नक्तभोजी समर्जन्नतीर्थस्ना
नफलं लभेत॥ अयाचितेन वाप्नोतिवा
पीकूपक्रियाफलं॥ बहिःकाष्ठस्य भो
जी च स्वर्गलोके महीयते॥ नित्यं स्नायी
नरो यस्तु नरके न च पच्यते॥ भाजने च
स्नाने पाककं च लभेत॥
यो नरो भुक्ते कृते फलं लभेत॥
लायो भोजनान्नित्यस्नाने प्रयागजं लभे
त॥ यो महद्यजनन्नागान्नरोगी पतिव्रत

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ते ॥ एवमाहितैतैः पार्थेन ह्रिमायानि
केषाव: ॥ मतस्पथगणोपिविशेषबुद्धः
श्रावाव्ज हि चन्न मो समभ्यंगं वंजेयव
: ॥ भोजनोपक्रकरोरयात्मयातिमव
नेहरे : ॥ न्यजन्मीतिकरेन्मणांश्रीलि
वनमिद्रोचाने ॥ श्रावाव्जहिशुवेयस ।
वंजेयन्नवकृतेने ॥ यानोकेचववनमो
मेषाकेसपिगुलाभिते ॥ कानिकाने
पुनेहमखावामापनिवेदयेत ॥ सैवे
कावेपदेयानि विमवनमिहेस्मते ॥ म
फलानि यस्य काचानमोस्येहजानत
ये ॥ हेमानि कातिकेहयाज्ञोदानेनस
मेतन: ॥ पतत्फलखतनामस्येलोक
फलप्रदे ॥ ऽक्रचानमोस्पत्रनारभोग
हेष्वकानेचकार्यः ॥ नदानहदेग
र्भः ॥ नेषापाघेनमोप्रेचप्पुकगवो ।
नेवानिद्य: ॥ दोषचविनयेज्ञानेचान
मासविधानः श्रुति ॥ प्रकरणेपुस्तवा ।
यश्चमहाभारतेविहिनः ॥ वाषिकाश्च
नरोमासान्वाहयत्कनचिन्नर: ॥ प्रेतन
भोचेदामानिकल्पवृक्षरोदवे ॥ ऽप
क्रमवलश्चमनक्रमारेणक्रः ॥ पका
हयूपानमूहोयान्सक्रानेकेदसच ।
सपावावनरोभगवाचातमोस्पोवित
व्रतमिति ॥ महाभारतेप ॥ वाषिकाचत
रोमासान्त्रनेकिंचिन्नमाचरेत ॥ प्रसभ
वेनलोके नकन्यायांवाविषोषतः ॥ प
नहतोपक्रमेसमाप्तोचमंत्रः मनक्रा
मारेनोक्तः ॥ पया ॥ इदंव्रतमयादेवकृत
मेपुरतस्तव ॥ निर्विघ्नंसिद्धिमायातु प्र

269

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सत्येवयिके पाव॥ गृहीतो ऽस्मिंश्चने देवप्र
तिष्ठांकं को ऽस्य रे॥ तन्नो भवतं संक्रांतिवा।
श्यसादात्तनाईनेस्य पक्रमः॥ समामिम
त्रेल॥ इंद्रेण तेमसोदेव क्रतेनोन्यो नवत्र
भौ॥ सर्वं संक्रांतेयानुवत्स्य सादात्त
नाईनेति॥ समामिकालस्तसमल्लामार।
तेभिहितः॥ चांद्र मोस्येन पश्चीर्णचांद्र
मोस्यव्रतेनैः॥ कार्त्तिके शुक्लपक्षेन।
द्वादशपूर्णा तत्समापयेत॥ ते चांद्रमास
व्रतनिर्णयः॥ श्रावणे मासि स्थावा
गतिं पुश्चव्रतवन्योर्विधी यतेन तेऽचांतेन॥ न
इंके संशेषते॥ माघे मासि स्त्रा शुक्लोयन
पतिः प्रत्यायनः फाल्गुने॥ मध्यावाप्रव
त्रिंशंतो पनयनं चैत्र चैव त्रालिनः॥ वैशा
खि स्तु भगः सावी पट्ट मतिस्य रोहवं निर्देह
योय्याषाढे च मल्लो वपन्नाविजन्यो वा
नोमल्ला पंडित इति॥ नया व्याप्तकलेवेन।
वर्णविशेषो ऽकोयथा॥ वसंते ब्राह्मण
मुपनयेत॥ ग्रीष्मे राजन्यं॥ शरदि वैश्य
मिति॥ प्रयच वपन मरीनो वसंतायन
त्र्यपवोपनयनं श्रेष्ठं॥ नरसु मावे॥ मा
घायाषाढा दिमासेष्विपि कार्यं॥ तेचमा
घादिमासाः सूर्यस्य श्वेतांशुमाधारणावास
कलीहृस्तानामिति॥ ग्रहलबसिद्धनवि।
प्रोष्ठ उक्तः॥ विप्रस्माती इयोः स्युपिसौजी
स्याउद्नतायने॥ हविष्णे तविष्णुकर्ययात्रा
नस्या येन संक्रमे इति॥ यश्च द्दरगोवचा
ने॥ श्रेन स्यायेय क्रकोन यत्नेनमिने कोम
वेत॥ सममीमाचशुक्ले पक्षनीयाचाद
यानस्था॥ उपत्रयें ऽवमाखपातलाः स्पर्श

नवपूने ॥ पतन्त्यायश्चिनार्थंश्रुनक्रुपनय
विषये ॥ यतः सप्तवारु ॥ सायाप्यपवित्रुने
हस्ताः कृत्स्नप्रतिपचाद्दयः ॥ प्रायश्चित्न।
निमित्तेनतुमौवलावंपनेमनाद्दति ॥ घट
तिथिनिर्णयः ॥ तृतीयैकादशीग्राह्यापं
चमीद्वादशीनवम्या ॥ द्वितीयायांचमेधा।
दौमेवेदर्थवलात्विनः ॥ विकायामर्थस
निःस्यात्स्योतिमास्यान्यैवच ॥ प्रतिपद्य।
पिचाष्टम्याकुलत्थैर्विनाप्रानमितिः ॥ न
ष्ठ्याच ॥ सप्तम्यामष्टम्याप्रतिपत्कृत्रयोद
श्यां ॥ धात्रुविद्यानाशोत्थनवंपेपद्दर्श
च ॥ नवम्याच ॥ नचषष्ठ्यामष्टम्यांचतुर्द
श्यांनवमीत्ति ॥ विकाखचनकुतेत्थ्याद
स्यांतिवसतत्याद्दति ॥ प्रवृत्तलक्षवारः ॥ द्द
कास्यैवैदन्तोविश्वयेवस्तुकेरवप्रथ्याधिन
रेवतोषु ॥ खोरेघृस्तुकाकेश्वस्पतीनादि
नात्रैवयोष्ठिजमौजिवधः ॥ द्दतिप्रनवंप
निर्णयः ॥ त्रयोविंवाहसोपतुकमासाद।
यउच्यते ॥ नद्दकेयोतिष्यसागरे माघ
फाल्गुनवैशाखज्येष्ठाषाढशुक्लाद्दयः
मेषेनेवृत्तिकामासाचातवैशपस्यनित्य।
प्राः ॥ माघेमासितत्याज्येष्ठेत्रौरपविणा।
येत्रुन ॥ नेह्मपुत्ररहितेचषुपतेनप्रतिव
मेयेन ॥ नघा ॥ श्रेष्ठपतत्रपातिशुक्ल।
मसितत्याचेत्रिभागतत्याविलोप्रोक्त
निश्चितत्याबनतयोः सौधिंचपोषांश।
भाइतिद्दद्दगर्गेणतचैत्रादिपुविपोष
उक्तः ॥ मीनेयत्नुविमितेरवौस्थितेसमत्तर
गमे ॥ दौरवकमेनकुर्वीतविवास्रप्रदक
मेचेति ॥ गौमेयेपि ॥ सर्वेनेतोविवाहस्य

271

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पितृपितृरतौ मीमासंपविंशगोत्रमनैतो
चेति ॥ पितृपितृरतौ राहिसैवर्ध्यने पौषउ
नमूनेसाद्य माघाढमासैचवर्जेयेनाउ
त्यर्थः ॥ सत्वमालायांत ॥ नाषाढमप्रभृते
वतस्येविवाहोनो पौषेनचमधुमस्ते
केविधेयइति ॥ नचैषवाकैशुविरोधो
इष्यते ज्योतिर्निबंधके ज्याषाढश्रुता।
याइत्याषाढमासीकारात् ॥ गोगेयेन
चैत्रपौषाषाढव्यतिरिक्तानां सर्वेमा।
सानांवैवाहिकानामियानात् ॥ सा।
त्नमालायां माघाढप्रभृतिमासचतुष्ट
यवर्जनाद्ध ॥ सत्यं ॥ इष्वाचारभेदेन
परिहरणीयः ॥ तथाहि ॥ वष्वादेषौषु।
माघादेपिविवाहः ॥ वृष्टकैकातिके
पवमन्यत्रापिदेष्वाचारभेदोहृषः ॥
अथविवाहेस्त्रीवप्रोषउच्यते ॥ तत्राः ॥ प
तिपक्षोषजननीहिनीयाप्रतिवर्षेनी
मौभाग्यदात्नीयासाद्यनर्थीवायना
शिनी ॥ पंचमासाववितानि षष्ठीविद्य।
प्रदामता ॥ विद्याशीलस्तावस्याभिः स
मस्तामफलाष्टमी ॥ नवमीपुत्रकमय
सादृष्टदारयामीसस्ता ॥ सावरैकादा।
शीदेयाद्वादशीसफलासस्ता ॥ मानषु
त्रौत्रयोदश्यावत्नहंपुंसहोषदा ॥ च
लेवहृविधंनित्यंपंचदहपुंसविपोषतः
नेवहस्थत्कायतिपक्षदशयनीनिषायते।
अत्रापिकस्यपक्षस्यादशामीसुविवाहि
का ॥ अन्येनतदशामीप्राङ्गरुमयोगविवा
हिका ॥ तत्रशुक्रेदशत्राणामद्भिनेषुपौरि।
लीयते ॥ याकन्यासमभवेन्नित्यंमर्त्योवि।

272

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तानवर्त्तिनी ॥ अर्कोकिंभूमिपुत्रश्चात्र दिने
षु कन्या ... या ॥ सा पत्यं समवाप्नोति न ।
यावकश्चकालमरे ॥ अत्र दिनेषु तिथि शेषाप
हानां ज्ञात्रो विवाहे न दोष इत्ति गर्गमते ॥ त
थैव ग्रंथांतरेपि ॥ न वारदोषान भवेत्तिथि
त्राविति ॥ अत्र वर्जितेषु पितृथि वारेषु मि
श्रयोगे मनि विवाहः कार्यः ॥ नरहरेः ॥ श
नैश्चरादिने प्राप्ते यदिरिक्तातिथि भवेत् ।
तस्मिन्विवाहिता कन्या पतिसंततिवर्धि
नी ॥ अथ गोसिंह मकरस्थिते उर्के पुपि मासे
षु विवाहो न कार्यः ॥ नरहरेः ॥ ज्योतिःसा
गरे ॥ सिंहस्थे मकरस्थे च गुरौ संपत्तने व र
र्जयेत् ॥ सिंहस्थे कुम्भचापेस्थे गुरौ केहन
वर्जयेत् ॥ अन्यत्र सिंहभागेनु विवाह्यादि
विधीयते ॥ अत्रैव विशेषो लल्लहरिनीकः ॥ न
मेदाप्रथमे भागे न पुत्रिणस्योत्तरं दितिणा ॥ न
क्षत्राः पैत्र्ये भागेम करस्ये न दोष इह
तिति ॥ यतः सिंहे रवौ च न ॥ सार्वकालि ।
क्रो मध्ये नाति विवाहे गीत मात्स्ये इति ॥ नरह
रि स्रायथमविशेषे ॥ नरहरेः पूर्वस्य परिधि
... ॥ यमेषु विवाहे पुकाल परीक्षणं ॥ र 273
नाध्यमेषु विहिता ॥ अथ प्राप्तसि की कि विहि
ताने ॥ विवाहे चितने नेत्रे होमकाले उप ।
स्थिते ॥ कन्या पुष्पमती चेत्स्यात्कथं कुर्वति या
ज्ञिका ॥ स्नापयित्वा तां कन्यां अर्चयित्वा य ।
थाविधिः ॥ युञ्जानामाहुतिं हुत्वा ततः का
र्यं प्रवर्तयेदिति ॥ स्मृतिचंद्रिकायां ॥ विवा ।
हे होमे प्रक्रांते यदि कन्या रजस्वला ॥ त्रिरा
त्रं दंपती स्यातां पृथक् शय्यासनाशनौ ॥ च
तुर्थेह्नि स्नात्वा मैनस्मिन्नग्नौ यथाविधि ॥ वि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वाहद्वौमेकवीनामित्याहिस्मृतिचंद्रिका
यां संग्रहे इति ॥ अत्रान्यत्रे सौरविष्णुधर्मः
पुंसामेवकन्याविषयेतत्रैवविष्णुधर्माभि।
धानात् ॥ यथा ॥ उद्वाह्यपुत्रीं न पिता विर
यत्सुत्रीं न रज्योऽहं स्तनेकदाचित ॥ योवैव
न्धीं विनमंगलस्य समापनेनाव्दसौवि
दध्यात् इति ॥ अन्योपि विशेषश्चैलेनेवोक्तः
न पुंविवाहोर्ध्वं ऋतुत्रयेपि विवाहकार्यं
हिलविंदध्यात ॥ नमंडनेचापिहिमुंडनं
च स्यान्मंडनान्मुंडनमन्यबोधात ॥ मंडनं।
विवाहादिमुंडनंगुंपनयनादि ॥ विवाहादि
धैवन्नत्रैयामान्तरेउपनयनादिकार्यमित्य
र्थः ॥ प्राजापत्यस्मृत्यांस्वयंयौवनश्रुतिरेनया
पनालैवाम्यतः कृत्वाशौचाग्निंचप्रदक्षिणा।
मितिविवाहनिर्णयः ॥ अथवृद्धिरागामकाल
उच्यते ॥ नवरात्रस्नेहेस्थुरः ॥ मानोक्यानागावे
पूर्वेशुक्लपक्षेदिनेशुभे ॥ सर्वादिन्यवि।
शुद्धैश्चाचित्यपत्नीहिरागमः ॥ वायवाय
त्योपि ॥ भर्तृशोभनगोचरेद्विनवकेनानक्त
गानेभार्गवेपृष्ठेपृष्टोवैकृपेघटेगोजेशुभेदिनेप।
लेचरुकस्मोनवे ॥ हिलाभास्कररश्मीनगुरु।
धर्मितेलालाटगेहिवपतौवानीतागुणे।
पालिनीनववधूर्नित्योन्मेवेनीदिते ॥ श्वे
तोभ्यादिते शुक्रेतिथयायाहिताणयैवे ॥ य
स्याहभ्युदयेनेतस्मिन्न्यायायान्तुवौनेरेदिपूर्वो
स्वभवनपरप्रवेशोदेपूर्वानोविलवेनयो।
हारे ॥ नववधूपूर्वागमनेप्रतिशुक्रविचा
रणानास्ति ॥ तथाच ॥ नीरहारांशुवस्त्रन।
गांदित्यपुत्रनाशाद्गरापाश्विनी ॥ यांक्रेभा
स्करवाशुविमलवंहणशास्यपानेतियो

कंभाजालिवालेवौषुमकेआमोदेयमा
र्गेवजीवाबासह्जित्राहेनेनववयसम्य
प्रवेषः शुभः॥ इतिद्विरामननिर्णयः॥ श्री
कृष्णजन्मधृष्टहिमलयशः क्षीरसागराद्
हिते॥ इतिनिर्णयाकूनेसिंहिरामननि
र्णयोजातः॥ श्रीमानंदितसिद्धलक्ष्मण
स्तनः श्रीसिद्धलक्ष्मीपरहंहारायनस्य
सिद्धमहिमायः सिद्धमारस्तुतः॥ आदेशा
रहेनेबहवेयमहूसः श्रीमृत्येसेनप्रभोवे
कर्मणोकालनिर्णयमसौनालाइनाथः स
धीः॥ ॥ अथश्राद्धप्रकरणंलिख्यते॥ त
त्रश्राद्धस्वरूपंमरीचिनोक्तं॥ प्रेतंपितृंश्चो
द्दिश्यभोज्यंयत्प्रियमात्मनः॥ श्रद्धया
दीयतेयत्तच्छ्राद्धंपरिकीर्तितं॥ तच्चद्वि
विधं॥ एकोद्दिष्टंपार्वणंचेति॥ तत्रैकमु
द्दिश्ययत्क्रियतेतदेकोद्दिष्टं॥ त्रिपुरुषोद्दे
शेनक्रियमाणंपार्वणमिति॥ तदाहक
ल्पः॥ एकमुद्दिश्ययच्छ्राद्धमेकोद्दिष्टमुदी
रितं॥ त्रीनुद्दिश्यतुयत्तद्धिपार्वणंमुनयो
विदुरिति॥ तच्चपुनः नित्यनैमित्तिकभेदेन
त्रिविधं॥ तत्रनित्यंप्रत्याहिकादि॥ नैमि
त्तिकंप्रेतश्राद्धंसपिंडीकरणादि॥ काम्य
श्राद्धमलभ्ययोगादिषुक्रियमाणं॥ तदा
हकात्यायनः॥ एनाहेरहरहर्दद्याश्राद्धं।
यञ्चमहालये॥ नन्नित्यमुदितंसद्भिर्नित्य
वमहिर्धीयतेइति॥ तथानैमित्तिकंश्रा
द्धंगालवेनोक्तं॥ प्रेतश्राद्धंसपिंडांतंसं
क्रांतिग्रहणादिच॥ संवत्सरादिकंभवद्
द्धिश्राद्धंनिमित्तमिति॥ काम्यंचतेनैवो
क्तं॥ तिथ्यादिषुयच्छ्राद्धंमन्वादिषुयुगा

275

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिषु॥ अलमेषु च योगेषु नस्कामेषसघ।
दाहनं॥ अतिथ्यारिष्टिन्याहिप्राह्नाव्द
वाय योगेषु करणेषु॥ अत्रैके स्थिरकाह
पंचविधमुक्तं तथा॥ नित्यं नैमित्तिकं
काम्यं वृद्धिश्राद्धमतः परं॥ पार्वणं चेति
विज्ञेयं श्राद्धं पंचविधं बुधैरिति॥ केचि
द्द्वादशविधमुक्तं॥ तत्र विचार्यमाणेम
वैषां भेदानामुक्तेषु त्रिष्वेवांतर्भावात्
त्रिविधत्वमेव युक्तं॥ अथ श्राद्धकालाउ
च्यंते॥ तत्राह याज्ञवल्क्यः॥ अमावस्याष्ट
काह्युद्धिः कृष्णपक्षोयनद्वयं॥ द्रव्यं ब्रा
ह्मणसंपत्तिर्विषुवत्सूर्यसंक्रमः॥ व्यती
पातो गजच्छाया ग्रहणं चंद्रसूर्ययोः
श्राद्धं प्रतिरुचिश्चैव श्राद्धकालाः प्रकी
र्तिताः॥ मार्गशीर्षपौषमाघफाल्गुन
भाद्रपदेषु कृष्णाष्टम्यष्टकाः॥ तदुक्तं
कालादर्शे॥ मार्गशीर्षे च पौषे च माघे प्रो
ष्ठे च फाल्गुने॥ कृष्णपक्षेषु पूर्वेद्युरन्व
ष्टकतथाष्टकेति॥ विष्णुस्तत्रयमेवाह।
अमावस्यास्तिस्रोष्टकास्तिस्रोन्वष्टकाः
माघी प्रौष्ठपद्यूर्ध्वं कृष्णत्रयोदशी व्रीहिय
वपाकौ च॥ पाठांतरं च॥ विष्णुस्मृताव
पि॥ अमावस्यास्तिस्रोष्टकास्तिस्रोन्वष्ट
काः॥ पूर्वेद्युः प्रौष्ठपदे मंतपिप्पिरयो
रपरपक्षे त्रयोदश्यां व्रीहीमयवैवकाया।
गाइति॥ अमावास्यार्थं॥ प्रौष्ठपदी कृष्णाष्टमी
पकाष्टका॥ माघपौषे पौषे वा कृष्णाष्ट।
म्याहे मतांतरं कात्यायनो वा वरामाने॥ मा
घफाल्गुनयोरपि कृष्णाष्टम्यौ पिप्पिव
तौ रकै वा तिन्निष्टकाः॥ एवमन्वष्टका

स्थितः॥ पूर्वेद्युश्चैव वैदिनक्ष्याः॥ श्रेयमा
मप्युक्तासत्यं च स्वष्टमीषष्टलौष्टुकर्त
प्रयुक्तत्वात् हयो रेकत्वमभिधाय॥ इक्कृत
स्यत्वयाभिधानेन किंकारणमिति चेन्न
नै॥ देवतात्रिधीषेद्वावित्तिषेच त्रिवद्
यौनानिषुष्टसंख्याभिधानमुपक्रमते ने
दुकैवाषुश्राणे॥ पितृदानमयश्चलेषुव
ष्टकातिस्रवचव॥ कृष्णमनास्ववरिष्ठाद्वि
पूर्वौचैवैतिभाष्यते॥ प्राज्यापत्याहैतौ
यास्यास्तृतीयावैश्वदेविकी॥ श्राद्यायुपंः
मताकार्याम्मांसैरन्याभवेत्तथा॥ शाकैस्त
नैयाकार्याम्याष्टेष्टकेत्यगतिविधिः॥ प्र
शाषिर्कृम्मेनाष्टम्यैर्तिङ्केदेवता प्रष्टपंङ्
क्रोषिषिप्राणाष्टम्योः प्रजापतिर्देवतामा
मत्स्यं॥ भोदपत्राष्टम्यांविश्वेदेवादेव।
ताषाकंद्रव्यमिति॥ इत्र संख्योपपत्तिः
श्वाश्वलायनस्तु॥ हेमन्तशिशिरयोश्चतु।
र्णवचन स्याष्टकारत्याह॥ यथा॥ हेम
न्तशिशिरयोश्चतुर्णामपरपक्षाणा
मष्टमीष्वष्टका इति॥ राजक्कायानमतु
नोक्ता॥ यद्वेह पितृदैवत्ये हेमन्तैव केवे
चितः॥ त्रयोदशीराजकलायनश्राद्धेपु।
रिपरवाप्यते॥ पितृदैवत्यमघा तत्रयदा
चेत्रो भवति॥ हेमः स्वयोस्थदा के हेरो
भवति॥ तिथित्र्योदशी च भवति॥ त।
दागजच्छायेतियोगः॥ श्राद्धेपूर्वेपरवाप्य
ते॥ अन्यत्स्त्रागम॥ प्रसंगाद्दृष्टकादिष्वत्र
पनित्र्याप्रकृतमनुसंधीयते॥ यदुक्तं।
नित्यश्राद्धे पुनरादेहरहरित्यादि॥ तत्र
रुनानस्मष्टपौदि हेतेन पूर्वं निर्णीयते

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पिनत्रिंशीयस्य प्रत्याह्नके ये वमेवेत्यमाव
स्यात् अल्पत्वात् अमावास्यात्वेन तन्मेव न त्रिंशीको
वर्तते ॥ अथ रूरः आद्यस्य रूपं भविष्यतो नवे
मिहितं यथा ॥ अप्रस्पष्टमित्यपक्षाइंतनत्रित
मितिकीर्तितं ॥ वेषद्वेवेच विहितं नदृष्टा ।
क्रोत्कैनचेति ॥ अमावास्याश्राद्धमिदं ॥ अ
मावास्याश्राद्धं च नित्यं ॥ अकरणे प्रत्यवाय
श्रवणात् ॥ नदाह्वयात्रः ॥ निवर्तयन्ति यः
श्राद्धं प्रमीतपितृको द्विजः ॥ इन्दुक्षये मा
सि मासि प्रायश्चित्तीयते नरः इति ॥ सा चामा
वास्या पुनर्द्विविधा चेति द्विविधा ॥ तत्र पूर्वा
न्तं दिवा ॥ विद्धा पुनस्त्रिविधा ॥ प्रतिपद्वि
द्धा ॥ उभयविद्धा चेति ॥ तत्रोभयविद्धा पुनस्त्रि
विधा ॥ पूर्वेद्युरेव पराह्णव्यापिनी ॥ प
रेद्युरेव पराह्णव्यापिनी ॥ उभयत्राप
राह्णव्यापिनी ॥ नोभयत्रापराह्णव्यापि
नी चेति ॥ अत्रोभयत्रापराह्णव्यापिनी पुन
स्त्रिविधा ॥ तिथित्रयोपेता ॥ तिथिद्वयोपेता
तिथिसाम्योपेता चेति ॥ एवं विधामावास्याद्वि
धा ॥ तत्रोभयविद्धामावास्या वेदर्शेन सि
नीवालीत्युच्यते ॥ प्रतिपद्विद्धा
तु चेदर्शेनाभावात्कुहूरित्युच्यते ॥ तदु
क्तं ॥ दृष्टचंद्रा सिनीवाली नष्टचंद्रा कुहू
स्मृतेति ॥ एवं भेदेषु भिन्नविद्धा ॥ प्रतिपद्वि
द्धा ॥ उभयविद्धा चापराह्णव्यापिनी पितृ
कर्मणि ग्राह्या ॥ तथा च श्रुतिः ॥ पूर्वाह्णो
देवानां ॥ मध्यंदिनं मनुष्याणां ॥ अपराह्णः
पितॄणामिति ॥ स्मृतिरपि ॥ पूर्वाह्णे दैविकं
कार्यमपराह्णे तु पैतृकं ॥ एकोद्दिष्टं तु मध्या
ह्ने प्रातर्वृद्धिनिमित्तकमिति ॥ हारीतो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यि॥ अपराह्णः पितॄणां तु या पूर्वाह्णानुया
यिनी॥ स ग्राह्या पितृकृत्येन न पूर्वाह्णा
नुयायिनीति॥ अपराह्णस्य राजच्छाया
न्यकृताह पि पितृकर्मणि प्राप्तस्य भार
द्वाजेनोक्तो॥ वनस्पतिगते सोमे या च्छाया
प्रवृत्तो भवेत्॥ गजच्छाया तु हि सा तत्रापि।
तृणान्न मन्त्रयमिति॥ चतुर्दश्यामावस्या
यां मध्याह्णो यत्र स्थित्वा त्रिमुहूर्तैव वनस्पतिग
तो भवति॥ तथा च स्मृतिः॥ त्रिमुहूर्तैव
सेद्देके त्रिमुहूर्तं जलेवसेत॥ त्रिमुहूर्तैव।
सेद्गेहे त्रिमुहूर्तैव वनस्पतावितिति॥ त्रिमुहूर्तं
श्याह्न नच्छायायस्त्रीस्थाद्पाकृष्णको।
गजच्छायेति संप्रोक्ता पितॄणां तृप्तिका
रिणीति॥ अपराह्णस्यापि तु कर्मणि प्रा।
प्रकृत्याद्धुनविद्धा॥ प्रतिपदिद्धाऽपराह्ण
व्यापिनी ग्राह्या॥ न तु भूतविद्धा ममावस्या
मोल्लास्द्धानतोपि वा॥ श्राद्धकर्मणि येकु
र्वन्ति या मा भूतविद्धीयन्ते तु निकार्षणांजिन
वचनेन भूतविद्धायां निषेधात्कपक्षाउ
भितिवेम्मन्य॥ इदं वचनं प्रतिपद्विद्धामा
वस्यायामपराह्णव्यापिन्यां भूतविद्धा
यां श्राद्ध निषेधपरमित्यविरोधः॥ प्रति
पत्मिश्रितायामपराह्णव्यापित्वं भवे।
भूतविद्धायां विधानात्॥ नद्धकेऽजावालि
ना॥ प्रतिपद्यप्यमावस्या न अपराह्णगता
भवेत॥ भूतविद्धैव सा ग्राह्या पित्र्ये कर्म।
णि सर्वदेति॥ तथा च॥ बौधायनश्चाप्यमा
वस्यानापराह्णे भवेद्यदि॥ भूतविद्धैव।
सा ग्राह्या पित्र्ये कर्मणि सर्वदेति॥ श्वोह्ण
व्यापिनी वनापराह्णव्यापिनीत्यर्थः॥ प

279

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यापिवचनेषुभूतविद्धायाप्रपराह्णापि
वमभिप्रेतंतथमध्याह्नापराह्णव्यापिता
भावेत्वपरेऽतनयकालिकीतिवहोने
यत॥मध्याह्नात्परतोयत्रचतुर्दशीप्रवर्त
तेते॥सिनीवालीतिसाज्ञेयापितृकर्म
णिनिष्फलीतिबोधायनवचनात्॥तत्रा
त्रेधाविभक्तस्याह्नोमध्यमभागोमध्या
ह्नस्ततःपरस्यकालइत्यर्थः॥उभयत्र
पराह्णव्यापित्वेनतिथिद्वयेप्राप्तेहि
त्रिभिःपूर्वासिनीवालीग्राह्या॥अत्राहि
नामिश्रिभूत्वतीभूत्वेशकर्त्रीयस्या॥नि
थिहृदोमास्येव॥मध्याह्नपिकर्त्रुत्यवत्ता।
स्या॥तद्वेजावालिना॥अपराह्णद्वया
वापीयदिहृश्येतिथिद्वये॥प्राक्तनाप्रेः
सिनीवालीतिगृह्यकर्त्रुमतेति॥प्राहि
श्राद्धोक्तौश्राद्धरूपसंग्रहः॥काम्या।
सिनिरेषा॥सिनीवालीहिनेःकार्यासा।
सिकैःपितृकर्मणि॥नीमिःश्राद्धेःकृच्छ्र
कार्या॥तथाचानग्निकैर्हितेथिरिति॥प्रोव
नसाप्युक्तं॥सिनीवालीकृष्णेवकृत्र
केपितृकर्मणि॥स्मातेयदिचमध्याह्न
व्याप्तेनत्रकर्त्रभवेत॥तिथिद्वयेसिनी
वालीतिथिद्दृतोकृष्णमेता॥सोम्येपिव
कृष्णेयावेदवदेवेविहितमितिति॥अत्र
मध्याह्नादिनिमध्याह्नव्यसमयपराह्ण
स्यानामित्यर्थः॥अग्निमेववाक्ये॥तिथि।
द्वयेसिनीवालीतिपूर्वोक्तैवसाग्निकान
ग्निकव्यवस्थाकल्पनीया॥अन्यथाज्ञा।
वालिकांषाणिनिन्यादिवचनविरोधःस्या
त॥कोभयत्रापराह्णव्यापिनोतत्परोवज्ञ

280

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्पकालिको ग्राह्या॥ तत्कुंभहारीतेन।
भुक्तविंशांशमावस्याप्रतिपन्मिश्रिता।
पिता॥ पितृकर्मणि तिहद्विग्राह्या कुत
पग्राहिनीति॥ अत्र कुतपशब्देनाहम
मुहूर्ते मावस्युच्यते॥ किंत॥ कुतपो द्वि
तीयविंशांशयोस्तु हूर्तो उच्यते॥ तदुक्तं
मापलमंगते॥ कुतपकालान्मुहूर्तो स्थीर
नापदाचरति भास्करः॥ सकलः कुतप
तत्रपितृणां दत्तमक्षयमिति॥ अत्रपर
मावस्यायाः अपराह्णस्पर्शाभावान्न
हे कुतपे उपक्रांतस्य श्राद्धस्य प्रतिप
द्यपि समाप्तिर्न दोषः॥ तदुक्तं जाबा
लिना॥ पूर्वाह्णे चेदमावस्या नाड्योह्यप
भवंति हि॥ प्रतिपद्यपि कर्तव्यं श्राद्धं।
श्राद्धविदो विदुरिति॥ यथा गौतमोपि
पूर्वाह्णे स्यात्प्रतिपदो भूतौ सायमम
योगे॥ आरभ्य कुतपे श्राद्धं कुर्यादा रौहि
णं बुधः॥ विधिज्ञो विधिमास्थाय रौहि
णं तु न लंघयेदिति॥ यत्र॥ तुलामकर
मीनेषु कन्यामिथुनेनयथा॥ भूतविद्व
द्वैधा पुण्या भवति यत्र न इति॥ यत्र
गौतमवचनं तत्र तु न विद्वाविषये॥ तदाह गा
लिः॥ तुलायां मकरे मीने कन्यायां
मिथुने धयमा॥ भूतविद्धा न ग्राह्या शे
षेषु प्रतिपद्युतेति॥ आहिताग्निरहहेच
द्रायामपराह्णव्यापिन्यामेवमस्यायां
पिंडपितृयज्ञं कुर्यात्॥ तदाह आपस्तंबः।
अमावस्यायां यदहश्चंद्रमसं न पश्यंति
तदहः पिंडपितृयज्ञं कुर्वीतेति॥ कात्या।

यतोपि ॥ अमावस्यायामपराह्णेपिपिं।
डपितृयज्ञः ॥ चंद्रादर्शनेमावस्यायांपिंडपितृ
यज्ञेरपूर्णानाश्राद्धंकर्तव्यो ॥ स्मार्ततावदुप
मपिक्रमेणकुर्यात् ॥ तदुक्तंमनुना ॥ पि
तृयज्ञंतुनिर्वर्त्यविप्रश्चंद्रक्षयेग्निमान् ॥
पिंडान्वाहार्यकंश्राद्धंकुर्यान्मासानुमा
सिकमिति ॥ श्रुत्वावहारेग्रहेन ॥ अन्नब्रा
ह्मणभोजनानंतरमाह्निकेनेतोस्मिंश्चि ।
नित्यमन्वाहार्यमेतश्राद्धंसचाते ॥ अनत्र
न्यानपिस्मृतिपारणवाक्यानिभूतवि ।
द्धाश्राद्धनिषेधकानितानिकेवलंदर्शक
ममावस्यायांमपराह्णव्यापिन्याभावे
प्रतिपदिचापराह्णकेवलेनिषिद्धेश्राद्धेम
यत्रापराह्णव्यापिन्येवाष्टमीतिथिर्निषिद्धता
याममावस्यायांश्राद्धविधिपराणीतिवेदि
तव्यानि ॥ यानितुपुनभूतविद्धायांश्राद्ध
विधायकानितानिभूतायांदर्शापरा ।
ह्णव्यापित्वेभूतविद्धदर्शेविधिपराणि
उभयत्रापराह्णव्यापित्वेचपरतिथिपराणि
श्रुतावामावस्यायांश्राद्धविधिप ।
राणिवेदितव्यानि ॥ यानितुकुतपकाल
व्यापिन्यांश्राद्धविधायकानितान्युभय
त्रापराह्णव्यापित्वाभावविषयाणिवे ।
दितव्यानि ॥ केचित्त्वपराह्णनाहरेणकु
तपकालप्राधान्येनैवामावस्यानिर्णीता
तेषामयमेवाभिप्रायः ॥ अपराह्णव्या
पिन्याकुतपकालमारभ्यश्राद्धंकर्तव्य
मिति ॥ अन्यथा ॥ अपराह्णः पितृणांतु ।
यापराह्णानुयायिनीत्याहिश्रुतिस्मृति

282

पुराणवाक्ये विरोधोत्र ह्यतिरात्रः स्यात्त
त्रस्थोक्तनिर्णयः साध्वीयानिति ॥ पौर्ण
मास्यपि श्राद्धविधावमावास्यावन्नि
र्णयः पौर्णमास्यां तु श्राद्धं पर्वचने ॥ अमा
वास्याया यथा पूर्वाह्णोपि तत्र पूर्णस्यैकमेति
पौर्णमासीनस्या पूर्वाह्णेन विशेषोस्तिक
श्चेनेति ॥ इति निर्णयामृते श्राद्धप्रकर ॥
णे मावास्यानिर्णयः ॥ अथोत्तराह्णनिर्ण
यः प्रत्यते ॥ तत्र स्नानादौ स्वरूपस्नानाद्व
के ॥ मासपक्षतिथिस्पृष्टे यो यस्मिन्नो हृद
ने हनि ॥ अन्वष्टके तेन यथाभूतेन दानेतत्स
न्निधिरेव नित्ये ॥ हयांतरे त्विति व्याप्तावस्था
वह्निपराह्णव्यापिनी ग्राह्या ॥ उभयत्राप
राह्णस्पर्शाभावे तु पूर्वैव सायंकालव्या
पिनी ग्राह्या ॥ तत्र वाक्यानि ॥ अपराह्णः
पितॄणां तु या पराह्णानुयायिनी ॥ सा ग्रा
ह्या पितृकार्ये तु न पूर्वाह्णानुयायिनी ।
ति ॥ मरीचिरपि ॥ अपराह्णव्यापिनी स्या
त्तिथिः कृष्णस्य यथाविधिः ॥ मध्याह्ने त्वपरत ।
हि देवपूर्वमेति मरुद्दैवयः स्मृतिः ॥ द्वापर
ह्णव्यासो नैवमुख्यार्थः ॥ नारदोपि ॥ ह्यापोच ।
पौर्णमासं च पित्रोः सांवत्सरे दिने ॥ पूर्ववि
द्धमकुर्वाणो नरकं प्रतिपद्यते ॥ पूर्वेद्युः सा
युमितिव्यापका विशेषः ॥ ननु ॥ अब्दे [illegible]
यवेलायां कालमात्रप्रदानिषिद्धः ॥ सेव
यन्निर्हि केस्वेयान परापूर्वाह्णानिर्देति ॥
कालांजिनस्तुवचनेन [illegible] मपेक्ष्य कलामा
त्रतिथिः सौकालान ॥ हि विरुद्धतो भवेद्यो ।
ऽतिविरोधयत्नि चेत्र ॥ केवलवानोन्यायेन ।
कलामात्रापि ग्राह्या ॥ किंतु न विरुद्धते ।

श्रा

मेवं प्रमादात्स्वकामसंभवः स्यात्तथापि
शुद्धं तथा पितामहाद्येवं कृतकालव्या
पिनी श्राद्धम् ॥ तदाह गोभिलः ॥ पितृद्धं तो
न चेद्धाद्धं पर्वेव कृतपेहि भवति ॥ न त्वत्रा
ये कालव्यापिनी श्राद्धं पूर्वविद्धायां कु
र्यात् हि शुद्धं तत्रयस्यापि भावात् ॥ आमश्रा
द्धं तु पेश्राद्धं कुर्यात् तदाहे हि प्रेतं प्रद्यतीति ॥ श्रा
द्धस्य कृतपात्रं मे ते हि तत्पतिसमाप्तिर्विधा
नात् कथं न पुत्रश्राद्धमिति चेत्र स्वत्वं ॥ स्यादिति
पितृव्रतोत्रैव स्यात् समत्व सिध्यात् विधि
न स्यात् ॥ यस्यान्त्यं मविनाश्यानि पितृत्वम्
नुगत्ये तत्र हि वाचनेष्वं सम्यक् सिद्धि ॥
श्राद्धं कर्मणि संपूर्णं न विधानात् कृतं तप
थाश्राद्धं कुर्यादिति ॥ प्रथमा मेषाका
श्राद्धं प्रेतस्योत्तरं ॥ नष्टं कृ विशेषं मेत
वे ॥ हितात्प्रवर्गेहे श्रोतोर्थ्यो सेवा च हेवि
वा ॥ श्च संस्कारादि संप्रत्कं श्राद्धं कुर्यात्स्मा
हितः ॥ यमस्त विशुद्धमाह ॥ पाकोयत्र
देशा पुत्रिणा नित्रै पत्तयः ॥ नह्यपि स्याप्ति
पितृभिः श्राद्धकर्मविवर्ज्यते ॥ श्रुतपकी
यद्वेश्याः परस्त्रीहृतवृद्धाः ॥ तेः श्राद्धेना
मवेसा प्रायश्चित्तमेव ॥ नष्टं कृष्णवाणमस्तु चेये
सदृशः पवित्राः श्राणानदीनां तु नियाविं
च ॥ सर्वेऽन्यस्त्वामिकन्याकृतेहि तेषां पापि
गृहस्थिति ॥ न स्याच ॥ गुरूनाभिगमेयोगमनो
र्थान्याय्य तनानि ॥ हिरण्यानाश्रुवानोस्व
नस्थामीतेषु विद्यते इति ॥ आयतनानि दे
वायतनानि ॥ इति श्राद्धे देशाः ॥ अथ श्रा
द्धकर्तुर्नियम उच्यते ॥ नत्रमरीचिः ॥ श्रा
द्धेयदृष्टान्यांचद्विदम्पा त्रनवासरे ॥ पका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रूपां व्याने पाने तैलं मांसं च वर्जयेदिति ।
देवलोपि ॥ श्राद्धः कर्ता सीतृ निष्ठ्विन्यस्याला
विप्रानिमंत्रयेत ॥ निरामिषं सकृद्भुक्त्वा स
र्वेषु कृतनेजनः ॥ स्वस्त्यंते रोपि ॥ दत्तं याव न
नो वलेदिति पश्चात्स्नानमभोजनं ॥ तत्रापि वि
प्रवे च श्राद्धकर्तास्मर्त्तव्यं जयेदिति श्राद्धक
र्तेनियमाः ॥ नचवलं यात्र श्राद्धमेकोद्दि
ष्टं पार्वणं च यथा सकलाचारं कुर्यात ॥ उ
भयविधायकवाक्यबलात ॥ याकाति
वत्सरात्स्यु मः ॥ सपिंडीकरणादूर्ध्वं प्रति
संवत्सरे नैः ॥ मातापित्रोः पृथक्कार्यमे
कोद्दिष्टं मृताहनि ॥ श्यानानपोपि ॥ सपि
डीकरणं कृत्वा कुर्यात्पार्वणं सदा सुतः ॥ प्र
तिसंवत्सरं श्राद्धं च्छागलेयो विनो विधिः
रिति ॥ उत्तनंतर विज्ञानेश्वर योगिना पित्रो
क्षयाहे विकल्प इत्युक्तं ॥ अमावस्याया
मपि दिने च मृतानामेकोद्दिष्टं ॥ नदर्श
शविधिन ॥ अमायां तत्र यो यस्य प्रतपदे त्व
चापदि ॥ पार्वणेन सकृत्तस्यैकोद्दिष्टं ।
कराचेन्नृति ॥ सन्न्यासिनो न पार्वणमेव ।
नैकोद्दिष्टं चेन स्यात ॥ दे उग्रहणमात्रेणैव
प्रेतो भवेद्यतिः ॥ अतः सन्तनेन कर्तव्यं पा
र्वणं तस्य सर्वदेति ॥ अनाहिताग्नेस्तु श्रा
द्धे त्रयं दर्शमेकोद्दिष्टमेव कार्यं ॥ तथा ।
ह शातातपः ॥ अनाहिताग्नेर्मृतस्यापि श्रात्रा
सह निवर्तते ॥ कुर्वते पिंडनं तस्यैव ।
पार्वणमाचरेदिति ॥ उत अनाहिताग्नेर्भर्तु
मियान्नात ॥ अश्वगर्भज्येष्ठभ्रातुः पितृव
देव पार्वणमेकोद्दिष्टं व्याख्याचारेषु
यो दिने गम्यते ॥ सपिंडनं तपि ॥ यत्तु मेव प्रा

285

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नाम्ना यस्तु विधिं प्रयच्छति ॥ गरुडोवाच पि
कुर्वीत न यो नैव तत्पार्वणमिति ॥ हे हरे
मोपि ॥ मातुः सहोदरो यस्तु पितुः सह
भवस्तथा ॥ तयो नैव च कुर्वीत पार्वणं
पितुर्नाहते ॥ पिंडनाम्ना सपिंडीकरणानि हि
ना पार्वणेन कुर्वीते न्नृपः ॥ एकएवासिधो
पि ॥ सपिंडीकरणाहर्यं यत्र न अप्रवीय
ते ॥ श्रौतेभगिन्यौ पुत्राय स्वामिने मातुला
यच ॥ मित्राय गुरवे श्राद्धमेकोद्दिष्टं न पा
र्वणमिति ॥ पुत्राभिकर्त्तेनभावेत्पत्नी
स्वयमेव सपिंडीकरणं कृत्वा प्रत्येकं पार्व
णमेव कुर्यात ॥ न दोषः लोपमाहिः ॥ सदो
भावे स्वयं पत्न्याः स्वभर्तॄणां समंत्रकं ॥ स
पिंडीकरणं कुर्युस्ततः पार्वणमेव चेति ॥
समंत्रमपि ॥ अपुत्रे संस्थिते कन्ती न भवेत्का
दृष्टकर्मणि ॥ नेत्र पत्न्यापि कुर्वीत सापिंड्यं पा
र्वणं न येति ॥ नारीणां तु सुतानां च स्वसु निर्वि
कल्पश्राद्धेषु पत्न्या सहैव श्राद्धकार्यं ॥ स्वय
मृति हितं पूर्वं कृत्वा पृथक् ॥ नदामहगर्भेक
णः ॥ तथा ह्रदने यतो ऽनेकस्त्रीणां तासि ।
पृथक्क्रिया ॥ केचिदिच्छंति नारीणां पृथक्पा
त्रपि महर्षयः ॥ अन्वष्टकासु वृद्धौ च ॥ नव
कं ॥ अन्वष्टकानवधान्नां तत्मातुः श्राद्धं इष्टं ना
ह्रति ॥ पितामहादिभिः सार्कं मातुः श्रा
द्धं समाचरेत् ॥ काम्यासेतन्रेषपि ॥ प्रकृका
दिष्टदैवं च नरा यायाच स्तनाहति ॥ मातुः
श्राद्धं पृथक्कुर्यादन्यत्र पतिनासह ॥ मा
तुरितिस्त्रीणांमपलक्षणं ॥ अन्वाग्रहश्चैता
स्तु विशेषो श्रुतिपीयते ॥ न त्र मतं सर्वंगणादि
न पार्वकाश्चिनादीरहणेनप्रियामरणेसोतन्।

ग्रन्यदृष्टत्वान्नब्राह्मकालेकेनैवैकंपाके
कंचभवति॥पिंडोपिहितपिनाकब्राह्मण
इत्योतद्दृष्टानेकयवकार्यः॥नञ्ब्राह्मणा
यमभवति॥नराहुलोगाहितः॥शूनाहनि
समासेनापिडुर्निवेधपटेह्यकं॥नञ्ब्रा
ह्मणेदपत्योरवाराहनपंवंचेतिसमासे
नपिंडनिवेपोनञ्ब्राह्मणह्यनित्यः॥ त
श्रुनाहनीतिविग्रोबोपादानानित्यमेद
नञ्पणेनञ्ब्राह्मणकुयोनसमासेनेतिनाम
ने॥किंच॥शूनाहनिसमासेनकुर्यादिति।
विप्रोबोपादानादेवसोवतस्मैनिकयानि।
निमनञ्ब्राह्मणस्पिंडीकरणान्वह्यकाब्रा
ह्मणवचनानेरुष्टप्रग्रविहितेणहकृतो।
वानायोचप्रागासोपाचनञ्ब्राह्मणह्यधोमिति
पतिस्यलोयानञ्ब्राह्मणसेवाहपषिविया।
नाञ्जवब्राह्मणानितिकेणवोस्ट्रपाद्माज्ञादि
सुमावानितिकवदेवसमासेनेवाभिधा।
मात॥पवंकेकिन्नाद्रकालेसर्वासामेव
पत्नीनांहिवात्यहेपोनविपितृकब्राह्मण
देवकृः॥पिंडेह्यः॥यञ्चस्रापतनावबन
एकांचित्तसमानूढोरपत्नीनिपनेगतो॥
इत्यकुब्राह्मणेनञोःक्रयोदोहनेचहस्थका
यकं॥नञ्ब्राह्मणविषयं॥किंचिन्नञ्ब्रा
ह्मणकालेनक्रियतेदनतोगिरसोवाकेन
गम्यते॥नहिविषयंभेदनेचहस्थकायती।
निवाकच॥नञ्ब्राह्मणेवुयद्विदुहस्तपञ्
विनेचयत॥दपत्नोभुकाषिहयतवभ्।
जीनकंहिहिति॥यतावकस्यामवतिथ्या
हस्याहिनाहिनहयव्यापिनात्हवेदिनमा
गितिमागोमहेसेपांपादिनव्यापिनिमा

287

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पत्न्याः एकचित्यारोहणेन मरणे तत्रापि स
मासेनैवोर्ध्वमाहिसपिण्डयकर्त्तव्यं कालान्त
नेतिश्चेदेकत्वाद्वने प्रायान्तान्तरथेश्राली
रथुनायाः पत्न्यां अपि तद्दैवमरणं सकलो
नैवद्धनप्रायश्चित्ताद्विदिनमरणस्य पीतिरे
यावद्दशाहमद्धप्रहोन्या यद्दृश्यते निष्पाकन्ता
हिनिर्येमितानामेवन्यायेनाहैनेमरणा।
हिनप्रभृत्येव दिनपरिगणना कर्त्तव्येति ला
टकपिण्डदानप्रभावादिकं कार्त्तव्यं॥ यावि
प्रनर्भर्त्तै मरणानन्तरं चिरकालव्यवधाने
पिण्डग्रामेनेन शुना या अपि पत्न्या मर्त्तु
मरणसमकालमेव मरणं प्रतिपाद्यं कालि
नान्यथं वाट्यत्वा पारितोन्सारक्वानिता
न्यपितिथ्यामेष एकचित्यारोहणविषया
णियोज्याति॥ यत्न भृगुवचनं॥ यास्मरो
हनं कुर्याद्भर्तुश्चितां पतिव्रता॥ ताश्रमार
निम्यामेपृथक्पिण्डनियोजयेत॥ पत्न्य
रुननदन्त्रा इत्युगपत्नसमापयेदिति॥ ना
डेकनिचित्यानितिकाण्तानिषवत्वा गेह।
णविषय॥ तोदिवशे विप्राश्च कामेवा।
न शुनानोश्रा हे विप्रो भोजनीयोन॥ यदा।
दैवपूर्वेक स्मिन्दिने शुनानां पितृमातृ।
भ्रात्रादीनां मरणपदाहिकं सन्निपातः॥ नदा
प्रधानानुक्रमेण स्पष्टनवाश्रोनक्रमान्।
श्राद्धानां बहूनां प्रकालेकं नेमश्राक
लाहेकास्मपाकेनैवदैवपितृश्रामाति
मरणेन नोमातत्त्वशालामिमन्त्रणे॥ तता।
नैषायथाप्राधान्यक्रत्वायुगपत्सर्वश्रा
द्धानि समापयेत्॥ नरसंस्पृश्युना॥ एका।
कालगतानां बहूनामप्येवाद्दयोः॥ न

शेषाश्च पक्षे कुर्यान्नान्दीं चैव पूर्ववत् ॥ अथव
कृष्णशृंगोपि ॥ भवेद्यदि सपिंडानां तुष्या
पन्नस्मरणनथा ॥ एवमामनिमालोका
नन्कमाकोहमार्चेनं इति ॥ क्रमादिति
संवत्क्रमात् ॥ यत्नवचनं ॥ कृत्वाष्टव।
सूनस्याहेहितीयस्मनतः पुनः ॥ तनी
यस्मनतः कुर्यान्नानिपातेनयं क्रमः इ
ति ॥ इह च मातापित्रोर्व्यतिरिक्तानां त।
ल्पस्यवधानामेकस्मिन्दिनेक्रमेणवद्र।
नानामनणक्रमेणश्राद्धं वन्तेद्यमितोवं
पर्दं ॥ पृथुक्रस्यशृंगाकाकोन ॥ एगायपश्च
वेणनल्पकालविमयेविप्रोदयम्हसका
सोसिनि ॥ पित्रोः श्राद्धे समस्तमेनवप
त्रिषितेपिवा ॥ पित्रपूर्वं स्वततः कुर्यात्सन्त
श्रामेवयोगतः ॥ नन्वेवं वश्राद्धद्वयं कु।
र्यान्नमानेहनिकुत्रविदिति पत्रचेतनसा
पकस्यकानेकस्मिन्दिनेश्राद्धकरणनि
षिद्धं तनकथमुच्यते ॥ संवत्क्रमेणको
बहूनिश्राद्धानिकुर्यादिति सत्यं ॥ दैवता
भेदनिमित्तनहिनेनैमित्तिकं तत्कर्तव्य
निमित्तानुक्रमेणेत्ययमिति ॥ तथा ॥ श्राद्धं।
कृत्वापुनः श्राद्धं नकुर्यादेकवासरे ॥ य
दितैमित्तिकं तत्स्यादेकोद्दिष्टं भवेद्यदि
कान्यायनोपि ॥ दैवबहुनि निमित्तानि
जायन्तेयेकवासरे ॥ नैमित्तिकानि का।
र्याणि निमित्तान्यनुक्रमादिति ॥ नि
यतानियतनिमित्तयोः श्राद्धयोः सन्नि
पातेश्रनियतनिमित्तस्यान्तुदर्शकानादे
वानियतनिमित्तमपिसिध्यतीतिनिय
निमित्तमेवकुर्यात् ॥ तथानित्यश्राद्धं।
दर्शिकश्राद्धयोः सन्निपातेदर्शश्राद्ध

289

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नवनित्यश्राद्धसिद्धिः ॥ तदुक्तं ॥ प्रमासि
कमासिकयोर्मासिकेनैवोदकुंभसिद्धि
एवंमासामावस्यायांतुगार्हिश्राद्धेनैव
दर्शश्राद्धसिद्धिः ॥ तथा ॥ दर्शोग्रहणग्रह।
णाद्वेद्वयाहालभ्ययोगयोः ॥ हार्पीक
माघेमन्वादेः संपातेश्राद्धकर्मणि ॥ प्रस
गाहितत्स्यात्पितृश्राद्देकृतंसमाचरेदिति
नियतानिमित्तकेपिदेवतामेदेनश्राद्ध
द्वयंकार्यं ॥ तदुक्तंकालादर्शेपव ॥ नि
त्यस्याचोदकुंभस्यदर्शमासिकयोरपि
नित्यस्याचाब्दिकस्यापिदार्शिकाब्दिक
योरपि ॥ युगाद्याब्दिकयोश्चापिमन्वाद्या
ब्दिकयोरपि ॥ प्रत्याब्दिकेश्चालभ्ययोगे
श्रुविहितस्य ॥ संपातेदेवतामेदाच्छ्राव
युग्मंसमाचरेदिति ॥ अत्रनित्यदार्शिक
योः षड्दैवतत्वान्मासिकोदकुंभयोरे
कोद्दिष्टत्वाद्देवतामेदस्पष्टः ॥ नित्यदार्शिक
युगादिमन्वंतरालभ्ययोगनिमित्तश्राद्धा
नांषट्दैवतत्वात्तीर्थिकस्यापिदैव
नमेदोदैकोद्दिष्टत्वाद्देवतामेदः ॥ अ
त्रापिनियतनिमित्तस्यैवप्राबल्यात्सर्वं।
मुदकुंभमासिकाब्दिकार्थानियतनिमि
त्तेकृतनापृथग्नियतनिमित्तेनित्यदार्शि
काब्दिश्राद्धंकुर्यात् ॥ पार्वणैकोद्दिष्टयो
रेकत्रकार्यत्वेपार्वणलोपःकेचैकोद्दिष्टंकु
र्यात् ॥ यदाहजाबालिः ॥ यदैकत्रभवे
तांचैकोद्दिष्टपार्वणे ॥ पार्वणंचा।
भिनिवर्त्येवएकोद्दिष्टंसमाचरेदिति ॥ व्या
ध्यादिनिमित्तेनश्राद्धविघ्नेसति ॥ कर्मे।
कादशपंचममावस्यायांश्राद्धंकुर्यात् ॥ त
दुक्तंमरीचिना ॥ श्राद्धविघ्नेसमुत्पन्नेत्वव

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विज्ञाते सूतकान्ते नि ॥ कुर्याद्देवेन सर्वथा।
कारपूर्णा विरुद्धेयमिति ॥ अथ सूतकस्य निष्कृ
ह विज्ञेयं समस्ते. विज्ञाते पीत्वा पयः ॥ अन
सूतकस्य निष्कृतिः स्यैव सामिकस्य माव
स्योरिकस्य चक्षुः स्यैकादशपञ्चमावस्यायो वि
धाने नाममवाप्याविश्राद्धस्य सूतके ना
ह्निके श्राद्धे तेन तं सूतकान्ते गेहिने तत्कु।
र्यान ॥ तदाह ऋष्यशृङ्गः ॥ आह्निके चैव।
मासिमे सूतके जायते यदि ॥ अपो चेत्तदा।
तिक्रान्ते तत्र श्राद्धं प्रदीयते इति ॥ अपो चाने
न दिने पिकरणमसंभवेमावस्यायां कुर्या
त ॥ तदाह बौधिलः ॥ दैवात्प्राह्निके प्रा
मवेन तत्र सूतकेलै ॥ अयो चानन्तरं कुर्या
न मासे तु यथाविधि ॥ केचित्पूर्णा चान
नराणां नः तथाहि तथापि वके काये मित्याहुः
यथा ॥ नरसर्वस्य सूतकेन चिन्तनका।
लिना ॥ सूतकान्तेर कुर्यात्तु न लक्ष्य हरेव
वेति ॥ अथ सूतकान्तनरमेमिति सूतकप
देविह्ननिमित्तोपलक्षणं ॥ यदा तु पत्न्येवम
तेः श्राद्धकर्तुः श्राद्धदिने रजस्वला भवति
तदा पंचमेहनि श्राद्धं कुर्यात् ॥ तदाह गौत
मः ॥ अथ तत्र यदा भार्या संप्राप्ते मत्तेगाहि
के ॥ रजस्वला भवेत्तस्मात् कुर्यात्तत्पंचमेह
नीति ॥ तथा च ॥ आह्निके समनुप्राप्ते यस्य
भार्या रजस्वला ॥ पंचमेह्नि तत्कार्यं न त
त्कार्यं शुद्धाहनीति ॥ यस्य भार्या रजस्वला
न तस्य श्राद्धे भवेच्छुद्धा रेजो बुध्या रजोरपि
नात्पंचमेह्नि कुर्यात् दिनत्रयं ॥ यत्तु ॥ आप
नैश्राद्धैनीयं चवरस्य रहेन्तथा ॥ आमश्रा
द्धं तु कुर्वीत यस्य भार्या रजस्वलेति ॥ तथा

291

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कृ... ...विप्रवेसमुपस्थिते ना
मानवेदपाकालानां...
आमश्राद्धंद्विजैःकार्यंशूद्रैःकार्यंसदैवन
कात्यायनमात्रपदवचनाभ्यांपुत्रादिःक
र्तास्वभार्यायांरजस्वलायामामश्राद्धंकु।
र्याद्विलक्षणं॥तत्कर्तारहस्यानिविजश्राद्धवि
षयं॥तदाहलौगाक्षिः॥पुत्रजन्मनिभर्तारा
द्विवैपाख्योयत्नात्रिकः॥पत्नीनेवाह्निकं
कुर्याद्देश्वामेनैवकचित॥एतेनपश्चा
त्तेन॥मरीचिरपि॥एतनश्चिन्त्यप्रवासीस्वा
यस्यभार्यारजस्वला॥आमश्राद्धंप्रकुर्वी
तनतत्कुर्यान्नाहानीति॥आपस्तम्बादि
कंनैवकुर्यादामेनकुर्वीत॥एतेनतद्द।
मायांनकमेवाहविवाहेइत्यादिवाकैस्मा
ह्निकेआमश्राद्धेनिषेधाद्रजस्वलात्वेपि
स्वयमेवापिवीपिवेःपक्वान्नेनैवाह्निकं
श्राद्धंकुर्यात्॥रजस्वलेवकर्मचैत्तपंचमे
ह्निकुर्यादितिसिद्धं॥यमस्तुपराचेपुनादि
सूतस्यहुतमासोन्नायने॥दिनेनन्नायनेत
स्यतन्मासमासावस्यायानर्कुसेकादशेपं।
वाह्निकेश्राद्धेकार्यं॥तदाहदक्षस्मृतिः॥न
स्नायतेशूनाहस्त्रेपूरोप्रितनेसंस्थितेसति॥स
सम्बन्ध्यतिविज्ञानेनकुर्याद्धंस्याद्दत्याह्निकं।
मिति॥मरीचिरपि॥श्राद्धविघ्नेसमुत्पन्नेन
विज्ञातेश्वनाहनि॥एकादश्यांतुकर्तव्यं
कृष्णपक्षेविशेषतः॥इति॥दिनेज्ञानेमासा
ज्ञानेवाषाढमाघयोर्न्तमिति नेकार्यं॥त
दुक्तंहृद्रस्मृतिना॥यदामासोनविज्ञातो।
विज्ञातंदिनमेवच॥तदावाषाढकेमासि
माघेवातद्दिनंभवेत॥तदामासाज्ञानेमा
मीतिपाठः॥यदामयमपिनज्ञायते॥तदा

292

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible] मासे [illegible] ग्राह्यो ॥ न [illegible]
तिः ॥ दिनमासेन विज्ञातो मरणस्य यदा
पुनः प्रस्थानदिनमासौ न ग्राह्यौ मृतौ क्व
चापि हि पारणेति ॥ सर्वो क्वचापि हि प्रोक्तस्यायम
र्थः ॥ यदा प्रस्थानदिनमासौ ज्ञातौ न तदा।
तावेव ग्राह्यौ ॥ यदा मासो ज्ञातो दिनं न ज्ञा
तं न ज्ञातं मासमात्रमेकादशीपर्णे दिने
यदा दिनं ज्ञातं मासो न ज्ञातस्तदा माघमा
र्गशीर्षे वेति ॥ यदा मरणप्रस्थानमासौ मा।
वस्यायां कुर्यात् ॥ नदालस्येनेतः ॥ यदा वि
ज्ञाते मावस्यायां श्रवणे दिने वापि [illegible]।
दिकृष्णा दिने द्वादश्यां भावान् ॥ श्राद्धकर
णं भवेदिति दशानमावं कुर्यात् ॥ नरके पि
तमात्र प्रज्ञातब्धे भृते श्राद्धं विप्रयोः ॥ श्रा
द्धं निचसंग्राम भवेत्स्त्रिं ज्ञातो पि चेति ॥ पा
त्राभावे तिथिः ॥ [illegible] प्रोक्तः ॥ पात्रा।
भावे पात्रे कत्तो पितृयज्ञविधिना नरः ॥ निर्दि
ष्टपात्राद्यभावे तत्त्वत्पपात्रं तेन [illegible] ॥ अन्या
भावे ॥ सर्वाभावे विधिपितृगोगवे द्यादश्या
त्म्या ॥ [illegible] सल्लो पो [illegible] विकसवि
[illegible] नः ति ॥ सर्वं [illegible] निषिद्धस्य च।
पात्रस्याभावेऽस्य थः ॥ [illegible] स्य तत्।
[illegible] मात्र पर्याप्त ना विप्रने ॥ [illegible] सिद्धेन।
विशेष [illegible] ॥ [illegible] नाचारे [illegible] श्राद्ध
काले समागते ॥ [illegible] पवसे [illegible]।
[illegible] ॥ [illegible] ॥ विस 293
[illegible] ॥ [illegible] मासम
[illegible] ॥ [illegible] स्यात्।
[illegible] ॥ [illegible] समर्थ्य पुनः
[illegible] ॥ [illegible] दिनस्य
[illegible] स्याति ॥ [illegible] लैः समा

...मः वापि समवेतं न्नलौ जले ॥ भक्तिनम्रः
सद्बुद्धिः पूर्वभुक्त्वस्मात्के अद्वात्म्यति ॥ यत्नेन कु
नः वित्तं प्राप्य गोभ्यो वापि गवाह्निके ॥ व
भावे प्रयत्नं स्माच्छ्राद्धं प्रदापयेत ॥ स
र्वाभावे वनं गत्वा कक्षमूलप्रदर्शकः ॥ सू
र्यादिलोकपालानामिदमुच्चैः पठिष्यति
न मेऽस्ति वित्तं न धनं न चान्यच्छ्राद्धोपयोग्य
स्वपितृन्नतोऽस्मि ॥ तृप्यंतु भक्त्या पितरो मया
यैतौ भुजौ कृतौ वर्त्मनि मारुतस्य ॥ इत्येतत्पि
तृभिर्गीतं भावाभावप्रयोजनं ॥ कन्याको
निकृते तेन श्राद्धं भवति पार्थिवैर्विनि ॥ हृवया
हृतिर्यो ग्रहणे सकलि भोक्तुमात्रा हिंसो ध्या
मेन नृत्त्राचा अन्याह्निकं कुर्यात ॥ भोक्तुं मम
वेतपक्वान्नेनैव कुर्यात ॥ तत्रा हृणोविलः
हणां वित्रहे पित्रोः अन्याह्निकं प्रदिश्य
ते ॥ अत्र स्यामामवेदे श्राद्धं कुर्यात सामेनवाह
नः ॥ अत्र ग्रहपतिः प्राह्नाः सोमाच ऋग्रहण
हीनानपलनकाः ॥ अत्र स्मृत्युक्तानि मे
मेनाप्यधिकारिणा वृषोक सपिंडकश्रा
द्धं च ग्रहणे त्यामेन हेम्ना वा कार्यं ॥ न्याय
स्वलक्षणात् ॥ एवं मासिके चक्षेयं ॥ सांसि
कं सांवत्सरिकं त्यातिरिक्तं न श्राद्धं विद्य
सति द्विजो त्यामेनैव कुर्यात ॥ तदुक्तं ॥
श्राद्धविघ्ने द्विजातीनामामश्राद्धं प्रकीर्ति
तं ॥ अभावे स्माद्धि नियतं सामसंवत्सरा
हते ॥ इति ग्रहणाद्यातिरिक्तविषये ॥ ग्रह
णविषये मासिकसांवत्सरिकयोरपि ॥
गौविलवांकनामश्राद्धविधानात ॥ अथ
अस्मगात सामकालश्राद्धकालादुच्यते ॥
आपद्यनग्नौ तीर्थे च प्रवासे पुत्रजन्मनि
आमश्राद्धं प्रकुर्वीत भार्यारजसि संक्रमे

294

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैश्यापनोऽपि ॥ संक्रमेऽपि द्विजाभावे प्रवा
से पुत्रजन्मनि ॥ हेमश्राद्धं मआ प्रेरे च द्विजः
शूद्रः समाचरेदिति ॥ द्विजानां विविध
विपत्संक्रमादिषु आमहेमश्राद्धाधि।
कारः ॥ शूद्रस्यान्नसदैव ॥ न पाचयेत् स्वयमन्न
पाकाभावेऽधिकारः स्याद्दिग्रादीनां न।
तथैव ॥ अपत्नीको महाधर्मार्थी विदेशप्रा।
गमनादिभिः ॥ असाचैवतच्छूद्राणामा
मश्राद्धं विदुर्बुधाः ॥ जन्मदत्त्रिरपि ॥ याव
त्स्याग्नामिसंयुक्तस्तावन्नाग्निरथापि वा ॥
आमश्राद्धेन तेन कुर्यादृत्तेऽग्नौकरणं भवे
दिति ॥ अचेता अस्ति ॥ स्त्रीशूद्रः स्वपचश्चैव।
जातकर्मणि यान्यपि वा ॥ आमश्राद्धं तदा
कुर्याद्विधिना पार्वणेन तु ॥ स्वपचः स्वयं।
पक्वान्नस्य पत्नीकरणार्थं ॥ आमश्राद्धे
पक्वान्नस्थाने । आमान्नमात्रे विशेषः वि
धिः सर्वे पितृपक्ष ॥ तदुक्तं व्यासेन आमश्राद्धे
पितृविधिर्बोधः स्यात् आमश्राद्धे पर्यविधिः।
आवाहनादिः सर्वः स्यात् पिंडदानं च भो
जनं ॥ यत्तु हयाद्विजातिभ्यः शूद्रेनावाय्।
द्विवा शूद्रं ॥ तेनाग्निकरणं कुर्यात् पिंडा
नैव निर्वपेदिति ॥ बहु विप्रान्नमते पिंड
दाने विप्रा घटकाः ॥ आमश्राद्धे परस्य कुर्यो
त्पिंडदानं कथं भवेत् ॥ रहस्यपाकात् सेत्।
हुत्वा सक्तुभिः पायसेनेति ॥ अन्नाभावे सौ
घृता लाभे सीकारः ॥ आमे हेम्नो व्यासे
नैव विप्राघटकः ॥ आमेदत्तं कौतुपदं।
यावत्समे च वर्णगुणमिति ॥ वनरुणवेपूर
णाङ्गं वा पदत्वया ॥ हिरण्यदानं विप्रा सकल
पात्रविवर्जितो देहि तन्मः ॥ केचिन्मते।

295

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

म वृद्धमेव पितामहीचिन्ताद्॥ आचारादर्शे स्मृत्य
कार्यमेतार्थांश्चाविसर्जने॥ अन्यके मेल्प
वृक्षाः स्वनामश्राद्धविधिः स्मृतः॥ आम।
श्राद्धकालस्तु गालवेनोक्तः॥ आमश्रा
द्धस्तु पूर्वाह्णे सिद्धान्नेन तु मध्यतः॥ पार्व
णं चापराह्णे तु श्राद्धं तत्र आमिक
मिति॥ अत्र सिद्धान्नेन तु मध्यत इति एको
द्दिष्टविषयं प्रतीयते॥ पार्वणस्यापराह्णे
विधानात्॥ एकोद्दिष्टं च मध्याह्ने इति व
चनबलाच्च॥ आमिकमन्नाभावे निमि
त्ते॥ एतच्चामश्राद्धं शूद्रस्यैवाग्रजन्मनो।
जन्मनि षिद्धस्तित्वा॥ निषिद्धत्वस्मन्नेनोक्तः
नपक्वे भोजयेद्विप्रान्स्वशूद्रोऽपि कदाचन
भोजयन्न्नवा यो स्यान्ने चान्नस्य फलं ल
भेत इति॥ अत्र शूद्रनिन्द्यशूद्रेणाकच्चामश्रा
द्धमपराह्णे कार्यं॥ न तु मध्याह्नेनान्न
नेोपलक्षणत्वात्सुवासिनः॥ आमसमा
प्तेऽत्र तु वापि नृणां दत्तमक्षयमिति॥ आम
मात्रेन पक्वान्नेन हत्येन हि तेन कर्तव्यं कालि
त्यामश्राद्धविधेय॥ अत्र तु वाक्ययोर्विवि
रोधः॥ इत्यामश्राद्धविधिः॥ अथ जीव
त्पितृकस्य श्राद्धकाल उच्यते॥ नत्रसपि
तुः पितृकृत्येषु तत्पिकारोऽन विद्यते॥ न
जीवन्तमतिक्रम्य किंचिद्दद्यादिति श्रु
तेः॥ कात्यायनेन जीवत्पितृकस्य श्राद्धा
धिकारे सति षट्पितृस्मृतिर्विशिष्टो नोक्तः॥ य
था॥ ऊर्ध्वं हरेत्पुत्रजन्मनि पितृजोष्ठामसोऽपि कम
॥ नीर्थं प्रावृत्त्ययाया नेऽष्टते जीवतः
पितुः इति॥ जीवत्पितृकस्य षड्नेन श्राद्ध
कालाः स्मृताः॥ पितृर्हि स्थानमास्यविहि

न॥ पिंडं पितृयज्ञेच॥ पितरि प्रोषिते याहि
ते ष्टमे संवत्सरे वा॥ क्रमकालानि स्मि
कालेषु पि कुर्वीत॥ ब्राह्मणा हि हुते नाने
पतिते संन्यासिनि ते॥ येभ्य एव पिता दद्या
त्तेभ्यो दद्यात् स्वयं सुतः॥ समं तु पितृ न
जीवत्पितृकः कुर्यात् श्राद्धमग्निश्रुते हि।
तः॥ येभ्य एव पिता कुर्यात् तेभ्यः कुर्वीत।
साग्निकः॥ साग्निकस्त्वाहिताग्निर्यः पि
यत्स्वाधीनवचने॥ अनग्निकोपि कुर्वीत
जन्मादौ वृद्धिकर्मणि॥ येभ्य एव पिता द
द्यात्तेभ्यो हि पार्वणमिति॥ अथानग्नि
कस्य नाहिताग्नेरपि पैतृकः॥ अन्यथा स्व
मतवचनेन विरोधः स्यात्॥ मत्त्वनातवि
शेषमुक्तः॥ म्रियमाणे तु पितरि पूर्वेषामे
व निर्वपेत्॥ विप्रवद्वापि तं श्राद्धे स्वकं पि
तरमाशयेत्॥ पितामहे जीवति पितुः प्र
पितामहस्य चोर्द्धं तयोः संप्रदानं॥ पितामह
स्य प्रमीतः स्यात् हि यतेः च पितामहः॥ पितुः
स नाम संकीर्त्य कीर्तयेत् प्रपितामहं॥ पिता
महो वा तत् श्राद्धं भुञ्जीतेत्यब्रवीन्मनुरिति।
पितुः स नाम इति॥ अस्मात्पितुः पितामहे
तिष्ठति प्रपितामहं कीर्तयेदित्यर्थः॥ पिता
पि पितामहे च जीवति प्रपितामहादीनां।
त्रयाणां श्राद्धं कुर्वीत॥ त्रिषु जीवत्सु न कुर्या
त्॥ तदुक्तं विष्णुना॥ पितरि जीवति यः श्रा
द्धं कुर्यात् येषां पिता कुर्यात् तेषां कुर्वीत॥ पि
तरि पितामहे च जीवति येषां पितामहः॥
पितरि पितामहे प्रपितामहे च जीवति ने
व कुर्वीत॥ यस्मात् पिता प्रेतः स्यात् पितामह
ो जीवत्स पित्रे पिंडं निधाय पितामहात्

महाभ्यां दद्यात् ॥ यस्य पिता प्रपितामहश्च
प्रेतौ स्यातां ॥ पितामहो जीवेत्स पितुः पि-
तामहस्य च पिंडौ निधाय प्रपितामहात्प-
रमेकस्मै पिंडं दद्यात् ॥ यस्य पिता प्रपि-
तामहश्च प्रेतौ स्यातां पितामहो जीवेत्स
तु पिंडं निधाय पितामहादूर्ध्वं द्वाभ्यां दद्या-
त् ॥ यस्य पितामहो हद्र प्रपितामहश्च प्रे-
तौ स्यातां पिता प्रपितामहश्च जीवेत्स पि-
तामहाय पिंडं निधाय प्रपितामहात्परं
द्वाभ्यां दद्यात् ॥ निगमे पि ॥ यो जीवत्पितृ-
कोऽन भोजनं तु पितृस्थाने हस्ते के जीवता-
म जीवतां नादेयमिति हि राणके तु रीति
जीवत्पितृश्राद्धकालाः ॥ अथ जीवत्पि-
तृकस्य निषेधः श्राद्धस्नानं च स्यात् ॥ यथाह
लौगाक्षिः ॥ स्नाम श्राद्धं गयाश्राद्धं श्राद्धं ।
वापरं पार्विकं ॥ न जीवत्पितृकः कुर्यात् ।
तिलैः कृष्णैस्तर्पणं ॥ कन्नर्थिपि ॥ ग्रहका-
ले सक्रांतौ मन्वादिषु युगादिषु ॥ वृद्ध ।
स्य पित्रेर्थे पात्रे सेवक्षयाद्ग्रसोगतः ॥ जी-
वत्पिता नैव कुर्याच्छ्राद्धं कांस्यन वाद्धि
लेमिति ॥ अत्राष्टकान्वष्टकान्वष्टकाद्या
ति रिक्तापर्वान्वष्टकाः श्राद्धं विधानात्
तत्कर्मेषु पूर्वशास्त्रोक्तिप्राप्ते । अन्वष्टका
गयाश्राद्धं मृतस्य पुत्रस्य हीनि ॥ मानतः ।
श्राद्धं स्वतः कुर्यान्नित्यं यदि पितृ जीवति ।
अत्र गयाश्राद्धं स्त्रामि त्रिदेवात्स्यासति ।
कश्राद्धे गयायां श्राद्धविधायकं ॥ प्रमा ।
श्राद्धं गयाश्राद्धमिति श्राद्धेहेश्रोनेव गा-
यां गत्वा तत्र श्राद्धं न कर्तव्यमित्येतत्परं
प्रतस्तु न विरोधः ॥ इति निर्णयामृते श्रा ।

298

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ष्टाकरणोद्दितीयेष्टकानुनिर्णयः ॥ अथ[illegible]म
हालयापरपक्षश्राद्धनिर्णयः ॥ आश्विन
मासस्य कृष्णपक्षे परपक्षः स एव च महालय
इत्युच्यते ॥ तत्र षोडशश्राद्धानि आहुः प्रापत
मानि ॥ तदुक्तं चण्डोदयपुराणे ॥ कन्यागते ।
सवितरि यान्यहानि तु षोडश ॥ क्रतुभिः ।
स्तानि तुल्यानि तेषु च [illegible] ॥ यस्तिति
शुक्लप्रतिपदारभ्य षोडशपार्वणं संख्यासुपर्णी
गा ॥ न स्यात्तथापि चेद्दत्तपार्वविधेः शाल्कस
पक्षमेव ॥ तदुक्तं देवलेन ॥ अहः षोडश
कं यत्तु शुक्लप्रतिपदा सह ॥ चेद्दत्तपार्व
तृणि तस्मायिहपित्र्यात्मिकास्ततेति ॥ मनुर
पि ॥ नभस्यस्यापरपक्षे यत्र कन्याव्रजेद्र
विः ॥ स महालयसंज्ञः स्यात्गजच्छायाह्व
यस्तथा ॥ अत्र नभस्येति ॥ शुक्लप्रतिपदा
दिमासाभिप्रायेण ॥ यमः ॥ आषाढीमव
धिकृत्वा यः पक्षः पञ्चमो भवेत् ॥ तत्र श्रा
द्धं प्रकुर्वीत कन्यास्थोऽर्कोऽभवेन्नवेति ॥ पूर्ण
मायनिर्णयः ॥ ज्योतिः कन्यागतः सूर्यः प्र
ाप्तः पक्षस्य पञ्चमः ॥ कन्यागतः पञ्चमस्य
सोऽत्यन्तं पूज्यमश्नुते ॥ अत्र पञ्चमपक्षो म
लमासस्य वर्षयोऽधिकेऽपि तमतिक्रम्यप्युक्त
पक्षपवश्राद्धं कार्यं ॥ तदाह भृगुः ॥ एक
राशिस्थिते भिसिते सूर्ये यदा दर्शद्वयं भवे
त् ॥ हव्यकव्यक्रियास्तत्र तदा
दिमासकः ॥ हेमाद्रावेतत्तदा सोमसमन्वा
येयं महालयं ॥ राजाभिषेककाम्यं च न
कुर्याद्वलगिते ॥ यत्तु कं ॥ कन्यास्थो
कोऽभवेन्नवेतितिलदानैर्मघोयवसाते च ।
कन्यागते सूर्येऽप्रतिपदमारभ्य पक्षश्रा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]
कर्तव्यं ॥ सपत्नीपत्नस्य कन्यानांतेन सम्यक्
र्थे ॥ तदाहकार्ष्णाजिनिः ॥ यावतैमध्येयस्मा
नेवायकृतकन्यानेषुइविः ॥ सपत्नः सका
लःस्नेयः श्राद्धषोडशकं प्रति ॥ जाबालि
रपि ॥ आगतेपितृवैकन्या श्राद्धंकुर्वीतस
र्वदा ॥ आषाढ्याःपंचमःपक्षः प्रशस्तःपि
तृकर्मसु ॥ अनत्पवाणरपक्षश्राद्धमावपूण
कं ॥ तच्चपार्वणविधिना ब्रह्मदैवतंकार्यं ॥
तदाहगौतमः ॥ पितृणामुत्तमासनेतेनया।
मातामहश्राद्धं ॥ प्रविपोषणकर्तव्यवि।
षोडशात्रकंचजेदिति ॥ कौत्सोपि ॥ इतरा
स्त्वविज्ञात्स्य कन्यायांभास्करेस्थिते ॥ क
लपत्रोराजपत्यायांसमानः पितृकर्मसु
पार्वणंस्याद्धतनाकृषीत्कोपथःश्राद्धमत्र
विति ॥ श्राद्धतात्रकारणं ॥ जाबालोपि ॥ यु।
ग्मानायुस्त्रयांतायमस्वर्गमत्तललत्त्या
ग्रामीपंचमेदत्वाश्राद्धान्कामसंपा गानि
ति ॥ नन्वपरपक्षश्राद्धंनित्यमिष्टंकं ॥ अ
त्रचफलश्रवणात्काम्यंप्रतीयते ॥ नतु
कोविरोधंविस्मादितिचेन्नस्त्यात् ॥ नित्या।
निनैमित्तिकानिचावश्यकानिफलश्र
वणात्काम्यानिभवंतीत्युभयत्रपालि ॥
अतस्तुनिरोधः ॥ अस्याचात्तनदेवतयोर्वे
नवानिकादिभ्योभेदः ॥ तदाहदेवलः।
देवाद्यंनैवकुर्वीतदेवान्नैवकुर्वित
देवायत्तहिकुर्वीतश्राद्धंबाणदेत्तनेति
श्राद्धेदेवाविष्टेदेवाः ॥ अतदेवोविलसीत
ति ॥ पवसर्वस्मिन्नपिपक्षेश्राद्धंकुर्यात्त।
तदप्याकोपंचम्यादि ॥ तस्मात्कार्यावहस्मा।
दि ॥ तदप्यकोदप्यामपादिदप्यतार्थं ॥ त

300

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दग्धाकोग्रनिषेधैकस्मिन्वासरेनेष्टः
णीति॥ नराहगौतमः॥ नस्थापयत्प्रवेशाद्
कृयात्पितृस्मोक्त्यात्पंचम्यादिदर्शा।
नमहस्याहिमर्वंस्मिन्दिने॥ ग्रलाद्गुरा
णा॥ ग्रवस्वकल्पद्रेनश्राद्धकार्यंदि
नेदिने॥ त्रिभागहीनेपक्षेवात्रिभागंवर्ध
मवर्त्तेते॥ अत्राखगुलितिहकस्प्रतिपत्ता
दिपक्षाभिप्रायेण त्रिभागहीनेपंचम्या
दिदर्शान्ता॥ नत्वस्यात्स्वतत्वस्मिन्ययस्वत
दर्शाचेति॥ पंचतिथयोस्मृताभवतीति।
त्रिभागहीनेने॥ त्रिभागमितितद्दर्शास्यादि
दर्शान्तंपंचम्यादिपक्षेषु॥ चतुर्दशीवि।
स्थायत्नत्रापिचतुर्दशीपमसदर्शातिथयो
न्यूनाभवंति॥ सूर्यमित्यहस्यादिदर्शा।
नेपंचम्यादिपक्षेषु चतुर्दशीविस्लापस्रा
स्विमानात॥ यदाहमनुः॥ कृष्णपक्षेद
शम्यादौवर्जयित्वाचतुर्दशीं॥ श्राद्धेप्रश
स्तातिथयोयथैतानतथेतराइति॥ अत्र
दशम्यादावित्यादिपाठेनपंचम्यादय।
म्यादितिथयोरूपसंग्रहः॥ प्रतिपत्प्रभृ
पक्षेचतुर्दशीनवर्ज्यास्यात॥ नैववर्ज्या
चतुर्दशीति॥ यत्रयाज्ञवल्क्यवचने॥ प्रति
पत्प्रभृतिष्वेकांवर्जयित्वाचतुर्दशीमि।
ति॥ नदर्शार्धेचत्वर्थ्योयदरुः संपद्यते स
मस्यात्पूर्वेद्युरपराह्णसंपद्यते॥ पूर्वेद्युर्नवस्या
अपराह्णः संपद्यते॥ अत्रेतेचतुर्दशीपूर्वीके।
नापराह्णव्यापिनातिक्रमेदित्याहविष्णुः।
सर्वैवनवलादापराह्णव्यातिरिक्तपक्षेषु
वावतिष्ठते॥ यदानेकस्मिन्नेववासरेआ
द्धेकर्मानसानेराष्ट्रकौवर्जयेत॥ नदाह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कृत्येयोः ॥ नंदायां भार्गवदिने त्रयोदश्यां त्रि
जन्मसु ॥ पुत्र श्राद्धं न कुर्वीत गृही पुत्रधन
क्षयात् इति ॥ कालाजिनिर्णये ॥ स्मृतेने।
मित्तिकं काम्यं श्राद्धं यच्च मघोद्भवं ॥ नंद।
याद्येषु पुत्रस्य नाशुः स्यादिति निषिद्धतमि
ति ॥ मघायां पिंडदानेन ज्येष्ठः पुत्रो व्य।
नश्यति ॥ अत्रापि पिंडदानस्य श्राद्धस्य पूर्वं
कर्तव्यार्थं हं निषेधः एवं पर्यवसाने ॥ हेम
गौरौपि ॥ प्राजापत्ये च पौष्णे च पित्र्ये भा
र्गवतथा ॥ यस्तु श्राद्धं प्रकुर्वीत तस्य पुत्रो
विनश्यति इति प्राजापत्य रोहिणी ॥ पौष्ण
रेवती ॥ पित्र्यं मघा ॥ भार्गवः शुक्रवासरः
तथा ॥ भानौ भौमे त्रयोदश्यां नंदायां भृगु म
घासु च ॥ पिंडदानं मघायां नानं न कुर्यात्ति
लतर्पणं ॥ एतानि वर्जयित्वा शुभकालस्थि
तिर्हिने श्राद्धं कुर्यात ॥ तत्र श्राद्धमातृस
पतिभिः सह एकश्राद्धं वा कुर्यात ॥ त
दुक्तं नयपाके ॥ गयायां महालयादौ एकश्च कु
र्याद्धुमन्त्रैभि मितिसिंधौ ॥ स्वल्पार्थसारे।
पि ॥ तन्त्रमातृश्राद्धं एकपाकेन माता
महानां सपत्नीकमेवेति ॥ चतुर्विंशते।
पि ॥ केचिदिच्छंति नारीणां एकश्राद्धं सम
हर्षयः इति ॥ तत्रैकस्मिन्नेव पाकेनैकप्रव
कर्ता ॥ आचार्यभ्रात्रादीनां कारयेन्नैको
द्दिष्टविधानेन श्राद्धानि कुर्यात ॥ तदुक्तं
मत्स्यपुराणे ॥ भरण्यां येन पक्षेन महतोय
विकीर्तितो ॥ तस्मात् श्राद्धं न येन सगया
श्राद्धकृद्भवेत् ॥ पत्रन वम्याग्रत्नेकास्याने व
देवतं श्राद्धं कुर्यात ॥ तदुक्तं ॥ पद्मेह कोल्ह
नवभिः पिंडैः श्राद्धं समाचरेत ॥ पितृत्रापि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मातामहश्चैवतथामातामहस्त्रिकं॥ प्रेप्राह्ल
एकैकमातृकानेहिपिंडपिंडादिश्राद्धव
हिर्मातृरूपेणमातृपिंडाएकोदेयः।
यायस्मातृत्वास्यात॥ ततःपितामहीप्र
पितामहीपिंडो॥ मातृणांप्रत्येकंपिंड
दानेनवर्णाध्यायिकापिंडलेनाब्रह्म।
कामेनां॥ प्रमत्स्यते॥ यतेएकाहेदनस्थिर
ड्डिनोवानन्यतेद्वादशपूर्णमेवपार्वणेके
यांत॥ नइकैवाद्दप्रराणे॥ सन्यासिनो।
ग्राहिकादिसूत्र:कायोद्यतिथि:॥ म।
लयेतद्यत्कांडतत्वायांत्यार्वणेनविति।
श्वश्रद्गृहस्थमधिकाद्गुपलत्त्वं॥ तत्प्रते
वतरदेपूणांप्राह्तरैवोहिद्धकार्यं॥ न
हकंमरीचिना॥ समत्वमागतस्यापिपितुः
फोमहिरतस्यैव॥ एकोहिद्दंकर्तव्यंच।
तदेपूर्णमहालयेद्वति॥ समत्वमागतस
पिंडेनस॥ प्रस्त्रप्रिबादयस्यप्रोपिपु
त्रकृतालेनचतदेपर्णपार्वणमेवकार्यं
तदाहरूपराशरः॥ चतद्देपूर्णान्तयज्ञाद्धम
पिंडीकरणेकृते॥ एकोद्दिष्टंविधानेनन
कुर्याच्छ्राद्धानिना॥ पित्राद्यस्यस्यप्रोपा
स्यप्राह्लश्राद्धानस्वनुक्रमात॥ सभूतेपार्व
णेकुर्याल्लाहिकानि[illegible]यक॥ प्रत्रा
[illegible]पदप्रायानप्राणादिप्राह्लोक्रम
मेणसूतानांविधवापदादिरतानांचो
पलक्षक॥ नडकंचांमाडप्रराणे॥ प्राया
नस्रान्प्राह्लामिविमोहयनिनांतथा॥ च
तदेपूर्णानुवर्तनेधेतामार्थमितिनिश्चित
मिति॥ मरीचिरपि॥ विषशस्त्रश्वापदादि
तिर्यग्ब्राह्मणघातिनां॥ चतदेपूर्णक्रिया

का...कार्यमात्मनोऽभिलषितं विगर्हितेति ॥ कामिनो
मित्यस्य ॥ कामः संप्रयोगः ॥ यदि केचि
दुक्तः ॥ पात्रहस्तस्य च तदेव पुत्रेण च तदेव पी
पात्रहस्तस्येति ॥ वसंते ब्राह्मणोऽग्नी
दधीतेति वद्भयदति ॥ तथा वचनेन ॥
यस्य पिता पात्रहस्तः पितामहो जीवति त
हि प्रयतेन न योजनीय ॥ अन्यथा श्राद्धकृ
तः पितृकस्य पितामहस्य प्रपितामहस्य योर
वरपत्नयोश्चाद्धमेव न संभवेत् ॥ न च वि
हितेयथा ॥ कांतेति पुत्रपौत्रैः प्रपौत्र
संमध्यं संयुतं ॥ तस्माच्छ्राद्धं वैपितात
थैवेत्यायसेनविहितं ॥ तत्रैव पत्रपत्रोक
त्वादरपरपत्नीकिंचोभयनियमेऽद्याको
नेदर्शपूर्णमासवचनविरोधः स्यात् ॥ यत्र
श्राद्धेषु विपन्नानां जलाभिश्वत्पातिता
वतदेवं पर्णनवजा स्यात् स मा च स्यान्नकामि
कीति ॥ अत्र कामिकीत्यमावस्यादि
न फलकामस्यमावस्यायामेव नित्यं न
र विहित न फलकामस्य नित्यंतत्रेऽपि श्राद्ध
प्राप्तं सर्वास्वपि तिथिषु राहित्यमिति ॥ श्राद्ध
मानं मनरात्र ॥ ऊर्ध्वं त्रिपक्षात् श्राद्धं
पाहृभनेत्वनान ॥ कंसकोनहिनीयाप
च विहितः ॥ पक्षं तत्र स्वतन्त्रो च पव
शाभनात्स्वतान ॥ वृद्धत्ववानि कवित्वा
पितृमासालभतेनरः ॥ अग्रहमासमपिवा
ज्योलभते श्राद्धकं नारः ॥ मासानवमा
मेकप्रशस्तं पायं हि वृगावहूतन ॥ यत्का
दप्रपात त्या त्र पंत्र स्व वर्षविनः स्वताव
हादश्रूपणातत्रूपचरजनकृष्णमेवच ॥
वाति प्रेत्र प्रावपोदशपणाचनदेशपणातहरज

ऊ पनं ॥ श्रीयेनैपितरं श्राद्धं येप्राप्ते
लक्ष्मनागेले ॥ पत्तन्याहि विधिर्दिष्टा वि
शुलान्मनसः प्रियान् ॥ आद्धेऽद्धः पंचद
पूर्णान्सर्वान्कामान्समश्नुते इति ॥ याज्ञ
वल्केन विशेष ऊक्तः ॥ कन्याकन्यागे
हिनश्च पश्चस्यामश्नुते लक्ष्या ॥ इत्नक्
शिवचानिर्जहि प्रोक्तं क्षपक्कलक्ष्या ॥ अ
लवर्तृसिनः ॥ पुत्रान्नारीपोस्तक्षकृत्यके
ज्ञातिश्रैष्ठ्यं सर्वेकामानाप्नोति श्राद्धद
लक्ष्या ॥ प्रतिपत्प्रभृतिष्वेकांवर्जयित्वा
चतुर्दशीमिति ॥ कन्याचे हिनोमन्ताव
ऊंष्ट्रश्रृमारि ॥ स्तानेयत्नविजयं ॥ कृ
षिर्वाणिज्या ॥ ...नित लाभं ॥ प्रत्रास्माव
स्यायां सर्वेकामप्राप्तिर्नित्यं कास्यापिक
मावस्यां श्राद्धं दत्त्वा नेतिसिद्धाति ॥ नत्वेक
स्यां सेवामावस्यायां सर्वेकामप्राप्तिः ॥ इ
दमेवस्वर्षभयः ॥ कामेभ्योयहर्षीपोर्णमा
सेवूतेनहोका विचारेभीमामायांप्रति
पादिने ॥ सर्वत्वामावस्यानकामिकी
लिवट्तनलेदेवो श्रामस्यापमावस्या
यां सर्वेकामप्राप्तिर्भवतीत्यमावस्यायो
मिति सेवेति श्रुपललनक मित्याभिप्रायः
इत्यलमतिप्रसंगेन ॥ अपरपत्नेयदिके
नापि हेतुना श्राद्धं न कृतं स्यात्तदा दीपो
त्सवामावस्यायां कर्तव्यं ॥ तदाह स्म
तः ॥ येयंदीपान्विता राजन्ख्याता पंचे
दशी भुवि ॥ तस्यां दद्यान्न चेद्दत्तं पितृणां
वै मनालये इत्यपरपत्तनिर्णयः ॥ अ
थ समानाह्निकानिरुप्यते ॥ त
त्र स्मृत्यन्तरे श्रुतिरयं देवोत्तरलेतथा

ज्ञातिश्रैष्ठ्यंसमेभागंयंसर्वहिंस्रुत्वाके।
शुभं॥ अथचक्रणेऽग्रज्ञानाग्निनाप्रथ
तेनलयां॥ अग्निनोयप्रोवीतप्राक
कर्नति॥ यन्नेविद्योभिर्षवित्ताहिंकुण्ड
माग्निपिस्याविकं॥ अथामाप्रस्वेविशिषि
वधः अग्रेसमयच्छ्रति॥ कर्तिकाग्रम
ग्रामनेसवर्षमानान्मयादिमाने॥ अग्नि
कःश्रद्धयानस्थाप्यपेनमन्त्रमन्त्रः॥ प
वेविष्णुभर्तियोगेषुप्रिश्रोद्धकर्मेक
लिकांविनवत्त्रौविहितमेवक्रमेणाक
लेमवति॥ नवाहसमेदोषिः॥ कृतिकारि
ष्टयोगेष्वर्द्धंशेत्यफलमेविनि॥ विकृ।
भोदिष्टयोगेषुनैवफलमश्नुतेइति
वस्यादिवरेषुवचादिकरणेषुचश्राद्ध
फलहरस्योनिनोक्तं॥ श्रांनेयैवसै
माव्यपानरणाचपराभव॥ सर्वाकामा
नियोविष्णयनमात्रुयथाक्रमं॥ स्त्र।
यांहिवसेष्ठनश्राद्धकालंमनेफल॥ व
श्रांहिकरणेषुनश्राद्धकल्पफलमश्नुते
किंच॥ मन्वादियोगेषुलभ्यायोगेषुच
काम्यश्राद्धंकर्यात॥ तत्रमन्वादिषुयो
गेषुकाम्यसंक्रांतिषुनैमित्तिकंचापि
उद्दिश्यकुर्यात॥ नवाहपुत्रवान्यः॥ अ
यनेहितयेश्राद्धंविशेषेहितयेनया॥ यु
गादिषुचक्रवीतपिंडनिर्वपणाद्द।
तेषुलि॥ अत्रयुगादिषुतिसाहचर्य।
मन्वादीनामुपलक्षणादिषु॥ हिरा
ग्योपिइतिनिर्वापश्राद्धसवैसमाचरेदि
ति॥ मन्वादिषुयुगादिषुलभ्ययोगात
निषिनिर्णयपंचाकारंतिकाम्यश्रा

306

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इनिर्णयः॥ एवंनित्यश्राद्धेनिर्णीय
प्रसंगात्‌काम्यश्राद्धेचनिर्णीयक
मप्राप्तंनैमित्तिकश्राद्धंप्रपंच्यतेएकसंख्या
न्यादिनवश्राद्धेवृद्धिश्राद्धेमासिकान्न
प्रकोरकंमश्राद्धेचानैमित्तिकमि
त्युक्तं॥ तत्रनवश्राद्धंनामस्तनेकाद
शाहादिदिनेषुक्रियमाणंश्राद्धम्।
यते॥ तदुक्तंमित्सरा॥ प्रथमेह्नितृ
तीयेचपंचमेसप्तमेतथा॥ नवमैका
दशेचैवनवश्राद्धंप्रकीर्तितमिति।
गृह्यपरिशिष्टे॥ सप्तमेह्नितृतीयेऽह्नि
प्रथमेनवमेतथा॥ एकादशेपंचमे
स्वेनवश्राद्धानिषट्स्मृतानि॥ बोधाय
नस्तु॥ पंचैवनवश्राद्धानिनवमात्
प्रागेकादशेऽह्निमरणाद्विषमेदिने
षैवैकंनवश्राद्धंकुर्यादिति॥ आश्वल
ायनस्तुनवमेह्निद्वितीयेनैकादशेप्याहि
नेनकुर्यादिति॥ विश्वसामित्राण।
लायनानांपंचवायंकेतवानांषडनोक्ता
विभागेतिहेवस्याकन्ता॥ नवश्राद्ध
निषिद्धाह्नरासलायनस्यापिदिनः॥ श्रा
दुलभावेद्वित्याकृविभाषाचैतेरेवि
द्वैति॥ भविष्यत्पुराणेचात्रवेषण्य
वस्योत्याययथा॥ नवसप्तविधाहाहा
नवश्राद्धानांनांक्रमात्॥ धाषेनयार्वि
तीयोक्तचतुर्विनगृह्येमेषष्ठीयहृति॥ वि
ष्णुनवरावेश्रामष्ट्रविश्रश्रूष्ठयोः॥ इति
थैः॥ इद्वारेनवितनवश्राद्धेत्वनोनस
ह्रकर्यान्‌॥ तत्रतुहवाक्यः॥ नवश्राद्धं
मासिकंचयद्यदंतनिर्तिमेवेत॥ नच

307

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

308

इत्यमानेश्राद्धत्रेपेयप्रलाने इति ॥ इ
तिन्वश्राद्धनिर्णयः ॥ अथ मासिक
निर्णयः ॥ तानि च मासिकानि षोड
शभवन्ति यथा ॥ मरणमासादारभ्य
संवत्सरपर्यन्तं प्रतिमासं विधीयमा
नानि द्वादशमासिकानि ॥ ऊनमासि
कं त्रैपाक्षिकमूनषाण्मासिकमूना
ब्दिकं चेति ॥ तदाजातूकर्ण्यः ॥ द्वादश
प्रतिमास्यानि आद्यषाण्मासिके तथा
त्रैपक्षो नाब्दिकं चेति श्राद्धान्येतानि
षोडश ॥ अत्र द्वादशप्रतिमास्यानीत्य
भिधानात् ॥ आद्यषाण्मासिकेत्य
र्थं न मासिको न षाण्मासिको नाब्
दिकपरः ॥ एतानि षोडशश्राद्धानि
सपिंडीकरणात्पूर्वमेकोद्दिष्टविधि
ना कुर्यात् ॥ तदाह पैठीनसिः ॥ सपिं
डीकरणादर्वाक् कुर्याच्छ्राद्धानि षोडश
एकोद्दिष्टविधानेन कुर्यात्सर्वाणि
तानि तु ॥ सपिंडीकरणादूर्ध्वं यदा क्रि
यते तदा पुनः ॥ प्रत्यब्दं यो यथा कुर्या
त्तथा कुर्यात्स तान्यपि ॥ अत्र व्याख्याहि मा
सिकमेकादशेऽह्नि कुर्यात् ॥ तदाह ।
याज्ञवल्क्यः ॥ मृतेऽहनि तु कर्तव्यं प्रति
मासं तु वत्सरं ॥ प्रति संवत्सरं चैवमा
द्यमेकादशेऽहनि ॥ इति ॥ अत्र प्रतिमा
सं प्रति संवत्सरं चेत्यभिधानादाद्यमेका
दशेऽहनीत्यस्य वादाद्यमासिकमाद्य
ब्दिकं चैकादशेऽह्नि कुर्यात् ॥ अनेनैवा
भिप्रायेण गोविलेनाप्याद्यमाहिताग्ने
मारः ॥ वासमाणान्मोजयेदाद्ये सोनब्र

मन्तेलेनतथा॥ एतन्न भोजयेदित्याहि राहे
निर्भवेदिति॥ अतश्चैकादशे विधीयमा
नेद्दिनाहिक प्रथमेद्दितीने द्वितीयाद्दा
दशे ह्नातरनि विधीयमाने द्वितीयाहि
के॥ एवं तृतीयादशे ह्नाहो विधीयमा
ने तृतीयाह्निके च तथोदशाहे भविधी।
यमाने पूर्व॥ अतएव मरणदिनमारभ्य
विषमदिनेषु विधीयमानश्राद्धेषूद्ध
मित्यर्थः॥ आद्यश्राद्धे तद्वियादेरपि प
कादशाहे क्रियमाण॥ ननु राहे ह्नैव सिद्धः
एकादशाहे क्रियमाणश्राद्ध तत्समानपूरक
ह्नं॥ तत्तन्मासि प्रमाणेन स्वतकेत
पृथक्तम्यक॥ नत्र॥ पृथिनात्तत्रक
स्यामिति विधानात तदित्रियादेरेका
दशाहे तत्कालपरामासिकस्य श्राद्ध
करणमिति चेन॥ सत्य॥ लोगाहिना
कृतेतत्कालिकश्राद्धविधानात॥ आ
द्यश्राद्धस्य पुत्रोपिकृत्यो देकादशेहनि
कतेनात्कालिकोशुद्धिरपृष्ठः पुनरे
कस्य इति॥ नन्वेकस्मिन्॥ आद्यश्राद्ध।
दिवसमृताहे एवाद्यश्राद्धकरणो॥ तत्रा
पितात्कालिकश्राद्धं तत्कपक्षकालादि
हिचेन्न॥ तत्र विधानाभावात्॥ आद्यमे
कादशाहे क्रियेति॥ एकादशाहे च वि
धानान्नचे॥ अतश्चैकादशाहे किंतविहित
मायश्राद्धं तद्वियादिरपुत्रोपिकुर्या
त॥ तत्कर्त्रोचानरीतिशास्त्रमूलिप्रपंचे
न॥ पत्नविस्तृष्टवचने॥ अत्रशौचापरा
मशति॥ तद्वाक्यविषयेपूर्णपक्षेते
रन्योविरोधः॥ प्रायानशक्ता हिविहित।

309

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मार्गेणासूतानामशुचिः पौत्रेपिप्राप्ते सं।
करणपवाकिं कुर्यात्॥ तदाह शौनकः।
अशुचिः पौत्रेपिदातव्यं प्रेतस्योकारणपो
ह्नि॥ सपण्डीकरणस्य श्राद्धशय्या।
मनाद्विप्रति॥ ऊनं मासिकं तदाह गा
र्ग्येऊनमासिवाकार्यं॥ तदाह गोभिलः
मरणान्द्वादशाहे स्यात्मासस्यान्तेचोन
मासिकमिति॥ ऊनषाण्मासिकंतदू
नेषष्ठेमासि॥ ऊनाब्दिकं तद्द्वादशमा
सि॥ त्रैपाक्षिकं तृतीयपक्षे कार्यं॥ तल
क्षणमाह व्यासः॥ त्रिभिर्वा दिवसैरूने मासके
नहितयेनच॥ आद्याद्विचमासेषु ऊ
र्ध्वाह्नाह्निकानि इति॥ कालाविनि
र्णय॥ ऊनाब्दे षष्ठमासे षड्विशमासे स
मेपि वा॥ त्रैपाक्षिके त्रिपक्षे स्यात्मान्त्रम
हेस्तितरागिति॥ भविष्यत्पुराणे॥ त्रै
पाक्षिकं भवेदेते त्रिपक्षेणैनवत्सि
तिकं॥ काशीजिनानत्रिपक्षादत्समि
तिविरोधइति चेन्न॥ तत्राधिदमलेइतिन
निह्नत्कृतनार्थः॥ किंतु प्रह्लादइति॥ साग्ने
त्तमरणादिनादन्यस्मिंदिने दाहसमि
दरनेदिनमारभ्य नवश्राद्धेकारणा।
ह्निकं त्रैपाक्षिकं तत्कुर्यात्॥ तदव
तरश्राद्धादिमरणादिनंपद॥ तदाह वृ
द्धवमनुः॥ ऊर्ध्वं त्रिपक्षाद्यच्छ्राद्धं मृता
हन्येवतत्भवेत्॥ अधस्तु कारयेदाहा
दाहिताग्नेर्द्विजन्मनइति॥ ऐवमेत
विते मासिकं तन्मासि मासेमृताह
एव कुर्यात्॥ तदाह ऋष्यशृङ्गः॥ ए
कोद्दिष्टन्नमप्राप्ते यदि विघ्नः प्रजायते

मासैर्न्यूनोसितैस्तेन संवत्कुर्यादेत विते
वर्षादिति॥ अत्र च कालेन तन्मासिकस
गृह्यते॥ प्रेतवित्तं तन्मासिकं च कुर्या
दित्यर्थः॥ एतानि षोडश श्राद्धानि द्वा
दशाहादेशे स्वशाखादर्वाक् अकाले स
पिंडीकरणे कर्तव्ये सति पूर्वमतीता
नि कृत्वा सपिंडीकरणं कुर्यात्॥ तदाह
लौगाक्षिः॥ श्राद्धानि षोडशापाद्य वि
दधीत सपिंडनं॥ गोभिलोपि॥ श्राद्धा
नि षोडशापाद्यैव कुर्यात्सपिंडनं॥ स
पिंडनेन तु संप्राप्ते पुनः स्वस्वकाले श्राद्ध
निकार्याण्येव॥ तदाहांगिरसः॥ यस्य
संवत्सरादर्वाक् सपिंडीकरणं भवेत्॥
मासिकं चोदकुंभं च देयं तस्यापि वत्स
रमिति॥ सपिंडीकरणादर्वाक् अपकृष्य
कृतान्यपि तानि विवाहादिवृद्धौ उप
स्थितायां पुनरपकृष्य कृतान्येव पश्चात्का
र्याणि॥ तदाह कार्ष्णाजिनिः॥ सपिं
डीकरणादर्वाक् अपकृष्य कृतान्यपि
पुनरप्यपकृष्यंते वृद्ध्युत्तरनिषेधना
दिति॥ सांख्यायनोपि॥ प्रेतश्राद्धानि
सर्वाणि सपिंडीकरणं तथा॥ अपकृ
ष्यापि कुर्वीत कर्ता नांदीमुखं द्विजः॥
वृद्ध्यनंतरनिषेधः पश्चात्कात्यायनेनोक्तः
निर्वर्त्य वृद्धितंत्रं तु मासिकानि न तंत्र
येत्॥ अयातयामं मरणं न भवेत्पुनर
प्युतेति॥ अयातयामं न वै॥ तथा प्रेत
त्वेनायोग्यः हि प्रेतश्राद्धानि कर्षति॥ स
पापी नरके घोरे पितृभिः सह मज्जा
ति॥ अत्रोनमासिकोन षाण्मासिको

34

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नाह्निकानि नैवाहिकेन कार्याणि ॥ न
सांयाभार्गवदिने चतुर्दश्यां त्रिपुष्करे
कुर्वन् श्राद्धं न कुर्वीत गृहस्त्रीपुत्रधनक्षया
दिति ॥ मरीचिरपि ॥ त्रिपुष्करे च नंदासु
सिनीवाल्यां भृगोर्दिने ॥ चतुर्दश्यां च नो
नानि कृत्तिकायां त्रिपुष्करे इति ॥ त्रिपु
ष्करं च त्रिपादऋक्षं भद्रातिथिगुरुभौम
सौरवारेषु एतत्समन्वये स्याच्चेन्मेलनं ।
भवति ॥ द्वयोर्मीलने द्विपुष्करः ॥ तदुक्तं
रत्नमालायां ॥ विषमचरणधिष्ण्ये भौम ।
द्रातिथ्यर्कहि जायते पुष्करं त्रिपुष्करा
पुत्राणां कथ्यते नवांशमते ॥ अनिमित्तहि ।
तः सोयं योगस्त्रिपुष्करः संहितासु त्र ।
णफलदो लहेने हि भूतेषु जिते पिवेति
इति मासिकनिर्णयः ॥ अथ सपिंडीक
रणं ॥ तस्याष्टौ कालाः भवंति ॥ तदुक्तं
कालादर्शे ॥ एकादशाहे द्वादशाहे त्रिप
क्षे वा त्रिमासिके ॥ षष्ठे वैकादशे वाब्दे
मासेऽथवाप्यभागमे ॥ स्वभागाममवृद्धितः ।
यदैव विवाहाद्यभ्युदयिकं प्राप्तं ततः
पूर्वं सपिंडीकरणं कुर्यादित्यर्थः ॥ ए
कादशाह एकादशाहादि इत्युपः कालः
कर्तुर्विप्रेत्र सामग्र्यैकादशेह्नि दद्याद्वि
तिस्यात् ॥ तदा द्वादशकालो निग्निः ॥ सपि
डीकरणं कुर्यात्स्वभावश्चाग्निमान्स्वतः
परतो द्वादशाहाद्वैकल्यहस्वहोऽपरीतर
इति ॥ द्वादशाहात्प्रभृत एकादशप्रोक्तोऽन्य
र्थः ॥ इतरो निरग्निः ॥ हारीतोपि ॥ यानेऽश्वि
वेममावस्यास्तुतास्ताद्वादशे मे भवेत् ॥ स
पिंडीकरणेन स्यात्कुर्यादेव स्वतोऽग्निः ।

312

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मानिति ॥ अत्रापिसूतास्राद्दूर्ध्वं द्वितीय
दिनेन्ततिगणनेनैकादशाह्नो भव
ति ॥ नत्रमावस्यायांहिमवेदित्यर्थः ॥
वृद्धवसिष्ठोपि ॥ प्रथमास्याद्मावस्या
सूतास्याद्दशमेहनि ॥ सपिंडीकरणं ।
नत्रकुर्यादेवंसुतोमिमानिति ॥ अत्रा
पिसूतांस्राद्विति पंचमी भवेत्तोसायांवृ
तास्राद्दूर्ध्वं दिनमारभ्येत्यर्थः ॥ साग्नेरे
कादशेह्नि दर्शपाते पिंडपितृयज्ञाया
नपूर्वं सपिंडीकरणं विधत्तो ॥ नदास्या
लदः ॥ सपिंडीकरणान्नेनोपैत्रिकस्या
ह्माक्रियते ॥ आह्निकत्तोग्नेः सिनीवाली ।
पितृयज्ञः प्रवर्तते इति ॥ प्रेतेनयोक्तत
विगृह्योत्वाग्निमति द्वादशाहेपि कालः ।
नह्यमे भविष्योनवे ॥ यजमानोग्निमा
न्प्राजन्यतेनाग्नौग्निमन्भवेत ॥ द्वादशा
हेनदाकार्यंसपिंडीकरणंबुधैः ॥ यज
मानः कृतीयदापेकादशोह्निसपिंडी
करणं कुर्यात् ॥ यत्तुकात्यायनवचनं
एकादशाहेनिर्वर्त्यअर्वाग्दशाह्नस्य ।
पाविधिं ॥ प्रकुर्वीताग्निमान्विप्रोमा
तापित्रोःसपिंडनमिति ॥ अस्यायमर्थः ।
दशाहास्राद्दूर्ध्वमेकादशोह्निएकादशाहसा
मान्यश्राद्धं निर्वर्त्यपश्चात्सपिंडीकर
णं कुर्वीतेत्यर्थः ॥ अन्यथासर्वेषामेव
वर्णानांश्राद्धमेकादशाहनीतिवाक्य
विशेषः स्यात ॥ एकादशाहमिति षो
डशश्राद्धोपलक्षणं ॥ अत्रापि षोडशे ॥
श्राद्धान्यनैवकुर्यात्सपिंडनमिति षोड
शश्राद्धाकरणेपतिसपिंडीकरणाधि

कारमाद्यात॥ कतिचिदग्निप्रेतेनचाहि
ताग्नेस्तृतीयःपक्षःकालः॥ नदाहसंस्क
तः॥ प्रेतःचेदाहिताग्निःस्यात्कृतोद्व।
त्रियदाभवेत॥ सपिंडीकरणंनस्यात्कु
र्यात्वेवतृतीयके इति॥ अनग्निनात।
द्वादशाहाद्याःसकलाभवंति॥ ननु।
द्वैपिपरत्वेवःश्रुतिचेत॥ सत्यं॥ सपक्ष
त्वः कालः॥ नतदेषाकालादिदृष्टपाठस्य
मावभिप्रायाद्वादशाहेऽपंवकार्यं॥ नदाह
मात्रः॥ आनंत्यात्कुलधर्माणांपुंसांचै
वायुषःक्षयात॥ अस्थिरत्वाच्चदेहस्य
द्वादशाहेविधीयते इति॥ तत्रासंभवे
त्रिपक्षादिःकालोनोक्तः॥ ननुक्तंभ
विष्योत्तरे॥ सपिंडीकरणंकुर्याद्यजमा
नस्त्वनग्निमान॥ अनाहिताग्नेःप्रेतस्य
पूर्णेसंवत्सरेसम॥ द्वादशाहेनवाप्येवा
त्रिपक्षेवात्रिमासिका॥ षट्कादशेपिवा
मासिसंमतेयस्याडपस्थिते॥ ग्रहेमा
स्विवेत्यन्वयः॥ नन्वसाग्निकस्यकालद्वै
कादशाहद्वादशाहरूपकालनिय
मउक्तः॥ अनग्निकस्यत्रिपक्षनियमः।
यदाप्रमादान्तत्रनकृतंभवेत॥ त।
दासपिंडीकरणलोपएवस्यात॥ इति
चेन्न॥ गौणकालेनकालांतरविधानात्।
यथा॥ द्वादशाहादिकालेषुप्रमादादनन।
ष्ठितं॥ सपिंडीकरणंकुर्यात्कालेषूत्त
रभाविषु॥ इति॥ उत्तरभाविषुत्रिपक्षादि
षु॥ इतिसपिंडीकरणकालवृत्तं॥ न
त्सपिंडीकरणंकस्यकेनसहेत्याकांक
यामुच्यते॥ तत्रविशेषः॥ संवत्सरांतेप्रेता

CC-0, Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मृतेपितेतैपितामहस्यतत्प्रपितामः
हांश्चब्राह्मणान्देवपूर्वंभोजयेदिति
प्रेतपिंडपात्रयपात्रोदकेवलिस्त्रयंपि
दद्यादितिच ॥ पितामहे जीवति तद्व्य
त्युत्क्रमणविशेषमुक्तः ॥ मृतेपितरिय
स्याथवियातेच ॥ पितामहः तेनदेया
स्त्रयः पिंडाः प्रपितामहपूर्वकाः ॥३॥ ते
भ्यश्चपितृकः पिंडोनियोक्तव्यस्तुपूर्व
वत् ॥ यत्रपितामहःप्रपितामहश्चजी
वतः ॥ तत्रपितृपितामहपूर्वकास्त्रयः
पिंडादेयाः ॥ नतुप्रेतस्यपितुःपितामः
हप्रपितामहैः सपिंडीकरणमुक्तं पि
तृपितामहयोर्जीवतोः केवलप्रपि
तामहेनैक्यंपितृत्वमितिचेन्मन्य ॥
त्रयाणामप्येकेनापिसपिंडनेपितृ
त्वमुच्यते ॥ प्रेतत्वनिर्मोक्षावस्थितिरि
ति ॥ त्रयाणांसपिंडनेनप्रेतसंबंधपि
तृपितामहप्रपितामहानांपिंडानां
मुख्यभूतानांसपिंडीकरणंनिबद्धं
यथा ॥ मुख्यक्रमेणभूतानांनतुनैवकार्यं ।
स्यापिंडनमिति ॥ यत्रतुपितामहेजीव
तिप्रपितामहादिभिरिन्यादिकेकथ्य ।
मुपपद्यतेइतिचेत्सत्यमुच्यते ॥ निषेधप्र
कंमातापित्रोरेकव्यतिरिक्तविषयं ॥
नेदकंसंकरदूषणं ॥ अक्रमेणमृतानांच
सपिंडीकरणंतिरिष्यते ॥ यदिमाता ।
पितामह्योर्नैषविधिःस्मृतइति ॥ पिता
महेपुत्रीत्वेनसंस्कृतेप्रपितामहेपु ।
त्रीत्वेनसंस्कृतेवापितन्मरणेसति ॥ असं
स्कृताभ्यांसपितामहाभ्यांपितुःसपिंडीक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

णंकुर्यात॥ नतुसत्यधिकार्येतरेपि।
नपितामहस्यसंस्कुर्यात॥ तदाहकात्या
यनः॥ असंस्कृतौनसंस्कार्यौपूर्वौपौत्र
कैः॥ पितरंतत्रसंस्कुर्यादितिकात्याय
नोब्रवीत॥ असंस्कृतानौदारकृत्संस्कार्ये
नयथा॥ पापिष्ठमपिशुद्धेनशुद्धंपापकृ
तापिवा॥ पितामहेनपितरंसंस्कुर्यादि
तिनिश्चयइति॥ अत्रपापिष्ठमितिसंस्कृ
तादिरहित्वात्तत्रपातित्यादिनापतितो
नसंसपिंडीकरणनिषेधात॥ यदाह
गौतमः॥ पापकर्मणेनसहस्योर्यन्ति
यष्ठामिचीरिणीभिरिति॥ नत्रपितामह
प्रपितामहयोः पितुः सपिंडीकरणंक
थंसंभवतीतिचेन्नत्य॥ असंस्कृतामा
नाम्यामेवसपिंडीकरणंकार्यं॥ तदाह
कात्यायनः॥ अप्रतिपुत्रानरपौत्रगोत्र
पितामहस्यसंस्कारःकार्यः॥ तथासा
पवारः॥ पितामहःपितुःपश्चात्त्येचेन्
यदिगच्छतिपौत्रेणैकादशपपरयाहिकंते
षामुद्धोदश॥ नतपौत्रेणकुर्वन्तेषांपु
त्रवासुपितामहः॥ पितुःसपिंडनेकृ
त्वाकुर्यान्मासानुमासिकं॥ यद्यन्यःके
नासन्निहितोनस्यात्ततःपितुःप्राधा
न्येनपितुःसपिंडनेकृत्वापश्चात्पिताम
हयोःसंस्कारंकुर्यात॥ असतिकुर्यादे
वैष्णवरामस्मरणात॥ पितामहेस्वने
हशास्त्रमप्यपितृमरणेसति॥ प्रथम
हनियोरत्यान्मपवरशास्त्रसमाप्य
दित्युपक्रांतापितामहसंस्कारोऽपिदर।
शाहावधिकत्वसमापनेऽपिपितृसंस्का

316

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दत्तोनेरितेमतिःपितृसंस्कारानंतरंपु
नःपितामहस्यसंस्कारंकृत्वासर्वमा
वर्तयेत॥ अग्न्याधानाद्विनापित्रावृत्तेतन
येनपितामहश्राद्धेऽपवर्क्तोते
पितृमरणेसतिपित्राश्चैवसहनाव
श्यकालेपितामहश्राद्धंकुर्यात्॥ त
दाहलौगाक्षिः॥ सर्वोभावेश्यवप्र।
ह्यावसमस्तासमंत्रकं॥ सपिंडीक
रणंकर्तुर्ल्लनःपार्वणमेवच॥ सम
नेपि॥ पुत्रेणापत्नीकेनमेवद्वै
ऽकमेणि॥ नत्रपत्न्यपिकृत्वीनुसापि
ण्डपार्वणेनय्याति॥ स्त्रीणांसपिंडीक
रणेनविशेषउच्यते॥ तदाहशातलः
मातुःसपिंडीकरणंकथंकार्यंमवे
त्तृभिः॥ पितामह्यादिभिःसार्धंसपि
डीकरणमस्तनामिति॥ पितामह्यादि
भिरितिकेचित्ः पितामह्याःप्रपितामह्या।
ह्याप्रपितामहीभिः॥ पितामह्याजी
वंत्याःप्रपितामह्यादिभिः॥ तदुक्तंच
लघुहारीते॥ मातरंतुप्रमीतायांविद्य
तेचपितामही॥ प्रपितामहीपूर्वेण
कार्यंलघुहारीतविधिरिति॥ प्रपि
तामह्यामपिजीवन्त्यांत्रयाणामपि
पिंडानामितिनिवचनात्पितः प्रपिता
मह्यादिभिःकुर्यात्॥ अपुत्रायाःप
त्नेदेवश्वश्र्वादिभिःसहसपिंडनंकु
र्यात्॥ नदाहपैठीनसिः॥ अपुत्रायां
मृतायांतुपतिःकुर्यात्सपिंडनं॥ श्व
श्र्वादिभिःसहैवास्याःसपिंडीकर।
णंभवेत॥ अन्वारोहेतपुत्रःपत्न्यास

हसपिंडनेऽकुर्यात॥ एकस्मिन्नेवदिनेप
त्युः सपिंडीकरणंभवति॥ तेनैवचवत्स
रेपिकृतेभवति॥ तदुक्तंस्मृत्यर्थसारे
श्वश्रूवादेरेकेदिनेमरणेक्षयाः पृथ
क्सपिंडीकरणंनकार्यं॥ भर्तुः सपिं
डीकरणेकृतेस्त्रियःकृतंभवति॥
हिनातरस्युतेपुत्रस्यपितृपितामहैर्वि
शेषेणकृताश्चैततर्पणेऽपिवैकेनमा
तुः सपिंडनंकार्यं॥ सर्वत्रभर्तापत्न्याः
सपिंडमेकेनेवप्रकल्पयतीतिसिद्धं॥ अ
पुत्रिकृतमतेपि॥ मातुः सपिंडीकरण
पत्न्याःसार्धंविधीयते॥ यस्यान्यानित्र
तानालसैवसन्नतिर्घाने इति॥ पुत्रा
नपोपि॥ पुत्रायानगतानानांयस्यानेव
सपिंडनं॥ पुत्रैरितिस्वगोत्राणांदायाद
राश्रुतसंस्मवेक्रियति॥ यस्मोपि॥ पत्न्या
चैकेनकर्तव्यंसपिंडीकरणंस्त्रियः
सापुत्रापिहितेनैकेगतानामप्राकृति।
श्रैतिति॥ अत्रकेचित्कुर्वत॥ अन्याचैके
नेतिपदेपितृवर्गोपिलक्ष्यते॥ पतन्त्र
पितृपितामहैः प्रपितामहैः सपिंडी
करणंकार्यं॥ अन्यथासपिंडीकरण
स्याभावाविरोधः स्यात्॥ एकेनैकत
विधान॥ निस्वरातिरिक्षाद्योळायाः
पितामहयादिभिः सापिंडशकाशेवि
ग्नन्यारोहनेवेकेनपतिवर्गेणसहस
पिंडीकरणंकर्तव्यमित्येवपरसपिंड
वंसतिदेपुत्रचाकभेदेनव्यवस्थाकल्प
नीया॥ आस्वरगोत्रपवंशात्तसपैपुत्राच
विवाहोढायाः पुत्रोमातामहस्यादि।

318

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मिः सपिंडनं कुर्यात् ॥ तदाह शातात
पः ॥ तन्मातामातृपितामह्यात्तु च श्व्रा
वा सपिंडने ॥ आसुरादिविवाहेषु वि ।
नां नो योषितां स्मृतं ॥ तन्मातामातृपिता
मह्यातस्यामातृमातृमातामह्याचन
नश्च श्वातृप्रपितामह्या चेत्यर्थः ॥ मा ।
तामहेनेति वाक्यं यत्तु ॥ तदाह हेमाद्रिः
पितापितामहे योज्याः पूर्णे संवत्सरे सु
तैः ॥ माता मातामहे नैव हि त्याह भग
वान्भृगुः इति ॥ अत्रापि स्वैरेति ॥ ब्राह्म
मादिविवाहोढा सुतैः ॥ अस्वरादिवि
वाहेषु तन्मिश्रानामासुरादिष्विति ।
निर्णयः ॥ एवं दैवब्राह्मप्राजापत्यविवाहेषु च ।
नढ्योढायाः पितामह्यादिभिर्मेत्रा ।
र्वसपिंडीकरणमुक्तमिति ॥ तथा च मा ।
र्कण्डेयः ॥ ब्राह्मादिषु विवाहेषु या त्वोढा क
न्यका भवेत् ॥ भर्तृगोत्रेण कर्तव्या तस्याः
पिंडोदकक्रिया ॥ आसुरादिविवाहेषु
पितृगोत्रेण धर्मवित् इति ॥ अत्र मतेऽपि
तरेषां मातृमेव पितृनो ॥ पुत्रिकापुत्रस्य ।
मातामह्यादिभिः मातुः सपिंडीकर
णं कुर्यात् ॥ तदाह कात्यायनः ॥ मातुः
सपिंडीकरणं पितामह्या सहोदितं ॥ य
थोक्तेनैव कल्पेन पुत्रिकायां न चेत्सुतः
इति ॥ पुत्रिकासुतस्तु मातामह्यादिभिः
कुर्यादिति ॥ बौधायनोऽपि ॥ आदिशेत्प्रथ
मे पिंडे मातरं पुत्रिकासुतः ॥ द्वितीये पि
तुस्तस्यास्तृतीये च पितामहमिति ॥ प
वैयनकेनापि मातुः सापिंड्ये हस्त्रष्ट ॥
कादिश्राद्धेषु पितामह्यादिभिः पार्व

319

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

णकतेव्यं ॥ इदं सपिंडीकरणं विना देहपि
त्रपवकर्तव्येन ॥ नरके वा ऽथवा गेहे ॥ श्रा
द्धानि षोडशादत्वा कुर्यादेव सपिंडनं ॥
प्रोषितावसिते पुत्रः कालादेनि विवाह
पि ॥ एतद्वाक्यानंमप्तवाणीके ॥ प्रोषि
तावसिते प्रवासावसाने पुत्रो निविवा ।
हेपि कालात्सपिंडीनं कुर्यात ॥ नन्वोढ
कुशास्त्रान्तरत्वान कुर्यात ॥ यदि तानि कति
चिदिति श्राद्धादिनादत्वानि तदा सपिंडनमे
व कुर्यादिति ॥ आह ॥ जीवत्पितापि ।
तामहस्यामातुः कुर्यात्सपिंडनं ॥ प्रमीत
पितृकः पितामहस्य पितामहयोरिति ॥ ।
जीवत्पितृकस्यापि तिलकेन पितृव सपिंडने
मातः ॥ सन्यासिनां तु षोडशश्राद्धसपिं
डीकरणानि न संति ॥ न ह्या शोचाः ॥ ए
कोद्दिष्टं न कुर्वीत यतीनां चैव सर्वदा ॥ अ
हन्येकादशे प्राप्ते नो पार्वणं तु विधीयते
सपिंडीकरणं तेषां न कर्तव्यं सुतादिभिः
अहन्येकादशे प्राप्ते ना ॥ त्रिदंडग्रहणादे
व प्रेतत्वं नैव जायते इति ॥ त्रिदंडेति एक
दंडस्योपलक्षणं ॥ उक्तं च नविधितेनम
ते ॥ वनस्थमाश्रमस्थानां तुन्नविधायपा ।
तयतः ॥ एकदंडी त्रिदंडी वा सर्वे संसा
विवर्जित इति ॥ स्नातानां तेपापि ॥ एको
द्दिष्टं जलं पिंडमशौचं प्रेतसत्क्रियां ॥ न
कुर्यात्पार्वणादन्यद्ब्रह्मीभूताय भि ।
क्षवे इति ॥ ब्रह्मचर्यादि विशेषस्त्वन्य
थ सारविशेषे उक्तः ॥ यथा ॥ ब्राह्मणा
दितनानां पतितानां प्रायश्चित्ताकृत
णं ब्रह्मचारिणामनपत्यानां च सपिंडी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करणं नास्ति ॥ तेषां सदैवैकोद्दिष्टमेव
श्राद्धाभिकांक्षिणां द्वादशाहे दश्यः समक्रा।
लाउक्तः ॥ नवश्राद्धमासिकादि निरग्निकानां
पलद्वयेन ॥ अनग्निकस्य त्रियवैः पुष्पयोर्वापि।
सृतकालपव सपिंडीकरणं ॥ नद्वादशाहको
न्यायतः ॥ सर्वेषामेव वर्णानां सूतकांते
सपिंडनमिति ॥ इदमत्र रपि ॥ द्वादशाहे
निविध्यानामग्नौ चौतेपि यथाज्ञा ॥ वेद्यपा
नां चैव यद्वा शब्दयथावा मासान्सपिंडनमि।
ति ॥ इदमत्र द्वादशाहस्यपवा ॥ न द्वादशाहे वि
धिः ॥ मत्रमे वर्णे विशेषं द्वादशाहे स
पिंडनमिति ॥ विप्रस्य त्रय द्वादशाहे
भिषणानां सर्वेषां च पिंडवर्णानामिति व।
चनं ॥ श्राद्धमासिकानां त्रयविशेषमेव
कालेषु पिंडसपिंडोक्ततेषु नः कर्ते
कालविप्रोक्त सर्वश्राद्धेषु लोकः ॥ श्र
माघाप्य संवत्सरे द्विमासाबासमाचे
ष्ठितेति ॥ मातृश्राद्धम् ॥ मेव अनुवाद्या ॥ सर्व
श्चैकपिंडीकरणेऽकृतेपि सर्वत्स
पर्यंत संकल्पविधानेन पार्वणं सोऽदं
श्राद्धं तु कुर्यात ॥ नद्वादश्यां तु वर्ल
श्चैकसपिंडीकरणं यस्य सर्वत्स
ऽपि ॥ नष्ठापिंडे मोहं कं भद्र्यानं
दहिजरति ॥ नष्ठापीतस्यापि श्राद्धेन
तस्यापहृतं सपिंडनसंख्यापि सत्र च।
श्रवतो वृष्टि ॥ अकृतं सपिंडं दि
कृतं सपिंडनं स पार्वणं ॥ नत्रापि वि
धानेन मेनोक्तः ॥ अद्वेव पार्वणं श्रा।
द्धमेवकं भमयमेक ॥ कुर्यात्तस्यापि हि के
श्राद्धं संकल्पविधिना न कुर्यादिति ॥ अथ।

नर्कमिति॥ शातभोक्तोः पुनर्भोजनं नप्रेत
टनादियंमेवहिने॥ विवाहात्मेवमेवं
नाब्दोर्ध्वं चवर्षे सपिंडीकरणं नवश्राद्ध
षोडशश्राद्धप्रत्याब्दिकेगयायामहालय
श्राद्धवार्तिकमासावस्याश्राद्धेपिंडद
द्धितं कुर्यात्॥ नदात्स्वकाम्यजितिः सो।
द्धोवर्षाद्विवाहश्चवर्षार्धं वृद्धमेववा
पितृन्सपिंडनेदद्यात्ः सपिंडीकरणा।
हतेति॥ सपिंडीकरणाद्धेननवश्रा
द्धषोडशश्राद्धानामपकर्षणं॥ स्म
तिसंग्रहेपि॥ विवाहोपनयादूर्ध्वंवर्षं
वर्षार्धंमेववा॥ नकुर्यात्पिंडनिर्वापंन।
चाकरणानिचेति॥ पुनःसपवाद म
हालयेगयाश्राद्धेमातापित्रोःक्षयेहनि
कृतोद्वाहोपिकुर्वीतपिंडनिर्वपनंस
दा इति॥ उक्तकालव्यतिरिक्तेषुश्रमाव
स्यादिकालेषुसंकल्पश्राद्धंकुर्यात्।
तिसपिंडीकरणनिर्णयः॥ अथस
ंकल्पश्राद्धं॥ सांगपार्वणेनश्राद्धक
कल्पकाशिष्वसंकल्पश्राद्धंकु
र्वीत॥ अशक्तस्तुश्राद्धंविना॥ नवाल
स्येन॥ नष्टकस्मृतिसंग्रहे॥ अग्निनि
त्यस्याल्पयद्यकर्तेनश्राद्धं कुर्यात्॥ संक
ल्पश्राद्धमेवासौकुर्यात्त्याहितुविधिं
ति॥ आदिपुराणेहारदवाद्धनारायपम
त्रक॥ नेहापयत्तवः॥ संकल्पश्राद्धे।
पाद्यार्घ्यावाहनाग्नौकरणपिंडप्रदा।
नस्वधावाचनानिवर्जयेदिति॥ व्यासो
पि॥ त्यक्ताग्नः पार्वणेनैवनैकोद्दिष्टम
पिंडन॥ अन्यकाग्निस्तुपिंडेनकिलस्मा।

322

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नेषां स्यमोक्षयेदिति॥ नाम्ना मे नो हि
क्रियाकिनो स्नस्वास्त्रेः॥ इति निर्णयामृते नम
पिंडीकर्मणा निषेधः॥ अथाभ्युदयिक
श्राद्धं॥ तच्च त्रिविधं॥ विवाहादौ नित्य
निमित्तं॥ पुत्रजन्मादौ नियतनिमित्तं॥
अनयायामादिनिमित्तं चेति॥ अथ विवा
हादिनिमित्ते प्रातः कार्यं॥ तदाह प्राप्त
नपः॥ प्रातः वृद्धिनिमित्तकमिति॥ अथ श्र
नः श्राद्धः साध्यस्वरूपात्मककालत्वाचके
नदाह कात्यायनः॥ ललाटसम्मिते भानौ प्रथ
मः प्रहरः स्मृतः॥ समपवादपर्यंसप्रकः ।
प्रातर्विरुद्धमिश्रो मृते इति॥ अथ स्त्राधानवि
मित्तपराह्णे कार्यं॥ तदाह गालवः॥ पा
र्वणं चापराह्णे तु वृद्धिश्राद्धं तथामिक्ष
मिति॥ अप्राप्तानि निमित्ते वृद्धिश्राद्धमप
राह्णे कार्यमित्यर्थः॥ पुत्रजन्मादिनिमि
ते स्नाननियमं नास्ति निमित्तानंतरमेव त
त्कार्यं॥ आभ्युदयिकश्राद्धं मातृपूर्वक
मेव कार्यं॥ तदुक्तं॥ मातृश्राद्धं तु पूर्वं स्या
त्पितृणां तदनंतरं॥ ततो मातामहानां तु
वृद्धौ श्राद्धत्रयं स्मृतं॥ इति नान्दीश्राद्धमा
भ्युदयिकश्राद्धं॥ अथ नान्दीमुखान्युच्य
ते॥ तत्र कात्यायनः॥ कन्यापुत्रविवा
हेषु प्रवेशे नववेश्मनः॥ नामकर्मणि
बालानां चूडाकर्मादिके तथा॥ सीमंतो
न्नयने चैव पुत्रादिमुखदर्शने॥ नान्दीमु
खान्पितृगणान्पूजयेत्प्रयतो गृही॥ पु
त्रादीनां तु मुखदर्शनं स्यात्पु
त्रप्रवेशः॥ गार्ग्योपि॥ पुत्रजन्मनि प्रति॥
ष्ठासु च नवोत्पादने॥ वृद्धौ या।

323

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चवित्ताद्रेचहहिब्राहंविधीयनेस्ति ॥ व
ड्रणोपि ॥ अथाधानाभिषेके शुद्धे हा
नौस्त्रियाझनो ॥ हहिब्राह्मकवीनश्र
मण्ड्रहोनपेति ॥ स्त्रियासुताचाच्यपव
मन्यपुत्राणोपि ॥ ऊसवानदसुतानयत्नो
हारादिमंगले ॥ मानवः प्रथमसूत्राः पि
नस्कल्दनेतर ॥ ननोमातामस्तनोचवि
स्नेहेवास्तलैवचेति ॥ अत्रैवविप्रोयोगा
नेपेगाक्रः ॥ मानब्राह्मंतस्पष्टेयः कमो
हनिचपैत्रिके ॥ मातामस्योयोनवेष्युह
षिब्राह्मत्रयस्स्तमिति ॥ हिनत्रयकर।
लासंभवेषुभकर्मदिनात्संवेदिनेब्राह
त्रयमपिक्रवेन ॥ नरादेरपणानानपुः ॥ रुष
मिरेनवशानकस्पेदेकोस्यवेवासे ॥ श्र
इत्रयप्रक्रवीनवेष्टेवननात्रिकेमिनि
हहिब्राह्मेहरापिवदणहिभिः पिंडदानेक
लाचारप्राप्तवाक्रयोनवाक्रयोन ॥ नर
कमधिष्ठोनरे ॥ पिंडनिर्वपनक्रयोत्र।
वाक्रयोन्नराहिप ॥ हहिब्राह्मेमस्तावा।
न्नोक्रलयमोत्रवेत्पोचेतिहहिब्राह्मंनि
र्णयः ॥ अथजीवश्राद्ध ॥ श्राद्धंदानाय
कर्तेनरेमतिजीवायश्राद्धंक्रयोत ॥ न
ड्रकेवश्राद्धवाणो ॥ हेपाकालेयनश्रद्धा
ख्यवसायसमुचिन ॥ जीविनेसतिजी
वायंदद्याच्छ्राद्धंस्वयंनरः इतिजीवच्छ्रा
द्ध ॥ अथसंक्रांतिनिर्णयः ॥ नचरसंक्रान
योहारदपू ॥ तासमकरककेटावृषमर
क्तिणायने ॥ तुलामेषौविषुवौ ॥ वृषवृ
श्चिकसिंहकुंभाविस्नुपदाः ॥ धनुर्मि।
थुनमीनकन्याः षडशीतिमुखाः ॥ न

324

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तारस्वरव सिद्धः॥ अयने द्वे विषुवे द्वे च
तस्त्रः षडशीतयः॥ चतस्रो विष्णुपद्यश्च
श्च संक्रान्त्यो द्वादश स्मृताः॥ मृगकर्क
ट संक्रान्ती द्वे उदग्दक्षिणायने॥ विषुवे
द्वे तुलामेषे गोलमध्ये तथापरा इति॥ ह
मृगकर्कः गोलद्वयेऽने॥ अयन विषुवयो
गोलमध्ये ऽन्त्यार्थः॥ ज्योतिर्निबन्धोपि॥ वृ
षवृश्चिककुम्भेषु सिंहे चैव वृषार्कः॥ प
नदिष्णुपदं नाम विष्णुवाद्यधिकफलं॥
कन्यायां मिथुने मीने धन्वप्यियदवा
वि:॥ षडशीतिमुखाः प्रोक्ताः षडशीति
गुणाः फलैः॥ आसामेव संक्रान्तीनां वा
भेदेन संज्ञाभेदो रत्नमालायामुक्ताः॥ य
था॥ घोरा ध्वांक्षी महोदरी तथा मन्दा च संक्रा
न्तिर्नामे च महोदरी स्यात्॥ मन्दाकिनी मि
श्रा राक्षसी च भवेत् नाम्नां मिश्रा महोदरी च का
र्या इति॥ तासां च फलं तत्रैवोक्तं॥ धा
न्यां वै शुभा नृपविपत्ति॥ मन्दोदर्यां ल चोर
माख्यं चोरास्त्र दुःस्थानरपतीनेव मन्द
किनी वनेतास्त्यां च द्विजवरगणां मिश्रि
कायां पशूनां च डालानां प्रकृति मवि
लोनां च सीमाति ता च ति॥ इदमपि फल
योने च श्रेयोनामसकृणि भवति नान्यथि।
मपवाहेति॥ अग्रलिप्रवैरे मैत्रभवमि
श्राद्यमिदानेन॥ रवेः संक्रान्तयोर्कः।
साहोमाद्याक्रमशोमता॥ अस्यार्थः र
विवारे उग्रसंज्ञाकानाम लक्ष्मणां पूर्वा
त्रयमघाभरणीमघानामन्यतमसंयोगेय
द्या संक्रान्ति भवति॥ तदा घोरा फलं स्व
ती॥ ७ अयं घोरव सिद्धः सोमवारे वि

शुभा मिष्टिनी शुष्क रत्ना नाम न्यून तमे।
संयोगे संक्रान्तौ धान्यादी फलं संपूर्णं ॥ भौ
मवारे चरसंज्ञकानां श्रवणपुनर्वसु स्वात्यादि न
क्षत्र उत्तरसंज्ञाधीना नाम न्यून तमसे।
योगे संक्रान्तौ महार्घ्यादी फलं संपूर्णं ॥ बुध
वारे मैत्रकानां चित्रा रेवती अनुराधा मृ
गशिरा नाम न्यूनतम संयोगे संक्रान्तौ मेदानि
नी फलं संपूर्णं ॥ गुरुवारे ध्रुवसंज्ञकानां
रोहिणी उत्तरा नाम न्यूनतम संयोगे संक्रा
न्तौ नंदा फलं संपूर्णं ॥ शुक्रवारे मिश्रसं
ज्ञकयोः कृत्तिका विशाखयो नाम न्यूनतम।
संयोग संक्रान्तौ मिश्रा फलं संपूर्णं ॥ श
निवारे दारुणानां ज्येष्ठा आर्द्रा मूल आश्लेषा
नाम न्यूनतम संयोगे संक्रान्तौ राक्षसी फल
संपूर्णं भवति ॥ वारनक्षत्रयोर्विपर्यये
वारनक्षत्रप्राप्त मिश्र फलं भवति इति
ग्रासं भवेद्वेला भेदेनापि फलभेदमप्या
ह ॥ पूर्वाह्णे काले नृपतीन् निहन्ति ग्रामघाति
ने चाथ विशो पराह्णे शूद्रानवर्द्धे
मिते प्रदोषे पिशाचकान् रात्रित्रयां त्रिपृष्ठी
थ ॥ नटादिकांस्तु अस्तंत्र काले प्रत्युष
काले पशुपालकांश्च ॥ संक्रान्तिरर्कस्य
समान लिखितेन च समयांस्समये निरू
पीति ॥ सर्वासु संक्रान्तिषु श्राद्धं दानं स्ना
नादिकं कुर्यात् ॥ न ऊक्तं पुलस्त्येन ॥ अ
नहितये श्राद्ध विष्णुवहितनयनथा ॥ शु
गादि ब च कुर्वीत पिंडनिर्वपणाद्दते इ
ति ॥ वृद्धवसिष्ठोपि ॥ अयने कोटिगुणं
स्यात्तदहत्सा हि ब तथा ॥ षडशीत्यास
हस्र फलं विष्णुपदे ॥ ज्ञानानं यापि

326

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible] ति ।।

स्यैकस्य सैकमेव लोपेन न्यायं यदि मासाना-
वः ।। सप्त जन्मानि रोगी स्याद् दुःखभागी ।
च मानवः ।। संक्रान्तौ यानि दत्तानि हव्यक-
व्यानि मानवैः ।। तेषां तान्युपतिष्ठन्ति सप्त-
जन्मसु निश्चितमिति ।। स्कन्दपुराणे च विष्णु-
धर्मे उक्तः ।। अयने विषुवे चैव विष्णुपदे द-
क्षिणायने चापि ।। षडशीतिमुखे तीते न त-
था हायने च पुण्यफलमिति ।। न च संक्रा-
न्तादिषु स्नानं नक्तं निशि विहितं ।। स च सं-
क्रान्तिसमयो निमेषादपि सूक्ष्मत्वाज्ज्ञात-
मशक्यः ।। अनन्तं यावतिकाले स्नानादि-
कं कर्तुं शक्यं कर्तुमिति चेत्तत्त्वं ।। अत्र
कालस्य सूक्ष्मत्वान्न तत्र विहितं पूर्वं स्मि-
न् यस्मिंश्चाकाले स्नानदानादिकं कार्यं त-
दाह हेमाद्रौ वसिष्ठः ।। संक्रान्तिसमयः सूक्ष्मो
दुर्ज्ञेयः पिशितेक्षणैः ।। तद्योगाच्चाप्यधश्चो-
र्ध्वं त्रिंशन्नाड्यः पवित्रिता इति ।। इदं सामान्ये-
न ः संक्रान्तिविशेषेषु विशेषस्तु कथ्यते ।।
कर्कटे पूर्वतो विंशत्प्राङ्नाड्यो मकरे परा विंश-
तिनाड्यः पुण्याः ।। तदाह हेमाद्रौ वसिष्ठः ।। अ-
तीतानागते पुण्ये द्वे उदग्दक्षिणायने ।। त्रिं-
शत्कर्कटके नाड्यो मकरे विंशतिः पराः
इति ।। विषुवयोस्तु प्रागस्तकाले पश्चाद्दश-
घोडशघटीति ।। षडशीतिमुखे पश्चात्षोडश ना-
ड्यः पुण्याः ।। तदाह हेमाद्रौ वसिष्ठः ।। पुण्य-
यं विषुवे प्राक् च पश्चादपि षोडश ।
ति षडशीतिषु पश्चात्तु हि नाड्यः पुण्याः
षष्ठ्या सपृवा ।। षडशीत्यामतीता याव-
त्त्विह स्नानादिकाः इति ।। अत्र केचित्
ऽशीतिमुखानो विषुवायनाधिकफ ।

...नवमासार्मानाद्दैवचनमनन्यथाव्याख्ये
त्वंतः॥ नक्षत्रवद्दर्शादितिथीनां संक्रा
न्तीनां वचनस्थानां पूर्वैकैकस्याः पर्वद्वयाति
मिलितानां गुणाख्याः वह्नीनां द्वे भव
ति॥ यद्येकैकस्याः शुद्धेः गुणा पूर्वद्वेरन
न्तरे तस्यामेव समर्थ्यः प्राप्यूर्ध्व प्राप्तो ।
ति प्रकृते गुणपक्कलप्यन्ते॥ तथा सति देवी
पुराणे॥ विषुवायनसन्निधौ विषुवायन
संहितानां प्रकर्षविधानेन विशेष इति
तत्र यत्किं सहितानाधिकफलश्रोतिं हि स्वप
ष्टे नामविषुवादिष्विके फलमिति॥ येना
र्थवादरूपाणां विधीनां यत्र प्राकारान्तु॥
नाधिकफलाभावे किंचिन्नियमकं
देवीपुराणवचनेन विषुवायनयोः पूर्वक
र्वाभिधानेन॥ ननु नदिने द्वादशमयक्षेद्र
न्ते संक्रान्तीनामपि वाक्यान्तरेण पक्षा
भिधानात्॥ नद्येवं लभ्यते॥ विषुवज्जित
स्वतन्त्रं फलग्रहणं तत्के पिवे न भवती
ति॥ अन्यथा विषुवादीनामपि विषुवाधिक
फलत्वनियामयत्वमपि मिलितानां षोड
शानामः गुणाद्दितिव्याख्यानप्रसङ्गेन
तत्रापि केचिदेवं व्याचक्षते॥ प्राक्सूर्यः
पिषोडशोति॥ प्रावादोप सूर्यमहोमि ।
लितानां षोडशोति॥ पक्षे च सति॥ वर्तमाना
स्तुल्यामेषनास्वरूपयतोर्द्दशेति अत्रा
प्येवं विषयव्याख्यानस्वरूपशाकंतोऽत्रा
भिमतसिद्धिः॥ किंच वचनस्थानां मिलि
तानां वह्नीनां गुणाद्दृष्टकेषु विषुवा
धिकफलत्वमसद्रूपमेव॥ नचत्रेण्यन
रेषुवाख्यानमिन्दुपवरणीयमित्यल

328

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible] तिथिस्मृति ॥ न

[illegible] गतो म

मतिथिर्विज्ञेया ॥ अन्यसंक्रान्तिसामान्यात्ता
घ्ये नैनाय स्त्रीयो विधिशास्त्रयः पवित्रा
ः स्युः कन्याकाले तु भिः ष्टा घोडश नाडीर्ना
न्न रपे लया म मि दिनन्यात्पूर्वतस्तु न
ननौ पि सौ विष्योर्विनान्युक्त्यतनाद् मित्य
विशेषः ॥ नसारस्य तत्त्वसिंहः ॥ यायास
विविधिनानायस्तात्मनापुण्यत्वमासः स्यन्तार
ति ॥ यत्तु हेमाद्रौ वृद्धवचनं ॥ यः संक्रम
णे तु पुण्यमहः कार्त्स्न्येन प्रवर्त्तिनमिति ॥ त
ग्रापि प्रवर्त्तते कल्पतरौ विश्वा सन्ध्याकाल
विशेषः कल्पनीयः ॥ तुल्ये तिलसंक्रान्ति
विषयः ॥ रात्रौ संक्रमणे विशेषस्तु चामेन ॥
अर्धरात्राद्धो रात्रौ संक्रमे पूर्वं मकरो मा
यात्रा शुभे रात्रानां दिवेषु पुण्यं ॥ ऊर्ध्वं रात्रे रु
ई संक्रमणे परदिने मध्याह्न्योः पुण्यं
नसारस्य तत्त्वसिंहः ॥ रात्रौ संक्रमणे पुण्यं
दिनार्धं स्नानदानयोः ॥ अर्धरात्रात्स्यपक्ष
स्मि मध्याह्ने स्याथापिति कायां ॥ ॐ धं संक्रमणे
वार्धे पुलायाश्च रमृद्यमिति ॥ नधाच ॥
ग्रामसंक्रमे पुण्यं दिनार्धं स्नानदानयो
रिति ॥ यदा समस्तोर्धरात्रे संक्रान्तिः स्यात्त ३२९
दादिनद्वयं पुण्यं ॥ नसारस्य तत्त्वसिंहः ॥ सं
क्रमस्तु निशीथे स्यात्तद्याममाः पूर्वपा
श्चिमाः ॥ संक्रान्तिकाले विज्ञेयाः स्नानः
स्नानादिके च वै दिनि ॥ ज्योतिर्निबन्धेऽपि
पूर्णे देवार्धरात्रे स्यादयदा संक्रमणं रवेः
तदादिनद्वयं पुण्यं मुक्त्वा मकरकर्कटौ
इति ॥ मकरकर्कटयोस्तु विशेषः ॥ न
सारस्यतत्त्वगार्ग्यः ॥ यद्यस्तमयवेलायां

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कर्कटं यानि भास्करः ॥ प्रदोषे चार्धरात्रे वा
स्नानं दानं परेऽहनि ॥ अर्धरात्रे तदूर्ध्वं वा सं-
क्रान्तौ दक्षिणायने ॥ पूर्वमेव दिने ग्राह्यं
यावन्नोदयते रविरिति ॥ भविष्योत्तरे ॥ मि-
थुनात्कर्कटसंक्रान्तिर्यदि स्यादंशुमालि-
नः ॥ प्रभाते वा निशीथे वा कुर्यादहनि पू-
र्वतः ॥ कार्मुकं तु परित्यज्य मकरं याति
भास्करः ॥ प्रदोषे चार्धरात्रे वा स्नानं दानं
परेऽहनि ॥ यत्तु वचनं ॥ प्रदोषे पुण्यं विज्ञा-
नीयाद्यदि भिन्ना तिथिर्भवेत् ॥ अर्धरात्रे
त्वतीते न विज्ञेयं परेऽहनि ॥ प्र[illegible]ः ॥
यदर्धरात्रे पूर्वेऽहनि निष्यमिर्भवति ॥ न
त पूर्वे दिने पुण्यं ॥ भिन्नायां निशायामर्धरा-
त्रेऽतीते च परेऽहनि पुण्यं ॥ नरसिंहः ।
क्रमेण पुण्यमित्यादिवाक्यानि मकरक-
र्कटव्यतिरिक्तसंक्रान्तिविषये सावका-
शानि ॥ मिथुनात्कर्कटसंक्रान्तिः ॥ कार्मु-
कं तु परित्यज्येत्यादिवाक्यानि च मकर-
कर्कटमात्रविषयत्वान्निरवकाशानि
अतस्सावकाशानिरवकाशयोर्निरव-
काशो विधिर्बलवानिति न्यायात् मकरे
परदिने पुण्यं कर्कटे पूर्वदिने पु-
ण्यं तु मतं ॥ यत्तु ॥ अयने संक्रमं मित्या-
दि यत् ॥ सामान्यवचनं तन्मिथुनात्कर्क-
टसंक्रान्तिरित्यादिना विशेषविधिना
बाध्यते इत्यपि मकरकर्कटयोः पूर्वप-
रदिवसयोरेव पुण्यत्वं ज्ञेयं ॥ यत्तु केचि-
दुक्तं ॥ अयनसंक्रमे मित्यायोनिष्टो ॥
वीधितयोः कार्मुकं तु इत्यादिवाक्यानि मिथु

नान्यकर्म संक्रांतिर्नित्याहिश्राद्धवानिन
शत्रुकृतानाह मलान्निरुध्य निकानीति
नात्रकिंचिद्विगुणमके॥ सूलवाक्येन ह
रिमार्गंधौ श्रीयोन्न देवाकार्न इति पाद
कावश्यानित्यधारावश्रमाणं॥ यच्च मे
खलोक॥ श्रक्षिचेतुलोविघुम्मस्यादात्रौ वे
दामरहस्य॥ संक्रांतिपीतिलीत्रैयाथा।
नाध्ययनकर्म सु॥ रन्यत्रवाकोमकव
कर्कटयोर्दिनद्वय स्यधुक्ति नवंत्वको॥ न।
स्यान्यान्नाध्ययनकर्मिविधेयमुदृष्टा॥।
अत्रकान्नोवेदस्याध्ययनकर्माणिचा।
ध्ययनानामन्यैवल्लिनदपिनयुक्तिमद
ध्ययनदयस्यानध्यायत्वेननत्राध्ययने
समवान्॥ नदारदपान्डवल्लाः॥ अध्ययने
विधवेचेवत्यायनेवोधिनेतथा॥ चान्द्र
मासोकिनीयसमुद्रेदाध्यायविवर्जयेत्
इति॥ अध्यायप्रकानामध्येत्ववृणं च सदा ग्र
हः॥ नैहिका त्रौ मकर कर्कटयोर्दिनद्वये
नाध्यायनयनि॥ नाधीयते वेनुतल्पेन।
स्वत्वनानेवविप्रोयः स्यात्॥ न च्याध्य 331
नेवदयोदोषः समानइति चेन्न॥ अत्रध्या
यनग्रहेनेस्वाध्ययनाचेयेहमौनितिपल्य
दिनविहितननायनत्रस्य च स्वाध्या।
यस्य विविहितन्वात्॥ न स्यानध्यायेष
पिननिषेधः॥ नचक्रियामतिसत्रुरे॥ न
विरोधोस्वनध्यायेहमसमेषु चैव हि
वेदोयवानलिवेवस्वाध्यायेचवनैत्यके
श्वनस्तुमकरकर्कटयोरूक्तप्रवीनले
यः स्वाध्यायाय॥ अपिविदात्रिभागासम
ज्ञितिरंनचान्तुपणवे॥ नत्रागत्रौ स्नानेन।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दीनां तत्रैव विशेषतः इति ॥ सत्यो ।
स्नानदानं निषेधयेत्सतिकथ्याद्भिभवा ।
स्यात्पुण्यकालमिति चेन्मैवं ॥ संक्रान्त्यादि ।
पुण्यकालेषु स्नानदानादिविधानात् ॥
नक्तस्नानं यात्तत्र कल्पं ॥ नक्ते यदि न संक्रा ।
न्तिर्विधिवत्स्नानं च वदेत्तु ॥ स्नानदान
हि के कुर्यान्नित्यमाद्यकाम्ये प्रयत्नेषु चेति ॥ नि
त्ययाशुते संक्रान्तिनिर्णयः ॥ अथ मकरसं
ग्रहीनां रात्रौ सौ निर्णीयते ॥ तत्रास ।
यात्रयाते ॥ मिथुनकर्कयोर्मध्ये नद्यः ।
सर्वा रजस्वलाः ॥ तासु स्नानं न कुर्वीत व
र्जयित्वा समुद्रगा इति ॥ मकरे नदीषु वि
क्रोधो मविष्यंति ॥ आषाढे कर्कटे केचिद्वि
मस्नान्नै योरजस्वला ॥ त्रिदिनं च चतुर्थे
दिन शुद्धास्तु नदीवद्धनंति ॥ गंगा हि विष
ये स्नाति विधेयो विशेषः ॥ कः ॥ नयन स
ला नैगंगा गोमती च सरस्वती ॥ रजस्स ।
नाभिभूयते वैणाचनद्यस्तु कर्मा इति ॥ व
जोमनाभिभूयते उषप्र अपि जलं गंगादि
जलसंपूर्कमस्ति भवति ॥ तेउक्तं मस्ता ।
मारवे ॥ प्रवहितमपि प्राप्यगंगा या ति
पवित्रतामिति ॥ मत्स्यपुराणोक्ति ॥ एवं
भस्मा समायो गाडूम पावनमि ।
ति ॥ नदीरजोदोषनिर्णयः ॥ अथ मल ।
मासनिर्णयः ॥ मलमासो नाम संक्रान्तिर
हितो मासः संक्रान्तिद्वयसंयुक्तो वा ॥ त
दुक्तं काठकगृह्ये ॥ यस्मिन्मासे न संक्रा ।
न्तिः संक्रान्तिद्वयमेव वा ॥ मलमासः स वि
ज्ञेयो मासः स्यात्त्रयोदशः ॥ अथ मास
स्वरूपं ॥ तत्र चान्द्रमाः अमावास्यान्तः यस्य मध्ये

332

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संक्रांतिर्नैस्यात् ॥ संक्रांतिद्वयं वा भवेत्
स मलमासस्तथोक्तः ॥ अमावस्याद्वयं य
त्र रविसंक्रांतिवर्जितं ॥ मलमासः स वि
ज्ञेयो मासः शुद्धोऽन्यस्ततः ॥ अस्यैव मलि
म्लुच इत्यपि संज्ञा ॥ तदाह वसिष्ठः ॥ मासे
संवत्सरे चैव तिथिद्वयं यथा भवेत् ॥ त
त्रान्त्योत्तमो ज्ञेयः पूर्वस्स्याडलिम्लुच
श्चेति ॥ अथ मधिमासोपि असंक्रांतिमा
समलिम्लुचउतरःसंसर्पः ॥ द्विसंक्रांति
मासस्तु मलमासः पदव्नाधिमासः ॥ तद
र्शनस्य बलेन ॥ नापि द्वयोरुमासे संक्रमे
नीहीनाकुरः ॥ नाधिमासो भवेद्देव मल ।
मासस्तत्कवलम्मिति ॥ अथ द्विसंक्रांति ।
मासः क्षयमासः सकदाचिद्भवति ॥ त
दुक्तं ॥ असंक्रांतिमासोऽधिमासः कदा ।
चित्स्यात् ॥ द्विसंक्रांतिमासः क्षया ।
ख्यः कदाचित् ॥ क्षयः कार्तिकादित्र
ये नान्यतः स्यात् तदा वर्षमध्येऽधिमासद्व
यं स्यात् ॥ द्विसंक्रांतिमासोयत्र भवति त
त्र वर्षमध्येऽधिमासद्वयं भवति ॥ तत्र पूर्वो
ऽशुद्धः ॥ ग्राह्यः शुद्धः ॥ तत्र केन तत्रैव ॥ एकत्र
मासद्वितयं यदि स्याद्वर्षेऽधिके तत्र पूर्वो
ऽधिमासः ॥ अस्योत्तरशोनस्मृति गार्ग्यवचेव
नरेश्वरः कार्त्तिके चाधिके दहतीति ॥ अथैत
योरंशो मासस्तु उपवनसौरः ॥ नतुके ।
वलि त्रयोदशो मासः सचक्रत्यानिरा ।
पते ॥ असौ चांद्रो नसौरः स्यान्नक्लिसो
रभयोरंशादिति ॥ अथ च त्रयोदशो मास
त्रिंशन्मासात्मासौ संवत्सरस्तत्रिंशत्तमा
रूपं भवतीति नियमः ॥ न त्रयोदशात्मतिः सा

नरं॥ त्रिंशत्कांक्षितमासस्यवास्याभ्यंतर
योर्द्वयोः॥ अधिमासोविकल्प्येत द्वादशा
यनकीर्तितः इति॥ अनयोरेवासंक्रांत।
मासमध्ये:॥ इहसंक्रान्तस्याप्तस्यादिति
संज्ञानेतरं च॥ नतुकं॥ दृष्टोदयं ये दे भ।
मिन्मौरेसंयोगाद्वे भवेत्॥ अरस्याति।
द्वैहकस्मिन्मासेह्योःक्रमोनरा॥ सेस।
पोहस्यातीचेनिर्हिविषयोधिमासको
समोपवोपोरहमोरवस्थयोअभावस्या
विति॥ अत्राधिमासशब्दोनोपचारेना
मलमासपवीच्यते॥ अन्यथानाधिमा।
सोभवेदिति इति स्मृत्यंतरवचनेन विरो
धः स्यात्॥ अत्राहविधिपिमलमासेना
न्यानित्यनैमित्तिककर्मकुर्यात्
तदुक्तंकठकेठगृह्यपरिशिष्टे॥ मलेनन्या
गांतिनित्यंकुर्याद्यैमित्तिकींक्रियामि
तिहरस्मृतिरपि॥ नित्यनैमित्तिकेकुर्या
त्प्रयतः सन्मलिम्लुचे॥ तीर्थस्नानंगजे।
च्छायांप्रेतश्राद्धंतथैवच॥ महालयाष्ट
कैःश्राद्धंश्राद्धान्यपिचषोडश॥ चंद्रसू
र्ययोःस्नानंश्राद्धदानजपादिकं॥ कार्या
णिमलमासेपिनित्यनैमित्तिकंतथेति
अत्रतीर्थस्नानमिति॥ अपूर्वेतीर्थस्नान
नभवति॥ तस्यमलमासेनिषेधात्॥ त
दुक्तं॥ मलमासेपिनाहत्वेतीर्थस्नान
विवर्जयेदिति॥ नैमित्तिकंतथाहिपूर्वे।
मासिनिमित्तमुन्यचेत॥ तदापूर्वमासे
षष्ठीतन्मासेतदाउभयत्रचेत्तदामा।
सद्वयेपिकुर्यात्॥ तदाहरामभक्तिः॥ जा
तकर्मणियश्राद्धेनवश्राद्धेनवश्राद्धे।

334

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नषेवच॥ अत्र केचित्सर्वारौ च तन्न व उ॥
त्तरैव ति निमित्तवशादिति योक्त प्राव:
सन्नमपुराणोक्तं॥ सूर्यचन्द्रग्रहे चैव
मरणे पुत्रजन्मनि॥ मलमासेऽपि देयं।
स्यादृत्तमसत्यकारकमिति॥ मरीचि
रपि॥ यो गेवाल म्य गेवा स्रीमंते षुस
वेन च॥ यद्दानादिकमुद्दिष्टमपवत्रापि
न दूषयेदिति॥ नित्यान्यपि सर्वाणि यामः।
नादीनि मासमध्येऽपि कार्याणि॥ न दुर्लं
मेऽपि यस्यैव॥ मासमध्येऽपि यद्येकमासस
क्रमणाद्युमनः॥ न कार्यो मलिम्लुचः॥ श्र
द्धान्यं॥ पार्वणेऽपि श्राद्धे त्रैस्य मातात्राय
णमसंयोगप्रसन्नपार्वणस्यालोपकास्त
घात्वान्न्यानि नैमित्तिकानि॥ श्रद्धायै नैव
स्यायातदृतिविज्ञायत इति॥ यत्तु व्यास
वचनं॥ श्रौतस्मार्त्तक्रियायाश्च द्वादशे
मासि कीर्तितः॥ त्रयोदशेऽपि ताः सर्वाः स
हस्या यदि कीर्तिता इति॥ तत्तु काम्या
दिविषयं॥ नरसंरूपस्य पवित्रितिष्ठे॥ स्थवा
रइकारस्तोमसञ्चपर्वे चाग्रायणं तथा॥ म
लमासेऽपि कर्तव्याः काम्या इष्टीर्विवर्जये
देहिति॥ अत्र अष्टकार सोमाग्निहोत्रा
पामनैवेश्वदेवायाः॥ पर्वेदार्शपौर्ण
मासेष्टिः॥ पार्वणं स्थालीपाकश्चाग्रय
णं नवान्नेन क्रियमाणेष्टिः॥ सा चापि
पुराणान्नाभावे न कृतमानमात्यकलेय
नवन। धीरन स्यानिषेधोऽत्रवद्भाति॥ मा
सपुराणे॥ दर्शश्चाद्धः स्नाद्दनं च कम
तिवासरे॥ गोष्ठांतिलशिवरापानो मासेऽपि
स्यान्मलिम्लुचेत इति॥ नन्न मलमासे दश।

श्राद्धकर्त्तव्यमित्युक्तं ॥ क्षयश्चगताश्चके
नतत्रविशेषं यथा ॥ संवत्सरात्निरेकेण
मासोयः स्यान्मलिम्लुचः ॥ तस्मिंश्चयोद
शश्राद्धंनकुर्यादिति संसर्पेपिविशेष
न ॥ निषेधसंदर्शं विहितकाम्यश्राद्ध ।
विषयत्वात् ॥ नन्दाहेमाद्रिः ॥ नित्यनै
मित्तिके देवश्राद्धे कुर्यान्मलिम्लुचे ॥ नि
त्यमन्दत्रयावायकं कामंनैवकदाचने ।
ति ॥ मलमासमृतानान्तु नः प्रत्याब्दि
कंमलमासएवतत्कार्यं ॥ तत्रहे ॥ त
दाह पृथ्वी ॥ मलमासमृतानां च यत्काद्यश्रा
निवत्सरं ॥ मलमासेतत्कार्यं नान्येषा
नुकदाचनेति तत्राहपृथ्वीः ॥ अन्यत्पा
श्रपि ॥ वर्षेवर्षेतुयच्छ्राद्धं मृतानां तु मलि
म्लुचे ॥ कुर्यात्तत्रसमीतानामन्येषांतु त
दुत्तरेइति ॥ अन्येषामिति मलमासादन्य
त्रमृतानां शुद्धमासएवकार्यमित्यर्थः
तदुक्तं सत्यव्रतेन ॥ वर्षेवर्षेतुयच्छ्राद्ध
मातापित्रोर्मृतेहनि ॥ मलमासेनतत् ।
कार्यं व्याघ्रस्य वचनं यथेति ॥ यत्तुवच
नं ॥ स्नानकर्मणि यच्छ्राद्धं नवश्राद्धेन ।
चैवच ॥ प्रतिसंवत्सरश्राद्धं मलमासेपि
तत्स्मृतमिति ॥ इदमपि मलमासमृता
विषयं ॥ एवमन्यत्रापि मलमासप्र
न्नाहिकविषयवाक्यानि मलमासमृ ।
तविषयाणिज्ञेयानि ॥ यत्तुहेमाद्रिण
चनं ॥ आद्योऽयेहनिसंस्थे मेषुयदिमासो
सौभवेद्यदि ॥ मासद्वयेपिकुर्वीत श्राद्ध
मेवंनदुष्यतीति ॥ तत्पाद्यमात्रवचनं ॥ ए
हिमिदंवसंस्मासः कथितोवादरायणे

ऽमे देवकार्येपि पित्र्यकार्येपि चा मल
योगिति ॥ इदं वचनद्वयं सांवत्सरिकश्रा
निखिलमासिकश्राद्धविषयं ॥ नत्वन्यः
क्रमिचेत्रिकं या ॥ योगादिकं मासिकं च
श्राद्धं चापरपाक्षिकं ॥ मन्वादिकं तैर्थि
कं च कुर्यान्मासद्वयेपि चेति ॥ अत्र पादि
कमिति ॥ प्रतिमासं कल्पहेतु विधेय
मानं श्राद्धमुच्यते ॥ नत्वाश्विनसर्वपितृम
हालयश्राद्धं ॥ तस्मान्मलकृष्णेन्मात्तल
मिनेद्विति ॥ मलमासयाष्टके श्निचप्रत्युप
स्थिते द्वयोर्श्याम्मलमासे निषेधान्न म
वे मासकल्पत्वे श्राद्धमापन्नवेनवि
हितत्वात् ॥ मासिकानि पद्यपदस्यापम
हुतामा: श्रेयान् ॥ नसापरपदस्यजन्या
न्यानसानि स्वैघ्राच्य पद्यस्यामारः स
हीनेपि न स्थौरणीति ॥ मलमासादन्या
श्रुतानामपि देवानृयोदशीयमासस
निश्चयमाह्निकं मलमासपत्वकार्यं ॥ सव
त्सरे च सपिण्डीकरणं च नात्रुद्ध्यपि तद्वैव
सपिण्डीकरणं कुर्यान ॥ तद्राद्दहविसु: अ
मध्तानेपिकृतेच्यमाहिकं प्रथमं द्विसः
तद्वैव मासिकं श्राद्धं सपिण्डीकरणं तथा
ति ॥ तदयमाद्धितनेषेवयत्नाहिकमपिक
र्यं ॥ तद्राद्दमत्स्य मनः ॥ एकपव यदा मासः
संक्रान्तिद्वयसंयुतः ॥ मासद्वयगतं श्राद्धं
मलमासेपि शस्यते ॥ इति कालपोलिः व
र्षं वर्षं तत्यथद्धाद्दमा नापि वो इतानि ॥ ।
मासद्वयेपि तत्कार्यं आद्य स्मवचने पये
ति ॥ अत्र मासद्वयपीतिसंक्रान्तिद्वययुग ।
क्षवान्मासद्वयात्मकत्वमासे इत्यर्थः

क... श्रेपिण्डप्रदकारार्थे ॥ एवंविधान्नत्रान्न
पिवाकान्धर्मिन्नेनविषयेयोस्यनि ॥ का
लास्पर्शोकारेत्वत्रत्याहिकमपिमान्नहर्ये।
कर्तव्यमित्यर्कः ॥ नतुब्रह्मचारिणोमन्त्रा
मलमासेपितत्वर्हिनत्यवंस्यतविनास
र्थेपितृहेतोनत्राललभोजनियित्यस्युत्तमा
मेश्राद्धेक्रमेहिल्यनवद्ये ॥ नित्यान्यपिसो
मयागादिकर्मणिमलिम्लुचेनकार्याणि
मलिम्लुचेनित्यान्यपि ॥ तयोर्वाग्रयणा
धानवान्हमीमन्त्रादिकानिच ॥ मकुलेया
दूकाश्राद्दोयाकमीद्यपिक्रमेयन ॥ व्यह
मासविशेषाण्याद्विहितनवमेयन्त्रले ॥ स्व
हमासेति ॥ मासंविशुद्धनामत्रश्लोकंयेषा
विकर्तव्यो ॥ माहेकनव्योमित्याहिकेमलि
म्लुचेवर्जयेदित्यर्थः ॥ शूद्राधानचूडाकर
णमेखलादिकेचवर्जयेदित्यर्थः ॥ नेदा।
स्त्रहरस्पति ॥ अग्न्याधानप्रतिष्ठाचयज्ञ
दानव्रतानिच ॥ देवव्रतनहधेनुस्यायोषु।
डाकरणमेखलाः ॥ मंगलमाभिषेकंच
मलमासेविवर्जयेदित्यर्थः ॥ हृषेन्मार्गः
काम्यपव ॥ नेवकारदुग्राहेकिययमाणः
नथा ॥ वालेवायदिवाहद्वेशुक्रेवास्त
गतेगुरौ ॥ मलमासेतथापानिवर्जयेदे
वदर्शनं ॥ देवदर्शननमस्कृत्वं ॥ नराहूता।
र्यः ॥ अयमर्थोदेवतानांदर्शनापूर्वचोःस्युतेषु।
भागेवे ॥ मलमासेमृत्यनाहतनोधयात्र
विवर्जयेदिति ॥ शातातपोपि ॥ श्रयालंप
वत्रौभ्रुकेस्वेदवालेमलिम्लुचे ॥ वेनार
भ्रापवेगोचनजायान्नाजिवयनं ॥ निष्क्र
मनान्नकर्मादिकाम्यष्ट्रवोवमजेर्नं ॥ ।

338

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गायो वि॥ नामानप्रापाने चौलीवि
मौक्तिकं यन॥ उद्यापनप्रपाकं मनक्षमा
नोतकारयेदिति॥ नाभौतिस्वकालेक
नमेव॥ नदाहृणार्थः॥ नामकमेवज्ञा
नोहिय यथा कालेषु मा चरे॥ इति पाते॥
नकवीन प्रमालेमा सिद्धापदेरुति॥ व
सिद्धोपि॥ वापीझ पतरुकादिप्रतिष्ठ
ग्रहकमेव॥ नकर्यान्मलमासे म्लेच्छ
नानस्रनालिच॥ मर्णेनरपि॥ यस्मथ्र्वे।
गृगौदान स्यानाश्रमस्तांसंव॥ नकर्या
न्मलमासेपि गुरोश्चकैतत्यानलेगौ॥ म
न्यपुराणेपि॥ आदाने यत्रकमोतिश्चा
याश्चिनेत्रताणिच॥ नकुर्यान्मलमासेत
च्छक्रयत्पाद्यपदेव॥ स्मृतिसंग्रहेपि॥ शु
क्रप्रास्तेपि केतुर प्रष्टक्रयोमौढ्य पुत्र्याने
मौढ्ये नामालमयो यक्ताणि॥ नत्राप्यपिवृह
शुक्रयोमौढ्य शुभकर्म मेव परिहरेणी
यनाम्नालिठेः॥ मौढ्य म्या गर्ह इल्पस्य
हल्यचमौढ्य वर्द्धपरि हरणीय॥ नइ
केशवत्मिसङ्गते॥ रविनाम लिते घांपञ्चा
नामसस्वत्वेने॥ नतीवा गुरौ कंचाल्ला
हृधं वालत्पप्रकीतितं सिन्धयालाद्वौरा
वस्त्याहृतद्धदश भवस्या वालयमिति॥ न
वहृइवालयोः कियमासो मिलुच्यते॥ न
द्रुकैशवत्तौ सिद्धांतो॥ यदि शक्तिरि शरह्रदं।
विदुषान्यं वदिनेकावेः॥ शौस्त्रा कृत्वाप्राक्सप
दोरस्य खान्यं चद्दिनस्य तमिति॥ शौध्रा
वेवाथ कृपादाप्रामा स्वाद्वृत्ररम्यतेरि।
ति॥ प्रचारविप्रश्चनेश्वनाधिकं भावः
प्रतिपादितः॥ यथा रत्नमालायां॥ प्राग

339

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कूर्रगुरुस्थितयेसितःस्यात्पत्स्यह
शाहमपिप्रचलितानिहंतः ॥ अस्तंगतेच
पतिममरेज्यकुकल्पपलप्रागापिवागावि
वर्तितवसिद्धगुणकारइति ॥ वार्हस्पत्येपि
प्रकाश्यानुदिनःशुक्रःपंचसप्तदिनं ।
शिशुः ॥ विपरीतेतत्वेनेनहदेवगुरोव
पौत्यादिवाकेषुस्वल्पकालादेषुमे ।
दीक्षोदिवाग्रारा ॥ नदास्मिरवः ॥ वर
वोटदिशिताःकार्यस्येवास्यैवार्यवेपिव
ग्राह्यालस्याचपिकाःशोणादेशमेतान्या
पदि ॥ देशभेदेनभेदस्ययोगवेधानां ॥ स्व
कीत्तः स्पाक्रूपराक्ववालौविथेदशा
वंतिशुसमाप्ताये ॥ देनेशुद्वेगेशुपचदूच
श्रेष्ठवदेशोत्रिदिनवदेति ॥ अत्रवर्ज्यमा
ह ॥ अवस्थायानप्रतिष्ठोचेत्यादि ॥ मल
मासनिष्फलबोलकप्रास्य ॥ दामोदरीय
यत्रारवेर्मडलमेतिकाबौलिनष्ठेस्या
स्वत्रैषेव ॥ कालःसदोषात्रतनीय ।
यात्राविवाहयज्ञोत्सवनाशहेतुरिति ।
अत्रापितीर्थयात्रापूर्ववत् ॥ सह्यकालका
र्यव ॥ गुरुरस्तंगतेदेवकृतिवारगतः
सिंहरणापगतोपिश्रवणकर्मस्त्याज्यः त
उक्तं ॥ नीचस्थेवक्रसंस्थेप्यतिचरणगते
बालहदास्तगेवासंन्यासोयज्ञयात्राप्र
तिनियमविधिःकर्मवोधोपिदीक्षा ॥ मो
जीबंधोऽन्नदानाप्रतिनियतविधिर्देवता
देवप्रतिष्ठावर्ज्याःसद्भिःप्रयत्नाविदेशा
पतिगेसिंहराशिस्थितेनवा ॥ उद्यानकू
पव्रतदेवयदीक्षाविवाहयात्रादिवधूप्र
वेशः ॥ नदीकक्रूपविदप्रातप्रतिष्ठाः ह्रद

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]

स्पर्शो हि ऽगतेन कार्यः॥ यथाविधये
विधेयो वायुग्रहोपरुद्धः॥ यथा ग्रास
कालेषु दिनद्वयादि च कार्यः॥ ऋषिमा
ले जन्मदिने वा तेषु दुष्कर्मयोः॥ नन
फलं तथा चायं [illegible] द्रष्टव्यं [illegible]
यत्र ग्राह्य ग्राहकयोर्विरलं वा गतः॥ अथ
मलमासनिर्णयः॥ अथ ग्रहणानिमित्त
गृहणं नाम पर्वं प्रति मन्वादयो वा [illegible]
यो [illegible] संयोगे [illegible] ऽग्रे [illegible]
[illegible] प्रति पूर्ण योगे ऽस्य [illegible] मंडल॥
[illegible] सर्वं वा [illegible] प्रतिपदंते च॥ त
त्र [illegible] भागः स्पर्शकालः।
[illegible] मोक्षकालः॥ पंत
[illegible] कालो ग्रहणस्य मध्यमः।
[illegible] यावान्कालः पर्व
[illegible] परा हिमः॥ सर्वो ऽग्रह
[illegible] सर्वः पुण्यतमो भवेत्॥ अत्र ग्रह
[illegible] काले गंगादि महानदी स्ना
ने कुर्यात्॥ महानदीषु वान्यासु स्नाने कु
र्यात् [illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]
[illegible] वेद [illegible]॥ [illegible]।
[illegible] वेद [illegible]॥ [illegible] को।
[illegible] तत्फल॥ तत्फ।
[illegible]॥ दि
[illegible]॥ अ
[illegible] री।
[illegible]॥ ति
[illegible]
[illegible] इति।
ती॥ [illegible]॥ [illegible]
[illegible]॥ [illegible]

३५१

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

न्तुवा पीठ प्रसादानाहि तृपियथा सर्वलोकि
तेष्वस्नान कार्यं ॥ नराकेश खेदना ॥ वा पीठ
पतंगाके शुभे विप्रसर्वेण धुवा ॥ नद्यानेद
देवालाते सरसी शुष्कनानि ॥ ३ ग्रोह केकु
वस्त्रानाडु रणे चकुत्सेयो योः ॥ श्रूत्रो हो दर्भ
स्नानमातेर लिङ्गयो ॥ नदास्वात्रः ॥ आत्म
त्याकि रतेः स्तनशुनः प्रत्वेत्र विना ॥ अनो ।
वा स्नानवस्त्रा यान्द्रु रणे च हस्त्वयं योनि ।
ति ॥ अनस्पृशवालके लेव पूर्णके वस्त्रान्वका
र्यं ॥ शुक्ररोलिंगा शुशिपस्त्रवा वाचभक्ष्यः वे
दस्वयं योग्ये स्नाया न्वनने के मृ नने केपि वा
श्रस्ना पीठ स्वसामो निःस्ना पी शस्वनवि द
ति ॥ अरण्यकालस्पृशि यन स्नात्रा याद पव्वा
तेत्र आद्र मब पूर्णकार्यं ॥ नदकोलिगा शुवा ।
तो ॥ थती पानल्या तो या वा स्वदस्व ये श्रद ।
त्वाणः ॥ राजस्त्रा यान्त सा प्रोस्ना पिन् ग्रातदन
मस्वयं ॥ मस्ना भावे ने पि ॥ सर्वेस्वनापिक
नेवा श्राद्वैवा कृद श्रीने ॥ शुक्रवो ण स्वना ।
क्लिवतान्य केतो निवसो हेति ॥ अत्र श्राद्ध ।
मा मो न हस्त्रावा कार्यं ॥ नदास्वात्रः ॥
श्राद्धयन्त्रितो र्थ्ये च प्रस्ते च तस्वये योः ॥
शाम श्राद्ध हिनः कृयो स्वः कृयो न्स्वेद व
ति ॥ नव प्रस्त गात्रो स्प श्या या वा स्त्रो न सा ।
नि सव्या या सोः श्राद्ध तेन दीयान्व कयन वश्रा
द्धव स्नानं मिनि चेक्र सन्त्या ॥ वचन मा सर्वथा ।
न ॥ तथा च विक्षः ॥ सथा रात्रौ न कतेव्यो ।
श्राद्धं विलु विच लोः ॥ नयोरपि चकते
वायो हिंस्या श्रानु टश्रीन मिति ॥ अत्रला ने
स्वशुभ्र न्व सारेण कतेव्या ॥ नद कंमस्ना भा
वे ॥ भूमि गावः स्ववर्णं च धान्य वारा ।

त्तिरे ॥ नत्थेत्तेउवज्जोदेवेअणस्सनत्थअसमत्र
मिच्छत्ता ॥ अत्थोगाएं ॥ भोगिएंवावाल
याउ ॥ नवाइसोमाणएत्तः ॥ अत्थो त्तिएःभो
तिनेदामाइत्तुआमायेवत्ता ॥ विग्रहसो
गवाविग्गोउग्गहणाइएनएवाएति ॥ आसो
गि ॥ सवेदोवाणसेणेदुएवेविग्रहमा।
दिसाः ॥ सेचउमेसमएहोनग्गहदो दु उसह
इंसोः ॥ अत्थोवावाउतिहुछेणअद्गेकयी
न ॥ नहणाणिणः ॥ सवेंवेगाः इवलकेप
हनेकेनकहदवोन ॥ वावावाउअइपकुवीन
नरकेवचोवित्तेयेइहिन ॥ लिंगाउगागोपि
कलोवेउगलकेवेवनहोणमाइहगोने ॥ ता
वेहवभवेकुहिणीवकुहिनेहगुणे ॥ घा
ओपि ॥ समालकमेपरिणामोगाहोवन्ना।
उत्तलवो ॥ ओलेकमेणलकालहाणः
ओइमवामणात्तवति ॥ उहवोसत्ति ॥ उ
हणानिमिणाओचउसवेघाणाएले ॥ वा।
नाआवापिवाणीमवति ॥ नउकअणा
इपवाणो ॥ उणोवेनायनेकुणाउहणोव
इहवेयोः ॥ गाडमाणेलयोः वावावा।
नाहोकलपलेनवइतिउहणकालसमा।
वेसमाणिगुणलेनपुकालः ॥ वावाना
हिकसेसहसुः ॥ सयाकालसमयपसः
मोलकालसंयमः ॥ नसाइवासः ॥ ति
हयाः समंचुससेयसपातिविनासया
मगुणासयाकालेनमोलकालेनगा।
लेमाः ॥ अन: एतेउयः कालाः अइसमय
कमीयोसमइति ॥ णाउनोवगावेनेवअइ
गोमेवावाइनाहिनाइयोननावेसः।
ति वावानाहिवेनकायें ॥ नाउटयोनएव

343

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कृ[illegible]नादिकं विविनं विधानात् ॥ न ह्यन्न्या
कोदयः ॥ चैडवायदिना सूर्यदेवेन चौम
नत्रैः ॥ अन्नयंकथिने पुण्यनन्नाके च ।
विशेषन्तरंति ॥ रश्मीनं नवत्रायायामपद्वे ॥ न
ग्रहाच्छोतीवगतिः नयामति ॥ याओह
गुप्तुर्हतोहिनाच चद्रमसियुरनोसनिषा
नत्पुवगतेस्नानादिविधेयस्यात ॥ न च
निषेधं ॥ घटदिनान्तने ॥ सूर्यग्रहेयय स
नात्रोहिनाचैद्रग्रहेऽभवेत् ॥ नवश्राद्धेन ।
भुंजीत न ह्याद्दानं न च कुर्वित ॥ ग्रस्तमस्त
मर्कन्नशागोग्रहणमवनिसायोकाये
ग्रहणे हृह्णा सत्स्पयुत्सानिकं विधिनीस्ना
नादिकं कुर्यात ॥ पुनःपुनर्भेपयोपेत ॥ वि
धिज्ञ ॥ यस्यराशिसमारम्भ भवेद्ग्रहा
णसंभवः ॥ तस्य स्नानं प्रवक्ष्यामि मंत्रौ ।
षधिसमन्वितं ॥ चंद्रोपरागे सूर्यस्य च
नाग्रासनवचनं ॥ समुद्रयावनेदोविप्रा ।
शुक्लमाल्यानुलेपनैः ॥ पूर्वमेवोपरागा
त्ययसमानीयोषधिदिकं ॥ मेघ्याप्यवा ।
नरः कुंभान्मनः सागरानिव ॥ गजाश्व
रथ्यांवाल्मीकात्संगमाद्धदगोकुलात् ॥
राजद्वारप्रवेशाच्च मृदमानीयनिक्षिपे
त् ॥ पंचगव्यं पंचरत्नं पंचत्वकं चपल्लव
रोचकं पद्मकं योविडंगं कुंकुमं जलचंदनं ॥
शृंगिस्फटिकनीवारं सिनसर्षपत्
मेलं ॥ पंचवन्गिति ॥ श्रीगुजवद्वर्पित
लक्षत्वाणिपहवोलवजुः ॥ कनकं हीर
कंनीलंनीलपद्मरागं च मौक्तिकं ॥ पा
चरत्नमितिप्रोक्तं गुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः
मधुकं देवदारुं च विष्णुक्रांतां शतावरीं

344

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कण्ठं तु सरस्वती देवी नित्यं पातु हृदयमेव च मत्र
पत्न सर्वं गिनिविधि प्यकं मेधावीरयेत्म
मानं ॥ सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि ज
लदानलदाः ॥ आयान्तु यजमानस्य दुरि
तक्षयकारकाः ॥ सोमो वज्रधरो देव ॥
आदित्यानां प्रभुर्मतः ॥ हुताशनाय नः श्र
ओत्रस्पी ज्ञाप्यपोहन्तु ॥ सर्वेयुः सर्वदे
वानां समस्ताचिर्भेतध्वजैः ॥ चन्द्रोपद्य
गं धनामृषिः प्रोज्ञाप्यो पोहन्तु ॥ नागा
पाशधरो देवः सदा मकरवाहनः ॥ स
जलधिपतिः पाशो स्रर्गो ज्ञाप्यो पोह
न ॥ प्राणरूपो हि लोकानां सदा कृष्णमृ
गप्रियः ॥ वायुः सोपरागोपाग्यपुरस्थी
ज्ञाप्यो पोहन्तु ॥ यो सौ निधिपतिर्देवः ख
ड्गशूलधरो वरः ॥ चन्द्रोपरागकलुषं
धनदो मे व्यपोहन्तु ॥ यो सौ विधुयुगो दे
वः पिनाकी वृषवाहनः ॥ चन्द्रोपरागजां पीडां
ज्ञानाशयितं शंकरः ॥ त्रैलोक्ये यानि भू
तानि स्थावराणि चराणि च ॥ ब्रह्मविष्णु
केशहरूप सहितं मम पातकं ॥ पद्ममाला
हयेतु भानवेत्रिभिप्रवाहेण ॥ पतान
कनस्यान्मे चोरुस्थाणोपहे हि विलोवयेत् ॥ ता
ग्रपत्रेण वा लेख्यं नववर्णेन वा लिखे
त् ॥ मन्त्रके यजमानस्य नित्यं सुस्त्रेहि
जोतमाः कलशात्रेरूपस्त्रक्ता ज्ञाना
रूपसमन्वितान ॥ मुहूर्तानामपथ्यं कृ
त्व भद्रपीठोपरिस्थिने ॥ पूर्वोक्तैवेम
न्त्रैश्च यजमानं हि जोतमः ॥ अभिषेकं
ततः कुर्यान्नात्रेवाकरणचलकैः ॥ त
नः शुक्लाम्बरधरः शुक्लमाल्यानुलेप।

345

346

...नं:॥ आचार्येणवयेनस्नातस्यगणंहृद्वे
ह्रयेत॥ आचार्येणस्निणदेवागोस्वस्ना।
वस्पृक्तितः॥ अतःइर्थअलस्पृज्ञान
दर्थेनविशेषणः॥ यजयेहस्तागोऽस्तैन
ब्राह्मणानुपिस्पृक्तिनः॥ गेहमात्यैपुष
दीपेःमन्त्रयदिष्टैदेवतानां॥ शेषमेवैवदा।
उत्तीलतिलैर्वाहोतिमिन्त्रया॥ विद्या।
नेपूर्णसर्वेञ्जालनोभ्यौविशेषणः सा
नेवस्पृक्तितोदह्यांयीदिकेदा।त्मनोवि
ते॥ सूर्यग्रहेसूर्येनामसहस्त्रमेवमुक्ती।
नेयत॥ अनेनविधिनायस्यपुरोक्ता।
नमाचरेत॥ ननसमपरदारोपीडाकदा।
विहंसिनायतेइति॥ अत्रापिप्रकृतमन्त्र।
पीडोपरिस्थितमित्युक्ता।सहकुदृष्टोऽपि
ह्रपस्त्रीयेयात्रहणेनसमर्थलितया
स्यातव्यमित्यर्थः॥ चन्द्रग्रहणात्सर्वेया
मत्रयेनभुञ्जीत॥ नउक्तमहाभारते॥
अर्वागयामत्रयाहितोग्रहस्त्योऽभुजिमाव
चेत॥ स्वयग्रहणात्सर्वेयामवयेनहयेद
नभुञ्जीत॥ नउक्तंतत्रैव॥ चन्द्रयामाह।
यस्पृहवादुग्रहेतिदिवाकरेशति॥ इह
वसिष्ठोपि॥ सूर्यग्रहेननाश्नीयात्प्रा।
वेयामचतुष्टयं॥ चन्द्रग्रहेनयामांस्त्री
न्बालवृद्धातुरैर्विनेति॥ बालवृद्धातुर
विषयेनमत्स्यपुराणेविशेषोभिहि
तः॥ कुंयदाहारीनमस्याद्रेमयाकेतु।
तमेगोव॥ भुञ्जीतचेत्संगोवस्याकृपदे
भुञ्जिमाचरेदिति॥ वसिष्ठोपि॥ ग्रहणं
चेत्भवेद्दिदेः अथमाहाधियामनः॥ भु
ञ्जीनावतेनात्सर्वेपाश्निमेअथमाहंय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इति ॥ अस्यार्थः ॥ रात्रौ प्रथमयामे ग्रहणं चे
दिवैव ग्रहणं चेत्तदा पूर्वमेव नान्नं ध्यात्
स्यैव भुंजीत ॥ रात्रि पश्चिमयामे चेद्ग्र
हणं प्रथमयामादर्वाग्भुंजीतेति ॥ चेद्ग्र
स्तास्तमये पूर्वे दिवा न भुंजीत दिवै
व ग्रासस्य संभावितत्वात् ॥ सूर्यस्य ग्र
हे च पूर्वे दिवा न भुंजीत ॥ नवोऽस्ता
मये तु परे दिने उदिते यो विमुक्तिं स्ना
त्वा भुंजीत ॥ तदाह मार्कण्डेयः ॥ व
र्जयेत्किल भानोर्यस्मिन्नहनि भार्गव ।
ग्रहणं भवेत्तस्मिन्पूर्वं भोजयेन्नरः ॥
नाचरेत्स्नानं ग्रहे चैव तत्रैव स्नानमागते ॥
यावत्स्यान्नरेन्दस्य नाश्नीयात्तावदेव
तत् ॥ मुक्तिं दृष्ट्वा तु भुंजीत स्नात्वा न कृत्वा
ततः परमिति ॥ देवे सूर्ये चंद्रे तथैव ग्रस्ते
पर्वकाले तु आगते सत्यं नास्मिन्दिने याव
न्मोक्षः स्यात् न स्नात्वा तावन्न भुंजीत मुक्तिं
दृष्ट्वा स्नात्वा कृत्वा भुंजीतेत्यर्थः ॥ दृष्टेति
मोक्षलक्षणं ॥ मत्स्यपुराणे ॥ अस्तमये यो ग्रस्तो
गतोऽस्तं न दृष्टो पुनर्दृष्टेति ॥ भुंजीत
दिवा कालवशः ॥ विष्णुधर्मोत्तरेऽपि ॥ ग्र
हणे न भोक्तव्यं दृष्टेऽत्र शोधयेत् ॥
मुक्तिं दृष्ट्वा तु भोक्तव्यं स्नानं कृत्वा ततः
परमिति ॥ हस्मापि ग्रस्ताऽस्तमये यदि च
दं ॥ सूर्ये ग्रस्ताऽस्तमये ग्रहणाद्यवै
स्मिन्नहनि ग्रहणोत्तरं भाविनीं रात्रौ
वैकल्पिकं भोजनं निषेधः ॥ चंद्रस्य
ग्रस्तास्तमये ग्रहणात्परस्मिन्नहनि चेत्
शोभने ॥ पर्वसु सर्वेषु पिबेच्च नैवं विशोक
इत्युक्तेनिरवान्यार्थः ॥ ननु ग्रहणे च वदा

ओपारणं षष्ठकस्ताचिन्मेधाहल्लयान्नं सं।
भवति॥ नरस्कहृद्रोगीनमः॥ चेदस्य र्थे।
ग्रहेनाद्यान्नस्मिन्नहनि मुक्तेनः॥ मासो
बिसुरूङ्गिं वितायकामावाकं वीनभोजन।
मिति॥ अनन्तमेवाघ्राटनेनसूक्तिं दृषो
नसुदयं कानावानाद्भुंजीतेनाथोः॥ म
र्गशीर्षमितिपिडकालभोजनेन प्रायश्चित्त
माहृक्कात्यायनः॥ वेदस्यर्थे ग्रहे भुक्ताः
प्राजापत्येन भुञ्जन्यन्नीलि॥ रविविगुदस्यत्र
मैकस्यवाहे चडामनिमेक्लियेअनंनंफ
लेहृभवतः॥ नरस्कक्यायासः॥ स्त्रवर्ष्णगार्दर
वैग्रीमः वेदकारोग्निमोषस्कः॥ नंडमोक्ष
स्निग्धाननलुत्राननफलं भवतु॥ कोषेद्धा।
नेमुधंसुणपश्चहमे चेदस्यथैयोः॥ नमस्
एकोदिष्टमितिनग्रामे चन्द्रामसेनानक्षत्र
मिति अग्रहणमस्यवैत्तिरात्रमेकरात्रंवो
पोषयन्नानंसोर्हकेकाले मरोफलंभव
ति नदस्ककालेषवा॥ यस्मिन्नाथभयो।
भवत्रग्रहणंचेदस्यथैयोः॥ स्नानादन्नाच
विधिवर्त्मोंदनेनाक्रमसणामस्तुति॥ एका
गात्रसुपोष्यवस्त्रानादान्नाच शक्तितः
कश्चुकादिकंसपेस्यानिहृतिः पापके
पातः॥ आसानानीयाद्रूसमामवत्वथैन
घायससस्यः शुभदक्लकारंः॥ नयःस्मा
षोडशामस्तुमपक्षत्रथायमस्नादिव
संहिसुममः॥॥ तिनिनोगणुनेत्राह
एकस्यां॥ प्रथमसुद्गाहेत्रायमेतिषिडडेवा
लश्चान॥॥ नविशिमः॥ प्रणामः पुण्यमा।
केः नैवस्थिहिविनि॥ प्रस्थैवपविन्याग
पव॥ नत्रापिदष्टाकालादेपदनापरि

स्यापवकार्यः ॥ शून्यासीहिशुविशरमत्र
विश्रुन्नामिहितः ॥ शून्यामीलगा कांपानेनो
ग्राग्निचंडालवायसः ॥ स्यामीनेविहिते ।
षियशुनीवांशेहेलोप्रमेश्रमासप्रीय
ते ॥ नवश्रज्ञांहितः ॥ नरमेवापुष्पा ।
णे ॥ यपामाकारोहलना मूनेविहिन्या ।
न्नेनिस्तनान् ॥ प्रसातिकप्रियगुन्नमक्का
नहरितनालयति ॥ प्रसारिकाय[illegible]म
ः ॥ तथा ॥ पन्नापिसमानस्तुः ॥ स्याम
कानाहितागृहेः ॥ कलम्बाकिला ।
[illegible]वेश्याः स्पृर्येवशालयः ॥ महायवा
श्रीहिपवास्तथेवचमधूलिकाः ॥ कल
मेन लोहिताश्चपाश्याः स्मृताश्वकर्मणि
यवशालयोयवभेदाः शालिभेदावा ।
महायवेवणेयवा ॥ मधूलिकायायेन
लवियेवा ॥ कलमाः श्वेतालोहितास्तृवि
मधूलिका विप्राणामिनिकल्पलवो ॥ ।
स्मृतिमजर्यान् ॥ वर्षिकाः शालिभेदाः
स्तुके ॥ तथा च ॥ विल्वामलकश्रृंहीके
पनसाम्राणिदाडिमे ॥ कांचपालीवना
[illegible]चरैरुज्ञणफलानि चेति ॥ मंचपा
लीवतेकनमास्त्रभेदः ॥ तथा च ॥ कश्री
रूकोविरागेश्वनालकंदस्तथाबिल ॥
नमालश्वानकंदश्चतथोवशालकंदरे ॥ को
विदारश्चितिकाचनवसहश्राः ॥ कंदवि
शेषः ॥ नालकंदोवालकलीप्रोनकंदः
शांतावरी ॥ प्रोनकंदः शालकं ॥ तथा ।
च ॥ कालेयंकालशाकंतुप्रनिषस्तस ।
वर्धला ॥ मांसशाकंसंधलीशल्लवे ।
ओक्तं ॥ तथा ॥ कालेयादिकंशाकभेदः

349

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

याव॥ कटुफलेकोकणोत्रावालक
श्चिमोचमेवंच॥ अलाबुश्रीवकेचाहक
दुकमधुसाद्वयमिति॥ मोचकाद्दलोफ
लं॥ अलाबुश्रीवर्कचाविनिकवेदविषे
घ्नं॥ तथाच॥ देकोकितनार्विकलक्ष्य।
गाद्दकपत्रपकं॥ पिच्छलीमोदबेचवर्णा।
शैलेहस्तोफलं॥ पंचमालीनिवासना।
निर्मकृतनिमधुराणिच॥ मोगवेचोवेदं
यदोचस्थलकमेवचैति॥ पचपकलला
द्रवः कत्नविपाच॥ अश्रोनाकानिवान्या।
हिनामान्यप्रेसिद्धानिहेमूर्विष्वोवेत्रा।
सिद्धानि॥ तन्हेसणावासिध्यावमानोनि।
श्रीखेवमाहीन्यनिचीकतना नान्मनोभोल
पिलः प्रियतमानिसराहनिश्रृनिकक्ष।
निदेयानोत्पषि॥ श्रयबकोनि॥ निघषे।
वः॥ धनणसरसोसिंधुपालवोमथुके।
तथा॥ कफमाडालाव्रकचोल्लेकोविलो।
शुक्रजैयत॥ अमाश्यणोपि॥ दिः स्नि
ग्धपित्तहरंधचनंपेनाजावललहिने॥ यावे
नाकोटपाणाणि॥ केशोणेस्त्राण्युएइते॥ पि
एपाकमथितेचेवतत्यानिलवणंचयत्
सिद्धाः तनाग्रुयेभक्षाः ग्रत्याद्दलवणे।
फलाः॥ राजमाषास्तथाचेववल्लोः स्नि
ग्धकीर्तितास्तन॥ हिलिमन्त्रोकोवसस्का
रार्था॥ हीरकादिप्रत्येपेणयत्पुनः पंक
पुनरग्निसंयोगानिष्टः उत्तथोः॥ शिवस्पा
वलेहिता॥ हेतुसिद्धेगुणस्त्राच्यनाद्दलव
णदेयः कृतकैर्नाह्यपाः॥ तथाच॥ धाद्वि
केमागेमोहूचसर्वमेकपाकंचतत्॥ मा।

त्रिसंचामवैचेवपुरोलंत्येविज्ञानेने ... नि॥
वृक्षोसि॥ पिप्पलीमंतेचवनेयाञ्चोप
दुम्नलाकं॥ कलेनचाविसेसर्वेवशात्रेचौव
वैनियेन॥ ऋषि॥ नन्नादित्यपुत्रके॥ सपुके
वृामकेवेवृकंप्रिसंसविचगुरं॥ श्राडकम
णिथुक्तानिसेधवलपुमेतयेति॥ हिंवा
दीनप्राशुकन्याभिधानानविवोयइति।
हेतसल॥ सितुनिकुयस्पशाकत्रयोदिव
यनाहनाशेने ... मावादित्यविशेयः
श्रद्धाचपदनदव्यामामेवभुञ्जोपक्षु
नाइकाशुसिंप्रकरणमारभ्यते॥ तत्रा।
हेमवैद्यानाद्रूयाधिकरणाद्रूयाशु
हिकथ्यते॥ तत्रोपदूतभूशुद्धिःसमधा
भवति॥ तत्रादयमः॥ खननात्सेचना।
दाहात्तेहिलेपनवर्षणात्॥ गोभिराक
मणात्कालात्भूमिःशुद्धातिसप्तभिः।
ति॥ कालादितियावताकालेनामेध्या
गंधलेपादिसंयोभवतिसकालउच्यते
तावत्कालोपि॥ अशुद्धिमाजनाद्धारा
त्कालाक्रमयातथा॥ सेकाउल्लेख।
लेलेपाद्गृहमार्जनलेपनादिति॥ अत्र
गृहलोनेवैशाग्निपुनर्गृहंवचनेप्रति।
हिनतस्पामोजेनलेपनप्रामार्थ॥ इहत
समन्तस्पिमार्जेनाद्विकेरहद्वेहेत।
भिःसमके॥ पुनःपुनःकपालनधुविष।
येषुद्यापादके॥ अन्याशोपहत्यन्सा
वेणमार्जनादिशुसमहसमंयोहिग्नोव
केयथायोतंशुद्धेत्॥ इधुनलिमि।
लानिनेहदेवलोकानि॥ यत्रअस्त्वयेतेना।
दीक्षियनेदयनेदयबा॥ वंडालाघृषितं

381

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यत्र यत्र मनुष्यादिसंगतिः ॥ पंचैकपमलस्य
विशेषाभूमेस्तस्यात्रकीर्तिता ॥ स्पर्शकर
विशेषाद्धैः संस्पृश्याद्दहनाद्वजेत ॥ शुना
स्तवकश्वपाद्यैः मेध्याद्यैः मलिनामेध्य
श्रमार्थैः नारीप्रसवादिस्पृश्यादिसंयाति
पर्यंतनिमित्तेनमलिनमेध्यामवति ॥ स्प
र्शकरणादिस्पृश्याद्दहा ॥ श्रृंगारादिसद्भ्रुका
मलिनेनैतेविविधस्यानाभूमिः ॥ तत्राम
ध्यशुद्धिकेनैवोक्ता ॥ तत्र यावानवन
धावाभूमेस्त्याविशुद्धतेति ॥ यत्रमनु
ष्यादिस्पर्शेलानोविस्तरितिः ॥ तत्रवि
धामेध्यायाभुवः पंचभिः स्तनंगात्सू
नायपनयनहत्भकालगोक्रमणमसो
कोद्देवैः शुद्धिः ॥ यत्रमनुष्याणांपने
त्रियंतेवा ॥ अन्यत्रविष्ठादिसंमालिनी ॥ त
दैवियाभेध्यायाः सहवसितैः कालादि
भिः षड्भिरेवचतर्भिः शुद्धिः ॥ प्रसूता
विष्ठयाचमध्यातस ॥ दृष्टाभितात्रियोऽ
धान्तुयत्नेमलिनेकरेति ॥ दृष्टायाभव
दोहावेनैवशुद्धिरित्यर्थः ॥ तथाना
विष्ठाद्रुमः ॥ गोचर्ममात्रमर्धिन्नागो
शोधयतिपातितः ॥ सहस्रमसहस्रवा
यत्रैलपानविद्यतेइति ॥ सहस्रकनस
मासेन ॥ त्रसहस्रमहतेसमासेनैना ।
हस्तियांगोचर्ममात्रत्रयस्थापयतिनोवि
दुः शोधयत्येकोर्थः ॥ गोर्शत्रु गोणश्च ।
हस्तेष्टकमेकेकृते ॥ एकेनैवद्ला
गोचर्ममात्रंस्मृताः स्तुरोभवतीत्यर्थः
यैतैकादृष्टागोवउपविष्टोतिनात्वान्भूम
गोचर्मेस्तुच्यते ॥ दृष्टशुद्धिप्रसदेनैनो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

...[illegible]... शुद्धिर्नि ॥

क्ता ॥ पुरुषशुद्धिं प्रवक्ष्यामि येन स्यात्तामा
मूत्रेण ॥ प्रोक्षणं त्वहन्यं यभांडानि समंत्रे ना
नशेव वा ॥ पुरस्तादपामयतन्सर्वं गोमयेनो
पलेपयेत् ॥ गोमयेनोपलिप्याथ का
गेनाग्नापयेत्तु नः ॥ आलोणमेव पूतेषु
हिरण्यकुशवारिणा ॥ सर्वमप्युत्तयेद
पूमततः शुद्धेदमेधाय ॥ वायायनेन त
विष्णुखड्गकः ॥ बनायाभूमेरुष्णचानेनो
पलेपनस्थूखरानाक्रम्यं स्वकिं चायाप्र
धामाहृत्यशुक्लहृत्व ॥ ऊर्ध्वत्वधावोपचो
नेभिर्गितनलाणस्तर्गरविप्रवृवधोयिक्षा
लाभिमेघाणचैति ॥ क्रिवाक्रोमिकोटारि
आपत्तातो ॥ अनामेध्या षूहमाहृत्या
क्ताद्वोहिरत्यथः ॥ इतिशुद्धिः । अथ
पात्रशुद्धि ॥ तत्रहारीतः अद्रिकांचन
रजतशंखशुक्तीनांतद्रूणवर्जनक्षे
ष्वेवाणीपक्कतानांयवगोधूमकला
यमाषामसूरसत्त्वकुग्गोधूमचूर्णयावन
वप्रलवनाभ्यानातेत्रणा ॥ भस्मनाकां
स्यानां ॥ ताम्राणां तैलसिकतावर्धनैः का
ष्ठेयमानां ॥ शिलाहषाणमाजनैर्मृण्म
यानामिति ॥ तेस्र वनसूणवर्जनेमा
कितस्थपाकवेणा ॥ स्वेरवेववर्णपक
वेणा ॥ स्वेरवेववणपक्कतानामिनु द्वि
ह्मादिस्वेरेनविंवर्ण यथाभवति ॥ तथा
पक्कतानाश्रुर्थः ॥ यथा हि चूर्णादिविक
ल्पितानानिसर्वेषाम् स्वेरेवेववर्णपकवेण
लादेव ॥ रुद्रकस्पानमसवेवश्लोयनस्वेवा ।
योगोपदिनः ॥ तत्र याज्ञवल्क्यवचनं
सौवर्णराजतानाम्नानामूर्ध्वपात्रमुद्राश्म

॥ पाकेरुहमूलफलग्रामोविरलवा
मणा ॥ पत्राणांचमसानांचवाविणात्र
हिविषाते ॥ सोवर्णास्रवर्णाविकार ॥ भाज
नेरजतविकारः ॥ श्रम्रपात्रेवमुगिफला
दिरुधंपात्रयाह्रियोलुवविलादिः ॥ एरंडा
पेडारपः ॥ प्रथमहपासानिम्नलमारका
दिविरलेवणरलादि ॥ नीहकारावक्षेत्रा
हीति ॥ चपैम्रजातीनो ॥ नहिकारासुपा।
णीतिश्रोहलणपात्रादीनिचममाहोनच
ममाहयः ॥ पतेषांवारिणाप्रलालनाकु
हिविति ॥ पत्तेलेपरहितस्मापीमात्रविष
ये ॥ ह्रीतलवचननलेपस्लेपात्रपरतनि
षधमित्यविशेषः ॥ तेषांचमनुः ॥ निलेः
पंकाचनंभांडेमलिनैवविमुञ्चति ॥ अश्र
मपममयंचैवराजतंचानुपस्कृतं ॥ मनु
पस्कृतमनुत्कीर्णलेवादिवातेपुषित्र
षावस्यानवहिःतमित्यर्थः ॥ मलेहपा
त्रेष्ववशेषोयाज्ञवल्क्येनोक्तः ॥ चमस
कुवामस्रेहपात्राणुसनवारिणाविव
हःइत्यर्थवसस्यालो ॥ पलान्यपिलेप
रहितान्युसेनवारिणाशुध्यंति ॥ गुडव
ोतैलत्पनहतैः ॥ निवेवोक्तं ॥ स्पाप्रतुके
जिनयानानांगुरलोलखलानसामि
नि:सपोयसंभावनकाष्ठकृर्विकाः ॥ द्रा
पलभोपि ॥ नवाप्रोतानिकांस्यानिमुद्रे
चिह्नानियानिच ॥ शुध्येनिरशाभिःत्वार
गुकाकोपहतानिचेति ॥ नारोभस्म ॥ द
शावारास्मलान्यमार्जितानिशुध्यतीन्य।
र्थः ॥ यच्चशंखवचन ॥ कंसशाकुनिषु
तावसूर्यनिर्लिवेन ॥ शाकुनिशुद्धा।

[illegible] नि ||
वस्य द्दपाउनग्रमजानेतेन || कृत्सपञ्चानाम
नि: कायकः निर्लेखवनेन द्वनेन इहसोध
कोपंहरनेविषय || आपनलववंचनेनस
लोपहरनेविषयमिथ्याविरोयः || एवम
नत्राणिनवनाधिकणेचकल्पाः || स्वले
धिकोपहरनेविषयंनेनव्यवस्थापनी
याः || शेषपनेनाधिविशेषदकः || तेन
स्नानेनमत्रपुरीषपुश्रकासककफपास
क्षेत्रनकाववसिकानामावर्तनेनोयं || ग्र
ल्लेसर्गेनपरिलेखनेन || स्पर्शमात्रेण |
ग्रोतेनविसर्जनेनोभस्मनापरिमार्जने
ग्रनेन सोनो मवभूनानां चल्लवीर्यं इति || ग्र
मिसेयोगेनइवीकरणमावेनेन || का |
स्यस्यभस्मनापरिमार्जनेनेनियनेन || ग्रेमे
णामपिसौवर्णानि हितेजसनोपाइवलो
नवायिणामुद्दिश्यतेइन्यकनेकोपा
यनस्यभस्मनापरिमार्जनेनमिन्मृत्तिका |
भस्मनामंक्तिनेनवयाराणाम्युद्दिश्यं
तथा || स्वस्थानेनेति || भस्मनायुद्धेनेक
स्पस्वस्थायचलिप्पनेन || स्नानंचपुरीष
स्वम्पुद्दनेनापलेपनेनेति || ग्रत्रसमादि
ग्रहमत्पुक्रयोणितादीनामपुपलंचा |
णार्थे तथाच || नानोग्रमभ्रेनपुद्धेनेच
लमिद्धलोपिने || श्रमिवेणनयोहिमपुन
लोइनपुद्धेति || शयोपि || वतिकोवि
ष्ट्रमाउस्यसेनामद्रहत्तस्यव || तिःसम |
मार्जेनाकुहिनेनकास्यस्थनाएवमिति
ग्रस्याशः || वतिकोविहायपरतानां
नेनसेनानाममभिर्दवपायमाहिदेहेः
ग्रलेकनिमीसनेनाकुहिः || कांस्यनेन |
नस्यनायनेनाकुहिर्मार्जनेनाचप्रतिमा |

355

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नेत्रेष्वकायस्त्वाललनमध्यावलेन॥ श्राय
कायस्तेनोन्विशोध:॥ स्रत्यंनेरेभिर्हिते:
सुखस्वकरोविविणखत्रिरजस्वलस्तनोन
वे॥ प्रसेमध्यानितान्यग्रोगयस्थावन्य
स्तेदपि॥ यस्तच्यावर्तिग्रहेवणमस्त
ने॥ यावतान्निग्रहेवणलननश्यतिनाव
न्यदेपूर्वामिन्यर्थे:॥ बोधायनेोपि॥ ने
समानानस्त्राद्युपमानेस्तन: कवंणोमोन्न
दुखस्समस्रात्रेयपविवासनेकितिलेपनिस्त
रणाशुक्रोधनेकलं॥ प्रेनपत्रागोस्तवा
सहतिस्थवस्या। श्रादित्यध्रुवाणनस्तव।
णोरुणधानापमयुक्तिरव्रमयानिच।
कोमायास्ताग्रदित्यादित्यादिव्रपुर्नीस
मयानिच॥ निलेपानिचशुक्लानिकेवले
नजलेनतु॥ शुक्रोक्तिहानिशौप्यानिवि
धानाद्वावारिभिर्विल॥ श्रन्नापिसाग
लवारिभिर्दश्शाकाबोमाजेनेनकार्य॥ का
नालपेन॥ श्रत्रानिरशाभि:स्तावेरिस्नुके
बान्॥ हिमानिपक्कोशिस्वस्वशोनरशो।
विनोविशोधउक्त:॥ श्रस्यदोषयविशोधे
वसूक्तत्समाजेनाचविधि:॥ चतुष्टेनतय
दुरुकंवतमिसस्तमाजेन॥ श्रग्रेप्रहि।
356 ष्वविह्नेयाद्देहेशाश्रयोन्मयनेनत:॥ मो।
शानतसमस्ततन्त्रात्रश्रुचिन्तासयात
इति॥ कासपात्रेविषयेवेगिरसाविशो
धउक्त:॥ ताम्रपात्रेशोवंचयत:कयात
कासमाजे॥ बालामपविनिर्लिप्तपुन
राकारमाहितिश्रोहिति॥ श्रन्नापिषामा।
सभुविनिर्लिप्तस्तकान्वानन्यननमापक
सपुश्रुहिनेन॥ श्रन्नस्नाघरतेकांस्यरो।
धानसारेणसमास्रादिकालमृविवा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible] शुद्धानि ॥ न
च ॥ लोहानां दहनाच्छुद्धिर्भस्मना गोम
येन वा ॥ दहनान्तवनं नाच्छुपि शैलानां
मंभसापि वा ॥ काष्ठानां तक्षणाच्छुद्धि
र्मृन्मयानां लेपेपि ॥ याज्ञवल्क्योपि ॥ त
क्षणं दारुशृंगानामिति ॥ दहनानां पा
त्राणां यथैकशुद्धपदहन्यते ॥ न स्नेव श्रोच्य
ने श्रोकं समानं संव्यमशुद्धिः स्यादिति ॥ हि
रण्डानामपि लेपहतो याज्ञवल्क्यः ॥ पु
नः पाकान्महीमयमिति ॥ मत्याचुपद
तोनं तु निंम्नागपव ॥ न दाहमनः ॥ मद्ये
मत्र गृरीवेवीह्रोवणैः शुध्यन्ते ॥ मा
त्रे हैनव श्रुद्धोनपुनः पाकेन मृण्मयं ॥
मिति पात्रशुद्धि ॥ अथ धान्यादिशुद्धिः ॥ (
तत्र विष्णुः ॥ प्रभूतस्य धान्यस्य यावन्मात्र
मुपहन्यते तन्मात्रं तु त्यज्यते ॥ मनव
स्यावशेषस्य प्रक्षालनं कुर्यादिति ॥ बौधाय
नोपि ॥ व्रीहयः प्रोक्षणाद्धि शाकमूल
फलानि च ॥ तन्मात्रस्यापहारागहानिस्त
थीकरणैर्न्नवेति ॥ इदमल्पद्रव्यविषयं ॥ व
हद्रव्यविषयेनकरूपेणाविशेषउक्तः
प्रोक्षणं संहतानां च द्रव्याणां वर्नेषी हिय
वगोधूमानामनिष्वप्नविशेषउक्तः ॥ प्रो
क्षणंः फलीकृतानां निष्ठुषाणां दलनघो
तोलः प्रोमी धान्यानामिति ॥ अस्यार्थः ॥ (
धनेकधुकन्योडार्याणां व्रीहियवगोधूम
नां प्रोक्षणादिभिः शुद्धिः ॥ पर्यग्निकरण
मप्यभिमर्षणं ॥ अवघातरुलमप्रक्षालनं प्रो
क्षणादीनि सर्वाणि सर्वदोषाल्पवम
हत्वापेक्षयायोज्यानि यथासंख्येया ।

नेनशुक्लीकृतानिरत्नानिरक्तणाद्या
नेउलीफलीकृताउच्यते ॥ तथामन्त्राना
विमर्षणंपाणिभ्यांनिर्मलीकरणंवद्ध
नांप्रोक्षणं ॥ शुक्लीधान्यानिशुक्लादीनि
नेषांमेकशफघोडाणांनिर्वर्षणंविम
र्दनं ॥ ततेनालयानादलनं ॥ श्वनेकशफघोडा
र्याणांप्रोक्षणंशुद्धिरेविति ॥ यत्तेनेतुला
नाक्रयविक्रयोदितिनदत्यतात्यपवे।
मात्राविषयं ॥ ग्राहिन्यःशुद्धाणांविशेषमउ
क्तः ॥ शुद्धृताहेमनुस्यात्रेवेमेवंपशुमाना।
दि ॥ अभोज्यमन्नंकृतानांश्रीरसंयोन्यकृतमस्य
संग्रहः ॥ शुल्मेयनाचरसेउनामयोभवि
वतिद्वन्न ॥ यवमाषतिलादीनांनदोषो
मन्त्रसंग्रहीत ॥ ततःसंक्रममाणांग्रामस्था
नेस्थानेचवरस्थाने ॥ नचप्राणिवधोयत्रके
वलंहस्तीपन ॥ अत्रस्वामिनस्वैवाणिशु
द्ध्यर्थाहविचारयन ॥ मिश्राणांविषयेन
मनुनाविशेषउक्तः ॥ पानिजंयंगावां
घातमवधूतमवक्षतं ॥ मनुस्मृतौशुद्धक
मस्य ॥ हविर्तकेशकीटैस्पृष्टंसमवेयेन
शुद्ध्यति ॥ पतितंजयं ॥ पतितंभवति ॥ अ
वधूतयस्योपरिवासधूतं ॥ पतितंभिक्ष
त्तिपतितंत्यजनंकृतं ॥ अवक्षतंयस्यो
परिक्षतंकृतं ॥ मनुरुहशककेमस्मिनेनाव
पितद्दर्शनाय ॥ तथाचयाज्ञवल्क्यः ॥ स
लिलेभस्मभृत्तापिनेनमवोपिवशुद्ध्यति
इति ॥ पाकान्नततमवकीशकीटदिदह।
षितंमरुदादिभिःशुद्ध्यति ॥ ततःसरत्पके।
नन्याजमेव ॥ अन्तस्तुतिरस्यभोज्यकेश।
कीटावपन्नमितिगौतमवाक्यस्यायम।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नाभिप्रायः॥ वामहस्तेनविप्रोदकं ॥ का
शेषं येविदारेषु यज्ञेषु यत्कृतेषु च ॥ का
केः स्त्रीभिश्च समस्पृष्टमन्नं न पाचयेत् ॥
तन्मात्र मन्त्रयुक्तं त्यक्त्वा संस्कारमर्हति
शनि ॥ देवतार्चनं देवयात्रा ॥ प्रक्षालनं तु वस्त्र
भावित्तु सर्वोत्सवेषु ॥ ग्रहदेवयात्राशी रा
वर्तनी न धान्य धनावर्तने कार्यं छिद्रयत्
द्विवित्तिनव्या ॥ नराहृपकस्यांवः ॥ पके ।
शेषानिर्दिकेन नवकाकस्याचयुपचानिलं
ग्रामस्तु हृत्वा त्वनोत्र यहृत्वालाकृते न भव
ते ॥ शेषमोदकेन नवाहश्च पोसाजेने नाप्त
नाथवा ॥ स्रमिन्चा लोपन स्पर्शी स्ववर्णे
यु त्वोपंशा ॥ विप्राणां ब्रह्मचो य मनमा
संचननमेवोदितिं ॥ शूद्राणां ब्रह्मचाशु दपि
कपालश्चूने ॥ यत्नतामरदीपिवचूने ॥ यत्र
मध्याह्निकपङ्केश्वकाकाशश्चयदाहिंते ॥ के
शकीटावपात्रच्छनरपेवविम्बुषाति ॥ की
नस्यापिविधि स्नुहपयपवमानोभिः ।
प्रोक्षितं स्पृश्यतोविधेय ॥ संस्कारं विध
योविश्रोधोविस्हितो नोक्तः ॥ द्रवाणां प्राव
नैनेवशनान्ताप्रोक्षणोनव ॥ छागाने शुब
ससृष्टमन्नं न कुर्यात् नामियाहिति ॥ वनाः
पर्पटवटकादयः ॥ द्रवाणामिति गोरस
विषयं ॥ नेहास्त्रशावः ॥ अपणां हृतेनेला
नेस्रावनेतोरसम्पिच ॥ भाजनान्मावयेत्
ह्रिः पाक मूलफलानि चेति ॥ हृताली
नामपि अपूणां सम्भवमजीतीयद्रव्यम् ।
वेणुन शुद्धिः ॥ मन्त्रनाद ॥ द्रवाणां चैव सर्व
वाम्बुष्डिकत्यवनेसरतं ॥ प्रोक्षणं संहता
नां च दारववाणां च तत्त्वणमिष्यते ॥ अत्र चा।

359

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पंचउत्तमगुणादिसंयुतिः ॥ एवंकथमेतस्य
ति
यवनमावनेविकल्पे ॥ किंचएतस्यमा
उपरिमाणंनाशुन्यवन ॥ एवंभावास्थि
नस्यकस्यचिदप्यस्यापनयनमितिमः
ध्यातियावत्कल्पान्ततोधिकपरिमाणं
नोप्यावर्णं ॥ ननोस्यनपरिमाणेनाल्पा
नाद्वतिगम्यते ॥ प्राकरभावस्यानस्यातोय
मस्यात्रात्रैनैदोषः ॥ नद्दकं ॥ प्राग्भावदोष
ननयेत्मात्रात्मात्रात्तनंभ्रवे ॥ हूनेचपाय
मथोरंतथैवेत्तरमोगुरुः ॥ प्रागभावस्थि
ततऊनंतथामध्यनदृष्टांतौ ॥ पायसप
यस्यानिहूनतरोयः ॥ यमाणि ॥ प्रागुक्तमं
हतौरदृष्टान्तस्तुफलसंभवः ॥ ...
ग्रंथितानहृदयानिष्क्रान्ताः श्रुचयः स्वतौ
इति ॥ एतच्चाकरभावविषयंश्रुत्वाकोपी
पि ॥ श्रुत्वाकरोति ॥ हेणाधिकाज्योपमेच
नसमर्थंहूनादिविषयं ॥ ननोस्यनस्या
पिदृष्टकालात्स्वपेक्षयापरिणामोभिः
शुद्धिः ॥ नयावधोयायनः ॥ दृष्टकाल
नथान्मानदृश्यस्यप्रयोजनं ॥ उपपत्ति
मवस्थाचज्ञानांशौचप्रकल्पयेदिति
श्रावतानपोप ॥ गोकुलेकुरुशालायां।
तिलचंक्रेचकुरुयो ॥ ग्रमीस्यानिशो
चानिहोणवालानेत्रचंचलि ॥ कुरुशा
लायकुशलालं ॥ शूत्वोप ॥ नियोसानां
गुरूनांचलवणंलौनवच ॥ कुलम
कुलमानांचतूर्णकार्यासयोलपा ॥ वि
श्रीपालकयितन्हुद्रिरित्यादभगवान्।
मः ॥ नियोसाहिप्रभुनयः ॥ दृष्टैर्थल्प
परिमाणविषय ॥ वकृपोपमाणषुबोधा
यनेनविशेषाभिधानात ॥ यथाकुलम

360

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कार्पासगुडलवणानां सर्पिषां का
भूनानां चण्डालादिस्पर्शे प्रोक्षणेनैव शु
द्धिरिति ॥ अस्पृश्यस्यैव परित्याग एव ॥ नग्ना
दिरूपकायपेक्षया परित्यागः कार्यः
स्मृत्यन्तरे शुद्धिविशेषो विस्तरेणाभिहितः।
स्मृत्यन्तरे नकाष्ठानां शास्त्रे चण्डालवा
योगेः ॥ स्पर्शेने विहितं शौचे सामस्त्यं।
त्रिमासनेनेति ॥ नद्या ॥ प्रोक्षणेन पुस्तक
मिति ॥ प्राकारादि ॥ पुष्पफलानां विक्रया
वस्तूनां प्रक्षालनं संप्रक्षणमित्येके।
पत्नीनां मोहः प्रक्षालनं सप्तकृत्वः पञ्चकृ
त्वः शुक्लगौरीति ॥ विक्रये ग्रामकुक्कुटादि
मिश्रलक्षणेन प्राकारकौशेयादेः ॥ कौपी
यनादि ॥ अस्पृश्यतां याभूमौ स्पर्शनं।
प्रक्षालनं पवित्रीकृतानां संप्रक्षणं ॥ प
वलक्ष्म मित्राणां संस्कृतानां समस्या।
युपस्थानां मेकगुरुवीरायां नामिति।
वैश्यमित्राणां शियतेनयाज्ञियवेन।
प्रसिद्ध पलाशादि वृत्तिविक्रयामामाणी
हीनां ॥ आसोपि ॥ स्थाकेइमतां यानि।
माव: प्रायश्चित्तानि च ॥ मासूते नवशुद्ध
ति पक्षे एक चित्तानि चेति ॥ मन्त्रनातद
त्रसकलस्यो प्राप्तिः स्पर्शे विशेष उक्तः।
यथा ॥ ... हिनने मस्य होइ हम्मरसः
कर्षचन ॥ अनियाये वतवृषभां चालनः
स्पृचिता मियादि तिथान्ना हि शुद्धि ॥ न
वेदवतः प्रतिगृह्य सोपेना निर्मलाइ
त्रिवीगतः ॥ अवीणा वैवगोपानास
पः शुद्धिकराः स्मृताः ॥ अश्वगोपानादि
निर्गोपानयोग्यपरिमाणाः ॥ नदास।

वेन व्यासेन ह्रस्वतो ॥ भूमिष्ठमुदकं मध्यं
वेत स्यात् यत्र गोर्भवेत् ॥ अव्याप्तं चेदमेध्ये
न तद्वत् शिलागतमिति ॥ अल्पजला
श्रयादुद्धृतोदकविषये देवलः ॥ वि
ण्मूत्रादिभिर्वा व्याप्तानि समः ॥ उद्धृता वा अशु
द्धा वा शुद्धैः पात्रैर्यथाविधि ॥ एकरात्रो
षिता स्ता स्वल्पोदपानः सद्धृता इति अ
वद्धृतकान्तु ड्राका देवहूता नात्मशुद्धि ।
मेनापत्रुं चितो भावेन शोधः ॥ अपर्युषि
तसद्भावे वा अपि चित्ता वा कमेयो मध्यना
स्ति ॥ महाजलाशयविषये सएवाह ॥ अ
क्षोभ्याणि तडागानि नदी वापी सरांसि
च ॥ चण्डालाद्यशुचिस्पर्शे तीर्थतः परि
वर्जयेदिति ॥ तीर्थकुटकावलतरणमार्गैः
यो सिक्तीर्थं चण्डालादिस्पृष्टं स्वहृत्जे यथैका
न्यतोज्जलं गृह्णीयादित्यर्थः ॥ वापीकू
पतडागादिविषये हारीतः ॥ वापीकू
पतडागेषु मातृवध्यादियेते यदि ॥ अस्मि
व मेध्यं स्मृतेस्ता वा गोभिः ॥ उद्धृत्य तज्ज
लं सर्वं शोधनं परिमार्जनमिति ॥ अमेध्य
निवृत्ते कूपे शुद्धकालवासाहि स्त्रीविर्ता
शैः ॥ देवलोपि ॥ उद्धृत्य उदकं सर्वं पञ्चवि
धेनकर्दमत्यजेदिति ॥ हरेत्स्याति नान्यविशोध
नात्तथेति आपः समुद्धरेत् स्त्रीवा श्रीः पञ्च
गव्येन शोधयेत् ॥ विविधजालेन कूपानां
पञ्चकेषु कार्यचिते ॥ पञ्चगव्यान्नस्य तस्य शु
द्धं वतो यस्य भूद्रव्येरिति ॥ स्वल्पं चिरकाले
परतो नवशोधितः ॥ अल्पानां स्नातशुद्धत्य
पञ्चगव्यादिपत्तनः ॥ स्वभिः स्वपाका ।

वडाले स्थितोपुविशाधनमित्॥
नस्यखविवोषमाह॥ऽपानखुष्मा।
विष्णुश्रद्धीरनुोमध्यमेववा॥पोभवि
श्रीवतोरूपोकुभानोबविष्णुद्वरेदिति
स्यावमध्येजलाऽयेषुक्तपवस्वेवष्णु
द्वि:॥यदाहविष्णु:॥जलाश्रायेषुपले
पुस्त्रावेषुमध्येतले॥कूपवल्कयिता
पुदिमेमध्येचनदूषणानिति॥द्यातात
पोपि॥प्रवैरपिकृतेकूपेसेनावाथ्यां।
दिवैतथा॥तत्स्नानाचपीनाचप्राय
श्चित्तंनविद्यतेइति॥यत्नेनचविष्णुषड्।
कोः॥चडालभांडेमध्येपीनाकूपवाल
जले॥गोमूत्रयावकाहारस्त्रिरात्रेणशु
ध्यति॥नदीनोचंडालभांडास्पर्शी।
पिनदोष:॥तदाहसंवर्त॥नदीवेगेन।
शुध्यतीति॥चर्मकोशस्यकशायद्वय
शोधनास्त्युद्धि:॥तदाहकश्यप:॥दृती
नांचजलेनास्त्युद्धि:शुष्कचर्मकोशगा।
नमपिश्रवनांपादिनपेयं॥तदाहयम:॥प्र
पास्वरण्येघटेषुद्रोणयाजलेकोषे
कोष्ठागतात्सुपप:॥कूतेपिशूद्राद
ट्वेसमवकूपक्तन:कोपितवाप्ति
वेत्सुइति॥ख्यातार्थ:॥ब्रह्मापाद्विप्रपा
दिरातेजलेनपेयं॥तत्रापादिकंयद्य
पिशूद्रव्याप्तिविशेषात्व्याहरणादिकंभवि
भवति॥प्रापयचरणगतप्रपादिषुपेय
मितार्थ:॥द्रोणीसर्वसाधारणद्रोणीस
र्वसाधारणीपाशुपाणादिकृतापाश्री।
कोशोहति:॥तडाकारेगन॥नवारकंर

363

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रैत्रयंगृह्णाति ॥ नैरुक्तं ॥ प्रजागावो
महिष्याश्वाश्वाणपशुप्रसूतिका दश
रात्रंगृह्णाति एलिभूमिंहेचनवोदकमिति
जलपात्रंच सर्वकीयमेव ॥ सवस्त्रंशुद्धेत् ॥ न
रोहबौधायनः ॥ आत्मशय्यासनवस्त्रं
जायापत्यंकमण्डलुः शुचीन्यात्मनएता
निपरेषामशुचीनिहीति ॥ स्वाचीनस्तु
स्नानपरंशौचंशुध्येत ध्यायसमामनंतिस
स्पर्शेसचैलस्नानमेवस्याहीति ॥ अथस
र्वः ॥ स्त्रीश्वशूद्रश्वपचलालोमेध्यवकीर्यंशुद्धे
नकेवलादिनांतर्धायोपशोकृचय ॥ अतः
पतितादेः श्रयाहिस्पर्शेसचैलस्नानं ॥
विधीयतेनेति ॥ पतत्त्ववलादौपिनिनशे
ष्यादिस्त्रीकारप्रामोवहित्वामित्युदक
शुद्धिः ॥ अथचस्नादिशुद्धि ॥ नत्रत्वासः
वसोरुटमस्यापशुत्येत्रजैवेटलमेवच ।
रजोदिकंचातिरुहेत्वाज्येनत्यात्रमेवंच
वेटलेश्वपकीदि ॥ यमोपि ॥ यदिभत्रपरोधा
भार्येतस्यास्पर्शेयेणावा ॥ चैलस्वपदन्दे
तजलैः प्रक्षालयेत्तदिति ॥ यदंभसा
नशुद्धेतवसंचोपसंनेद्रूपं ॥ क्षेदनेनस्य
दासौवायनमात्रशुद्धस्यतेसति ॥ अत्रवि
त्रेद्यधयोत्थितपवित्र्यास्पलोक्षेदरात्रा
भागशुचिमियानोमत्यातंतुलंमोनमव
स्वविषये ॥ रोहेदस्यावत्तमेवविक्षेत्स
हिनाशुद्धिः ॥ दाशीकृतानांशुद्धनामये
यावतिवस्त्रानिचेडालादिभिः ॥ स्प
ष्टानि ॥ नान्यस्पृष्टापैदयास्वल्पा
निचेत्तदातान्यहस्यप्रक्षालयेत ॥

श्रेष्ठाणि वस्तूनि प्रोक्षयेत ॥ अन्नेनैवा
शेषाणि याज्ञवल्क्यः ॥ प्रोक्षणं संहता
नां च वस्तूनां धान्यवाससामिति ॥ स्ना
नेनैवेति ॥ वस्त्रधान्यादि विस्तीर्णानामे
कदेशस्पृष्टयोः ॥ तावन्मात्रं समुद्धृ
त्य शेषस्य प्रोक्षणमर्हतीति ॥ तत्र धा
न्यशेषस्य प्रोक्षणविधानादुद्धृतस्या
परित्यागप्रक्षालनादिभिः शुद्धिरिति
गम्यते ॥ एवं राशीकृतानि सर्वाण्यपि
स्पृष्टानि चेत्सर्वेषामेव प्रक्षालना
च्छुद्धिः ॥ तथा हि मनुः ॥ अद्भिस्तु प्रोक्ष
णं शौचं बहूनां धान्यवाससां ॥ प्रक्षाल
नेन त्वल्पानामद्भिः शौचं विधीयते ॥ आ
विकं च वस्त्रकुसुमत्राणमपादिकवे ॥ बौ
धायनेनानेकपशुकेशाद्याहृत्यशिले
श्मिसमेत्युपनेनाम्नाय्युग्मादकस्याशिल
जः स्वल्पाशुचि चेत् स्पृष्टे ॥ मनेनैवन्यायेन
द्रव्याणां तेषामपि ज्ञातव्या ॥ याज्ञवल्क्येना
पि विशेष उक्तः ॥ सोषरोदकगोमूत्रैः
शुध्यत्याविककौशिकं ॥ सश्रीफलैरं
शुपट्टं सारिष्टैः कुतपं तथा ॥ सगौरस
र्षपैः क्षौमशोधः सदा वस्तु निकेः ॥
कौशिकं कृमिकोशोपहारि ॥ अंशुपट्टं वा
ल्कलतन्तुकृतं ॥ कुतपः पर्वतच्छागलो
मकृतः ॥ अरिष्टानि द्विरोधकोपजाल ॥ अ
लेनैषां तेषामेव पतेषां क्षालनेनैव ।
नाशुचित्वं स्यात् ॥ शुद्धेश्च द्रव्यविनाशि
नेष्टत्वात् ॥ अत एव देवलः ॥ चर्मकोश
मकृतपपट्टानां मध्ये मूलजाः ॥ अल्पा
शौचा विप्लुष्टानि प्रोक्षणं प्रोक्षणादि ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नः॥ नान्येनामेध्यशक्तानिक्षालयेद्बो
धनैः स्वकैः॥ नलिकासुपधानंच पुष्प्।
पक्वावरंतथा॥ श्रोत्रियानालयेकिंकरैः
संमार्जयेन्नसूः॥ पचाचवाविणप्रोल्ला।
विविधजीतकर्माणि॥ नान्यतिमलिहा
निवद्यावन्नविश्रोपयेदिति॥ सुध्वयर्क
मितिप्रक्षालननांस्त्यागरकोपलस्तवे
यतस्मृयलासूलनेननविनहुराभव
ति॥ नतानपश्रोवणादिनाश्रोध्ये॥ य।
न्माजिह्वविकंक्षालनेन्नशालितेरला।
लयेन॥ स्नापकलकोपि॥ सूनोपर्कतेवे
लस्नवगाहेत॥ प्रक्षाल्यवानंदेवमात्म
नासस्तप्यपुनःप्रक्षाल्यपासैचाच।
म्यप्रयतोभवति॥ अयविवेकं॥ वस्नस
हितस्नेवनामेवधुंस्पर्शवमाहः॥ स्व
घस्नाच्छेन्याक्षालनमिति॥ श्रावलिविनो
नो॥ अस्स्तानाप्रोक्षणामिति॥ अस्तय
ग्रडेनोतो॥ प्रचेताश्च॥ चेलानांशपस्तां
नाशुद्धेदनंगाधलेपापनयनो॥ नन्माद्य।
लेपनेवासमामभुहाणादिति॥ उक्षेद
नेक्षोयने॥ प्रावस्त्व॥ प्रावनामनया।
नानासंस्कृतवक्रोवामिति॥ श्रायनाही
नासंस्कृतशङ्कवाचामाङ्गाधिपूर्णईव्य
वस्नेदानानस्युद्धिरितिस्मृकमेवलि॥ त।
दाहानिमसः॥ श्रायनामनयानानिद्धो
मवधानियानिच॥ व्रह्माणकानिसवी
णिसंस्कृतानिप्रवदन्तद्वति॥ मनुः॥ वे
लवच्चर्मणांशुद्धिर्वैदलानांतथैवच
शाकमूलफलानांचधान्यवच्छुद्धिरि
ष्यतेइति॥ स्मृत्यन्तरेपि॥ पत्रपवित्र।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चमचामरतृणावष्टवालवल्कलाम्
चेचेलवकुहिनिखनेविति ॥ अत्रपवि
त्रेरमेः ॥ ननम्यानारण्यमिति ॥ नग्णा
नेतालोभिधीयते ॥ अतस्तन्नाम्नादी
ना ॥ ५ ॥ इतिवक्षारिशुद्धिः ॥ अथपेदश्च
द्धिः ॥ तत्रमंत्रः ॥ त्वावनेतपोम्न्यनार्हा
रोहम्नमनोवार्यपोरन्ने ॥ वायुकर्म्म. कं
कालोत्थसुद्धिक्रनतीर्थेदिना ॥ सर्वं
घासेनशौचानामर्थेशौचार्थस्मृते.
योर्थेशुचिःसहिश्चुचिर्नेहरिदिद्ध
चिः शुचिः ॥ दोत्यापुत्रीतिविद्यासा
होनेनाकार्यकारिणः ॥ अथतनपापा
नपेनतपस्रावदेवित्तमाः ॥ स्वनाया
शुध्यतेपापनदीवेगेनशुध्यति ॥ वि
शातपापस्याथतामाशुद्धिहानेनशुद्ध
ति ॥ अथशुद्धयवादः ॥ तत्रमंत्रः ॥ पोहे
शुचीत्रशतानामज्ञाशुध्यनरवशुचि
गवोपहानिमध्यानिसर्वेशात्राणिचो
चितामिति ॥ अनुपदन्नत्राहाणाचरण
स्यद्रवन्तुशुद्धमित्यर्थः ॥ ष्टुतपवद्वा ।
ह्मणत्वीतिविक्रवराणस्यशेहोषउक्तो
भवति ॥ तथाचा ॥ अद्रहाः संततधारा
वातोहतास्त्ररेणवः ॥ स्त्रियोहद्धाश्च ।
बालाश्चनदुष्यतिकदाचन ॥ इहस्म ।
तिरीप ॥ अप्रोहरन्येप्रांकरकेंसहस्रा ।
णोहरनीयेत्रविनिहतानि ॥ बालेरथ
स्त्रीभिरनुहितानिप्रस्तानदहानिशु
चीनितानि ॥ येत्रविनिहतानि ॥ ५ ॥ तब
माहानि ॥ सौमिवीलोकेसुवर्णस्याद्रम
प्राणोहिताशुचिभिः कृतानीति ॥ अ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

...वलेनाघ्रेज्ञानान्याय स्पर्शपाकास
निकर्मा लिप्तशुद्धानीत्यर्थः ॥ तथा च म
नुरपि ॥ नित्यं शुद्धः कारुहस्तः पण्यं य
च्च प्रसारितं ॥ ब्रह्मचारिगतं भैक्ष्यं नित्य
मेध्यमिति स्थितिः ॥ ब्रह्मचारिपदं भि
क्षुकोपलक्षकं ॥ भिक्षुहस्तस्थितं भि
क्षान्नं यत्प्रयत्नेन पक्वान्नेनाशुद्धं न।
भवतीत्यर्थः ॥ तथा च ॥ यथापाः स्तक
बोधानां तत्क्षणं पयोवृत्ते ॥ पतन्त्य।
प्युपगतं भोज्यं भावमलेपोऽनेन वर्जयेदि।
ति ॥ सर्वत्र सूक्ष्मपानीनां शुचिलेसन्नं।
पि ॥ शुद्धपत्नीपानस्यमस्पर्शनीतिशैव।
वचनात्सिद्धान्नानामस्पर्शनेऽव ॥ ज्योतो।
पि ॥ नारीणां चैव वत्सानां शकुनीनां
शुना ग्रहे ॥ तत्र स्रवणादेशगाया
योऽसत्यशुचिः ॥ तथा च मनुः ॥ आकार
शुचयः सर्वे शकुनीफलपातने ॥ सू
तिका प्रसूतिमेध्याः स्त्रीशूद्रवर्षचकारनी
स्त्रीशूद्रविंशति ॥ पीतमध्या याज्यपि
स्त्रीणामाधीयाः श्रुदायाधृहि प्रवक
गंधरसस्वादनवर्जितं मार्जयेदिति सम
ये शुद्धमेवेत्यर्थः ॥ आकराः समाकर।
व्यतिरिक्ताः ॥ तदाह देवलोऽपि सः ॥ आ
कराः शुचयः सर्वे वर्जयित्वा सुराकर
मिति ॥ यमोऽपि ॥ ब्रह्महत्याघ्नं नगावः।
स्त्रीकुलपदंडं ॥ नरमृगपतितविक्षासोच्या।
तेषु च समस्तलघा ॥ शुचेस्तेमोऽसिच्छा।
तमोऽस्य स्वतंत्रलोषा ॥ दृष्टप्तने नोगा।
ज्ञाः कथमवन्तोऽसः शुचिस्सन्द्यति ना।
याच ॥ मक्षिका विप्रुषश्छाया गौरश्वः

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]रयत्नयुः॥ रजास्वोद्युतं च
मध्यानि विहितानि॥ अथ भक्तिकाय
[illegible]सवर्णे नीयस्य पूर्णेनाहंधूनहीनाउ
[illegible]लक्षणार्थे॥ विप्रघः अविज्ञानाकाय
[illegible]प्रायनं स्वनिविद्वत्यातिरिक्तो॥ तथा
च॥ अभिहितस्य यत्नास्सं शुश्रितत्क्रतुर
वीत॥ क्रव्यादिवदुरत्नस्यान्येषुडाला
[illegible]स्थभिः॥ क्रव्यादः श्वपन्॥ द्रस्य।
वाव्याधाः॥ अथविषि॥ मधुपर्के च सोम
[illegible]प्राणात्संतौ युवे॥ नोचिष्टस्य भ
[illegible]ष्टो सौस्येयु वचनेनयचीति॥ अथ किदि
मोहं[illegible]नंतरं मद्धुनाषिधानमसीत्य
नयो[illegible]मात्र्ये याज्ञायो ग्रहीतेनाङम
पुट[illegible]रिसूमत्रोस्याणविषयेरुकि
[illegible]नात्मनार्थः॥ धोडुशनमतेषि
नावलेच फलेचैवयुमनेवरूयथिह्व।
को॥ [illegible]नलग्रस्यमस्पष्टेनोच्छिष्टस्तम।
[illegible]॥ नतिमिः पत्रेमलमुखेस्तमाकु
[illegible]मयेलत्या॥ मगाधिमिलथाउच्छे
नोच्छिष्टस्तमवेहितुरिति॥ याज्ञवल्के
[illegible]॥ [illegible]विप्रशेमधानलथाचमा
नविधव॥ [illegible]चाम्यातेहेनस
[illegible]कानतः [illegible]रिति॥ उच्छिष्टेनस
[illegible]दृव्यंभूमौ निधायाचा
[illegible]॥ तथाचमन्॥ उच्छिष्टेनत
[illegible]उत्त:[illegible]चन॥ अथनथ
[illegible]तः श्रुचितामियादि
तेनदृव्यमाचीतः श्रुचितामियादि
ति॥ [illegible]च्छिष्टइति॥ आचमनाहन।
प्रायश्चित्तेनशुक्रः पुरुषउच्यते॥ द्रव्यं
[illegible]भोज्यादि॥ अथमणिवेयपाली

…ल्यथा॥ श्रुभनृपावधात्रकला
धर्मनिधायाचमनेनशुध्यतीति॥ मन्व
नाकेचिताङ्गः॥ शारीरसम्पर्कमात्रेस्य
स्याविवस्त्रितं॥ नद्यस्नास्थितमेव॥ अन्नो
हस्नात्वाद्युपातेत्॥ उक्तस्मार्तेनेद्र क्वचि
हीत्वाचामेदिति॥ अयमभिप्रायः॥ अ
थवशुक्रक्षाशौचंसंबधात्स्पृष्ट्वा
तथैवतत्स्पर्शवधात्कृचिर्भवतीति॥ मो
तमस्तन्द्रश्चरस्तत्स्पृष्ट्वानिधायाच
मेदित्याह॥ तत्रविरोधइतिचेन्न॥ ना
रीयोऽस्यनिधायाचमेत्स्यन्देहस्यास्येन
धायाचमेदितिमवयस्यापवादोयोधः
याज्ञवल्क्योपि॥ स्नात्वालिप्त्वासुधा
तथाचमनंविधेयः॥ एवमस्पृश्यस्यग
तंहस्तमकृत्यक्षालनतःशुचिरिति॥ अ
त्राचमनंविधेयइतिपरेमन्त्राचमन
हपतनःशुक्रस्यपात्रावाचामेदितिना
स्नानादेर्गलितविवरेभ्यःपततिद्रव्यक
विंदुभिर्मस्याभिपातेनास्पृष्टेहिस्पृष्ट
तेनत्राचमयित्वाशुचिर्भवतीतिद्रव्य
धः॥ तथाचमनुः॥ स्पृष्टेतिविधेयः
पादौयस्माचमयितःपरान्॥ भौमि
कैर्नसमांत्रेयान्नोभवन्तियतोभवेदि
ति॥ अत्रापिपरानाचामेद्यवदस्तुका
मायेयाचामेदिति॥ तेनान्येनचसर्पो
पस्येनविंदुमस्येयानादित्तव्यः
पादौस्पृष्टौतुकृत्वाचआचमन
दानापिपादप्रक्षालितिविप्राणस्पशौच
त्वाद्दत्तनश्यत्यर्थः॥ गौतमेनवि
शेषउक्तः॥ नमस्योविप्रश्नःउच्छिष्ट

370

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ऽर्हति न च द्रष्टाऽपतत्तथाऽऽलोकनं ॥ त
थ ॥ हविः सर्पिः पयः सोमं भाण्डस्थो
न विद्यते ॥ मार्जारश्चैव दर्वी च मारुत
श्च सदा शुचिरिति ॥ स्नानं देयं ॥ अ
जाश्वौ मुखतो मेध्यौ गावो मेध्याश्च ।
ब्राह्मणे ॥ मार्जारनकुलौ श्रेष्ठौ शुभ
शुक्रनायपविप्लवः इति ॥ मार्जारस्यापि ः
चिक्कणेमकालादन्यत्र तत्र स्नानं वि
धानात् ॥ उपवासं संदेहे मद्यः ॥ त्रैता
देयाः पवित्रामित्राम्रपाणानामकल
हनं ॥ गृहं गृहमध्ये निर्गीकरणं पद्मबा ।
बाष्प्रगृह्यातेनेति ॥ गृहं गृहस्मिति यद ।
गोवद्वायवेगृह्यात् दृश्यागृहं गृहं स्य का ।
कोदक सके ॥ तत्र सुखबन्धनेनेत्यलं ड
पवाते शुकान कार्यो ॥ पवमस्मानु स्मा
दीपाश्च हविः शिरःकृषो वैः शुद्धादिभिः
पक्वेरन्या सुहृद्भोजने नहाति ॥ नष्ट
गोत्रयमाशुकाउन्तरकाले कार्यो ॥ भो
जनानामाविज्ञातेभिगाले नदघडेति
मेध्यानिशेषमित्रागनगृहशुक्लपवादः
शतिउच्यमानुहिनिर्णयः ॥ ॥ अथाशौच
निर्णयहिमलयामः शौचमानारोड ।
दिने ॥ तेन निर्णयात्पूर्वेषां नमस्कारान्तद
वस्तु हितेषां ॥ ॥ अथ दानेन पश्यो च प्र
करणमारभ्यते ॥ तत्राशौचं द्विविधं
सूतकं मृतकं चेति ॥ जननिमित्तं सू
तकं ॥ मरणनिमित्तं मृतकमिति ॥ तत्रा
शौचं जननाशौचं चतुर्धा ॥ तत्र सावया
तस्रावश्च गर्भपातो विधं ॥ तत्र गर्भधारणा
त्समूत्तमासचतुष्टयान्तरे गर्भच्युः

371

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

...स्रावः ॥ पंचमषष्ठयोः पातः ॥ स
प्तमादिषु प्रसवः ॥ नतु केचन्यानपे ॥ आ
चतुर्थाद्भवेत्स्रावः पातः पंचमषष्ठयोः ॥
अत ऊर्ध्वं प्रसूतिः स्याद्दशाहं सूतकं भवे
दिति ॥ अत्र मासत्रयार्वाक् मासे स्रावे स्त्री
णां त्रिरात्रमशौचं नपित्रादीनां ॥ पाते तु
र्मासतिथ्याशौचं पितॄणां त्रिरात्रं सपिंड
नां च ॥ तदुक्तं मरीचिः ॥ स्रावे मातुस्त्रि
रात्रं स्यात्सपिंडाशौचवर्जने ॥ पाते मा
तुः यथामासं पित्रादीनां दिनत्रयमि(
ति ॥ स्रावे पितुः स्नानादेव शुद्धिः ॥ स्नान
मात्रमेव तु कस्यचिदिति वृद्धवसिष्ठस्म
रणात् ॥ गौतमोऽपि ॥ स्रंसने गर्भमाससं
ख्येति ॥ याज्ञवल्क्योऽपि ॥ गर्भस्रावे मास
तुल्या निशाः शुद्धेः कारणम् ॥ अत्र
स्राव इति स्रावशब्दः पातस्य वाचकः ॥ अ
तएव मरीचिवचने ॥ प्रजाते देनेन नयेसूते ।
गर्भच्युते तथा ॥ सपिंडानां सर्वेषां (
मेकरात्रमशौचकमिति ॥ पतने तु पु
र्वपित्रादीनां विशेषः ॥ मदनः ॥ शौचे स
पिंडानां गर्भस्य पातने सति इति पुरा
णवचनात् ॥ मासत्रयादूर्ध्वं प्रस्वाक्
र्वाङ्गर्भस्य पातने दिनत्रयं ॥ इति
गर्भस्रावाशौचे सर्ववर्णसाधारणम् ॥ य
त्तु मरीचिवचनं ॥ गर्भस्रावे यथामास
मचिरे तूत्तमे त्र्यहः ॥ राजन्ये तु चतूरात्रं
वैश्ये पंचाहमेव च ॥ अष्टाहेन तु शूद्र
स्य शुद्धिरेषा प्रकीर्तिता ॥ उत्तमे ब्राह्म
णे चिरं मासत्रयादर्वाक् तदा गर्भस्रावे त्र्यहः ।
राजन्ये तु चतूरात्रमित्याद्यपि विवक्षितं

372

थ॥ त्वावेवाजन्मारात्नामाधिकाश्या
त्रिपक्षे पितृत्यामावे ॥ तद्वे जाति ॥ पो
तेमातृर्थ्यामात्वमितितेनैवाभिधा
नात ॥ त्वद्वचन्त्विरोधस्स्यात् ॥ नन
पूर्णे सर्वे मासावृत्तमेव ॥ स्याद
श्रोचेविशेषोत्सौभिद्धेशनिवेद्दश्रो
च्यते ॥ एवं च सति मृत्पस्याव्वकाहाद्र
नस्य विहितत्वा ॥ पंचमासिकगर्भपाते
गर्भेन त्वानिषूर्णाद्वतिपंचाहस्सेनेव स
वेन्द्र्यात्ताशौचात्त्वावशौचाधि
समेन ॥ श्वेत्वगर्भस्यन्त वनयाउमि
न्यादिवाक्ये स्याविवहितनर्भमेवा
गर्भेविवो ॥ श्रघवातुल्यवत्तुल्यवहिह
यत्नेनाप्पहस्ना पहि घयत्वेवा न्वनाधि
कोकालेकल्पना व्यवस्थापनीयेति
इ पारिजातकारामतद्वद्यनेत्म
न्यामहे ॥ अविशेषत्वमेवयदिति ॥ अपूर्ण
विघयेमासव्यपाद्यनत्वगर्भस्त्रावेदन
त्रयमशौचत्रके ॥ नत्वसमानं ॥ धूमा
नेवातत्वयेत्सदशुद्धान शमादिति
नस्याविरात्रमशौचमितिनादितिदेवे
यवशब्दस्तस्याविरात्रमशौच तत्रदि
त्रियाद्दवत्तत्त्वरात्रिकमितिवाक्यशेष
लपरिभाषाते ॥ यापरिभाषा ॥ गर्भस्त्रा
वेपिमापूर्णमासोदिति ॥ स्त्रावेमानरहि ।
गर्भस्यादितिमशौचेवेवाकातव्याव
भः ॥ अन्यायात्युन कृत्वेनव्याघेवाहा
कालेनमासोभणीयमेवस्यात् ॥ स्त्रश्च
स्त्रेनाप्येवमेवपरिभाषाकृता ॥ य
त्रमात्रमशौचवसंप्रपद्यते ॥ तत्रस्वेदा।

सूचिनवतीत्रवच्छयाद्भिन्यत्र ता
याहीनाधूनवहाहस्थाद्रुकमहना।
पहिष्वमसुणवह्निषयका॥मयीचिना
हेवतस्यचाहिरमुक्तेनहुणवहिषय।
मापहिषयंवावेदितयामिति॥समसा
मयभृतिपूसवन्नपलाहशास्ताविकत
ध्यावंतामशोचसमर्णकाये॥जननाश्री
चेतननिमित्तमस्पृश्यवमातहिस्रा
हाविकपित:सचेलस्नानान्सस्पृश्यते।
एष्यासवते:॥नातस्यत्रिपित:स्नानेनसा
चेलेनविधीयते॥मातापुत्रेहस्रावेत्
स्नानात्स्पर्शनेपितर्हि॥सपिंडाना
जननिमित्तमस्पृश्यवंनास्त्येव॥तत्
प्रतिराम:॥स्नानेनेकेस्नानकावक्तेसमस्पर्श
ननिच्छिद्यहेरति॥स्नानकायाद्वेदवपिन्ना
हिकायेपृथदीनसिनाविशेषवज्ञक:॥
स्नानकाएववनीविज्ञानिलात्रणकर्मा।
णिकावयत॥मासेनहीजननेतुमिलि।
जननाशोचप्रथममहाहृदयामहिनेषु
राचप्रतिप्रहाधिकारोस्ति॥तत्रहस्या
स:॥स्नानाद्वासनिलयाजन्मदानामह
वत:॥नासायागालिमिततकुचिन।
स्नानकौतिना॥प्रयमेहिवसेषहेहस्रा
मेवेवसर्वदा॥त्रिहितेचुनकुर्वीतस्नात
केपत्रतनमतीति॥हहयात्तेवलंकाणि
तत्रसर्वप्रतिग्रासकृतान्नेननभलये।
त॥भवतियित्रात्ततलोहादिजन्मसंजाप्तं
वेदिति॥माकीत्रेयापि॥वदामयान
याद्वहीनिष्पान्नत्रविरोधत:॥गोत्रोजा
नागमकार्यजन्महानावेष्ट्यावलि॥पुरु

[illegible]

गात्रे ज्ञातीनां कुर्युः स्पर्शमात्रेण सूत
कइति जननाशौच ॥ अथ सूतकाहशौच
मुच्यते ॥ तत्र सूतके जातानां ज्ञातस्य नाभि
नालच्छेदात्पूर्वं शिशुमरणे च सपिंडा
नां मरणनिमित्तं सद्यः शुद्धिः ॥ जनन
निमित्ताशौचं सर्वेषां समानं ॥ तदुक्तं
स्मृत्यर्थसारे ॥ नाभिच्छेदात्पूर्वं शिशु
मरणे सद्यः शुद्धिः प्राणनिर्गमे च ॥ ज
ननिमित्ताशौचं कृत्स्नं सर्वेषां सपि।
डानां स्विन्मरणनिमित्तं सद्यः ॥ शुद्धि
रिति ॥ आचारादर्शेपि ॥ गर्भे यदि विपत्तिः
स्यादशाहं सूतकं भवेदिति ॥ सपिंडा
नां प्रसवनिमित्तस्याविद्यमानत्वादिति
मिताक्षरायामाह मनुरपि ॥ दशाहं शाव
मेषु बाले प्रमीतेन सबांधवैः ॥ शावा
शौचेन कर्तव्यं स्वल्पाशौचं विधीयते
इति ॥ अत्र सर्वत्र स्पृश्यत्वं देहाद्दशाहा
त्पूर्वलक्षणं ॥ तदुक्तं स्मृत्यर्थसारे ॥ अ
तद्देशाचारेण सूतकं सौभिरेवा
शौचमिति ॥ हारीतोपि ॥ जातमृते मृत
जाते वा सपिंडानां दशाहमशौचमि।
ति ॥ अत्र जातमृते इति नाभिनालच्छेदा
दूर्ध्वं मृते ॥ तदाह जैमिनिः ॥ यावन्न छि
द्यते नालं तावन्नाप्नोति सूतकं ॥ छिन्ने
नाले ततः पश्चात्सूतकं तु विधीयते
इति ॥ अत्र हरदत्तोक्तिवचनं ॥ जातमृते
मृते जाते कुलस्य सद्यः शौचमिति ॥ इ
दमुपाणनिमित्ताशौचमिति विषयं ॥
नाभिच्छेदात्प्राक् शिशुमरणे ॥ पित्रादी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

...नमासिकेतामासाचतुरात्रं ॥ मातृवं
सूतौ ॥ मरणान्तिकेन स्याच्छुद्धिः तदा
द्वहस्तपनं ॥ जीवजातो यदि मृतो मृ।
तो वा जायते यदि ॥ तत्र सकलं मातुः ।
पित्रादीनां त्रिरात्रकमिति ॥ तत्र तत्र व
न नामैव नाभिच्छेदात्पूर्वमित्यर्थः ॥ एत
स्मत्पुत्रे ॥ जीवजातो यदि म्रियात्स्या।
च विशुद्धिरिति ॥ एतत्सुताकौ चाभिप्रा
यमत्र आर्यप्रश्नोत्रार्थे स्मृतो विप्र ... ना
स्याः शौचमिति ॥ नामकरणात्स्याद
र्णे स्याः शौचमेव ॥ तत्संशयवः ॥ प्राक्ना
मकरणात्स्याः शुद्धिरिति ॥ शुद्धिरिति
मातापित्रो विशेषविहितविधियत्तयोः सि
रात्रे ॥ तदा हकाल्पायते ॥ बालानामज
नदन्तानां त्रिरात्रेण शुद्धिरिति ॥ तथाचे
निकाहाभिसंवधारत रुध्याद्वयोः त्र्यह
मिति ॥ मातापित्रोः रूपनयनपर्यन्तेऽपि
रात्रमेव ॥ सपिण्डानां नामकरणान्त
रमभिदानादि संस्कारे कृते एकरात्रं ॥ त्र्य
हेन स्यात् शुचिः ॥ तत्कृत्सर्वार्थ सा
ग्रजातदंतेन नयोः शौचं गर्भच्युते तत्वा
सपिण्डानां सर्वेषामेकरात्रमशौचक
मिति ॥ याज्ञवल्क्योपि ॥ अदन्तजननात्
तावद्याचत्यानैरिकौ स्मृतौ ॥ त्रिरात्र ।
माव्रतादेशादशरात्रमतः परमिति ॥
नामकरणादूर्ध्वं संपिण्डासाहिकमपि
विकल्पेन कुर्यात् ॥ तदाह मनुः ॥ आवि
वर्षस्य कृते माता धैकरकौ क्रिया ॥ जा
तदंतस्य वा कुर्यान्नाम्नि वापि कृते सती ।
ति ॥ श्रोत्रे एकक्रिये येना ३ एक क्रियायात्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

।एत्रामरानस्वकानाशमहानपापा
पतुलगं॥सर्वेस्फकामानस्रीमेवत
सहलोगादि:॥तस्रीमेयोहकेकर्था
वसीसंस्कारस्यवचेति॥संस्कारकत्व।
त्पर्वेनिवनमेव॥नहुके॥ठनोहव
गेवकेयनकुनाकेनिवनेहवि॥यम।
नायागायमानोयमस्तकमनहस्पोवि
ति॥प्रथमेवर्षेहतनहडाम्यसानहन
स्यायिनस्कारंहतेसन्यपहरातव।
नरात्रविसः॥जातहंतेप्यहतहडे।
यात्रेनात्रेणाम्नुहेहेति॥प्रथमेवर्षेह
नहतस्यहडाकरणानुतरमभिस्क
सस्पायस्पकानाभिरात्रेमेव॥ठनोह
वर्षेप्रेतेगर्भेपतनेवासपिंडीनात्रिरा
त्रमेवेतिवसिष्ठस्मरणात्॥वर्षेचया
हर्धमकृतनवडस्यापिशत्रिसंस्कारेति
शतनाविरात्रमशौचं॥नात्रिवर्षस्यके
नेष्याचायवेसहकक्रियेति॥मनुना।
स्पनत्रिवर्षस्यसंस्कारनिषेधेनत्रिवर्षा
हर्ध्वमन्यनुज्ञानात्॥प्रकृतेहडानांक
न्यानांमरणेसयः शुद्धिरिति॥कनंह
डानांमरणेवास्तानामुर्वमेकाहेनशुद्धि
नराहइयातसन्तकाः॥श्राहकुदत्तकन्या
सुनामवसुवविशौयनमिति॥प्रदत्ता
सुहतानवरिना॥कन्यानामशौचंवि
षयोविसुकुत्तसपिंड॥तदाहवसिष्ठः
प्रदत्तानांतुनोपिसुकुलेवजायते।
यास्पत्नानाहस्थेविवाहसंस्कारात्सर्वं।
पिनहकलेपतिकुलेचविवाहमशौच
नराहमरीचिः॥वाग्दत्तप्रदत्तानात।

377

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नवप्रतिपादिता॥ असंस्कृतानां सं
स्त्रियास्त्रिरात्रमुभयोः सूतकमिति॥ यावके
वलं प्रतिपादिता वा दत्ता॥ वापि सूर्वे।
नैवमहनन्यथः॥ विवाहानन्तरमशौ।
चं विस्तरो विशेषश्चकः॥ संस्कृतानां।
शौचनाशौचं पितृपक्षे॥ तत्वसवस
तो चेत्पितृगृहे स्यात्तदैकरात्रं चेति॥ प
करात्रमवैविवाहमगृहेतृत्यर्थः॥ इदं चा
शौचं वयोवस्थाकृतमवेक्षणीयाय।
णं॥ तदाहाङ्गिराः॥ अविशेषेण सर्वेषां
नामवोक्संस्कारकर्मणः॥ त्रिरात्रं तु भ
वेच्छुद्धिः कन्यास्वत्र्यहं विधीयते।
अदत्तासु गोपि॥ अविशेषेण सर्वेषां व
र्णानामसंपूर्वशः॥ त्रिरात्रात्भवेच्छु।
द्धिरिति॥ अनवयोवस्थाकृताशौचं।
अथ कृतसंस्काराणां वर्णविशेषेणाशौ
चविशेषमाहात्मने॥ तत्र विप्रस्य मौञ्जीबंध
नानन्तरं मरणे संपूर्णाशौचं॥ क्षत्रियस्य
धनुर्ग्रहणानन्तरं॥ वैश्यस्य प्रतोदग्रह॥
णानन्तरं शूद्रस्य वस्त्रहयष्टिग्रहणानन्तर
नेहाद्भूचेत॥ आमौञ्जीबंधनाद्विप्रः
क्षत्रियस्य धनुर्ग्रहात्॥ आप्रतोदग्रहा।
द्वैश्यः शूद्रो वस्त्रहयष्टिग्रहादिति॥ मौ।
ञ्जीबंधनात्पूर्वं तत्र मृतो ब्रह्मणादिः स
वर्णानां कर्मसम्भवे चानिमित्तं भवती
त्यर्थः॥ अतएवमासंत्तादीनां मौञ्जीबं।
धनाद्यनन्तरं रोहेकदानादिसं
स्काराः॥ संपूर्णमशौचं कर्तव्यम्॥ क्षत
विप्रं प्राप्य मनसुरदानानं तेन॥ त
त्रियस्तु नैव शूद्रवर्णस्य इतिनि।

न॥ह तदाह मनुः॥ इदानीमुक्तमु
पुत्रः स्यात्तेनैवेति॥ पश्चिमोत्तरहवे
त्वयवायानोहिनातुयः इति श्राद्धादि।
कर्मसु पुत्रैरभिः कार्यं॥ तद्रक्रमस्मृतिके
पुत्रे॥ पुत्रः पौत्रस्तत्पुत्रः पुत्रिकापु
त्रश्चैवेति॥ अत्र पौत्रेण तद्रप्रविधात
व्यं॥ तेन च याज्ञवल्क्येनोक्तं॥ औरसो
धर्मपत्नीजस्तत्समः पुत्रिकासुतः।
क्षेत्रजः क्षेत्रजातस्तु सगोत्रेणेतरेण
वा॥ गृहे प्रच्छन्न उत्पन्नो गूढजस्तु सुतः
स्मृतः॥ कानीनः कन्यकाजातो माता
महसुतः स्मृतः॥ अक्षतायां क्षता
यां वा जातः पौनर्भवः स्मृतः॥ दद्यान्मा
ता पिता वा यं स पुत्रो दत्तकः स्मृतः॥ क्री
तश्च ताभ्यां विक्रीतः कृत्रिमः स्यात्स्वयंकृ
तः॥ दत्तात्मा तु स्वयं दत्तो गर्भे विन्नः स
होढजः॥ उत्सृष्टो गृह्यते यस्तु सोऽपविद्धो
भवेत्सुतः॥ पिण्डदोंऽशहरश्चैषां पूर्वाभा
वे परः परः॥ सजातीयेष्वयं प्रोक्तस्तन
येषु मया विधिः॥ सवर्णेष्वयं विधा
नेजातलगेरसोमुख्ये॥ का
गौलिविवाहोद्भवर्णोऽपिजातोऽव
मात्लस्मसहृद्वोष्या॥ तत्राप्यपरहृका
कालादपौत्रकः॥ यथा॥ मातापित्रो
धुवैक्षिकमौरसः पुत्रः ऊर्ध्वं तदभावे पौ
त्रः॥ तदभावे प्रपौत्रः॥ तदभावे पुत्रिका
पुत्रः॥ पुत्रिकापुत्रस्त्वेद्धाविग्रहः।
पुत्रिकायाः पुत्रस्त्वेकः॥ यथा॥ अभ्रातृकां
प्रदास्यामि तुभ्यं कन्यामलंकृतां॥ अ
स्यां यो जायते पुत्रः स मे पुत्रो भविष्यतीति

379

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

...कवश्रुरूपरः॥ नहमावेकीतेः
नहमावेकृत्रिमः॥ नहमावेस्वयंदत्तः न
हमावेपवित्रः॥ नहमावेपत्नी॥ पत्न्यामा
वेपुरुजः॥ नहमावेकानीनेः॥ नहमा
वेपौनर्भवः॥ नहमावेसहोढजेः॥ धन
क्रीतवचनं॥ पत्राभावेत्पत्नीस्यात्तद
भावेसहोदरश्रुति॥ तत्रकानीनादिषु
त्रवात्तिरिक्तपुत्राभावेविषयं॥ कानी
ना हीनाचनगोपत्न्याभावेधिकारस्य
स्मृतिसंग्रहोक्तपौत्रीछत्वात्॥ कानीनस्तु
ढमस्तनपुनर्भूतनयात्सुले॥ पत्न्याभावे
धिकारेत्प्रवाल्याः स्मृत्वासिद्धेति॥
नहमावेधनहारीदौहित्रः॥ नहमावेसा
होदरोभ्राता॥ नहमावेतत्सुतः॥ नहमा
वेवैमात्रः॥ नहमावेतत्सुतः॥ नहमाव
पिता॥ नहमावेमाता॥ नहमावेस्नुषा॥
नहमावेभगिनीसोदरा॥ नहमावेवैमात्र
रा॥ नहमावेतत्सुतः॥ नहमावेसपिंडः॥
नहमावेषोडशः॥ नहमावेसकुल्यः॥ न
हमावेआचार्यः॥ शिष्यःसगोत्रोवाब्राह्मण
धनः॥ नहमावेनृपतिः॥ एवंज्ञातीयेन
पुरुषेणत्येतनह्यंकाव्येहेति॥ ग्र
न्थांकृतानि॥ नरहरिमुनिः॥ भावः पि
तृश्रुद्धीतन्त्रतयोरोहसः स्वतः॥ पेट
मधिकस्यकारमेवपवेकमाहतस्मृति
स्मृतिसंग्रहेपि॥ पुत्रः पौत्रस्तत्सुतः पु
त्रिकापुत्रपरवदनि॥ तथाच॥ पुत्रः कं
यात्मजः श्राद्धपत्नीचतस्मिन्निधीयो॥ प
त्न्यायस्यसौहित्रं वतनेभ्रातानाचतनस्य।
तः॥ तथा॥ भ्रातः सहोदरो भ्राता तत्सुता।

380

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हाराहितनस्मिन: ॥ ततस्तसोदरोभ्रात
तदभावेतनस्तन:श्रेति ॥ उत्तरबाध
वेपुत्रेपितृभ्राताघवापुत्रज: ॥ ततनीवा
घसकुल्यौनरूरदेवोन्पणामवेदिति ।
तव ॥ नचमाता नचपिता कुर्यात्सुतस्य
पैतृकं ॥ भातुरस्यतथाभ्राताभ्रातरंण
वकनीयसाभिनाहिवाकैमस्तापि
त्रो: पुत्रस्यौर्ध्वदैहिकंनिषेधात्तयो:स्व
घ्रात्रीयकार्याणीति चेन्मतं ॥ निषेधस्य
वाहितानुसस्याविषयत्वमेवस्वविदो ।
नौविषयत्वा ॥ तदाहबोधायन: ॥ यवि
ते कृतं कुर्यात्सपिंडीकरणंविना ॥ ना
प्युयात्वविपावगाद्या यान्पुसमाच
रेदिति ॥ कुर्यात्तौमाता पितरौविति प्रो
च: ॥ कात्यायनोपि ॥ अपुत्रेनापुत्रजावा ।
पिभ्रात: कुलस्यक्रिया ॥ ततस्तसो ।
दरस्तनहकामेवाक्रमशस्तयो: ॥ स्मृति ।
संग्रहेपि ॥ पत्नीभ्राताततस्तनोवापिता
मातापुत्रस्नुषा ॥ भगिनीभागिनेयस्तु
सपिंड:सोदकस्तथा ॥ असन्निधानेपूर्वे
षांउत्तरेपिंडदा:स्मृता इति ॥ मार्कंडे
य: ॥ साद्धुहरिश्चनवंधुसत्सर्वाभावेपिय ।
सुतस्तथा ॥ नामातामहस्तत:कुर्यादर ।
हितस्पित्रस्यौर्ध्वदैहिकमिति ॥ सर्वाभावेपि
नृपति: कारयेत्तस्यौर्ध्वकं तत: ॥ तज्जातीय
नै: सम्यग्दाहाद्या: सकलाक्रिया: ।
सर्वेषामेववर्णानांबांधवोनृपतिर्यत: ।
कर्तव्यत्वाणिपि ॥ सर्वाभावे स्त्रिय:कुर्यु:
स्वभर्तृणाममंत्रकमिति ॥ अत्रस्त्रिय इति
सपत्नीव्यतिरिक्ता: ॥ पत्नीतुधर्मविवा ।

381

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

...दोष ॥ नास्ति हि विवाहोढा ॥ मात
नीमासवर्णं ॥ न तस्य स्यान्नयः ॥ ये मे
विवाहे स्वजाया सा पत्नी पतिकीर्तिता
महाप्यकार्येषु सा या च ह्याऽधिधर्मक
र्मणि ते ॥ क्रयक्रीता तु या नारी सा प
त्नीभिधीयते ॥ न सा दैवे न पित्र्ये सा दा
सी तां तु नयो विदुरिति ॥ गोतमोपि ॥ पु
त्राभावे सपिंडा मातृसपिंडा ॥ शिष्याश्च
त्वंतरभावे ऋत्विगाचार्याविति ॥ वि
ष्णुगोपालविशेषवचनैः ॥ पूर्वोक्ता
मध्यमास्तु तेषां तत्र सक्रियाः ॥ विप्र
कायाः क्रियास्वेतास्तासामेव गुणात्पु
मे ॥ अग्निहरणात्मनो मध्ये न यादाश्चयः
क्रियास्स्मृताः ॥ नासवीतमध्यमामासि
मासे कोहिह्यसहिताः ॥ प्रेतपिंडवमा
पत्रसपिंडीकरणादत्त ॥ क्रियते याकि
याः पिण्याः पांचासेतेनाह पोच्या याइति ॥
होति येत्वेनरसे ककार्यास्वनानयेत ।
मति ॥ सपत्राणायाकियाः सपत्नी पुत्र
धैहि के कुर्यात् ॥ न तस्य सन्नु ॥ वृद्धा
नीमके पत्नीनामेकाचेत्पुत्रिणी भवे
त् ॥ ताः सर्वास्तेन पुत्रेण प्राह पुत्रव
तीर्मनुरिति ॥ कात्यायनोऽपि ॥ विरुद्धादे
रसः पुत्रो जनन्याऽऽर्धदेहिकं ॥ तदभावे
सपत्नीजः तेत्रजाद्यास्तथाऽहृताः ॥ तेषा
मभावे स्वपतिस्तदभावे सपिंडजा इति ॥
शातातपि ॥ भार्यापिंडं पतिर्दद्याद्भर्तुर्भा
र्या तथैव च ॥ स्वस्रादेश्च स्वसा चैव त
दभावे च सोदरः इति ॥ सपिंडीवा कार्या
त ॥ तदुक्तं स्मृत्यर्थसारे ॥ पुत्राभावे स्त्री।

382

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धोरपत्नीसपत्नश्चेति॥ अत्र सर्वत्रा
श्रोहेनासंनिधानं वाच्यं ते॥ नतावनाश्र
मात्रमसंनिधानेऽशौतेर्विध्यत्वाभव
ति॥ अनाथाप्रवासावधिकाविशिष्टेश
नवस्थितेसंनिमन्नस्यदाहादिकर्मलो
पएवस्यात्॥ तथा च स्मृति॥ प्रवसतोऽग्नेः॥
समारोपेवाग्निहितोयोदिवाप्रमान॥ प्र
वृत्तेनेत्रेयोऽस्यात्तस्मात्पत्नीसमापये
दितिवचनमप्यत्रपक्षेस्यात्॥ अनएव
भावस्तत्रसंनिधानात्पौर्वीकार्यः॥ अ
नुपनीतोऽपिपुत्रः कृतहस्तत्वेतेनत्वे।
मिद्यानुसमन्त्रकंकुर्यात्॥ अतएवकर्मे।
लवन्यानयोज्यात॥ धर्मपत्नीचपत्तु
रेवकुर्यात्॥ वर्षत्रयादूर्ध्वमन्त्रकन्तेस्तो।
पसर्वमन्त्रवत्कुर्यात्॥ तत्रत्रमैत।
अनुपनीतः कुर्वीतमन्त्रवर्जितंमेधि
कं॥ अपत्नीकः कृतचूडः स्याद्यदिवस्या।
त्रिवार्षिकः॥ नत्र॥ कृतचूडस्तुकुर्वीत।
पुत्रपौत्रकमेवत॥ अकृतकार्यंचकुर्वी
तद्वैवकार्यमकार्यंयेन॥ नपोहकत्तत्त्व।
ऽनुपनीतः पितृश्राद्धसमाचरेत्॥ ते
दाश्रैवत्वपाकार्यवैराग्यराणपसावपी
तिव्यात्रसत्वावचनाभावमनुपनीत।
स्यमत्राभ्यासनिषिद्धान्कर्थकृतत्वेस्य
मन्त्रवत्त्वेनसमेधिकाधिकारइतिचेत्स
त्य॥ पानहूवनहूयग्रहणमवबोधकतत्वे
उत्सन्ते विघ्नयं॥ तथा च मनुः॥ नह्यस्मि
न्युज्यते कर्मकिंचिदामौञ्जिबन्धना।
त्॥ नाभिव्याहारयेद्ब्रह्मस्वधानिनयना।
नाट्ठेतेदति स्वधानिनयनं प्रेतकर्म॥ नव

383

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

केनचबालकपुत्रेणदन्तजाताधिकाभि
भिः समर्थैः सर्वमेवत्रिकिंनविधियेनेति
चेत्सन्यसतिपुत्रेनिषेधात् ॥ तथाचऋ
ष्यशृंगः पुत्रेषुवर्तमानेषुनान्यंवैकार
येत्स्वधात् ॥ शुनकलोपस्यपुत्रस्यश्राद्धे
कुर्यात्सनाभिकइति ॥ ब्रह्मचार्यपिमा
तापित्राचार्योपाध्यायानामौर्ध्वदेहिकं
कुर्यात् ॥ किंतु स्वनकालेनजातेनसूत
किभिः सहनवसेत् ॥ ततस्तस्याहव
ल्यः ॥ आचार्यपित्रुपाध्यायान्निर्हृत्या
पिव्रतीव्रती ॥ शाकटायनेनापंनीयाज्ञ
वते: सहसंवसेनइति ॥ शाकटायनमरणो
वाद्र ॥ मातामहयोर्निर्हृत्यसप्तरात्र ।
नव्रह्मचारिणः कृच्छ्रपरितापनवे
ति ॥ इहकस्मितिपिंडदानमन्यपयन्ते ता
मत्तवरोपि ॥ श्रोत्रियेन्नोदककुर्याशवन
स्यसमानुपनात् ॥ ममामवरक्षेके कर्तवा
श्रित्रगणविस्तुपति ॥ क्लीवाचश्रपि ।
क्रियार्हानभवति ॥ हूहमनुः ॥ क्लीवा
द्यानोदकंकुर्युस्तेनाप्राणेविधिवल:
गर्भभर्तृद्रुहश्चैवसरापश्चैवयोपित
इति ॥ स्त्रीणांकाधिकाविभिः पाषण्डा
हीनामौर्ध्वदेहिकंनकार्यं ॥ नराष्टया ।
हिवल्कः ॥ पाषण्डमनाश्रितास्तेनाश ।
स्नेहः कामगादिकाः ॥ अंगरापयज्ञान्म
घातिन्योनाशौचोदकभाजनाइति ॥
पाषण्डंवेदबाह्यलत्तलं ॥ अधिकारस
न्याश्रमविशेषविरहितामनाश्रिताः ॥ ब्रा
ह्मणक्षत्रियवातिरिक्तानिमज्ज्यह्नविल
सेनाः ॥ एवमादिमरणाशौचनिमित्त

नाभावात्मापि देहे कारिन्नकनेया।
त्यर्थः॥ श्रीगिनाम्॥ चतुलाङ्केकान्तपेन
द्रालप्राणे दे युत्नाहंषि॥ हंब्रिम्भसुप्रमुभि
षमवणपापकिंलिणं॥ मन्चरयि॥ हया
नेकरजातानां प्रवृज्याम्चतिहताः॥ श्रा
त्मनत्वारोनो दैवं निवर्त्ते तोदककिये।
ति॥ ग्रात्मत्वानायुविशेषयोल मनोत्मः
प्रायानाशेकश्वत्मागिवयोह्यनश्रपत
नेवज्ञाताभिति॥ पतेषाणुवीरे गत्वादिइ।
णप्ननैलत्वावर्णननेरनारायणवलिक्
त्वासर्वमोर्धेदेहिकेन्चात्र॥ नउके॥ श्रान
नत्यागेनानाक्रियतितानालयाक्रिया
नेवामपिलप्राणेगानोयमेस्यापनमत
मिति॥ वहिविशन्मवेपि॥ गोप्रास्मणडू।
नानोचयतितानानलेवेद्यच॥ ऊर्ध्वं संवत्सरा
त्कुर्तुः सर्वमेवार्धदेहिकमिति॥ हृदया।
सवत्सोपि॥ नारायणवलिः कार्यो लो।
कगर्हाभयान्नरैः॥ तथाने वाभवेद्भाव
नात्मघातिमवेन्मनविति॥ श्रापघाति
त्वनात्यापानुस्मेवहि गुणांप्राथ्यिते।
विधायनारायणवलिकत्वासंवत्सरादे
वोर्ध्वकार्य अन्यथाकर्मलोपः प्रसक्ते
त इत्यहितात्रनानिविहितमार्गेण सूतस्या
विद्यौर्धेकिरसाविशेषकतः॥ वैनानेष
विपत्त्यं आवसंहृत्न्याषं॥ पात्राणि
निवेद्रस्त्री पजमानेव्याप्तनेइति॥ श्रा
हिताग्निज्ञातस्याविधेपत्रपराशरः॥ विरा
लेनत्वाघाकेनामिर्विषेहतोयदि॥ श्रा
हिताग्निघृतौवितौविशेषणात्मघातकः
दहनत्रात्मत्वाविषोलोकागोमत्रवजि।

385

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

...यंकेवपुत्रस्यपरः ॥ ...
नष्टमातृ... ॥ दायग्रहणाभावेऽपि
दम्पत्योरेकक्रिया ॥ ...
पुत्रादेरभावे रूपकाधिकारिभिरिह प्रकार
श्राद्धक्रियाकार्या ॥ तदाह विष्णुः मिश्रा
पत्नीवा ॥ पुत्रः पितुर्विनाभावेऽपि रस्या
दिति ॥ मार्कंडेयः ॥ पुत्राभावे च तत्सुतः
पत्नी माता पिता तथा ॥ विनाभावेऽपि
सपुत्रकोवानोर्धहरिकोमिति ॥ अथवा
ह्यतोविष्णुयोर्विशेषः ॥ स्मृत्यंतरे मार्कंडेयः
महस्तु इनतोपिड श्राद्धादेपाकेयथाकार
येकाकर्षे क्व च भवति ॥ तन्मार्गे राजक
ल्पिके रंभर्तृनिप्रतेषसंचयं ॥ तत्रापीदै
ति श्रुत्वा रोहणपदेनहारीतेन पालीति
कृतोरक्षीतोयथामात्रकं योसिकेचैवय
ज्ञकन्याप्रदीयते ॥ कुलत्रयं पुनानाभा म
तोरंधावगमाबोति इति ॥ प्रावोविभिरसाव
पि ॥ तिस्रोकोव्योर्धकोदीवयानिलोमा
निमातृष ॥ तावत्कालं वसेत्स्वर्गे भर्त्रा च
याऽनुगच्छतीति ॥ तथा च ॥ व्यालग्राहीय
थासर्पं बिलादुद्धरते बलात् ॥ तद्वद्भर्तार
मादाय दिवं याति तपोबलात् ॥ तत्र सा भ
र्तृपरमा स्तूयमानाप्सरोगणैः ॥ क्रीडते प
तिना सार्धं यावदिंद्राश्चतुर्दशेति ॥ हारी
तोऽपि ॥ मृते भर्तरि या नारी समारोहेद्धुता
शनं ॥ सारुंधतीसमाचारा स्वर्गलोके म
हीयते ॥ अंगिराः ॥ संहनभावेऽपि तु भर्तुः
कारणात्स्त्रीणां वियोगमहतिकालम् ।
तोसाप्रभावत्तिमितेगलेवानाद्भिरवेश्म
रूपवीक्ति गौरेः ॥ यावन्नाग्नौ दहेद्देहं मृते
पत्यौ पतिव्रता ॥ तावन्न मुच्यते नारी स्त्रीश
रीरात्कथंचन ॥ तथा ॥ ब्रह्मघ्नो वा कृतघ्नो

386

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नाभिश्चैवोर्चा भवेत्त्यक्तिः ॥ पुनातिवध
नारीन माशय शूलान्वया ॥ श्रेयंचसर्वेषा
लीणांसर्वाभि लोनोमवालापत्यानामा
वेश्याले साधारणोधर्मः ॥ नव ॥ हतान्नग
मननास्तिब्राह्मणापात्रस्मशासनात ॥ या
लोब्राह्मणजातीयाशूद्रेपतिमनुव्रजे।
त ॥ सास्वर्गमात्मघातेननात्मानंनपति
मुचनस्त्वेवभोहिवाकेशुराणपणनुग
मनन्तिधर्मांक्षयंसर्वेसहीणसाधारण
धर्मांत ॥ सत्य ॥ निषेधस्पृष्टधर्मवित्या
गहराणविषयवानत ॥ नडक्षेत्रनमा
हण्योकिंतिसमाकस्यवेविप्राणंतुमहे।
ति शनास्यवेवनारीनासोधर्मोयप
य : स्मृतः इति ॥ पातिव्रतानोन्नविप्राद
हेषांनलेष्ठतेपत्योब्राह्मणानलेषस्य।
मिः सर्वासनानेनभवत्येव ॥ सतमा
सस्यभावेविपत्तिपाउकाहिकेचिन्न
किमपिस्त्रीणांचिन्त्राभावेपिभवेत
इत्यकृत्यनशनानाहिति ॥ नयान्वावे
श्रुणिविधिः स्मृत्यर्थसावेदतो ॥ धन्या।
रांस्त्रासवमतिस्त्रीणांपतिव्रतानांनाथ
श्रुतो ॥ आत्मनोभर्तुश्चसर्वपापक्षय
हेनरकोनाशणावर्षेनकदाचिदंमोह
देव ॥ सुगोनेवाणुणारायणघर्षेषुग्रामि
ग्रांतिसर्वसर्वसपापसदेव ॥ सुखदाति।
ग्राधयवनाशकरमित्याहित्यपुराण
रक्तासबुधयते ॥ नचान्याहोह्ननागाभि
णपानिषेधः ॥ शास्त्रणगाभिणपात्रस
लिहत्यासमंतत्रियाहिंगाभिणपाःस्त्र
त्रियाहिंवधपाव ॥ सर्वेषाणियाःपत्या

387

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

...केवपुत्र... चिन्त्या गौरह्मणकार्यं ॥ ब्राह्मण
एकपदचिन्त्या गौरहमेव ॥ न ह्यथ चिन्त्या
गौरह ॥ तत्रियाद्धि ह्येगोमनीदेहंतेन ।
मतेष्ठ्य चिन्त्या गौरह्मणमपि घ्यसंबन्धो
या: हृद्य चिन्त्या गौरह्मणमपि कार्यं ॥ अथ वै
गौरह्मणक विद्यामीति स कल्पयति नम
कल्पसर्वप्रयोगाङ्गीयते ॥ यद्वा सक ।
ल्पयोगाङ्गते इस्मानेमतीविते ना
त्मिप्रविशंति ॥ चितिप्रमाणं ... मात्र
हि चलिताप्रजापत्ये चैन ॥ सबीलम
गोचविद्गीघल्लवेकोक्त: ॥ यथा ॥ की...
रूपमृगणमेकस्मिन्ऽनकोलपोसम
र्णानासमानधर्मगणपत्नात्सहूद्रह
नकला ॥ डहकपिंडोहिके पालिमूर्वकला
त्याघ्नात्सपिंडनकार्यं ॥ अससपीना
समानधर्मा: नापत्नीना ...
डहकपिंडजो हूपूर्वहृथमावपितोम ।
हृपुत्रयो: सवर्णयो: समानधर्मयो: ।
कपालास्मिनाऽद्ऽनसहृवासाऽड्ड ।
कादिकजोहूपूर्वहृथगोवति ॥ वेद्वा ।
हिवंशास्सपिंडहितानिस्पणमनुना
विष्टोछउक्त: ॥ अस्सपिंडहितप्रतविप्रो
निर्हत्य बंधुवत् ॥ विशुद्धं तियितं येन
मातरामाश्ववाधवान् ॥ यदितद्धृदेव ।
संत ॥ तथा ॥ यदाब्रमातिनेत्रारहोरेन
विशुद्धति ॥ अंमस्त्रमद्रेवनचेरस्सि ।
देवसंत ॥ पलस्नानालोयविधयं ॥ विना
लोयविधयेत ॥ गौतमेन विशेषोभिहि
त: ॥ अवयंचेदद्वय: पूर्ववर्णाभूपसरशोम
वीवापरे तच्छादोक्त मोशोचमिति ॥ अ

388

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्पुनाता वा स्नात्स्यात्वेष्पष्टो नव
मं स्कारे विशेषउक्तः॥ आश्वलायन्या
वर्णोत्तानकमेलिकराचन॥ कामाहो
भाद्यया न्मोत्संकल्पात्तत्रानिल्याग्ने
न॥ विप्राणां प्रियाहिसी प्रवृत्ताच्चैव
प्रसवाहारउक्तं॥ वरूकेतले च॥ पुत्राके
वेतिविषमासतविंडिंपू इत्यो न्तः॥ पुरो
हितोपसमीवा विद्यमानसपिंडस्यवा
सवन्त्यभ्युक्तोपि चैकवाराहरिसंस्का
रं कुर्वन्॥ तेउकेवस्त्रपुरणो॥ रक्तेरात्तः।
स्तापिंडनेनिवृत्पुत्रपुरोहितः॥ मंत्रीवा न
रयोव्यतिरीतोपस्थानकरोतिसः॥ प्राना
थीनरद्येति निश्चापमानुरूपस्याप्यवः॥ विम
नेविभक्ताबा॥ केशवपकौरवपुत्राय
सविरंयानप्रथमादिवसोपक्रांतनेवपि
लोकनेनाहिकाः क्रियाः कार्याः॥ त
इकेरस्यपरिपिंडे॥ प्रसगोत्रः सगोत्रो
वायदिस्त्रीयदिवापुमान्॥ प्रथमेहनि
यो दद्यात्सदशाहं समापयेदिति॥ तथा
प्रथमेहनियद्व्याद्दशाहंयावत्तेनेव।
पिंडोदयः॥ तदाह शुनः पुच्छः॥ प्रालि
नाम कमभि वा पिपासे कवाचय निवपेत
प्रथमेहनिय द्रव्यं तेन देवसहदशाहं कमि
ति॥ विलक्ष्य मार्गेपि॥ प्रसगोत्रः सगोत्रो
वा यः कश्चनार्थे यपि वा प्रथमेहनि यो
दद्यात् स दशाहं समापयेत्॥ दशाहान्ते।
मंपव॥ प्रथमेहनियद्व्यं दशाहान्तेन च।
तद्वत्तहतिकर्तव्यम्... चतदेवपत्न्या।
प्रथमदिने॥ दशाहान्ते तदेव मेकादशाहादि
केसविहितप्राद्धेनैवकार्यं॥ नरमा।

389

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

...म पक्वान्नेन च ॥ सपिण्डीकरणं च
संविहितैर्मातापितृज्येष्ठैर्नैव ग्रहणं कार्यं ।
मित्यधिकारिणः ३ कं ॥ संस्कारवि ।
धिस्तत्रावान्तरभेदेनोभयनान्तोक्तः ।
स च स्वस्वसूत्रोक्तप्रयोगः तत्र स्तत ।
स्मार्त्तोव्यवहारः कार्यः । वपनं प्रातः ।
कुर्यात् ॥ तदुक्तं स्मृतिसंग्रहे ॥ बाल्ये च
मातापितृदानेन कृतावपनं विहितं ॥ वपं
नेनमित्तेनात्रो यत्र तदावपनं क्रियेति ।
यत्र नियमवचनं ॥ सध्यायां यावत्तेषामा
त्रौरहः पाथेयकर्म च ॥ नवश्राद्धं च
कुर्यात्कृते निष्फलतां व्रजेत् ॥ पूर्वेद्यु ।
दिनस्ततस्यालस्यादिनान्तशोत्रासोज ।
कार्यः इत्येव पूर्वं ॥ वपनं तु गुरुनिपाते ।
स्त्वनीतेन द्वितीयतृतीयपंचमसप्तमे ।
वा कुर्यात् ॥ स्तनकाले स्तनकेन चतुर्थे
न कुर्यात् ॥ तदुक्तं ॥ गार्ग्यायां भास्करेहे
त्रैमासान् पितृगुरुस्तथे ॥ आधानकालेमे
मेच वपने सप्तमस्तते ॥ अत्र गुरुमेत्रोप
देष्टा विधोपदेष्टा च ॥ तथा च ॥ द्वितीये ।
द्गतिकते श्रचतुर्कमे प्रयत्नतः । तृतीय
पंचमे वापि सप्तमे वा प्रयत्नतः इति ॥ अ
ग्रहितेष्वादिविकल्पः ॥ सर्वत्र प्रवेशास
भेवं उत्तरोत्तरकर्मैक्यमित्यपवर्गाः ।
आपस्तम्बः ॥ अनुभाविनां च परिवाप
नमिति ॥ अनुभाविनो ज्ञानवयसः संपुत्र
पुत्रौ स्त्रीति पारिजाते ॥ मिताक्षरायां तो
ऽतएवानुभाविनामिति ॥ अनुभाविनः पु ।
त्राधिकं के ॥ अतस्त्वादेशाचारानुसारेण
व्यवस्थापनीयं ॥ देवलोपि ॥ दंग्रामेरेन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सप्रामे स्त्राने ग्रामाद्बहिर्भवन ॥ तन्नु
ज्यानिवासे सिके प्रप्रक्रान्तवाविनि
ति ॥ अत्र च ग्रामे द्वे नीति सूतनकानेपल।
ता ॥ केश प्रश्नकृत्वा गाश्च सूतकान्ते।
कर्तव्यः ॥ वसत्यागामासं च यो न्यूनक
न कर्तव्यं त्वप्रनीयकृते ॥ वा समासाच सूत।
त्वा तेत्यागः ॥ एकत्रं तैरभिहितः ॥ अतेव
वासं सान्त्याणां इति । अपेशे च समपिंडा।
नीति समा च समवनोक्ताः ॥ सूतावलव
णान्नास्त्रीनिमत्ते गृह्यते इत्याह ॥ मासा।
श्रेति च ना श्रीया संपत्तु स्वह पृक्वश्चेय
ति ॥ क्रीतलभोपि अथः शय्या संनोज्ञास
वा विनाप्तम वैश्यति ॥ याज्ञवल्क्योपि ॥
क्रीतलब्धा प्राणानाभूमौ स्वयं गृहस्ते शय्या।
स्थिता ॥ क्रीतलब्धा शयनं विनियमो हि
न श्रेयत्वमेव ॥ तथाच वसिष्ठः ॥ रु
द्रान्तजिनां च प्रतरे यन्त्रसमनस्त्रतस्त्रा
सीत ॥ क्रीतो न्यये न वा वर्तेरन ॥ अत्र
क्रीतस्वनस्मृते इति क्रीतलब्धाभावे।
न तु नैकार्थे ॥ वचनाद्याज्ञवल्क्यावच
न विरोधः स्यात् ॥ य बहात्ये क्रीतल।
ब्धाभावे प्रान्तिनियमः सति संभवे।
कार्यः ॥ ब्रह्मचलायाः सूतिकायाः स्ता
याः शुद्धिविधायकं स्मृतिसंस्कारं ऊ
यीत ॥ शुद्धिप्रकारं स्मृतितत्त्वे लराया।
सूत ॥ इति कश्यपो स्ततायोन कथं क
वैतिथ्यादिके ॥ कुंभं सलिलमालाय प
वगव्यं न यथैव च ॥ प्राणानि शिरोभिमस्याः पे
वा चाशुद्धिलभेनन ॥ तेनैव स्नानपीय
नावरा रेजयोरुथ्यविधिः ॥ पंचभिः

391

...प्यवानगच्छेत्प्रेतोसकृज्वला ॥ स्व
नमहताहुताशेनदह्येद्धियथाविधिकै ॥ गाव
श्रास्त्रेणवर्वनेन ॥ बालिनायाश्चजस्वला
याः स्त्रीनाशमौशुचिप्रकारश्चोशन
मौक्तः ॥ कन्याभिभूतनाश्चानारीरजसाच
परिप्लुता ॥ कथंतस्याभवेच्छुद्धिः शुचि
स्यात्केनकर्मणा ॥ चतुर्थेदिवसेस्नाता
शुद्धेद्व्यांतराशिया ॥ तासचैलांत्व
गास्याप्यस्नातास्नानाश्रुतःस्नापयेत ।
दशाहात्रशुद्धोवापाचमेच्छुर्गृह्णुवः
शतेचवासमास्तानःनलःश्रुणुभेदे
स ॥ दृष्ट्वाऽस्यातनोहानेश्वयंदरनवि
शुद्धानि ॥ अत्रसंदेहौविज्ञाखानेते ॥ प
योनसिनास्वराया ॥ अशुभंद्वेयस्नतेर्थ्व
तिस्नातानारीरजस्वला ॥ हेवाकमौक्ति ।
षिचेवंपचमेहनिस्पृशति ॥ पंचमीश
मीतिरजोनिवृत्तिकालेपलवाण ॥ श्र
त्रिणाचविशेषेणकम ॥ रजस्वलायदि ।
स्नानाप्रेतेववरजस्वला ॥ अस्यास्नाहि ।
नारवीगाशुचिवेनविवेत ॥ पकोवा ।
विपात्रेवीनाकोसस्थानतोत्वं ॥ वि
प्रात्मस्नलनैवेशुदितवमश्चवभवेत
यवस्त्रात्तरवचन ॥ वनर्हपर्विनाद
वागाशुचिवनविघयेतस्मातनत्वानाद
नयसुलिहनमणानाभिप्राप्यमिति ।
प्रासमिवकेपौतसमाप्यप्रहतनविधी
यते ॥ अथपंचकशृतारविधिः ॥ नन्दके
गारुडपुराणे ॥ धायोक्तबाधनिष्ठुर्धेमे
नवलत्रपंचक ॥ विवर्ज्यतेसदाश्रुमा
शुभंसर्वथाभवेत ॥ पंचकोनतरका ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यैकर्तव्यं सर्वैर्यत्नतः ॥ प्रज्ञानां सा
नस्य सततापोसु पजायते ॥ गृहस्थानिम
वेन स्यश्रद्धेवं स्वसुतस्त्रियः ॥ अथवा
स्वस्य मध्येन दारास्त्वविधिपूर्वकः ॥ क्रि
यते मातुर्धानान मद्यः प्राकृतिकाः ला
त ॥ स्त्रियः नियमितैः कार्यं मेव स्ववि
धिपूर्वकैः ॥ सावस्यावसमीपेन देश
याः सुतला लया ॥ दर्भमयात्स्वचला
स्य स्वसंगत्रा भे मेवितः ॥ ततोवाहः ।
प्रकृते वा लेस्व पुत्तलकैः सह ॥ सूनक
मेवतार्थे चैः कार्यं पालिकपो ह्विका ॥ प
ने चैषु प्रेतो यः सोन मालिलसनेनरः ॥
तिलावचरि संपचनद्व हस्योह्यतेदं दं
न ॥ विप्राणां दीयते दान सर्वविद्यविन
स्वनिमिति ॥ उपनीतस्तुता प्रोचे वस्थि
सचयने कृते सति स्यात्रावकालविभा
गे नत्रिर्गोविनास्ते नास्य प्रोमिचावितवर्णं
सान त्वरसिंचः ॥ अनुपनीतविषयस्व
स्थिसंचयनाभावेपिस्व प्रोचं विभागा
स्य ग्रहे ॥ नतोडूवलः ॥ स्वप्रोवचना
लाद्विजेत्यस्य प्रोन ते विभागतः ॥ अष्ट
विरह त्व वि संपातायथा शास्वय बोद्धि।
तेमिति ॥ अस्थि संचयनेच श्रद्धा मादि दिने
शुकार्ये ॥ नत्राह संवर्तः ॥ प्रथमे द्वितीतो
ये त्रि समसेन वमेतथा ॥ अस्थिसंचयन
कार्यदिने तत्क्लोत्रैतैः सह ॥ कैच ।
द्वितीयेवस्थिसंचयः स्तलका ॥ वैसवस्व
वेनर्था दिवसे स्नुहस्यालके विधिनास्थि
संचयनेकार्यं ॥ अष्टागगावसिष्ठे पुर
ति ॥ प्रेतोन्यतमेचदिवसे स्वग्रास्योक्तव

393

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नास्य सम्यक्त्वं कार्यं॥ उपशान्तेन सम्यक्
त्वमार्गणां सम्यग्दृष्टेः पाते न सति त्रिविधा
भविष्यत्सु सम्यक्त्वेषु स्थितः॥ अथ साधूनो च
तेभ्य ये हि देशधर्मं प्रतिपद्यते॥ सम्यक्त्व।
वो हि केपि ज्ञानान्न समुत्र सम्यक्त्वे हि ति
श्रयोच समकालि प्रथमितिशेषः॥ कः।
क्षमो योपि॥ श्रयो च सम्यक्त्वदर्शो यदि
स्यात्त्वं वर्णितो॥ सम्यक्त्वं प्रवर्तते न स्य
क्रियो हि त्यागः द्वैतमः॥ पदीर्न सिद्धय
श्रावकश्चेव वक्तव्य प्रतिपद्येत केवकि
या॥ हिंसादेवल तुर्याणः पुनः श्रावकस्य
सूत्रे शक्ति॥ एकः श्रावको दीनबद्धः॥ हि
नो योऽभावो हि हिंसामान्॥ विद्यवयपवेम।
धर्तः श्रावकः॥ मानयिन विवर्यो विद्यो।
गालवेत्कः॥ पिशोरा वो वमये न यदि
दर्पः समाप्येत॥ तावन्मे वा नवेन यदर्थे
वशोचाहात्पात्रि मित्रियन ये न मवचनं॥
श्रुतदर्पणादिदर्शनेन ते सर्वं समापयेल
मिश्री कुत्सया वर्षा वे दृष्टिर्भि उज्जलीनि
लीनेनि॥ पत्त आहात्य वैदर्पीपानवि
वयेः॥ पानिजाते न वीनमवचनं॥ पिवे।
विषश्चन्माय हात्य दंमित्रि गालवववचन
स्याद्धेः॥ पिश्चा पो च मये दर्पीपाते सम्मा
मि कृतवर्णेन स्नो वित्ता॥ किं तु लान्या श्रो
चमये दत्तिपिवलं श्यति रित्क सपिउ विष
येत्रि वमाधिमित॥ नव गालववचनेय
हि पद्धविना श्री मे व सम्मात्र नियमार्थेनस
महात्य दंमिति विश्वेषो नाभिधीयते वि
धायनियमेनाभिदधीते॥ अतश्चापि दृवि
वयेऽपहात्य दर्पीपाते पिझाहिसमाप्तिः

394

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शुक्रादिसूत्रैनृहशापानुध्यावहथ॥
ओद्रिकार्यैमिति गालवमौनमवचनं।
योच्यबहायैवाविरोधोयुक्तः॥ यद्वान
म्नेव भवतवापिनोविहवैनियामक सि।
तिगालवचवचनस्यानियामकत्व मगीह
त्या॥ नच्याणितु स्मृतौलोके विहितध्य
कपणस्यनैवितिन्यायेनशिष्टाचारा।
भावाञ्चालवचचनस्यवाधसूत्रत्वात्वाचि
शाचारप्रामाण्यमेवप्रामाण्य॥ यद्वात्र
ऐहणीपुत्रेपिलिविषयेप्युत्तनत्स्य
मतिभेदेहितद्गालवचनविषयस्मिन्देशो
त्रत्रियमस्यापिदर्शपातेस्मर्हणपायाञ्चय
येतथाजानुनिषिध्यानबीतिलहिदयशे
नमवचननिमितिदेशाचारभेदाद्ययवस्था
कल्पनीयेतिसर्वमनवद्य॥ सर्वदेशका
विषयोनकोपिहव्यदूत्यस्यपुनर्विधानस्य
कायच्चानभिहितानिषिद्ध॥ स्मृत्यर्थ।
सारेप्युक्तः॥ श्रवणेचोत्तरेनस्यात्पुनःसंस्क
रोनहवातथभयोरिनसंभवेधूषांका
लानले॥ अहकृतप्रेतकायेतुदिनपोच्यं।
भव॥ संस्कारात्पूर्वंप्रेतकार्येउक्तनियमः
कालःप्रोक्तवान्॥ तत्रापिकृतपक्षःत्र।
यातू॥ तत्रापिनेतात्रयोदशीचतुर्दशीचं
वर्जयेत्॥ शुक्रपूर्णेसंभवारोवर्ज्या॥ न
लेवैयप्रभवगीदानोनकोस्त्रशुष्णामवा॥ य
निरहापंचकत्रिपुष्करागेवातिदक्षणि
सर्वथावर्ज्याणि॥ धनोपानपरिवर्जेद
धनोश्वयोनेविहितकर्मणेवन्स्ययम।
श्रादरश्रास्थिनेत्र्वदेवातिसंघः॥ रोहिणी
पुनर्वसुस्त्रवर्णनतोयोचित्राविशाखावरा।

395

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

...केवउग्रह्यपरः ॥ ...
...नहमा... ...नरगाधिदिवसकागाणइ

ह्यानिसमभवोवर्ज्यानि ॥ पिण्डान्यतुह्यानि
ग्रासानि ॥ सर्वेषांहिनसूत्रसमवेना ।
तिउच्छावास्यनन्नव्रत्यास्यमित्यधिकारि
सद्रूपंनुत्रपौरानीसुपनीताईन्तावृत्ति
मेहेनाशौचकालोनिवृत्यते ॥ ब्राह्मणाद
योमनुराह ॥ दशाहंशावमाशौचंसपि
ण्डेषुविधीयते ॥ जननेप्येवमेवस्यान्निपु
णांशुद्धिमिच्छतांमितिमनस्यत्रोसंनामस्त्रा
यत्नेनविधोवृत्त ॥ दाहपाणावेमामस्त्रा
गुरुष्वहानासमनेवर्जयेदिति ॥ मस्रागुरु
न्यत्वाच्चैतेनैवोक्त ॥ उत्राग्नेत्याद्येविद्या
ग्रंथ्यात्रहृयिनाहंतितेयादिस्याखिलमप्र
ह्मणकंविति ॥ नचियादिविधेयोज्ञस्व ।
ल्पाः ॥ नत्रस्पदाहपाणास्पानिवेशः ॥ पंच
दशावत ॥ त्रिपाहिनानिस्पाहस्पनहर्षस्पा
यवतिनः ॥ पाकयज्ञादिहनगृहस्थवाहिवन
स्यस्यइस्पुमामासार्धपलमापोचे ॥ इत्युम
शौचानन्तरंकृतक्रियाश्चाललणावयउद
हिस्पृहाणुस्पति ॥ नदास्पनत ॥ विप्रस्पु
प्राणःस्पृहादविचेपावस्नाहिके ॥ वेपणः
प्रतोस्पत्वावायश्विस्पृडःकृतक्रियः ॥ कृ
तक्रियःकृतस्नानंस्तावधः ॥ स्पदवर्णस्प ।
सृकाशौचसर्वेसमानं ॥ यदिस्पनोधिर
केकालविधायकानिवाक्यानिक्ताविद्र
वेशक्तान्यापंस्नायहिबयवेनवारेस्पी
चान्तोवाच्चवस्थापनीयानि ॥ दद्स्पृपा
रादिसांधौरस्याउनेकालमधेनात्रा ।
दवीस्नातशौचंवतोहिनप्रस्तुलोवत्रेधाव
भज्यप्रथममामादइर्शवैसैशौचंवतदास्म

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वटेन प्रभूतेन त्या ॥ तस्यादथात्मा-
न प्रभूतेनोपपे ॥ तदाहक प्रयपः ॥ ऽहे
तेन यथा तस्यैवा वीणाह प्रयतेन जः ॥ न
त नैव विपत्तिं वायस्याह तत्स्य प्रावैरी
श्रयता वावधिः कालः तत्केन विधी
यते ॥ तत्कस्य शोचोपलक्षणं तथा।
गति[illegible] योत्रिभागात्रो भागो संवपव।
त ॥ [illegible] प्रभातेन प्रमेते तत्तत
केशेलि ॥ [illegible] ॥ न ज्ञावव प्रश्चात्नैत्तदे
वोस्तत्तेके ॥ एवमेव हिनप्राप्यायावद्रो
दत्तेन वैशेते ॥ अत्रैहे प्राचावतेनाव
स्यांकनवनेशा ॥ अत्र शोचप्रयस्तच्छ्रका
गादिनिशाकः ॥ सद्यः शोचं तत्थेकाह
स्यानस्वत्वत्न्य[illegible] ॥ वं हह पाह्वहप्रा
श्नप्रवलाभामतत्तथैवच ॥ मयमातेन।
याचात्मेह प्राप चातत्त तत्केत्रैति ॥ अत्र
तेपत्नीश्राद्युणादि वर्णाविषयाउक्ताः।
सर्वाणांतिकं विषयत्वहत्तणोक्तः ॥ अ।
त्तानां वापि इत्वावात्र तत्त्वात्तातिपोव
श ॥ एवविधस्य विषयस्य सवेतात तकेम
येत ॥ त्यायितस्य कदंशस्य त्रणामुतस्य
सर्वेषां क्रियमाहीनस्य स्याविस्पत्तीजित
स्यविशुद्धतः ॥ अत्र तनाव्रक्षे वितस्यपरी
धीनस्यानिश्चप्राः ॥ अत्रात्मानाहितस्य
मम्यातत्तत्केसवेदेति ॥ अत्र सद्यः श्रा
वकौतदेनोयाहव लक्षेनोक्तं ॥ इह वि
श्वाहोदितानांचयाति यक समकुतेता
मत्रिशुतित्रमचारिणात्रअलंबितातथा
दानेयतेविवाहेच सत्रामेराष्ट्रविसवे ॥
श्रापदापिचकष्टेयां सद्यः शोचं विधीय

बवेत्यकुर्व॥ स्त्रासजावदत्तासभूतोः करदेवास्य
नदर॥
पृष्ठाः॥ हे स्वरा संस्कृताहेति ता॥ या
हि यके संकुर्वन्तामिति विधाना ह्येव।
कर्मणैव सद्यः शुद्धिः॥ सत्रिग्रहणेन।
सतताव्यानतत्स्यन्त्याद्यंत्रसत्प्रसूते
लव्यते युग्यानां तत्सपिंडानां ह्येति तप्र
ग्रहणेनैवासिद्धवति प्राह नसंकुचास्त्रा
गणादिपुरोहिता॥ स्नानं कुत्रत प्रार्थैवि
तेस्यहतांस्वाघ्याते॥ विवरणे प्रात्युव
गत्विसमवेत्कोरक्काहिर्भिः रूपसेवाज
मयाना संग्रामे मंत्रामोचयेत्स्यज्ञानं स
मारविधौ प्रस्थानिकां गांतिकहोमा।
दौकहृतापासाधुतिव्यावर्धेस्युमिमेव्य।
स्पृषी वस्त्यायाउईहितकृष्मनाशैकमेत्।
तथा संकुचिते हृते च तन्माविशालमान
पित्रादिवंकुंकुमस्पृतत्ववृतापर्योति
निपतितयोः सद्यः शुद्धिः॥ तयैव सद्यः शु
द्धिश्च सद्यः शुद्धिविनाश्रुपवासेन।
भवति॥ स्वयत्नेनिकस्पृतहिद्येवरेको।
कार्यपयोगिसंचितधनस्य स्थकारः प
स्वहेपयोगिसंचयीतस्य सरस्यस्व वेना
शाये मापादितधनः कर्मीयान्यत्नस्या।
वतरहः॥ कमलधान्यसह शास्त्रतेव
यस्यायावत्कालमर्थंभावेनस्यतोवका
लमग्राचे॥ आपदं पादिकत्यारग्रोचस्प
तिभिता सन्या॥ स्वल्तेतेरोगि॥ निमम
अत्स्यापिकस्वचांडायत्तादिषु॥ निद्
दैतेक्षेत्रोमारोद्या लामादिषुभाजनेनेः॥ ग्र
हीतनियमस्यापि नस्यारस्य मसक्स्यावि।
हितिसद्यः शुद्धिविलिवाकोशावः॥ तथा।

वे॥ नमस्तनसुवप्रगुप्राव हेश्रा
गि॥ निर्मलनोऽह विप्रसम्न्यायामाहि
तस्यचहेरीपनस्तुतिहन्तानाशोचविद्य
नेकचित॥ प्रायश्चितग्रहनानानातहा।
मविसंतेषेति॥ तट मश्रोचमाहितापृ
तस्तहिनमारभ्यानाहिताग्नेश्मशानेषि
नस्यभवेद्विनत्वा॥ तत्र रपोहीनत्रिः।
श्रवनमिमतवक्कातेनाशौचाहिहनाहि
तस्तारम्भितोविप्रादिहेपास्ये स्तेनत
थूति॥ सकुलीमसलिपया दिविनातीय।
मोपरापौचविप्रौवोधनोषुनेनोक्तः
तत्रविद्युसुत्रलालीयाधस्वविप्रस्या वा
धवाः॥ तेषामस्प्रौचविप्रस्य हपाहाद्व
विविपने॥ यज्ञसूरीतवचने॥ स्पष्टा
ग्रहनेविप्रोनमस्सानोस्ययाविष्टु॥ वृह
स्मिविमिमरथेकेनत्रविस्तृतेयानिष्ठ
ति॥ पतत्सायविध्यं॥ विस्तरेपि॥ तत्रिय
स्यविद्यस्येषुसपिडेषुदशरात्रविरात्रा।
मा॥ वेषुपसमस्त्रेसपिडेषुदशरात्रेणशुद्धिः
श्रीनवर्णानांलक्षहेषुसपिडेषुमानंष्ठ
मतेषुवानतदेपौचचलंपगामेशुद्धिरिति
शापलितेवनविपाशउक्तः॥ तत्रविद्युसु
त्रलालीनामृतेस्मृतकस्तनके॥ तेषांत
पेत्रिकेप्रोचविभक्तानातमातकामि
ति॥ विनालीपानासपिंडत्रिपारषस
व॥ तत्रेते॥ यद्येकजातावहवःपृथक्
श्राःपृथङ्नाः॥ एकपिंडाःपृथक्शौचाः
पिंडस्त्वावतनेविधीयते॥ पृथङ्नाःपि
ण्डजातीयाः॥ प्रतिलोमीयानावस्तत।
कनावेप्र॥ प्रतिलोमायमस्त्रीनाइति

3९९

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वक्रकवल[illegible]
नतस्म[illegible]वीत ॥ सत्रामासस्त्रावप्रस्रावस्य ।
तानां गोत्राः स्नाणार्थे स्नातानां सद्यः शौचं ।
तथा च मनुः ॥ स्यदेवराद्रैवैः शुद्धिः तस्य
मिहतस्य च ॥ सद्यः संपद्यते यज्ञकल्याणपुं
वमिति स्थितिरिति ॥ मनुः पिंडदानादि ।
सूपः संनिहते समासो भवतीत्यर्थः ॥ मनु
रपि ॥ डिंभाहस्व स्नातानां चाविरुपनांपर्यौ
वेन च ॥ गोत्राः स्नानस्य चैवोपिकस्य च काल
पार्थिवः ॥ डिंवोव कुञ्जनं तत्कल्लौ शा कृ ।
कलहेवा ॥ यस्य चेवाति पार्थिवस्य तिर
कायार्थं परिपालनाधिकृतस्य ॥ नक्
गाणां परिपालनपरा शौचं निवर्तते ॥ कु
तस्तु हि कार्या तस्य शौचामार्थिकस्य पां
कृतेनैवाकं ॥ सोमा कन्द कीर्नलेखा मा
वितपस्य यमस्य च ॥ ग्रहाणां लोकपा
लानां वपुर्धारयतेन यतः ॥ स्वत्वपृथे स
र्य ॥ स्त्री विप्राश्चैव गवार्थे च संग्रामे वध
ता स्नातानां सोपकृता नाना शौचं ॥ यज्ञे वा
वने ॥ वा स्नानार्थे विपन्नानां योषिताना
ग्रहेश्च वा ॥ ग्राहवेच स्नातानां नृपकराः
मशोचकमिति ॥ पतत्र्यतेन तेन कालो
तरमतविषये ॥ तेरु के स्स्वंशे सावे ।
गुरुत्वतेनकालानंतरमसर्गाग्रामोविव
कुलयतो च स्नते न कारुर्मिति ॥ गोत्रा ।
त्तल स्नानानां विधिना मिश्रकाल निश्चये
मपिकृत्तत्तेषां सद्यः शुद्धिः ॥ तत्रात्राह
वरेका ॥ स्नातानां रूपमाणां विप्रे रनतेचा
श्च चातिनामिति ॥ गोतमोपि ॥ गोत्राम
लाश्नातानाम चत्वेनाकोधा च श्रुवत ।
इति ॥ प्रचलेसद्यः ॥ मर्मानोरकानात्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गोत्रसगोत्रा च ॥ तेदारुमनः ॥ इयान्
वर्मापोत्रस्यपि देवविधीयते ॥ जननेप्ये
वमेवस्यान्निगुणापुद्गिमिच्छतामिति
जन्मन्येकोदकानांत्रिरात्राच्छुद्धिरि
घातेइति ॥ जन्मनीतिमरणस्याप्युप
लक्षणं ॥ केचित्स्पोत्रविषयेजन्मम
रणतेकालभेदाविभावन ॥ एकोदका
समानोदकाः तेचसप्तमपुरुषादूर्ध्वं
यावज्जन्मनामैज्ञानं तत्पर्यंताः तत्र
इमेवः ॥ सपिंडतादूर्ध्वं समानोदकविनि
वर्तते ॥ समानोदकभावस्तुजन्मना
म्नोरवेदनेइति ॥ तथा च सप्तमपुंसो व
ज्ञातागोत्रे सप्ततागोत्रेसोदकानां त्रि
रात्रकमिति ॥ अत्र मातामहस्य चा
प्रमानतत्वाद्धि विषयेतु विशेषउक्तः ॥
तत्रैवस्मृतिः ॥ अहं मातामहस्याचार्य
पत्नीत्रियेषुभुविमेवैरिति ॥ अश्रोत्रियः
मोनिहितो गुणवान्वाविवर्तितः ॥ तद
के ॥ श्रोत्रियेतत्पसंपर्वे त्रिरात्रमशुचिर्भ
वेत ॥ मातुलेपक्षिणीरात्रिः शिष्यत्वि
र्वाधवेषुचेति ॥ उपसंपन्नोगुणसंपन्नः
ग्रामविहितेनैवैकराशमेव ॥ तदाह्यस्य
लायनः ॥ एकाहंसब्रह्मचारिणिसमान
ग्रामीणेचश्रोत्रियेइति ॥ एकाचार्योपनी
तः सब्रह्मचारी ॥ उपनीयविवाहयः प
दत्वोतिसप्रयाचार्यः ॥ तस्यउपरिहिविशे
षेमसनाविशेषउक्तः ॥ त्रिरात्रमाचार्य
पत्नीवमाचार्येमोरस्यतेमति ॥ तस्यउपरे
वपन्याचोदवारात्रमितिस्थितिः ॥ या
ज्ञवल्क्योपि ॥ उवर्धेचास्पद्मचानमात

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

...ग्रथकुलेषु...
न...श्रा पुत्रेषु वर्तते॥ अत्र श्राद्धचापातं इदं
न्यनुवर्तते॥ तथा च स्मृत्यर्थसारे॥ या
ज्ज्ञातिर्वा हि त्रमस्त्र्याय सप्तमी पीना
त्मबंधुपितृबंधुमातृबंधुस्त्वरमातृ
लपितृष्यायाप्यागृहस्थानंतरं पुत्राचा
र्धपुत्रमित्रभगिनीयेषु स्वस्त्रभगिनी
मातामहीषु मातृस्वसृपितृष्वसृ स्थानं
लानीयुर्वैवार्थपतीषु ...पुत्रापत्नीपण
श्रोचं॥ अमातवैवेकास्त्र्यार्थाच॥ अत्र
मातृस्वसुएकग्रामेएकास्थ॥ ग्रामान्तरे।
त्वानंमीति॥ आत्मबंधादयस्तेनैवोक्ता:
यथा॥ आत्मपितृष्वसु: पुत्रा आत्ममातृ
ष्वसु: सुत:॥ आत्ममातुलपुत्राश्च विज्ञे
या आत्मबांधवा:॥ पैतृष्वसेयस्वसादि पु
त्रा: पितृबांधवा:॥ तथैव मातृष्वसादि
पुत्रा: मातृबांधवा:॥ बहुप्रवेतनग्रापि
सोऽस्थितेपलिमीनत्रिस्रोहित्रीभगिनी
स्वते॥ संस्कृते त्रिरात्रं स्यादितिपरां
श्वक्षयितः॥ संस्कृते त्रिरात्रिमित्यादी
श्चिभगिनीयेऽपलत्पाशितिरात्रिवा
शुषणा॥ तथा॥ पित्रोः परमेश्वी शी दा
त्वातत्तकएभवेत॥ त्रिरात्रं तत्र कुर्वीत
स्यादित्याहभगवान्मनुरिति॥ अत्रानं
पौरैतोतानां॥ तथा॥ श्वश्रुयोर्भगिनीनां
च मातुलानां च मातुले॥ पितु: स्वस
रितदवपतिनीन्तुपंचत्रिश्रो॥ श्वश्रु
श्वशु: पित्रोशुत्केशोव:॥ तथा च॥ मा
तुले श्वशुरे मित्रे गुरौ गुर्वंगनासु च॥ अ
शौचं पक्षिणीं रात्रिं मृतामातामहीय
दि॥ यत्नहुदेवितस्ववर्गे॥ भगिन्याम।

स्त्रीना यावत्प्रदानं पाद व ... ॥ ...
मातृपितृते हि श्रीमतिनी स्नाने ॥ स्वा
लके तन्मृते चैव सद्यः स्नानेन शुद्ध्यन्ती
ति ॥ पतनस्मामानवस्तत्पुत्र व हि वउ
ने च स्नात्वा शुद्ध्यते ॥ स्वपुत्रवत्तस्य
कन्यामेधका इत्यामानेस्नानमिति ॥ अ
नवोढि मरणात्याः सवर्धः ॥ प्रविलीनायाः
पुत्र्या मरणे प्रसवे च स्नात्वा शुद्ध्येत विश
षडकोपच ॥ मातुः पितृगृहे सूतकायाः
पुत्र्याः प्रसवे पित्रोरेकाहमशौच
न स्त्र्याः मरणे तेषां त्रिरात्रं ॥ शुद्ध्यते व
मरणे पित्रोर्विवाहे त्रिरात्रं ॥ अमान्तरमरणेण
हिताविति ॥ विस्मृत्य ॥ सस्नातास्तौ।
तृतीयः पदे मरणात्पुत्रे च ॥ नत्यस्यवमर।
णे वैविनत्पुत्रे स्याता तनेकरात्रं त्रिरात्र
वेति ॥ एकरात्रं प्रसवे त्रिरात्रमरणे स्यात्
पूर्वस्त्रीता सपिण्डीविषये तस्य पते तत्स्यपि
ज्ञानां चतत्ववीर्विशुद्धउक्तः ॥ अत्रपितृस्व
मृतवेत्रिरात्रं सपिज्ञानामेकाहमिति ॥
अन्यविषयं वचनं ॥ अत्रपितृस्वव्रत्समिस्नते
एकरात्रमिति तत्रापत्तिर्व्याप्तिविकल्पान्या।
न्यादि विषयं ॥ स्वयविधूना... विशुद्धउक्तं
ग्राम सूपातो पावल्लवेदकिशुद्धितकस्य च
ता ॥ अस्य स्पनायदरोपाच नियमेशुद्धिता।
भवेत ॥ अस्य मस्मोस्तवैजपुत्रादिविषये या
नवस्यानविशुद्धउक्तः ॥ अहोरात्रमित्यत्र
हेतो ॥ अनेषमेवपुत्रेषु भार्यासत्यागता।
सचेति ॥ अन्यवानाहिताति ॥ अन्यवान स्वभा।
यामरणप्रसवयोः परिनेन स्तोगात्रे स्व
वमिति ॥ पत्नरंशो नयानविषये ॥ सविध्यो।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

...॥ ...नासत्वगुणातगु
वंस्तेशुच ॥ पताश्ववीसृमाधीत्र ध्रतता
स्रस्तमासुचेति ॥ ध्रत्रग्निगाजुमित्रसुवते
ते ॥ परश्रूर्वीस्विति ॥ परः पूर्वापृतियोस्त
ताः परश्रूर्वोऽच्युते ॥ इमथैपाचेष्वस्व
धेन ॥ यमपश्चतस्वेवभार्योसेवधेनत
स्वस्त्रुवेवाभिदूतस्मापिउनानुसंस्वः सु
द्धिः ॥ ततस्पतिनापतिः सुन्यास्नतेषुरा
वेश्वपरपत्नीस्तेषु च ॥ ... ः स्वाश्च
ताः स्वः क्रियाश्चेत्तेवनपिता ॥ पत्र च सवि
धो ॥ श्रसिद्धिधोत ॥ याज्ञवल्क्येनोक्तपत्नाः
होरात्र ॥ मरीचिनातैवधोषेकुक्त ॥ सन
केस्तकेववृद्धिरात्रेपरस्ववियो ॥ यकाः
तसपिण्डानाविरात्रे ... वेपितमिति ॥ मा
हिदिनस्तेतहशावासिनामस्तृमयत्व
नमश्रोच ॥ यातिस्तस्तत्संयोहयपर्हेतेत ॥ तु
तस्समनुः ॥ इतिरजनिमज्योतिर्धैम्यामा
हिषयोगतः इति ॥ याज्ञः प्रजापालन
नियितशूलेनिकपोषिकाहिकर्मणः
दासस्त्रीशिल्पादीनांचस्वामिगृहस्क
मीहिकर्मणिसद्यः शुद्धिः ॥ नित्यनैमित्ति
काहिकर्मस्वस्ववर्णाश्रोचमवव
तत्रपचेताः कारवः शिल्पिनोवेद्यादा
सीदासास्तथैव च ॥ राजानोराजभृत्याश्च
सद्यः शौचाः प्रकीर्तिताः ॥ कारवः सूप
काराद्यः ॥ शिल्पिनश्चित्रकाराद्यः
गकाद्याः ॥ दासीदासाश्च सर्वेषां वर्णा
माद्यो भवेत् ॥ नहरणस्य भवेत्कालेवस्या
स्येतस्त्रकर्मणि ॥ नष्टोनाचमतिसम
श्रोचेतिः स्पृशपचेदासमासमिति ॥ स्मृ

४०४

नीयादास्याकमानायकाः स्वत्वमातः
देवेतव्यः ॥ त्रिसूत्रोपि ॥ न राज्ञां राजकर्म
णि ॥ न व्रतिनां व्रते ॥ न मंत्रिणां सत्रे न कारू
णां कारुकर्मणीति ॥ शातातपः ॥ सूत्र
कर्मकराः शूद्रा दासी दासास्तथैव च ॥
स्नाते शयीत संस्कारे रतस्य कर्मण्यहोविनाः
नय्या ... धः स्वप्रयोगार्भेहा सोम मंदास
त्याः स्थयि ॥ विकिंतस्कोपंतकते ॥ त
हव्येन नश्यतेन ॥ न स्पर्शोहि किंतस्कः स्व
क्रोयस्तेम वर्तित नित्यश्रुति ॥ व्रतस्थं प्रा
नंजनतेम शतयोरपोचव चर्ति ॥ नेउदश
... मनस्य न नेत मरणवालो श्रवणेसत्य
उपस्पृश्य शौचकाला कहि ॥ नदास मनुः
नैपात विदेशस्थः शृणुयाद्योदिनिर्दश
एकोपर्यान्तु स्यता वदेवाशुचिर्भवेदि
त्ति ॥ विगतेस्तु विगतं पदजनन्नाशौचम
पुनः ॥ तोण ॥ दशरात्रस्यान्यशौचकाल
मेपवल्ल तोणं ॥ अतस्य श्रवणानन्तर मेवा
शौचसंपातरात्रादिरेमाख्यातवशौचोन्यतित्र
मृत्यैव ॥ याज्ञवल्क्योपि ॥ प्रोषितेकालशे
षः स्यादपूर्णे दत्तमेवच ॥ सर्वेषांवृत्तस्वेद
तोयेत नरकोर्ध्वं तिर्यत्ति ॥ स्वत्यर्थं सोवे
पि ॥ विदेशस्थस्य जननेमरणे वा प्रथम
दिवसादूर्ध्वं ज्ञाते स्वाशौचशेषाणामुहि:
तस्य शास्त्रशौचकालानेन स्वतांदिवा
ताश्रवणे मरणेनेवासो ॥ निर्दशेज्ञातिमव
णस्कत्वा पूर्वस्वजनमव ॥ सर्वा साजलेमा
स्नानं स्पृष्टो भवति मानवइति ॥ प्रचेता
स्मृति संवत्सरे व्यतीते तु शौचजन्त
श्रवणोपि न देवस्नानं ॥ न ज्ञातीनां ज्ञाति

...कोश्चासवासाग्रामन्यथजाभव ।
तीत्येतदपिसपिंडाणामवगणवांतोश्रव
णातदभावपूर्वकेसचैलस्नानविधिउ
वे॥नताशौचाभावप्रतिपादनपरं॥मास
त्रयानंतर्योदिशुद्धिरत्राद्याशौचस्यवने
मानवात॥प्रसवनंतरोनाशौचसपिंडानां
नात्येव॥नताहदेवलः॥नाशुद्धिःप्रसवा
शौचेव्यतीतेशुद्धिरेवपीतिः॥स्याशौच ।
कालानंतरंमासत्रयपर्यंतंमधानोश्रव
णेसिरात्रमाशौचे॥नरदर्धंघात्मामयंत
पक्षिणीय॥ततोनवमासात्परंमेकाहः
ततःसंवत्सरपर्यंतंस्नानेनैकरात्रेणमा
सेवशुद्धिः॥संवत्सरादूर्ध्वंस्नानमात्रेणे
वसपिंडानांशुद्धिः॥तथाचस्मृत्यंतरेसिद्धः
मासत्रयेत्रिरात्रंस्यात्षण्मासेपक्षिणीत
था॥अहस्तुनवमादर्वागूर्ध्वंस्नानेनशु
ध्यतीति॥अत्रस्नानंसवस्त्रंचोक्त॥नतुइदं
कदानमध्यादिपरिति॥मनुनामत्संवत्स
रांतरमपिस्नानमात्रंत्रिवोक्तंत्वात॥य
दि॥संवत्सरेव्यतीतेतस्यशुद्धिर्विधीयते।
ध्यतीति॥स्पृष्ट्वापनोदयेत्॥इदमतीत
शौचमातापित्रव्यतिरिक्तसपिंडाशौच
विषयं॥नहिदेहेपतितेनिरवधारयितेवे
चेत्स्मृतोस्यातांहरतोपितृबिंदुकः॥अ
वांतरहानमात्रभवप्रारंभसहनकोभवेदि
ति॥इत्यादिमिति॥शदप्रारंभुपलतत
स्तनेकोभवेदित्यनेनाह॥तत्प्रेतकार्येस
नदीपकर्तव्यमित्यूह्यते॥तथाचोक्तं
मिताक्षरायां॥महागुरुनिपातेतुप्राड
वसोपवासिना॥अतीतेदेहेपिकर्तव्यःप्र

406

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्रमिति॥ एवं सगोत्राशौचपुत्रपत्नी
सुखं। अदत्ताशौचं विषयेत्न दशाहादि
सपिंडानांशौचं सकल्पं सारे। अनंतीतेसु
तकेत एवं समरसगोत्राशौचं। सगोत्राशौ
चसपुत्रं सपत्नाम्त्रिरात्रपत्नाः पुत्रन्न
सपिंडेपत्नीष्वेवं सपत्नीपुत्रवमिति॥ पु
नःसंस्कारस्तपिंडोभ्रुतेन्नचोक्तं॥ असगो
त्राशौचं [illegible] स्तनेतित्रिरात्रं॥ सगोत्राशौच
मपिंडानांभिन्नगोत्रेचनास्तिइति॥ योपित
स्यजीवत्कर्त्तीकथनेविशेषो [illegible] स्यति।
[illegible]॥ [illegible] नश्रूयतेवार्त्तायावद्वादश
[illegible]॥ कुशपुत्रकंदाहेनतस्यस्याद्व
[illegible] मिति॥ एतत्पितृविषयमितिव
[illegible] मिति [illegible] स्यते॥ पितृविषयेज्ञातकं [illegible]
[illegible] विधानात्॥ पितरप्रोषितस्य
न [illegible] नैववागति॥ ऊर्ध्वं पंचदशाद्वर्षा
[illegible] कृत्वापकं॥ कुर्यात्तस्यतुसंस्कार
[illegible] विधिनाततः॥ अत्रैवसत्यसंय
[illegible]॥ द्वादशवर्षेतेजीवद्वार्त्ता
[illegible] पर्ण लोच जीवद्वार्तायां
[illegible]॥ पूर्ववयस्कं एकविंशत्य
[illegible]॥ मध्यमवयस्केपंचदशाद्वर्षा॥ अ
[illegible] केद्वादशाद्वर्षाद्वर्षचाद्यायुषतदूर्ध्व
[illegible] पलाशादहनैः॥ कु
[illegible] कृत्वादशाहंवाविधिशौचं
[illegible] निकायेति॥ अघोर्ति
केहन्यस्मिन्जीवत्सुश्रूयाश्चेतदाद्गुतौ
[illegible] निधायजातकर्मादिसंस्कारंकुर्यात्॥ त
[illegible]॥ जीवच्छविश्रयाश्चेद्
[illegible] निधायजातकर्म [illegible]॥ [illegible]

407

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पवनु[illegible]
[illegible]त्रिरात्रमथवास्पनं॥ स्नात्वोयोयेनतेवा
भार्यामन्यांवातप्तभावतः॥ सप्रीनांतप
विधिवज्ञात्वलोमेनवाप्रजेत॥ प्रथेऽोप
गपृश्वनात्रिविरात्रंचतत्त्वत्॥ उहिमाप।
धातीकुर्यादीप्सितारश्ककनरुत्रतः॥ शुरवा
नुगामनेततिभिन्नाशौचयाज्ञवल्क्योपोक्तं
ब्राह्मणोनानुगच्छेनम्रुअोनहिजंङ्क।
चितः॥ अनुगमेप्योभसिक्त्वातानम्नप्पमिघृ
तप्रश्च्विः॥ ब्राह्मणेनासपिंडनैहि[illegible]
विप्राणिः सूद्रेवाप्रेतेनात्रपंतरुवन्तैकरेत्या।
र्थः॥ अत्रच्छृतमततव्यविप्रार्थकुव्रयच।
र्थं॥ हेदस्पृष्टिसमानेोत्क[illegible]जातीयमेग
मनविषयं॥ तत्रास्मतः॥ अनुगमस्थ्य
प्रतेज्ञातिमज्ञातिमेववा॥ ज्ञातौसवर्णे
स्पृष्ट्यापिहृतंप्राणपविसृष्टाति॥ अज्ञा
तिमिति॥ ज्ञातयोमात्रसपिंडा॥ पितरसपि
अत्रगामनस्पृविहितत्वात॥ हीनवर्णेवि
षयेनस्स्तत्थेसावेविशेषाउक्तः॥ ब्राह्मण
स्यक्षत्रियानुगामनेएकाहमशौचं॥ वैश्ये
नुगमनेपक्षिणी॥ शूद्रानुगमनेत्रिरात्रम
शौचंकृत्वासमुद्रगामिनद्यांस्नात्वाप्रा
णायामशतंकृत्वाघृतंप्राश्यविशुद्ध्यती
ति॥ क्षत्रियस्यवैश्यानुगमनेएकाहः॥ शू
द्रानुगमनेपक्षिणी॥ वैश्यस्यशूद्रानुग
मनेएकाहः॥ विधिनैवचमिति॥ ज्ञानवृत्ति
इवचनं॥ सानुगम्यास्थिसंचयस्य[illegible]त्रिरा
त्रं[illegible]सर्वत्रियस्यैवशैरावेजुनात्रंगा।
मनेचैवमिति॥ इदमपित्रा॥ जातस्यांत
त्रियानुगमनविषयं॥ शूद्रानुगमनेत्वप
राह्णः॥ प्रतीभूतेनयः शूद्रायामेणोज्ञान

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शुध्यति॥ क्रियाहेतवे तत्र स्पृष्टेनेहे गात्र
मशुद्धं॥ प्राणायामशतेनैकेनेवा हुता
प्राणाय विशुद्धमीति॥ इदमग्रामनादि
ममरणे शौचे महर्षीणामेव॥ नन्तत्रा
हीनां॥ तदाहशातातपः॥ आशौचं यस्य
गोरेहे यतेत्रसमेधिनः॥ क्रियास्नस्य
कृते स्नानं चैव नतद्वेवेति॥ अशौचि
त्र्यस्पृष्टेन स्नानं वशीनाशौचं नाशयन्ति
ने...॥ हस्तेषा पादे शापिदस्पृष्टे लोके
गोहते॥ अज्ञानाद्प्रवासः स्पर्शे प्राजो
...॥ ज्ञानकृतेनेहिद्गुणं प्राय
श्चित्ते॥ पारस्करः॥ सूतकस्य बाधेवे: सार्धं
कृत्वात्परिदेवनं॥ वर्जयेत्तद्दशोरात्रं।
होमस्नाह्निकमेवेति॥। अथाशौच।
संनिपाते विशेषउच्यते॥ तत्र जननाशौ
चमध्ये जननाशौचे॥ शावाशौचमध्ये।
शावाशौचे॥ तत्समेततोऽन्येनवासति॥ स
वोशौचं शेषेणैवातनापतितसूतकस
निवृत्तिः॥ तदाहयाज्ञवल्क्यः॥ अंतराज
न्ममरणे शेषाहोभिर्विशुध्यतीति॥ शा
वाशौचमध्येतत्समेततोऽन्येनवाशावा
शौचान्तरे सति सवशेषेणैवशुद्धि॥ जन
नाशौचमध्ये शावाशौचे सति शावाशौ
चेनैव संपूर्णकार्यं॥ जननाशौचे॥ तदु
क्तं॥ शावेन शुद्ध्यते सूतिर्न सूतिः शावशौ
चिनीति॥ अंगिरसापुंके॥ सूतके मृतं।
के चेत्स्यान्मृतके वाथ सूतकं॥ तत्राधि
कं न्यूनसूतकं शौचं कार्यं न सूतकमिति
सत्याशौचमध्येपि के सूतके वासति।

[illegible] शुद्धिः ॥ तदा दशाहेन ॥ सल्याशौचं सम
येत दीर्घाशौचं भवेद्यदि ॥ न पूर्वेण वि-
शुद्धिः स्यात्स्वकालेनैव शुध्यतीति ॥ अथा-
शौचं येहेन सूतकस्तनकेचोच्यते ॥ सूत-
केहीदेन वाशौचं स्वकालकं तमेव स्य-
दे ॥ मातापित्राशौचं सन्निपाते विधि-
रसाविशुध्यन्त्रकाः ॥ मातर्यग्रे प्रमीतायां
मशुद्धौ म्रियते पिता ॥ पितुः शेषेण शुद्धिः
स्यान्मातुः कार्यं तु पक्षिणीति ॥ मात्राशौ-
च मध्ये पित्राशौचे सति पित्राशौचेन शुद्धि-
र्यं पित्राशौचे मध्ये न मात्राशौचे सति पि-
त्राशौचे समाप्ते मात्राशौचे पक्षिणी [illegible] ॥
र्या दिनत्रयं ॥ शौनातपनोवपरो विप्र-
कः ॥ त्रिरात्रेण शुद्धिः [illegible] मशौचं
विदध्यादिति ॥ अस्यार्थः ॥ एवाशौचेना-
त्रिमात्रावृद्धौ समतिशौचान्तरे जाते प्रथ-
दिनत्रयेन शुद्धिः ॥ वा त्रियामसमाप्तौ वक्षे
विसत्यशौचान्तरपाते सति त्रिभिरहोरा-
त्रैः शुद्धिर्न पूर्वशेषेणेति ॥ यत्तु अल्पता
एवच्चेत् ॥ प्राहुर्भागद्वये यावत् सूतकस्य
सूतके ॥ द्वितीये पतिते चाद्यात् सूतकात्
नास्ति शुचिः स्मृता ॥ अतऊर्ध्वं द्वितीयात् सू-
तकात्ताच्छुचिः स्मृता ॥ एवं मृतकविशेषे ॥
स्यान्मृतकेसूतकान्तरे ॥ अस्यार्थः ॥ सूत-
कसंबंधिचरमाहोरात्रस्य पूर्वार्द्धे भागद्व-
ये सूतकान्तरे विभक्तेऽहोरात्रे होत्रप्रेमेव अ-
निमित्ते निहितीयसूतकेपातिते घाद्यात्सू-
तकाच्छुद्धिः ॥ अतऊर्ध्वं मित्तस्य यावत्तदे-
रात्रिरूपभागस्य हृद्यन्तरे सूतकान्तरपाते स

410

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्वनीते वै पिकं तेष्वप्रेत कार्यं यथा॥
इति॥ सापत्न्यमातृविषयं दर्शितं मित्राक्ष
पितृपत्न्याः सर्वे नायामातृवर्जं हि तेन ।
मः॥ संबंधेष्वप्यनीतेतेषु विरात्रमपि चिमं
वेत॥ स्पृष्ट्वाप्यस्पृश्यसारे विशेष उक्तः॥ माता ।
पितृ[illegible] कोटिस्पृष्ट्वा देहं कर्ध्वं स्पृष्टे देशेऽपि से ।
वेत्तावाहं र्ध्वं मपि पुत्रः स्त्र[illegible] सवराण्युव
तोदिन[illegible] शास्त्राहि[illegible] यथा वर्णि
[illegible] नि शौचं[illegible] ते॥ [illegible] कपिं[illegible] चम ।
[illegible] दव[illegible] तेषां पिसं वन्तरा[illegible] हर्ध्वं मपि
[illegible] वा[illegible] विनानं तथैव शौचं चाहिका
ये॥ [illegible] ९ रुप[illegible]: पर[illegible] वेव॥ सवर्णे
नेम सपत्न[illegible] एव॥ दुशौचं नैकाला नवेच
[illegible] नवा[illegible] यामातृ: सापत्न्या मरणे[illegible]
[illegible] त्रि वा त्रमिति॥ प्रेत स्पृष्ट[illegible] चैनमो[illegible]
[illegible] नवर्णे सपत्नी मातृविषय एव योनं
[illegible] तवत्त्वेन नेती[illegible] शौचं ज्ञातीनां ना ।
मि॥ नद्[illegible] स्पृष्ट्वा[illegible] सौवं॥ [illegible] शौचवत्
[illegible] नवाक्ली वैवाकानं सपत्नी। स्पृष्ट्वानं
नेवत्रि तिगर्भ[illegible] वेद्यमोत्रिमाः॥ [illegible] शौ ।
नेवरूतं मितिक्रीवाहित्यानिविकविष
यं॥ क्लीवादि[illegible] त्रि[illegible] तेषु पि सद्य: शु
द्धि:॥ [illegible] शौच[illegible] पमरणे नकं॥ मस्तान ।
म[illegible] न[illegible] यत्र[illegible] विवा[illegible] लायकः॥
वाचो[illegible] भवन्ते[illegible] शौचं[illegible] च्यते॥
[illegible] स्नानं[illegible]॥ [illegible] शौचं वर्णनो के[illegible]
[illegible] ते॥ चतुर्विंशदहस्तस्य[illegible]।
[illegible] सपत्नेन[illegible] चेति॥ पञ्च मे दे[illegible]
चारतो[illegible] वस्थादं[illegible] नीया॥ योजनम्

५११

[illegible]हृद्ययोजनं भवेत्॥ तथा च॥ निर्गमे
वोलाराणं पूर्वार्धं रथस्य वः॥ प्रमा
णमंगुलस्योक्तं वितस्तिर्द्वादशांगुला॥ वि
तस्तिर्द्विगुणारत्निस्ततः किष्कुस्ततो धनुः
धनुःसहस्रे द्वे क्रोशश्चतुष्क्रोशं तु योजनमि।
ति॥ न इक स्वस्यार्थं समाचे॥ अतीतानां चैतन
स्वस्वाशौचकालादूर्ध्वं ज्ञातानामतीतानां वा॥
णां नाशौचं न च नाड्यूर्ध्वं स्त्रीशूद्राणां विवा
हादूर्ध्वं भवतीति॥ इह सर्वेषां समं विवर्णानां
मायातीतं॥ केवला स्याच्छ्रयातां॥ नद्युत्तरस्य
क्ति सर्वेषां मतिक्रान्तेन तेष्वविशेषणतेनाते।
नैव ध मेतस्मिन्नेवातिकालेन स्नानार्थः
वयो वयस्याकृतमशौचं वे सद्य वर्णसाधा
रणं दशाह व्यह सद्यादि दशप्रतीतं वि
भवतीति॥ नाकृपनीतविषये त्यर्थः॥ अ
तिक्रान्ताशौचं रहितमेव॥ न तदृशा स
नेरात्मिनि रा॥ अतिक्रान्ते दशाहे तु पश्चा
ज्जानाति चेद्गृही॥ त्रिरात्रं सूतकं तस्य न
न इत्यस्य कर्हिचिदिति॥ दशान्तरस्तो
स्पर्देहालाभे स्मृतिभिः प्रतिकृतिकरणा।
स्याभावे पर्णशरीरेणापि दहनं कर्तव्या प्रति।
कृतिकृतावाहः कार्यं॥ अनाहिताग्नेः प्र
तिकृतिदाहे त्रिरात्रमाशौचं॥ आहिताग्ने
र्यथावर्णं संपूर्णमाशौचं॥ तदुक्तं
स्मृत्यर्थसारे॥ अपि दग्धव समं प्रेतं यदा
तु तत्वाग्निना॥ असौ स्वगोत्रलोकाद्ये सा
हे त्वकालस्वबांधवैः॥ एवं पर्णनरं दग्धा
त्रिरात्रमशुचिर्भवेत्॥ वसिष्ठोऽपि॥ आहि
ताग्निश्चेत्प्रवसन्म्रियेत पुनः संस्कारं कृ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नाप्यानङ्गवाक्यविरोधः स्यात् ॥ अत्र
मौनमोपि ॥ गृहिशेषमतिदाभ्यामभ्र
मेतस्य भिमन्यति ॥ अशौचमध्येऽत्रा ।
शौचान्तेस्मतिपितृजातकरणकर्म ।
ण्यिज्ञानानन्तेपनविशेषउक्तः ॥ अतद्दैशा
शेजेनानन्यस्मात्स्मान्कवरणेप्रदि ॥ अत ।
शुद्धिप्रपकर्मेवपिण्डदानेषु शुभिः ॥ ।
प्राप्नोतिनिषेवेन मध्येऽप्यवजननंनभवे ।
न ॥ नचपक्षशौचोपितान्तशेषात् न्याय
मविधि ॥ अशौचपातन्तुरिपि ॥ अशौचेतत्सम
तेनेथुतस्तपर्द्धाभवेत ॥ कर्तृत्वान्म
कीपुष्टिः मवृत्तीशौचेनपश्यतीति उ
त्याशौचसम्पातेनशुद्धिः ॥ स्वलिकाम
पितांचविरोधस्रातत्र ॥ स्वलिकानमि
ष्टहित्वेतिस्वत्तिसत्रशैलत्वान् ॥ अत्रो ।
क्वाशौचप्रकरणेयान्यधिकाशौचविष
येसंकुचितानाशौचविषयकानिवाक्या
नितानिसमानोदकापुरुषादिविषयके
नावस्थापनीयानि ॥ यानिचल्पाशौच
विषयेऽधिकाशौचविषयकानितानि ।
गुणवत्संपदादिमन्त्रिहितादिविषये
नैनन्यवस्थापनीयानि ॥ नन्वविरोधग्र
शक्तनीयः ॥ तथाचैवस्मृत्यर्थसारे ॥ पूर्वंद
शेस्थानित्रिरात्रपक्षिण्येकाहसंचयः ।
शौचंपराक्षवाकानित्राषपहिषयाणि
योज्यानिसमानोदकविषयाणिच ॥ स
ङ्कुचितानशौचकल्पपक्षिण्येकाहः ॥ स
द्यः शौचंचस्पदायाच्चापहिषयाः ॥ येनत्रा
तिग्रन्थाहिनातिविशेषेणसर्वत्रेति ॥ यथा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]ते ॥ नित्यमूलस्य: ॥ संध्यामिष्टकं त
होमं यावज्जीवं समाचरेत् ॥ नत्यजेत्सूत
के वापि यज्ञेनोच्छेदयेद्द्विजः ॥ विष्णु
पुराणे ॥ सर्वकालमुपासीत संध्यां पा
र्थिव छ्यते ॥ अन्यत्र सूतकाशौच विभ्रांत
न्नभीतितः इति संध्योपासनमशौचे वि
हितं ॥ अत्र समभिप्राय: ॥ संध्याप्राणा
याम पूर्वकमोपासनीया ॥ [illegible]लस्य वव
नस्य [illegible] प्राणायामवर्जं मानसं [illegible]
वेक संध्योपासनीया न सर्वे [illegible]
न्य समभिप्राय: ॥ अशुभे वा [illegible]
स्य पवाहस्य यथा ॥ सूतके मृतके चैव सं
ध्याकर्म समाचरेत् ॥ मनसोच्चारयेन्मंत्रा
न्प्राणायाममृते द्विजः इति ॥ अंजलिप्र
क्षेपगायत्रीमुच्चार्य कार्यः ॥ न दानं प्र
तीनसि: ॥ सूतके सावित्र्यांजलिं प्रक्षि
प्य प्रदक्षिणीकृत्य सूर्यं ध्यायन्नमस्कुर्या
दिति ॥ स्मृत्यर्थसारे विशेषमुक्तः ॥ सूत
केतु पिंस्यं पाणां गायत्र्यांजलिदानक
र्यं न वा प्राणायामस्य मनसा मंत्रमुच्चा
र्य यन्मार्जनादि कुर्यात् त्रिवारं गायत्री [illegible]
वार्धजलिरस्यां हि हिति ॥ [illegible] होमादिक
मप्यसगोत्रेण कारयेत् ॥ स्वयं न कुर्यात
तदाह स्मृतिकारः ॥ सूतके मृतके [illegible]
स्मात्कर्मकं शुभं भवेत् ॥ पितृ [illegible] धनतो
ममसगोत्रेण कारयेत् इति ॥ पितृयज्ञः
पितृयज्ञः ॥ वत: ॥ आवाणीक [illegible] मैथ्यपस्या
हिक स्थालीपाकश्च ॥ [illegible] स्मृतिरपि ॥ सू
तके मृतके चैव अशक्तौ श्राद्धभोजने ॥ प्र

४१४

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यदिति ॥ अनेन मानवस्ते देशान्तरगतः कथ
न ॥ नियमितिहोत्रासीति स्वयमेव कुर
र्यात् ॥ नसाद्रूपनाशास्त्रः ॥ नित्यानिवि
त्तनैवैश्वानानवर्जं शालाग्निर्वैव
न्यानि कुर्यादिति ॥ अस्यार्थः ॥ वितानेव
र्त्तिविकन्यादिनिह्नानिसर्ववेषुः ॥ नि
त्यमपिवैतानेननिवर्त्तते ॥ वितानेना
माग्नीनैविकानांवैताग्निनत्रैविधौ।
यमानानिनित्यानिस्मार्त्तादीनिवैता।
नानिनानिस्वयमेवकुर्यात् ॥ शालाग्नि
संस्थानांवि. ॥ विनिवधीनि सायंप्रातर्हो
मस्थालीपाकादीनितान्यपिननिवर्त्त
नेकितेकेश्वः ॥ अतएवैतीर्थाकरणम
र्वयाज्ञवा ॥ कर्मप्रवेतोऽनन्यस्यस्मृतो
ग्निः कुर्यात्तिस्वयं ॥ यतस्त्वर्थसारा।
होमन्तानाग्निः सायंप्रातर्होमपार्वणा।
स्थालीपाकादिनित्यनैमित्तिकः ॥ स्व
न्योहितनानाकार्यएव ॥ अत्रापिस्वरूप
त्वागात्मकप्रधानेस्वयमेवकुर्यात्।
यद्येतेनमन्यैनैकार्यइत्यभिप्रायः
अतएवासंभवेहायर्थतस्वैषानस्यपवे
हितितेनैवोक्तं ॥ असंभवेप्रधानकोर।
न्यस्मैनैमित्तिकान्यपिसर्वाणि
मासि नैमित्तिकं सोपि स्मृत्यर्थमिनिका।
योगिनि ॥ स्वस्त्यर्थं सावे ॥ जातेनवा।
श्रौतेनानाग्निहोत्रसंध्यादर्शपौर्णमा
सनित्यनैमित्तिकाः क्रियाः कर्त्तव्या
नान्यकार्याएवेति ॥ अत्रनित्यानि र
होत्राग्निशिक्षानामपिनित्यनैमित्ति

415

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]

केनैव येन कारयेत् ॥ कार्यं सूतकेऽपि व
र्ज्यमेव ॥ वैश्वदेवं पंचमहायज्ञान् सूत
कान्विवर्जयेत् ॥ तथाह संवर्तः ॥ विप्रो द
शाहमासीत वैश्वदेवविवर्जितः ॥ एव
यज्ञविधानं न कुर्यान्मृत्युजन्मनोरि
ति ॥ यत्तु सर्वं च वै ॥ दानं प्रतिग्रहो होमः
स्वाध्यायश्च निवर्तते इति ॥ तत्काम्यहो
मविषयं ॥ नित्यस्नानं तत्कार्यमेव ॥ न
नु केचित्सूतकार्यं सायं ॥ नित्यस्नानं शौचं च म
न भोजनं नियमान्मृत्युस्नानं तत्कुर्यादि
वेति ॥ इदं मयोच्यं स्नानं मैथुनं [illegible]
का स्नानं ॥ तत्र केचिदाहुः पूर्णे ॥ अपि तैः
सह श्रौत्रं सूतके मृतके यथा ॥ अन्य
त्र च नैव दोषः स्यात् गृहस्थादि शुचेः कार्यमि
ति ॥ विज्ञातं भोक्तव्यं स्यात्स्वाध्यायी नि
त्यकर्मात ॥ तत्र भोक्तव्यं भाजनभा
वाज्ञाने भोक्तव्येव दोषः स्यादिति ॥ तत्र के
चिद् व्याचक्षते ॥ उभाभ्यामपरिज्ञाते सूत
केनैव दोषभाक् ॥ ज्ञाते तु सूतकान्ते
भोजयितुर्दोषो न त्वेव ॥ भोजनभक्ष्यं सूत
के मृते अन्यत्र स्वके वा चमनेन शुद्धि
तत्र केचिदाहुः शान्तमते ॥ अज्ञाने शुद्धिर्विप्रे शु
द्धेन तत्र सूतकान्ते ॥ अत्र भोक्तुर्दोषो नो
तः सेवेत शुद्धयः सूतकादि ॥ [illegible]
ल्पितेषु तत्रापि हिंसनो दोषः ॥ तत्र हरहरा
स्मिते ॥ विवाहोत्सवयज्ञेषु अन्तरा
सूतके ॥ पूर्वसंकल्पिता [illegible] दोषः
परिकीर्तित इति ॥ श्रौतं च षट्त्रिंशन्मते वि
शेष उक्तः ॥ विवाहोत्सवयज्ञेषु अन्तरा

416

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिजोनेमेति॥ परःसूतकवारेत॥
न्यथैसोपि॥ तानभोक्तव्य स्यपेशेहिति
यथो वैश्याये मंत्रिचिवारः॥ लवणेन मधु।
मांसे च पुष्पे मूले फले तथा॥ शाकका
ष्ठतृणे तु अपः दधि सर्पिः पयः स्थ च॥ ति
लौषधाजिनके चैव सर्वे पुनोनाशौचं सूत।
सूतकेइति॥ विधेयम्रहरति॥ [illegible] ज्ञा
तः स्वयं गृह्णीयाद्दिरूक्तं स्यात्॥ पक्वान्न
केइति॥ पक्व भक्ष्यं नानेना॥ अपक्वं तेकला
तिकेमा [illegible] हैव ग्राह्यं नान्यच्छमात॥
नैरा [illegible] नाग॥ अत्र सूतकप्रवृत्तानाम
प्रमंत्रेनतोहि [illegible]॥ स्वकाय कार्यमतेवो
स्वतेनपयः [illegible] विवेत॥ तनादिषु च भ्रा रेहू
[illegible] लता [illegible] स्नानकेनसूतके॥ सूतकादिपोते
प्रातेभमात्रकरणानाशौचाभाव॥ अन
के [illegible] शौचमसंख्य॥ तत्राहविष्णुः॥ व्र
[illegible] यज्ञविवाहेषु श्राद्धे होमे चनेजप
[illegible] सूतकेन स्यात्सनाशेहतसूतकेपि
[illegible]॥ सूतकमिति सूतकस्याप्युपलक्षण
[illegible] विधौ एषा आरंभो विष्णोवक्तृत्वेनैवो।
कः॥ पाकरंभोवरणायते संकल्पो व्रतसत्र
योः॥ नांदीमुखो विवाहादौ श्राद्धे पाक
[illegible]॥ यज्ञे च वरणामिति [illegible] ताना।
[illegible] मान सूतकमिति [illegible] ना
[illegible] व॥ एव श्राद्धादिष्वपि दा
तभोक्तो विहितं स्यो॥ तेडकं सूतकं स्यात्॥ ग
[illegible]॥ शिलिं [illegible] धिकृतानां य
था [illegible] वेना॥ अमविधाणचाह
यत्तादिकुर्वन्नाग्राथस्थितसवृत्तानाम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पवे...

...तमस्त्येव प्रारभाभावे च कन्याप्राग्र

शोचेस त्रिहितलग्नेतराभावे कुयोड

मेत्रेहतरत्नाविवाहः । नक्षत्रविसः ग्र

नारहिविशुद्धार्थकुर्यात्कैरहयात् ॥ गा

हस्थान्यचगवांचाशीततः श्रुतिसूत

कीर्ति ॥ पुनारहेकर्मणिहतनक्षत्रवर्ग

एहेवालेनेहनमित्याहि कर्मणोडस्त

केमेत्रहितमेवरत्नाविश्राणंनारत्नाप

चराद्यपापुपहतकोग्रहजावषपका

विवाहाद्विमालकुर्यात्... ॥ ॥

अधानाशुपकारार्थेकालश्चोमौ... वि

तसाम ॥ गापीनाशयामिनेहंविनिर्मिते

यायाहते ॥ श्रीसंघसेनप्रभुदिमलसु

धः हीरत्नसागराङ्हिते ॥ इतिनिर्णी

मतेसिद्धान्तोचस्याद्विनिर्णयोजातिः

श्रीमन्यातिसिद्धलक्षणस्वतः श्री

सिद्धलक्ष्मीपदेहेहाराधनसुप्रसिद्ध

मोहमायःसिद्धसारस्वतः ॥ श्रीदेशा

दकनेषस्वयंमहिमः श्रीसंघसेनप्रभो

वेदेकर्मणिकालनिर्णयमसौवा...

नाथः सुधीः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ समाप्तं चेदं निर्णयामृतम् ॥

418

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

419

420

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

421

Kangri University Haridwar Collection. Digitized

422

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

423

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

424

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

425

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

426

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

427

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA